



# फेहरिस्त मजामीन मजसूआज दीवानी ।

दफ्तार	मजामीन	सफ- हात
	मगानिय इब्तिदाई ।	
दफा १	मुल्तानगर नाम-गुरुच निकाज व दायरह निकाज	१
दफा २	तारिकात ....	१
दफा ३	मावहती अदालत ....	५
दफा ४	मुस्तस्नियान ....	५
दफा ५	मजसूआ का तअल्लुफ अदालत दाय मालसे	६
दफा ६	इस्तिथारात नकदी ....	६
दफा ७	अदालत दाय खफीफा मुफस्सिल	७
दफा ८	अदालत दाय खफीफा बाके बलाद मेसीडसी	७
	हिस्सा १	
	नालिशात अलुलअमूम	
	इस्तिथार समाअत व निजाअ फैसल शुदह	
दफा ९	सिवाय नालिशात ममनूअउलसमाअत के कुल नालि- शात दीवानी काबिल तजवीज अदालत हैं ....	७
दफा १०	इलतुवाय मुकदमा ....	८
दफा ११	रसजुड़ीकीटा ....	८
दफा १२	मुकदमा जदीदका ममनूअउल समाअत होना	९
दफा १३	किन मूरतोंमें तजवीज रियासत गैर नातिक नहीं है	१०
दफा १४	क्यास अदालत निस्वत तजवीज रियासत गैर	१०
	मुकाम इरजाअ नालिश	
दफा १५	किस अदालतमें नालिश दायर होनी चाहिये	१०
दफा १६	नालिश वहां दायर होगी जहां जामेदाद मुतनाजअ वाकै हो ....	११

दफायात	मजामीन	सफ- हात
दफा १७	नालिश निस्वत ऐसी जायदाद गैर मन्कूलाके जो मुख्त- लिफ अदालतोंके इलाकै इस्तिथार में बाकै हो ....	१२
दफा १८	मुकाम रुजूअ नालिश जब कि इस्तिथारातके हद्द अरज़ी गैर मुतयकिन हों ....	१२
दफा १९	नालिशात मअ्याविज़ा बावत नुक्कसान जात या जायदाद मन्कूला ....	१३
दफा २०	दीगर नालिशात वहां दायर होनी चाहिये जहां मुद्आ- अलेह रहताहो या जहां विनाय मुखासिमत पैदाहो ....	१३
दफा २१	उजरदारी निस्वत इस्तिथार समाप्त ....	१५
दफा २२	ऐसे मुकदमातको मुन्तकिल करनेका इस्तिथार जो एक से ज्यादा अदालतों में दायर होसकै ....	१५
दफा २३	किम अदालतमें दख्खान्त इन्तिकाल गुजरेगी ....	१५
दफा २४	इस्तिथार आय मुकदमाको मुन्तकिल करने और वापस लेने का ....	१६
दफा २५	इस्तिथार नव्वाय गवर्नर जनरल बहादुर यजलास कौंसिल निस्वत इन्तिकाल मुकदमात ....	१७
इरजाय नालिशात		
दफा २६	इरजामनालिश ....	१७
सम्मान व इनकिशाफ		
दफा २७	सम्मान बनाम मुद्आअलेह ....	१७
दफा २८	नार्मील सम्मान जब कि मुद्आअलेह किसी दूसरे मूरा में रहताहो ....	१७
दफा २९	नार्मील सम्मान अदालत न्यायमन गैर ....	१८
दफा ३०	इस्तिथार सद्द एम मुतयकिन इन्तिथार हानान दौर ....	१८
दफा ३१	सम्मान बनाम मूरा ....	१८
दफा ३२	मूरा पान्ना अदम नार्मीन ....	१८

दफ्तरान	मजामीन	सफ- हात
	तजवीज व डिगरी	
दफा १३	तजवीज व डिगरी .... ..	१६
	सूद	
दफा १४	डिगरी की रुसे हुकम होयता है कि जर असल डिगरी शुद्ध पर सूद दिलाया जावे .... ..	१६
	खर्चा	
दफा १५	खर्चा .... ..	२०
	हिस्सा २	
	इजराय आम	
दफा १६	अहकाम इजराय डिगरी का अहकामके इजरायसे तअल्लुक	२०
दफा १७	अदालत सादिरकुनिन्दा डिगरी की तारीफ ....	२०
	अदालत हाय इजराय कुनिन्दा डिगरी	
दफा १८	कौन अदालत डिगरी को इजराय करेगी .... ..	२१
दफा १९	डिगरी का मुन्तकिल होना .... ..	२१
दफा ४०	मुन्तकिल होना डिगरी का किसी दूसरे सूवे की अदालत में	२१
दफा ४१	कार्रवाई इजरायके नतीजा की इत्तिला .... ..	२२
दफा ४२	इख्तियारात अदालत निस्वत इजराय डिगरी मुन्त- किल शुद्ध .... ..	२२
दफा ४३	इजराय डिगरी जो ऐसे अदालत अंग्रेजी से सादिर हो जो ऐसे मुकाम में वाकै हो जहां अहकाम मुन्दजै हिस्सा हाजा तअल्लुक पिजीर न हों या जो अदालत रियासत गैर से सादिर हो .... ..	२२
दफा ४४	इजराय उस डिगरी का जो किसी अदालत रियासत हिन्दोस्तानी से सादिर हो .... ..	२२
दफा ४५	डिगरियों का इजराय मुमालिक गैर में .... ..	२३
दफा ४६	प्रेस्पट .... ..	२३



दफ्तरात	मजामीन	सफ- दात
	तनाज़थात काविल तजवीज़ अदालत इजराय कुनिन्दा डिगरी	
दफा ४७	तनाजथात काविल अदालत इजराय कुनिन्दा डिगरी ..	२४
	मीयाद विनावर इजराय	
दफा ४८	डिगरी वा इजराय किन सूरतों में ममनूअर है ....	२४
	मुन्तकिल अलेहुम व कायम मुकामान जायज़	
दफा ४९	मुन्तकिल अलेहुम ....	२५
दफा ५०	कायम मुकाम जायज़ ....	२५
	जावता इजराय	
दफा ५१	इमिनयारात अदालत दरबारह इजराय डिगरी ....	२६
दफा ५२	इजराय डिगरी घनाम कायम मुकाम जायज़ ....	२६
दफा ५३	जिम्म द-री कायम मुकाम जायज़ निस्वत जायदाद मौरुसी ....	२७
दफा ५४	तलमीम मुदालि या जलौदगी हिम्सा ....	२७
	गिरफ्तारी व कैद	
दफा ५५	गिरफ्तारी व कैद मदयन डिगरी वी ....	२७
दफा ५६	इजराय डिगरी जार नहद में कोई अंगन गिरफ्तार या कैद नहीं होसक्तो ..	२८
दफा ५७	जार मुफत ....	२८
दफा ५८	कैद व गिराई ....	२८
दफा ५९	गिराई व बन्धन दीवानी के ....	२९
	कुर्बान	
दफा ६०	मीयाद काविल कुर्बान मीजान अदालत इजराय डिगरी	३१
दफा ६१	कुर्बान इस्तिस्ना व बंद व न गजब मीमा कुर्बान में ....	३३
दफा ६२	कुर्बान जल कायमद वी जो शिर्क करान मजमत में हो ..	३४
दफा ६३	जो मीजान का अदालतों की डिगरी के इजराय में कुर्बान है ....	३४

दफ्तारान	मजामीन	सफ- हात
दफा ६४	इन्तिकाल खानगी जायदद का वाद उसके कुर्र होजाने के बाविल है ....	३५
	नीलाम	
दफा ६५	खरीदार का इस्तद्काक ....	३५
दफा ६६	नालिश बनाम खरीदार इस विनाय पर कि खरीदार मुद्दई की तरफ से की गई मसमूम न होगी ....	३५
दफा ६७	इस्तिथार लोहल गवर्नमेण्ट निस्वत वजा कवाअद मुत-अल्लिक नीलाम अराजी बइल्लत इजराय डिगरी जर नक़द तक्रसीज कियाजाना इस्तिथार इजराय डिगरी जायदाद गैर मनकूला का साहबू	३६
	कलक्टर को	
दफा ६८	इस्तिथार इन जवात कवाअद निस्वत इन्तिकाल इजराय वाज डिगरीयात व साहब कलक्टर ....	३६
दफा ६९	अहकाम जमीमा सोमका तअल्लुक ....	३७
दफा ७०	कवाअद मुतअल्लिक जान्ता ....	३७
दफा ७१	कलक्टर की कार्रवाई अदालताना समझी जायेगी ....	३८
दफा ७२	जिस हाल में कि अदालत इलतुवाय नीलाम अराजी की निस्वत कलक्टरको इजाजत दे ....	३८
	तक्रसीम जर	
दफा ७३	तक्रसीम रसदी मुद्दाबिल नीलाम निस्वत इजराय दरमि-यान डिगरीदारान ....	३८
	मज्जाहिमत इजराय	
दफा ७४	मज्जाहिमत इजराय ....	४०
	हिस्सा ३-	
	कार्रवाई हाय लाहका कमीशन	
दफा ७५	इस्तिथार अदालत निस्वत इजराय कमीशन ....	४०

दफ्तरात	मजामीन	सफ- हात
दफा ७६	कमीशन का दूसरी अदालत में भेजा जाना ....	४१
दफा ७७	चिट्ठी मुतजम्मिन दर्खास्त लेने इजहार गवाह जो बृटिश इण्डिया के बाहर रहताहो ....	४१
दफा ७८	कमीशन जो अदालत हाय गैरको जारी कियेजायें ....	४१
<b>हिस्सा ४</b>		
<b>नालिशात वसूरत हाय खास</b>		
<b>नालिशात अज्र जानिव या बनाम सरकार या अ- फसरान सरकारी वहैसियत अफसरों</b>		
दफा ७९	नालिशात अज्र तरफ या बनाम सरकार ....	४२
दफा ८०	इत्तिनानामा ....	४२
दफा ८१	इस्तिस्नाय गिरफ्तारी और असालतन हाजिरी से ....	४२
दफा ८२	इजराय डिगरी ....	४३
<b>नालिशात अज्र तरफ रिआयाय गैर और अज्र तरफ या बनाम वालियान रियासत हिन्दो- स्तानी और वालियान मुमालिक गैर</b>		
दफा ८३	कर रिआयाय मुमालिकगैर नालिश कर सकेगी ....	४३
दफा ८४	कर रिआयत हाय मुल्क गैर नालिश कर सकेगी ....	४४
दफा ८५	खशनाम जिनको गवर्नमेण्ट बान्ने पैरवी या जवाबदारी काने अज्र तरफ वालियान या रजवाय के तास तौरपर मुकम्मल कर ....	४४
दफा ८६	नालिश बनामबान्ना या गैर या सरफा या एलबीके ....	४५
दफा ८७	नालिशान व रजवाय ता नाम बरगिषत परीय मुहदमा ....	४६
<b>दफा ८८ एंडीटर बानी नालिश व सुगद</b>		
<b>तगिबया व मुल्क मुतनाजईन</b>		
दफा ८९	बद नालिश बनाम रजवाय व मुल्क मुतनाजईन तास सकती है ....	४७

दफ्तार	मजामीन	सफ- हात
	हिस्सा ५ कार्रवाई हाय खास सालसी	
दफा ८६	सालसी .... .... .... ....	४७
	सूरत खास	
दफा ९०	इस्तिथार बयान सूरत मुफद्दमा वास्ते राय अदालतके .... नालिशात मुतअल्लिक माभिलात आम	४८
दफा ९१	अमूर वायस तकलीफ आम .... .... ....	४८
दफा ९२	अशियाय खैरात आम .... .... ....	४८
दफा ९३	निफाज इस्तिथारात एडवोकेट जनरल वेरून वलाद प्रेसीडेंसी.... .... .... ....	४९
	हिस्सा ६ कार्रवाई हाय ज़िमनी	
दफा ९४	कार्रवाई हाय ज़िमती.... .... .... ....	५०
दफा ९५	मअ्माविजा वसवव हसूल गिरफ्तारी या कुर्की या हुक्म इम्तिनाई बवजूह गैर काफ़ी .... .... ....	५०
	हिस्सा ७ अपील अपील ब नाराज़ी डिगरियात इन्तिदाई	
दफा ९६	अपील बनाराज़ी डिगरियात इन्तिदाई .... ....	५१
दफा ९७	अपील बनाराज़ी डिगरी कतई जब कि डिगरी इन्तिदाईका कोई अपील न हो .... .... ....	५२

दफ्तरान	मजामीन	सफ- हात
दफा ६८	तजवीज जबकि अपील की समाप्त दो या इशदद जज करें .... ....	५२
दफा ६९	डिगरी वमवव ऐसी चलती या बेजावगी के जो ख्यदाद मुकदमा या हद इल्लियारात अदालतके मुखिल न हो मं- सूच या बदल न जायेगी .... ....	५३
अपील व नाराज़ी डिगरियात अपील		
दफा १००	अपील सानी .... ....	५३
दफा १०१	अपील सानी किसी और वजह के विनाय पर बहुज बहूह मुन्दजे दफा १०० के खजूस न होगा .... ....	५३
दफा १०२	वाज मुकदमान में अपील सानी नहीं होगा .... ....	५४
दफा १०३	इल्लियार धर्कोर्ट निस्वत तजवीज तन्कीदात ....	५४
अपील व नाराज़ी अहकाम		
दफा १०४	अहकाम जिनकी नाराज़ी में अपील होसकता है ....	५४
दफा १०५	दीगर अहकाम .... ....	५५
दफा १०६	अपील हिम अदालत में मुता जायेगा ....	५५
अहकाम आस मुनअल्लिक अपील		
दफा १०७	इल्लियार अदालत अपील .... ....	५५
दफा १०८	जाना उन अपीलों में जो डिगरियात व अहकाम अपीलकी नाराज़ी में दाखर किये जायें .... ....	५६
अपील बहुज मलिक मुख्यजम बहुजलान वीमल		
दफा १०९	मुख अपील व मुख्य मलिक मुख्यजम वीमलान वीमल दाखर होसकते .... ....	५६
दफा ११०	मलिकान के मुख्यमलिकान .... ....	५७
दफा १११	अपिल अपील दाखर नहीं होसकते ....	५७
दफा ११२	मुख अपील ....	५८

दफा नम्बर	मजमायिन	सफ- हात
<b>हिस्सा ८</b>		
<b>इस्तिस्वाब तजवीज सानी वनिगरानी</b>		
दफा ११३	इस्तिस्वाब अज हाईकोर्ट ....	५८
दफा ११४	दग्वीस्त तजवीज सानी ....	५९
दफा ११५	हाईकोर्ट उन मुकदमात की मिसिल तलब करसक्ती है जिन का अपील हाईकोर्ट में न होसक्ता हो ....	५९
<b>हिस्सा ९</b>		
<b>अहकाम खास मुतअल्लिकै अदालत हाय हाईकोर्ट मुकररह हस्ब सनदशाही</b>		
दफा ११६	हिस्सा हाजा का तअल्लुक सिर्फ बाज हाईकोर्टों से होगा	६०
दफा ११७	मजमूआ हाजा का तअल्लुक हाईकोर्ट से ...	६०
दफा ११८	इस्तिथार इजरायडिगरी फल्ल मुतहक्कि होने खर्चा के	६०
दफा ११९	अशखास गैरमजाज व हज़ूर अदालत तकरीर न करसकेंगे	६०
दफा १२०	अहकाम हाईकोर्ट से मुतअल्लिक नहीं हैं जबकि अदालत मजकूर इस्तिथारात सीगै दीवानीसमाअत इब्तिदाई नाफिज करती हो ...	६१
<b>हिस्सा १०</b>		
<b>क़वाअद</b>		
दफा १२१	क़वाअद मुन्दर्जे जमीमा अव्वल का असर ....	६१
दफा १२२	बाज हाईकोर्टों का इस्तिथार वजा क़वाअद ....	६१
दफा १२३	रूल कमेटियों का तफ़्क़ूर बाज मुक़ामात में ....	६१
दफा १२४	रिपोर्ट कमेटी वखिदमत हाईकोर्ट ....	६३
दफा १२५	दीगर हाईकोर्टों के इस्तिथारात निस्वत वजा क़वाअद	६३
दफा १२६	क़वाअद तावअ मंज़ूरी होंगे ....	६३
दफा १२७	क़वाअद की मुश्तहरी ...	६३
दफा १२८	मामिलात जिनकी निस्वत क़वाअद वजा होसक्ते हैं ....	६४

दफ्ता	मजामीन	सफ- दान
दफा १२९	इस्तिथारात अदालतहाय हार्डकोर्ट मुर्कररा हस्य सनदशाही निस्वत वजा कवायद मुतअल्लिक अपने जाब्ता दीवानी स- माअत इतिदाई के .... .... ६५	६५
दफा १३०	इस्तिथारात दीगर हार्डकोर्ट निस्वत वजा कवायद मुतअल्लिक अमूर दीगर और जाब्ता मजकूर .... .... ६६	६६
दफा १३१	मुश्तहरी कवायद .... .... ६६	६६
<b>हिस्सा ११</b>		
<b>मरातिव मुतफरिक्</b>		
दफा १३२	इस्तिस्नाय वाज मस्तूरातका असालतन हाजिरी अदालतसे	६६
दफा १३३	माफी दीगर अशखास असालतन हाजिरी अदालत से	६६
दफा १३४	गिरफ्तारी बजुज अलत इजराय डिगरी .... ६७	६७
दफा १३५	गिरफ्तारी बत्तामील हुसुमनामा दीवानी से इतिस्नाय .... ६७	६७
दफा १३६	जाब्ता उस सूत में जब कि शख्स गिरफ्तारीतलब या जायदाद मुर्की तलब जिला के बाहर हो .... ६८	६८
दफा १३७	जवान अदालत हाय मानहत .... ६८	६८
दफा १३८	लोकल गर्वनमेन्ट ग्रावत बजवान अंगरेजी कलमबंद किये जाने का हुक्म देसवनी है .... ७०	७०
दफा १३९	जवान हतमी में हलफ कौन अशनास देसवते है .... ७०	७०
दफा १४०	जमेगर बहुरहमान मान बीज बगैरह .... ७०	७०
दफा १४१	हुतफनिह शर्मिर्ह .... ७१	७१
दफा १४२	अदालत व अचलानामजात तहरीरी होंगे .... ७१	७१
दफा १४३	मासुल दात .... ७१	७१
दफा १४४	दस्तवीर निम्न पायवाहन .... ७१	७१
दफा १४५	अमूर बत्ताम तामिन .... ७२	७२
दफा १४६	गमिर्ह भिन्नामिन या बत्ताम दायिमदुनाम .... ७२	७२
दफा १४७	गमिर्ह या अशनास जवान तहरीर अशनास नाराजि .... ७२	७२
दफा १४८	दीवानी मजल .... ७३	७३

दफ्तान	मजामीन	सक- हत
दफा १४६	कोर्ट फीस की कमी का पूरा किया जाना ....	७३
दफा १४७	इन्तिफाल कार्रवाई ....	७३
दफा १४१	इस्तिस्नाय दन्वारह इस्तिथार असली अदालत ....	७३
दफा १४२	तजवीज व डिगरी व हुक्म की तरमीम ....	७४
दफा १४३	इस्तिथार आय निस्वत तरमीम के ....	७४
दफा १४४	इस्तिस्नाय मौजूदा हुक्म अपील का ....	७४
दफा १४५	बाज ऐक्टों की तरमीम ....	७४
दफा १४६	बाज ऐक्टों की तन्सीख ....	७४
दफा १४७	जारी रहना उन अहकाम का जो ऐसे ऐक्टों की खुसे जारी हुयेहों जो अब मन्सूख होगयेहैं ....	७४
दफा १४८	मजमूमा जान्ना दीवानी या किसी दूसरे मन्सूखशुद्दह ऐक्ट की तरफ हवाला ....	७४

## ज़मीमजात

### ज़मीमै अव्वल

### आर्डर ( १ )

### फरीकैन

- १ कौन कौन अशख़ास वजुमरह मुद्दइयान शामिल किये जा-  
सकते हैं .... ७५
- २ इस्तिथार अदालत निस्वत देने हुक्म अलहिदा अलहिदा  
तजवीज मुक़दमा के .... ७५
- ३ कौन २ अशख़ास वजुमरह मुद्दआअलेहुम शामिल किये जा-  
सकते हैं .... ७६
- ४ अदालत फैसला सादिर करसक्ती है वहक़ या वनाम या  
कई मुश्तरिक फ़रीकों के .... ७६
- ५ यह जरूर नहीं कि हरएक मुद्दआअलेह कुलदादरसी मुतदा-  
नियामे गरज रक्खे .... ७६



दफ्त्रात	मजामीन	मज- हान
६	शामिल किया जाना चंद अशखास का जो एकही म- आहिदा की वायत जिम्मेदार हों ....	७६
७	जब मुद्दै को शक हो कि किस शाख्त से दादरसी मिलैगी	७७
८	एक शाख्त जुमला अशखास हकदार की तरफ से नालिश या जवाबदिही करसकता है ....	७७
९	इश्तमाल बेजा और अदम इश्तमाल फरीकैन ....	७७
१०	नालिश जो मुद्दै गलत के नाम से हो ....	७७
११	पैरवी मुकदमा ....	७८
१२	चंद मुद्दयों या मुद्दाअचलेहूम में से एक शाख्त दूसरों की जानिय से हाजिर होसकता है ....	७८
१३	उजरदारी दरबिनाय अदम इश्तमाल या इश्तमाल बेजा फरीकैन ....	७८

## आर्डर ( २ )

## नालिशकी तरतीब

१	नालिशकी तरतीब ....	७८
२	नालिश में तमाम दावा शामिल किया जायेगा ....	७८
३	बिनाय हाय दावा फत शामिल करना ....	८०
४	नालिश दाजथाइन जायदाद व गरमन्कुला में सिर्फ दावा दख्वाही शामिल किये जायते हैं ....	८१
५	दख्वाही घज तरफ या तमाम बन्नीया मोहम्मिम तकी या गारिम के ....	८१
६	उजिरदार अदालत निम्न गरम देने अलहिदा तजवीज के	८२
७	उजरदारी दरबिनाय इश्तमाल बेजा ....	८२

## आर्डर ( ३ )

एजिटवान नती मुन्नागननननननन

शौर नकलाय

वफाजान	मजामीन	सफ- हात
	मक़दूला या बक़ील के होसक्ती है ....	८२
२	एजन्टान मक़दूला ....	८२
३	तामील हुकुमनामा एजन्ट मक़दूलारर ....	८३
४	बक़ील का तक्रूर ....	८३
५	तामील हुकुमनामा बक़ील पर ....	८४
६	एजन्ट हुकुमनामा की त.मील क़बूल करने के लिये ....	८४
आर्डर ( ४ )		
इरजाअ नालिशायत		
१	नालिशों की इन्तिदाय अर्जोदावा से होगी ....	८४
२	रजिस्टर मुक़दमात दीवानी ....	८५
आर्डर ( ५ )		
इजराय व तामील सम्मन		
इजराय सम्मन		
१	सम्मन ....	८५
२	सम्मन के साथ नक़ल अर्जोदावा या बयान मुख्तसिर होना चाहिये ....	८६
३	अदालत मुद्दआअलेह या मुद्दै के असाततन हाज़िर होने का हुक्म देसक्ती है ....	८६
४	किसी फ़रीफ़ के असाततन हाज़िर होनेका हुक्म न दिया जायेगा इल्ला उस सूरत में कि उसकी सकूनत हदूद मुक़ररह के अन्दर हो ....	८६
५	सम्मन वास्ते क़रारदाद अपूर तनफ़ीह तलब के होगा या वास्ते इन्फ़िसाल क़र्तई के ....	८६
६	तक्रूर तारीख वास्ते हाज़िरी मुद्दआअलेह की ....	८७
७	सम्मन में हुक्म होगा कि मुद्दआअलेह जुमला दस्तावेज़ात पेशकरै कि जिनपर वह इस्तदलाल करना चाहता हो ....	८७

दफ्त्रात	मजामीन	सम्मान
८	जब सम्मन वास्ते इन् फिसाल कर्तर्ड के हो उसमें मुद्दामामलेह को हिदायत होगी कि अपने गवाह पेशकरें ....	८७
	तामील सम्मन	
९	हवालगी या डरसाल सम्मन वास्ते तामील सम्मन के	८७
१०	तरीफा तामील .... ....	८८
११	तामील चन्द्रमुद्दाअलेद्दुस् पर ....	८८
१२	तावःडमकान तामील मुद्दाअलेद्दुस्की जातपर होगी वरना उसके कारिन्दा पर होगी ....	८८
१३	तामील कारिन्दा पर कि जिसके जरिये से मुद्दामामलेह कारोबार करताहो ....	८८
१४	नालिशात जायदाद गैरमन्कूलामें तामील एजन्ट मोह्तमिम जायदाद मजदूर पर ....	८८
१५	तामील मुद्दामामलेहके अदालत नानदान अजतिम्मजदूरपर	८९
१६	जिम शकनपर तामीलकीजाये उसको तामील के अदालत पर दस्तगान करने होंगे ....	८९
१७	जाय्ना शगर मुद्दामामलेह सम्मन लेने में इन्कार करे या अस्विकार न हो ....	८९
१८	सम्मन की पुस्तक वस्तु और तर्क तामील लिखना चाहिये	९०
१९	अदालत तामील मुनिन्दा का इशहार ....	९०
२०	तामील बजाय तर्क का माफूनी ....	९०
२१	तामील सम्मन जब मुद्दामामलेह किसी दूसरी अदालत के इलाका में सज्जद करता हो ....	९१
२२	तामील बजाय तर्क तामील और वस्तु में ऐसे सम्मनों की कि न को सज्जद करे अदालत जारी रहे ....	९१
२३	तर्क जब अदालत का हिस्से सम्मन लेता जाये ..	९१
२४	तामील मुद्दामामलेह पर अदालत में ....	९१

क्र.सं.	मजदूरी	सं- ख्यात
२४	तामील जय मुद्रापत्रलेह वृद्धि इण्डिया के बाहर रहता हो और वृद्धि इण्डिया में कोई एजन्ट न रखता हो ....	६२
२५	तामील रियान्तोंमें मार्केट पुलिटिकल एजन्ट या चटालन के	६२
२७	तामील सिविल अफसर सरकारी या मुलाजिम रेलवे कम्पनी या मुलाजिम हुकाम मौकापर . . ....	६३
२८	तामील निपाही पर ....	६३
२९	फर्ज उस शख्स का जिसकी हवाला सम्मन तामील के लिये कियाजाये ....	६३
३०	खत बजाय सम्मन ....	६३

### आर्डर ( ६ )

#### पिलीडिंग असूमन

१	पिलीडिंग ....	६४
२	पिलीडिंग से बाकिआत नफ़स मुकदमा ज़ाहिर होनी चाहिये और उसमें सबूत दाखिल नहीं है- ....	६४
३	पिलीडिंग के फार्म ....	६४
४	पिलीडिंग में दीगर ज़रूरी बातें भी दर्ज की जासकती हैं	६४
५	बयान व तफ़सीलात खरीद उमदा तौरसे ....	६५
६	शर्त मुकदम ....	६५
७	तजावीज़ करना ....	६५
८	इन्कार निस्वत मआहिदा ....	६५
९	असर दस्तावेज़ का बयान करना चाहिये ....	६५
१०	अदावत ....	६६
११	नोटिस ....	६६
१२	मआहिदा या तअल्लुक का मफ़हूम होना ....	६६
१३	क्रयास कानून का ....	६६
१४	पिलीडिंग पर दस्तखत सिब्त होंगे ....	६७
१५	तसदीक पिलीडिंग की ....	६७

दफ्तरात	मजामीन	सफ- हात
१६	इख़राज पिलीडिंग .....	६७
१७	तरमीम पिलीडिंग .....	६७
१८	चाद हुक्म के तरमीम न करना .....	६७
<b>आर्डर ( ७ )</b>		
<b>अर्ज़ीदावा</b>		
१	मरातिव जो अर्ज़ीदावा में मुन्दर्ज होंगे .....	६८
२	मरातिव नालिशत नक़दी में ....	६६
३	मरातिव जब कि शैमुदावहाय नालिश जायदाद गैरमन्कूला हो	६६
४	जब कि मुर्दई वहेसियत कायम मुकामी के नालिश करै	६६
५	मुहम्मामलेह की गरज व जिम्मेदारी जाहिर करना चाहिये	६६
६	बज़ूह इस्तिस्नाय कानून हद सामामत से .....	६६
७	दादरसी की सराहत करना चाहिये .....	६६
८	दादरसी जो अलहिदा बज़ूह पर मुवनी है .....	१००
९	कारवाई चाद मंज़री अर्ज़ीदावा के .....	१००
१०	अर्ज़ीदावा की वापसी .....	१००
११	अर्ज़ीदावा की नामंज़री .....	१०१
१२	कारवाई अर्ज़ीदावा की नामंज़री पर .....	१०१
१३	नामंज़री अर्ज़ीदावा में नये अर्ज़ीदावा का गुजरगनना मम- नूज न होना .....	१०१
<b>दस्तावेज़ात जिनपर अर्ज़ीदावा में</b>		
<b>इस्तदलात किया गया हो</b>		
१४	उन दस्तावेज़ की पेगी जिनकी रियाय पर मुर्दई नालिश करे और दस्तावेज़ात या नक़ल दस्तावेज़ात की श्यालगी	१०२
१५	मुर्दई जाहिर करेगा जब कि दस्तावेज़ात उसके कज्जा में या रियायत में हों .....	१०२
१६	नालिशत परीस्नाय दस्तावेज़ात आबिल मर्राद व प्रमोत्त	१०२
१७	परिस्नाय दस्तावेज़ की पेगी .....	१०२

नम्बर कायदा	मजामीन	तम्बर सफा
१८	दस्तावेजान जो बरबस्त गुजरने चर्जी दावा के पेश न की जाये न लीजानकेगी .....	१०३
आर्डर ( ८ )		
वयान तहरीरी और मुजरा होने का जिक्र		
१	वयान तहरीरी ..... ..	१०३
२	नये वाकिअत की निश्चत खास तौरपर बढस कीजायेगी	१०४
३	इन्कार खास तौरपर करना चाहिये ..... ..	१०४
४	इन्कार करना मजबजब बतौर पर ..... ..	१०४
५	इन्कार करना खास तौर पर ..... ..	१०४
६	वयान तहरीरी में मतलिवा मुजरा तलब की तफसील होना चाहिये ..... ..	१०५
७	जवाब दिही या मुजराई जो जुदागाना बजह पर मुवनी हो	१०७
८	जवाब दिही की बजह जदीद ..... ..	१०७
९	मावाद की फिलीटिंग ..... ..	१०७
१०	कार्रवाई अगर कोई फरीक जिससे वयान तहरीरी तलब हुआ हो दाखिल न करै ... ..	१०७
आर्डर ( ९ )		
जिक्र फरीकैन की हाजिरी का और गैर हाजिरी के नतीजा का		
१	फरीकैन को उस वक्त हाजिर होना चाहिये जो सम्मन में वास्ते हाजिरी व जवाब दिही मुद्आअलेह के मुकर्रर हो	१०८
२	डिसमिस किया जाना मुद्दमा का जब सम्मन की तामील इस बजहसे न हुई हो कि मुद्ईने फीस इजराय दाखिल नहीं की	१०८
३	अगर फरीकैन में से कोई हाजिर न हो तो वह डिसमिस किया जायेगा ..... ..	१०८
४	मुद्ई दूसरी नालिश खूअ करसक्ता है या अदालत ना-	

नम्बर कायदा	मजामीन	नम्बर समा
५	लिश अक्वले को फिर दरकरार रखेगी ....	१०६
६	डिसमिस किया जाना मुकदमा का अगर मुद्दे बजह उस के कि सम्मन गैर तामील शुद्ध वापस आये एकसाल तक जदीद सम्मन जारी कराने की दख्खास्त न दे .	१०६
७	कार्रवाई जब सिर्फ मुद्दे हाजिर हो ....	१०६
८	कार्रवाई जब कि मुद्दाअक्लेह उसरोज हाजिरहो जिसपर समाप्त मुलतवी रखी गईहो और गैरहाजिरी साबिक की बजह काफ़ी बयान करे ....	११०
९	कार्रवाई जब सिर्फ मुद्दाअक्लेह हाजिर हो ....	११०
१०	डिगरी दखिलाफ़ मुद्दे बसबद कदम पैरवी मानअ जदार्द नालिश के है ....	१११
११	कार्रवाई जब कि चंद मुद्दों में से एक या ज़्यादा गैर हाजिर हों ....	१११
१२	कार्रवाई जब कि चंद मुद्दाअक्लेहु में से एक या ज़्यादा गैरहाजिर हों ....	१११
१३	नतीजा गैरहाजिरी का अगर कोई फ़रीक़ जिसको असालतन हाजिर होने का हुक्म हो बिलाबजह काफ़ी गैरहाजिर हो	१११
१४	मन्मुखी बकतफ़ी डिगरी की जो दखिलाफ़ मुद्दाअक्लेह साबिर हुईहो ....	११२
१५	डिगरी वगैर इचिला तरफ़सानी के मन्मुख नहीं बीजायेगी	११२

### आडर ( १० )

फ़रीक़न की ज़वानबंदी अदालत की माफ़िन

१	जिनाप्त हाल निम्न उनके कि बयानान वाकिया पु- नर्जह बिना दिग मुनल्लिफ़ में या इनमे इन्कार है	११२
२	जवानबंदी फ़रीक़ी या किसी शख्स की जिसको फ़रीक़ जाने साथ लाया हो ....	११३
३	जवानबंदी का मुक़ाम लिखा जायेगा	..
४	अगर दखिल जवान देनेसे इन्कारहो या ज़्यादा न देनेसे	..

क्र.सं. क्रमांक	विवरण	नम्बर राशि
<p>ऑर्डर ( ११ )</p> <p>इनकिसाफ हाल और मुआयना</p>		
१	इनकिसाफ हाल वनस्थि बंद सवालान के ....	११४
२	चान २ सवालान पेश किये जायेंगे ....	११
३	खर्चा बंद सवालान का ....	११
४	फारम बंद सवालान का ....	११५
५	बंद सवालान अगर कारपुरेशन यानी जमाअत सनद या- फ्त फरीक हो ....	११
६	उजर निस्वत देने जवाब किसी सवालान के ....	११
७	सवालान को मन्सूख या खारिज करना ....	११
८	वयान हलफी जवाब में और उसका अदस्ताल ....	११
९	वयान हलफी का फार्म जो जवाब न दिया जावे ....	११६
१०	वयान हलफीकी निस्वत एतराज नहीं किया जायेगा ....	११
११	हुक्म निस्वत देने जवाब या जवाब मजीद के ....	११
१२	दख्वास्त वास्ते अफशाय दस्तावेजात के ....	११
१३	दस्तावेजात की निस्वत वयान हलफी ....	११७
१४	पेशी दस्तावेजात की ....	११
१५	दस्तावेजात गुतजकिरह पिलीडिंग या वयानात हलफी का मुआयना ....	११
१६	फार्म इतिला का निस्वत पेश करने के ....	११
१७	अदस्त वास्ते मुआयना के इतिला दीजाये ....	११८
१८	हुक्म निस्वत मुआयना के ....	११
१९	नकूल मुसदिका ....	११९
२०	अफशाय हाल कल्ल अजमलत ....	१२०
२१	अदम तामील हुक्म अफशाय हाल ....	१२०
२२	बंद सवालान के जवाबत वक्त तजवीज मुकदमा इस्ते- माल होंगे ....	१२१



नम्बर क्रायदा	मजमूनीन	नम्बर सफा
२३	आर्डर हाजा का तमल्लुक नावालिगों से आर्डर ( १२ ) अकवाल	१२१
१	इत्तिला अकवाल मुकदमा ....	११
२	इत्तिला अकवाल दस्तावेजात ....	११
३	इत्तिला का फार्म ....	१२२
४	इत्तिला अकवाल वाकिआत ....	११
५	फार्म हाय अकवाल ....	११
६	दजवीज वाद अकवालकी ....	११
७	तहरीर वयान हलफी निस्वत दस्तखत के ....	१२३
८	इत्तिला निस्वत पेशी दस्तावेजात ....	११
९	खर्चा ....	११
आर्डर ( १३ )		
पेशी और जवती और वापसी दस्तावेजात		
१	दस्तावेजात वजह सवूत वरवकत समाअत अव्वल पेशहोना चाहिये ....	१२३
२	नतीजा अदम पेशी दस्तावेजात ....	१२४
३	नामंजूरी दस्तावेजात गैर मुतमल्लिक या ना काविल अदखाल ....	११
४	तहरीर जोहरी दस्तावेजात पर जो वजह सवूत में लीगई हो	११
५	तहरीर जोहरी नकूल इन्दराजात कुतुब व हिसावात व का- गजात पर ....	१२५
६	तहरीर जोहरी उन दस्तावेजात पर जो बजह होने गैरका- विल अदखाल सवूत नामंजूर कीजायें ....	१२६
७	दस्तावेजात दाखिल शुद्ध का शामिल मिसिल कियाजाना और दस्तावेजात नामंजूर शुद्ध का वापस होना ..	..

नम्बर चायदा	मजामीन	नम्बर सफा
८	अदालत किसी दस्तावेजके जवनकरने का हुक्म देसक्ती है	१२६
९	दस्तावेजात दाखिल शुद्धका वापस होना ....	११
१०	अदालत कागजात अपने या और अदालतों के दफ्तर से तलब करसक्ती है ....	१२७
११	अदकाम बायत दस्तावेजात दीगर अशयायमाही से भी मुत- न्नलिक होंगे ....	१२८
ऑर्डर ( १४ )		
करारदाद अमूर तनकीह तलब का और तसफिया मुकद्दमाका ऊपर अमूर तनकीहतलब कानूनी या अमूर तनकीहतलब जिनपर बाहम इत्ति- फाक किया जाये		
१	करार दिया जाना अमूर तनकीहतलब का ....	१२८
२	अमूर तनकीहतलब कानूनी और वाकिआती ...	१२९
३	मवाद जिससे अमूर तनकीहतलब मुरत्तिव किये जासक्ते हैं	११
४	अदालत कब्ल करार देने अमूर तनकीहतलब के गवाहों का इजहार लेसक्ती है और दस्तावेजात का मुआयना कर सक्ती है ....	१३०
५	इस्लियार दरवारह तरमीम और खारिजकरने अमूरतनकीह तलब के ....	११
६	अमूर वाकिआती या कानूनी घजरिये इकरारनामा के बतौर अमूर तनकीहतलब बयान होसक्ते हैं ....	११
७	अदालत फ़ैसला सादिर करसक्ती है अगर उसको इत- मीनान होजाये कि इकरारनामा नेक नीयती से कियागयाहै	१३१
ऑर्डर ( १५ )		
ज़िक उस सूरत का जब मुकद्दमा समाआत अव्वल पर फ़ैसल किया जाये		
१	अगर फ़रीकैन में बहस न हो ...	१३२

नम्बर कायदा	सत्तामीन	नम्बर सहा
२	असरप्रद मुद्दाअजलेदुस् में से किसीएककोइख्तिलाफ न हो	१३२
३	अगर फीमावैन मुतख्वासमीन नहस हो	१३३
४	अदस पेष्टी सबूत	१३४
आर्डर ( १६ )		
गवाहों की तलबी और हाजिरी		
१	सम्पन हाजिरी वास्ते अदाय शहादत या दरपेशी दस्तावेज	१३५
२	युक्त दस्तावेज इजराय सम्पन खर्चा गवाहान अदालत में दाखिल करना चाहिये	१३६
३	खर्चा गवाह को पेशकिया जायेगा	१३७
४	अगर गैर काफ़ी रकम दाखिल कीजाये	१३८
५	हाजिरी के यक्त और मुक़ाम और गरज की सम्पन में स-राहत होगी	१३९
६	सम्पन निरवत पेश करने दस्तावेज के	१४०
७	अशवास हाजिर अदालत को निरवत अदाय शहादत या दरपेशी दस्तावेज के हुकम देने का इख्तियार	१४१
८	सम्पन की तामील किस तरह होगी	१४२
९	तामीन सम्पन का यक्त	१४३
१०	कारिवाई अगर गवाह सम्पन की तामील न करे	१४४
११	अगर गवाह हाजिर हो तो कुर्सी या मुक़ाम हो सकती है	१४५
१२	कारिवाई अगर गवाह हाजिर हो	१४६
१३	कुर्सी का यमीका	१४७
१४	अदालत अपनी मर्जी में ऐसे अजलमानके को ग़ौर गवाह तलब कर सकती है	१४८
१५	अजलमान जिनकेनाम सम्पन जारीदयेगें उनको तलजिम है नि गवाहत में या दस्तावेज पेशकी	१४९
१६	गवाह अदालत में कत गवाहन रोखगें	१५०

नम्बर	कायदा	रजामीन	नम्बर	सका
१७	क्यायद ( १० ) लगायत ( १३ ) का तत्पल्लुक		१३६	
१८	कार्रवाई अगर गवाह गिरफ्तार मुक्त शहादन अदा या द- रतायेज पेश न करनरै	....	१३७	
१९	किसी शख्स को अदालतन हाजिरी का हुक्म न देना चा- हिये इल्ला उम इरत में कि वह हद्द मुकर्ररह के अन्दर रहताहो	....	१३८	
२०	कार्रवाई अगर अदालत में हुक्म होने पर फरीक शहादत देने से इन्कार करै	....	१३९	
२१	कवाचदवायत गवाहान फरीकैन तलबशुदहसे मुतआल्लिकहोंगे आर्डर ( १७ )		१४०	
	इलतुवाय			
१	अदालत मोदलत देसक्ती है और समाअत मुकदमा मुलतवी करसक्ती है	....	१४१	
२	अगर फरीकैन वरोज मुकर्ररह हाजिरहों	....	१४२	
३	अदालत मुकदमा फैसल करसक्ती है गोकि कोई फरीक वजह सबूत वगैरह पेश न करै	....	१४३	
	आर्डर ( १८ )			
	बाबत समाअत मुकदमा और लेने इजहा- रात गवाहों के			
१	शुरूअ करने का इस्तहकाफ	....	१४४	
२	हालात मुकदमा का वयान और वजह सबूत पेश करना		१४५	
३	सबूत अगर चंद अमूर तनकीहतलव हीं	....	१४६	
४	गवाहोंका इजहार सरेइजलास होगा	....	१४७	
५	मुकदमात काविल अपील में इजहार किस तरीकापर लिया जायेगा	....	१४८	

नम्बर क्रायदा	मजामीन	नम्बर सफा
६	इजहार का तर्जुमा किस सूरत में सुनाया जायेगा	१४२
७	फार्म इजहार हस्व दफा १३८ ....	१४३
८	इजहार का खुलासा अगर जज खुद इजहार न लिखे	११
९	इजहार जवान अंग्रेजी में किस सूरत में लिखा जायेगा	११
१०	कोई खास सवाल व जवाब कलम बंद होसकता है	११
११	सवालात जिनपर एतराज हो और अदालत उनका पूछना जायज रखे ....	११
१२	राय निस्वत वजा गवाहान ....	१४४
१३	इजहार का खुलासा मुकदमात गैर काबिल अपील में ....	११
१४	अगर जज खुलासा इजहार लिखने से माजूर हो तो माजुरी की वजह लिखेगा ....	११
१५	जज का इख्तियार निस्वत कार्रवाई मुतमल्लिक उस इजहार के जो किसी दूसरे जज ने कलम बंद किया हो	११
१६	गवाह का इजहार फौरन लिया जासकता है ...	१४५
१७	अदालत गवाहको फिर तलब करसक्ती है और इजहार ले सक्ती है ....	११
१८	इख्तियारात अदालत निस्वत मुआयना के आर्डर ( १९ )	११
तहरीरी वयान हलफी		
१	इख्तियार सदूर हुक्म निस्वत इसके कि कोई खास अम्र तहरीरी वयान हलफी की रुसे साबित कियाजाये	१४६
२	हुक्म निस्वत हाजिरी तहरीर कुनिन्दा वयान हलफी के सवालान के जिरह के लिये ....	१४६
३	तहरीरी वयान हलफी किन अमूरपर महदूद हैं ....	११
आर्डर ( २० )		
तजवीज और डिगरी		
१	तजवीज का सुनाई जायेगी . ....	१४७

नम्बर क्रमांक	मजामीन	नम्बर सफा
२	इन्जियार ऐमी तजवीज गुनानेका जो जज साबिकने लिखीहो	१४७
३	तजवीज पर दस्तखत दिये जायेंगे ....	११
४	अदालत मनालिबा रफूफा की तजवीज ....	११
५	अदालत अपना तसफिया हर अम्र तनक्रीह तलब की नि- स्वत लिखेगी ....	११
६	डिगरी में क्या २ बाँत दर्ज होंगी ....	११
७	डिगरी की तारीख ....	१४८
८	फारिवाँ उस सूरत में कि जब जज डिगरी पर दस्तखत करने से पहले अपने ओहदा से अलहिदा होजाये	११
९	डिगरी निस्वत बाजयाफ्त जायदाद गैर मन्कूला ..	११
१०	डिगरी निस्वत हवालगो जायदाद मन्कूला ....	११
११	डिगरी में हुक्म होसक्ता है कि रुपया बसधील फ़िस्त वंदी अदा किया जाये ....	१४९
१२	डिगरी मुतमल्लिक कब्जा व जर वासिलात ....	११
१३	डिगरी नालिशान इन्तिजाम जायदाद में ....	१५०
१४	डिगरी नालिश हकशफ़्त में ....	११
१५	डिगरी नालिश फ़िस्व शराकत में ....	१५१
१६	डिगरी नालिश हिसाब फ़हमीमें जो दरमियान सालिक और एजन्ट के हो ....	१५२
१७	हिदायात खास निस्वत हिसाब के ....	१५२
१८	डिगरी उस नालिश में जो तकसीम जायदाद अलहिदगी हिस्सा की वावतहो ....	११
१९	डिगरी अगर कुछ मुजरा दिलाया जाये ....	१५३
२०	तजवीज और डिगरी की मुसदिका नक़लें मिल सकेंगी आर्डर ( २१ )	११
१	तरीका अदाय जर डिगरी ....	१५४
२	अदाय जर डिगरी बेख़ुश अदालत ....	११

नम्बर क्रायदा	मजायीन	नम्बर समा
	अदालत जारी कुनिन्दा डिगरी	
३	अराजी जो एकसे ज्यादा इलाका में हो ....	१५५
४	इन्तिकाल तामील अदालत मतालिवाजात खकीफा में	॥
५	तरीका इन्तिकाल ....	॥
६	कारवाई अगर अदालत अपनी डिगरी का इजराय दूसरी अदालत से कराना चाहै ....	१५६
७	अदालत याबिन्दह नकूल डिगरी व सार्टीफिकेट उन्हें बिला सबूत नत्थी करालेवेगी ....	॥
८	इजराय डिगरी या हुक्म उस अदालत की मार्फत जिसमें वह मुसिल हो ....	॥
९	इजराय मार्फत हाईकोर्ट दूसरी अदालत की डिगरी का दख्वास्त इजराय	॥
१०	दख्वास्त इजराय ....	१५७
११	दख्वास्त जवानी ....	॥
१२	दख्वास्त कुर्कीमाल मन्कूला जो मदयून डिगरीके कब्जामें न हो	१५८
१३	दख्वास्त कुर्कीमाल गैर मन्कूलामें किन अमूरकी सराहत होगी	॥
१४	अदालत वाज सूरतों में दफ्तर कलक्टर के रजिस्टर का इन्तिखाव मुसद्दिका पेश करने का हुक्म देसक्ती है	१५९
१५	दख्वास्त इजराय अज तरफ डिगरीदार शरीक ....	॥
१६	दख्वास्त इजराय डिगरी अज तरफ मुन्तकिल भलेह	॥
१७	कारवाई वक्त गुजरने दख्वास्त इजराय डिगरीके	१६०
१८	फायिल मुजरई डिगरी का इजराय ....	१६१
१९	फायिल मुजरई दयायी का इजराय जो एकही डिगरी के वफ़ाजिय हों ....	१६२
२०	डिगरीयात व दयायी वायत डिगरी नालिशान रेटन में	१६३
२१	एकही वक्त में डिगरी का इजराय जात और मदयून पर	॥
२२	इतिनामामा वायत इन्दार वजह निम्न इजराय के वात	

नम्बर क्रायदा	मजमूचान	नम्बर सफा
	सूक्तों में .... .... ...	१६३
२३	कारवाई बाढ जारी होने इच्छितानामा के हुकुमनामा इजराय डिगरी	१६४
२४	हुकुमनामा इजराय डिगरी .... ....	१६४
२५	इन्दराज कैपियन पुरत हुकुमनामा पर इलतुवाय इजराय डिगरी	१६५
२६	अदालत इजराय को कब मुलतवी करसक्ती है	१६५
२७	गिरफ्तारी मुक्करर मदयून डिगरी रिहाई याफता की	१६६
२८	पावंदी हुकम अदालत सादिर कुनिन्दा डिगरी या अदालत अपील की उस उस अदालत पर जिसमें दर्ज्वास्त गुजरी	१६६
२९	इलतुवाय इजराय ताइनफिसाल नालिश मावैन डिगरीदार व मदयून डिगरी .... ....	१६६
	तरीका इजराय	
३०	डिगरी जर नक्रद का इजराय .... ....	१६६
३१	इजराय डिगरी का जो वास्त किसी खास शैमन्कूला के हो	१६७
३२	इजराय डिगरी का जो वास्ते तामील खास या दिलायेजाने हकूक अज दुवाज या हुकम इम्तिनाई के हो ....	१६७
३३	इस्लियार अदालत निस्वत इजराय डिगरी के जो वास्ते दिलायेजाने हकूक अज दुवाज के हो ....	१६८
३४	इजराय डिगरी का जो वास्ते तकमील दस्तावेजात काविल वैवशिशराके हो ....	१७०
३५	इजराय डिगरी का जो निस्वत जायदाद गैर मन्कूला के हो	१७१
३६	इजराय डिगरी का जो वास्ते दिलाये जाने जायदाद गैर मन्कूला के हो जब कि जायदाद वक्रब्जा आसामी हो	१७२
३७	गिरफ्तारी और कैद जेलखाना दीवानी में इस्लियार तमीजी निस्वत इजाजत देने मदयून डिगरी के	



नम्बर कायदा	मजामीन	नम्बर सफा
३८	कि वह बजह दिखलाये कि क्यों कैद न किया जाय वारन्ट गिरफ्तारी मदयून डिगरी व हिदायत उसके कि वह हाजिर लाया जाये .... .... ॥	१७२
३९	जर खराक मदयून डिगरी .... .... ॥	१७३
४०	कारवाई अगर मदयून डिगरी बमूजिव इतिलानामा के या गिरफ्तार होकर हाजिर हो .... .... ॥	१७४
<b>कुर्की जायदाद</b>		
४१	इजहार मदयून डिगरी का निस्वत उसकी जायदाद के	१७५
४२	कुर्की दरसूरत डिगरीजर लगान या जर वासिलात या मा- मिला दीगर के जिसकी तादाद बाद को मुतहकिक हो	१७६
४३	कुर्की जायदाद मन्कूला गैर पैदावार जिराअत जिसपर मद- यून डिगरी काबिज हो .... .... ॥	१७७
४४	कुर्की पैदावार जिराअत की .... .... ॥	१७८
४५	अहकाम दरवारह पैदावार जिराअत मकरूका ....	१७९
४६	कुर्की कर्जा और हिस्सा और दीगर जायदाद की जो मद- यून डिगरी के कब्जा में न हो .... .... १८०	१८०
४७	कुर्की हिस्सा माल मन्कूला .... .... १८१	१८१
४८	कुर्की तनख्वाह या अलाउन्स अफसर सरकारी या मुलाजिम रेलवे कम्पनी या मुलाजिम हाकिम मौकाकी .... १८२	१८२
४९	कुर्की जायदाद शिराकती .... .... १८३	१८३
५०	इजगय डिगरी बमुदायिले दूकान शिराकती .... १८४	१८४
५१	कुर्की दरवायज काबिल बेवदिशग .... .... १८५	१८५
५२	कुर्की जायदाद की जो अदालत या अदलवार सकार की दियात में हो .... .... १८६	१८६
५३	कुर्की डिगरी की .... .... १८७	१८७
५४	कुर्की जायदाद गैर मन्कूला की .... .... १८८	१८८

नम्बर जायदा	मजायीन	नम्बर नका
५५	वागुजाश्त कुर्की बादईफाय डिगरी ....	१८५
५६	हुक्म बावत इसके कि सिका या करन्सी नोट मकरूका फरीक मुस्तहकको दियाजाये ....	११
५७	इस्तिताम कुर्की ....	१८६
दआवी दरउज़रात की तहकीकात		
५८	तहकीकात दआवी व उज़रात निस्वतकुर्की जायदाद मकरूकाकी	१८६
५९	दावीदारको सवूत पेश करना होगा ....	११
६०	कुर्की से जायदादकी वागुजाश्त अगर उज़रदारी मंज़ूरहो	११
६१	दावा की नामंजूरी ....	१८७
६२	वहिफ़ज हक़देनदार कुर्कीका वहाल रहना ....	११
६३	हिफ़ाजत उन दआवीकी जो जायदाद मकरूकामें इस्तहकाक कायम करनेकी बावत हों ....	११
नीलाम अमूमन		
६४	इस्तिथार इसदार हुक्म निस्वत इसके कि जायदाद मकरूका नीलाम कीजाय और ज़र सम्मन शख्स मुतहक्कि को दियाजाये ....	१८७
६५	नीलाम किसके ज़रिये से और क्योंकर होगा ....	१८८
६६	इश्तहार नीलाम आम ....	१८८
६७	इश्तहारके मुश्तहर करने का तरीका ....	१८९
६८	वक्त नीलाम ....	११
६९	इलतुवाय और मौकूफी नीलाम ....	१९०
७०	वाज़ नीलाम इन क़वाअद से मुस्तस्ना हैं ....	११
७१	वाकीदार खरीदार जिम्मेदार उस नुक़सानकोहै जो मुर्करर नीलामसे बाक़ै हो ....	११
७२	डिगरीदार विलाहसूल इजाज़त नीलाम में बोली नहीं बोलसक्ता और न खरीद सक्ता है ....	१९१
७३	मोहदादारान नीलाम न बोली बोले सकते हैं और न	

नम्बर कायदा	मजामीन	नम्बर सफा
	खरीद सकते हैं ..... १६१	
	<b>जायदाद मन्कूला का नीलाम</b>	
७४	नीलाम पैदावार ज़िराअत का ..... १६२	
७५	शरायत खास निस्वत नीलाम फ़स्ल इस्तादहकी ..... "	
७६	नीलाम दस्तावेजात काबिल वैवशिशरा व हिस्सा जमाअत सनदयाप्रता का ..... १६३	
७७	नीलाम आम ..... "	
७८	वेजान्तगी से नीलाम जायदाद मन्कूला का नाजायज़ न होगा लेकिन शख्स जरूर रसीदह नालिश करसक्ता है ..... "	
७९	सिपुर्देगी जायदाद मन्कूला और देन और हिस्सा नीलामीकी ..... १६४	
८०	इन्तिकाल दस्तावेज काबिल वैवशिशरा और हिस्सा नीलामी का ..... "	
८१	हुकम हवालगी और सूरत जायदाद अज़ किसिम दीगर के <b>नीलाम जायदाद गैर मन्कूला</b> ..... १६५	
८२	कौन अदालतें नीलाम का हुकम देसक्ती हैं ..... १६५	
८३	इलतुबाय नीलाम जायदाद गैरमन्कूला ताकि मदयून डिगरी जर डिगरी का इन्तिजाम करसकें ..... "	
८४	रुपया जमा किया जाना अजतरफ़ खरीदार और दरसूरत जमा न करने के फिर नीलाम किया जाना ..... १६६	
८५	मीयाद बिनावर अदाय काभिल जर सम्मनके ... १६७	
८६	कार्गवाई दर सूरत अदम अदाय जर सम्मन ..... "	
८७	इस्तदार दर सूरत नीलाम मुक़र्रर ..... "	
८८	हिस्सादारकी बोलीकी तरजीह होगी ..... "	
८९	रुपया दाखिल करनेपर दल्वास्त इनफ़िमान नीलाम ..... "	
९०	दल्वास्त इनफ़िमान बरबिनाय वेजान्तगी या फ़रेव ..... १६८	
९१	दल्वास्त रागीदार निस्वत इस्मदाद नीलाम बर बिनाय	

नम्बर कायदा	मजाहीन	नम्बर सफा
	उम्मे कि मद्यून दुरु कादिल नीलाम न रसता घा ....	१६८
६२	कब नीलाम नातिक या मन्सूख होगा.... ....	१६९
६३	जर मस्मनकी वापसी बाज़ सूनों में ... ..	११
६४	खरीदारको मार्टिफिकेट मिलेगा .... ....	११
६५	हवालगी जायदाद नीलामी जो बकूज़ा मद्यूनहो ....	२००
६६	हवालगी जायदाद नीलामी जो बकूज़ा असामी हो ....	११
मजाहिमत दर बारह हवालगी कूज़ा डिगरी- दार खरीदारको		
६७	मजाहिमत या तअर्रुज निस्वत कूज़ा जायदाद गैर मन्कूला नीलामी की .... ....	२००
६८	तअर्रुज या मजाहिमत मिनजानिव मद्यून डिगरी ....	२०१
६९	तअर्रुज या मजाहिमत मिनजानिव दावीदार नेक नीयत ....	११
१००	वेदखली मिनजानिव डिगरीदार या खरीदार ....	११
१०१	दावीदार नेकनीयत को कूज़ा वापस दिलाया जावेगा ....	२०२
१०२	क़वाअद मुन्तक़िलअलेह दौरान नालिशसे मुतअल्लिक नहीं हैं	२०२
१०३	तावअ नालिश नम्बरीके अहकाम क़तई होंगे .... ....	११

### आर्डर ( २२ )

वफ़ात और शादी और दीवाला निकलना

फ़रीक़ हाथ मुक़दमा

१	फ़रीक़के फ़ौत होने से मुक़दमा साक़ित न होजायेगा वशर्ते कि इस्तहकाक़ नालिश कायम रहै .... ....	२०२
२	जावता जब कि चंद मुद्इयान या मुद्आअलेहुम् में से कोई मरजाय और इस्तहकाक़ नालिश कायम रहै ....	२०३
३	जावता जब कि चंद मुद्इयान में से कोई मुद्ई वाहिद फ़ौत होज़ाय .... ....	११
४	जावता जब कि चंद मुद्आअलेहुम् में से एक या मुद्आअलेह	

नम्बर कायदा	मजामीन	नम्बर सफा
५	बाहिद या एकही जिन्दा रहा हुआ मुद्दाअलेह फौत हो जाय ज़ाव्ता जब कि यह निज़ाअहो कि मुद्दई या मुद्दाअलेह गुत वफ़्फ़ी का कायम मुक़ाम जायज कौन है .... २०३	
६	अगर बाद इस्तिताय समाअत मुक़दमा कोई फ़रीक़ फौत हो जाय तो मुक़दमा साकित नहीं होगा .... २०४	
७	औरत फ़रीक़ की शादी की वजहसे मुक़दमा साकित नहीं होगा .... ११	
८	किस सूरत में मुद्दई का दीवाला हारिज मुक़दमा होगा .... २०५	
९	मुक़दमा के साकित और डिसमिस होजानेका असर .... ११	
१०	ज़ाव्ता जब कि किसी हक़ का इन्तिकाल कबल सुनाने हुक्म कर्तई के किया जाये .... २०६	
११	आर्डर हाज़ाका तअल्लुक अपील से .... ११	
१२	आर्डर हाज़ा का तअल्लुक कार्रवाई इजराय डिगरी से .... ११	
<b>आर्डर ( २३ )</b>		
<b>वाज़ दावा और तस्फ़िया नालिशत</b>		
१	वाज़ दावा मुक़दमा या जुज़व दावासे वाज़ आना .... २०६	
२	नालिशात साबिक़का कानून तमादीअध्याममें ग़ैर मौसूरहोना २०७	
३	फ़ैमला बाहमी नालिश का .... ११	
४	आर्डर हाज़ा से कार्रवाई इजराय डिगरी ग़ैर मौसूर रहेंगी .... ११	
<b>आर्डर ( २४ )</b>		
<b>अदालत में रुपया का दाख़िल होना</b>		
१	ईफ़ाय दावा में मुद्दाअलेह रुपया बतौर अमानत दाख़िल कर सकता है .... २०८	
२	इत्तिला ज़र अमानत दाख़िल शुद्धकी .... ११	
३	ज़र अमानत पर मुद्दई को इत्तिलाके बाद मुद्द न दिलाया जावेगा .... ११	
४	कार्रवाई अगर मुद्दई ज़र अमानत को बर्फ़ाय जुज़व दावा के तबल पर .... ११	

नम्बर क्रमांक	प्रश्नोत्तर	नम्बर संका
	<p>ऑर्डर ( २५ )</p> <p>तर्जकी जमानत</p>	
१	किस सूरत में मुद्दे से तर्जकी जमानत तलब की जा सकती है	२१०
२	जमानत दाखिल करने का नतीजा ....	"
	<p>ऑर्डर ( २६ )</p> <p>कमीशन</p> <p>कमीशन वास्ते लेने इजहार गवाहों के</p>	
१	किन सूरतों में अदालत कमीशन वास्ते लेने इजहार गवाहान के जारी कर सकती है ....	२११
२	हुक्म निस्वत इजराय कमीशन ....	"
३	अगर गवाह अदालत के इलाका में रहता हो तो कमीशन किसके नाम जारी होगा ....	"
४	किन लोगों के वास्ते कमीशन जारी हो सकता है ....	२१२
५	कमीशन यारेक्यूस्ट विनावर लेने इजहार गवाहों के जो ब्रिटिश इण्डिया के बाहर रहता हो ....	"
६	जिस अदालत में कमीशन भेजा जाय उसको चाहिये कि कमीशन के मुताबिक गवाहों के इजहार ले ....	"
७	वापसी कमीशन की मये वयान गवाहों के ....	२१३
८	किस सूरत में गवाहों के वयान सबूत में लिया जा सकता है ...	"
	कमीशन अग्रज तहकीकात मौका	
९	कमीशन अग्रज तहकीकात मौका ....	२१४
१०	जायता अहल कमीशन ....	"
	कमीशन वास्ते जांच हिसाबों के	
११	कमीशन अग्रज जांच या तस्फिया हिसाबों के ...	२१५

नम्बर कायदा	मजामीन	नम्बर सक्रा
१२	अदालत वनाम कमिशनर हिदायत जरूरी सादिर करैगी.... कमीशन बटवारा	२१५
१३	कमीशन बटवारा जायदाद गैर मन्कूला ....	११
१३	जाव्ता अहल कमीशन ....	११
	अहकाम आम	
१५	कमीशन का खर्चा अदालत में दाखिल होना चाहिये ....	२१६
१६	इस्तिनयारात अहली कमीशन ....	२१७
१७	अहकाम निस्वत हाजिरी और इजहार गवाहान और अहल कमीशन के ....	११
१८	फरीकैन को अहल कमीशनके स्वरु हाजिर होना चाहिये ...	११
	आर्डर ( २७ )	
	नालिशात अज जानिव या वनाम सरकार या ओहदादारान सरकार बहैसियत ओहदादार	
१	नालिश अज तरफ या वनाम सरकार ....	२१८
२	अशखाम जो अज जानिव गवर्नमेण्ट पैरवी करने के मजाज होंगे ....	११
३	अर्जादाया नालिशान अज तरफ या वनाम सरकार ....	११
४	एजन्ट भिनजानिव सरकार इकुमनामा बमूल करेगा ....	११
५	तर्कर तारीफ वाम्ते हाजिरी अज जानिव सरकार ....	२१९
६	हाजिरी उम शलम की जो मुकदमात वनाम सरकार में मवाल प जवाब देसके ....	११
७	तौमीम मुदन ताकि ओहदादार सरकार गवर्नमेण्ट से इस्मि- न्याय बमसके ....	११
८	जान्ना उन नालिशों में जो वनाम ओहदादार सरकार हों	"

नम्बर क्रायदा	मजामीन	नम्बर सफा
	<p>आर्डर ( २८ )</p> <p>नालिशात अज़ तरफ़ और बनाम</p> <p>मुलाज़िमान फ़ौज</p>	
१	अफसर या सिपाही जो रुख़सत न पासक्ता हो किसी शख्स को मुकदमा की पैरवी या जवाबदिही करने के लिये मुखतार मुक़रर करसक्ता है ....	२२०
२	शख्स इख्तियार याफ़ता असालतन काग करसक्ता है या वकील मुक़रर करसक्ता है ....	२२१
३	जो तामील शख्स इख्तियार याफ़ता या उसके वकील पर हो वह मौसर होगी ....	११
	<p>आर्डर ( २९ )</p> <p>नालिशात अज़ तरफ़ और बनाम जमाअत</p> <p>हाय सनदयाफ़ता</p>	
१	दस्तखत और तसदीक़ पिलीडिंग ....	२२१
२	तामील जमाअत सनद याफ़ता पर किसतरह होगी ....	२२२
३	हुक़म निस्वत असालतन-हाज़िरी अफसर जमाअत सनद याफ़ता के ....	११
	<p>आर्डर ( ३० )</p> <p>नालिशात अज़तरफ़ या बनाम कारखानजात और</p> <p>उन अशखास के जो अपने नाम के सिवाय किसी</p> <p>और नाम से कारोबार करते हों</p>	
१	शुरकाय कारखाना के नाम से नालिश करसक्ते हैं ...	२२२
२	मुद्दयान को शुरकाय का नाम जाहिर करदेना लाज़िम है	२२३
३	तामील सम्मन किसतरह होगी ....	११
४	हक़ नालिश बाइ वफ़ात शरीक के ....	२२४



नम्बर कायदा	मजामीन	नम्बर संज्ञा
५	इत्तिला उस मजमूनकी कि तभील सम्मन किस हैसियत से हुये	२२४
६	शुरकाय की हाजिरी	२२५
७	शुरकाय के सिवाय किसी और शख्स की हाजिरी न होगी	॥
८	हाजिरी उजरदारी के साथ	॥
९	नालिशात मिन जानिब शुरकाय	॥
१०	नालिश वनाम ऐसे शख्स के जो अपने नाम के सिवाय किसी और के नाम से कारोबार करते हो	॥

### आर्डर ( ३१ )

नालिशात मिन जानिब और वनाम उमनाय और  
औसियाथ और मोहतमिमान तर्की के

१	कायम मुक्कामी अशखास मुस्तहक इन्तिफाअ मुकदमात जा- यदाद में जो उमनाय वगैरह की सिपुर्दगी में हो	२२६
२	इश्तमाल अमीन और वमी और मोहतमिमतर्की	॥
३	शौहर औरत मनकूदा अमीना का फरीक मुकदमा न क्रिया जायेगा	॥

### आर्डर ( ३२ )

नालिशात मिन जानिब और वनाम अशखास  
नावालिग और फातिखल अकल के

१	नावालिग की तरफ से नालिश मारफत उसके रफीकके होगी	२२७
२	अगर नालिग बिला तबस्नुत रफीक के दायर फीजाये तो मर्जादाया फेहरिस्त में शामिल किया जायेगा	॥
३	नावालिग मुत्तमायलेर के लिये बली दौगन मुकदमा अ- दालतकी तरफ से मुफर्र होगा	॥
४	रौन शफन वतीर मर्फीक कागवाडि करेगा बली दौगन मु- कदमा होगा	२२८

नम्बर कायदा	मजामीन	नम्बर सफा
५	कायम मुक़ामी नावालिग वजरिये रफ़ीक़ या बली दौरान मुक़दमाकी .... २२६	
६	बग़ली जायदाद डिगरी शुद्ध बहक़ नावालिग के भिनजा- निव रफ़ीक़ या बली दौरान मुक़दमाके .... "	
७	मजामिदा या मुल्तदनामा अज़ तरफ़ रफ़ीक़ या बली दौ- रान मुक़दमा .... २३०	
८	रफ़ीक़की दस्तवरदारी .... "	
९	रफ़ीक़की मौक़ूफी .... "	
१०	इलतुबाय कार्रवाई अगर रफ़ीक़ मौक़ूफ़ बग़ैरह होजाये .... २३१	
११	बली दौरान मुक़दमाकी दस्तवरदारी या मौक़ूफी या वफ़ात .... "	
१२	तरीका जो मुद्दै या दर्र्वास्तकुनिन्दा वालिग होने पर इख़्तियारकरैगा .... २३२	
१३	अगर कोई शरीक मुद्दै बाद सिन बलोगके पहुँचने के मुक़दमा से दस्तवरदार होना चाहै .... २३३	
१४	नालिश जो बवजह माकूल न हो या नामुनासिवहो .... "	
१५	कवाअद का तअल्लुक अशरवास फातिरुल् अक्ल से .... २३४	
१६	इस्तिस्नाथ वालियानखुद मुख्तार और रूसायकी सूरत में .... "	

### आर्डर ( ३३ )

#### नालिशात मुफलिसी

१	नालिशात धसीगै मुफलिसी खूज होसकी हैं .... २३४
२	मजमून दर्र्वास्त .... २३५
३	दरपेशी दर्र्वास्त .... "
४	सायल का इजहार .... "
५	दर्र्वास्तकी नामजुरी .... "
६	इत्तिला तारीखकी जो वास्ते लेने शहादत निस्वत मुफलिसी सायलकी मुकरर कीजाये .... २३६
७	कारिवाई बहक समाअत .... "

नम्बर क्रायदा	मजामीन	नम्बर सरा
८	कार्रवाई अगर दर्खास्त मंजूर कीजाये .... ..	२३७
९	मुफलिसी का फिस्व होना .... ..	११
१०	खर्चा अगर मुफलिस कामियावहो .... ..	११
११	कार्रवाई अगर मुफलिस कामियाव न हो .... ..	११
१२	गवर्नमेण्ट वास्ते अदाय रसूम अदालतके दर्खास्त करसक्तीहै २३८	
१३	गवर्नमेण्ट फरीक मुकदमा समझी जासक्तीहै ... ..	११
१४	नक़ल डिगरी की साहब कलक्टर के पास भेजीजायेगी....	११
१५	अगर दर्खास्त इस्तजाजत नालिश मुफलिसाना नामंजूर कीजाय तो उस किस्मकी हर दर्खास्त मावाद नामंजूर होगी ११	
१६	खर्चा .... ..	२३८

### आर्डर ( ३४ )

#### नालिश वावत रेहन जायदाद गैरमन्कूला

१	फरीक नालिश वावत वैवात व नीलाम व इनफिकाक रेहनके २३९	
२	डिगरी इन्तिदाई नालिश वैवात में .... ..	११
३	डिगरी अखीर नालिश वैवात में .... ..	२४०
४	डिगरी इन्तिदाई नालिश नीलाम में .... ..	२४१
५	डिगरी अखीर नालिश नीलाम में ... ..	२४२
६	वसूल बाकी जरयाफ्तनी का .... ..	११
७	डिगरी इन्तिदाई नालिश इनफिकाक रेहन में .. ..	११
८	डिगरी अखीर नालिश इनफिकाक रेहनमें .... ..	२४३
९	डिगरी अगर कुछ याफ्तनी न निकलै या रेहन से जायद रसूम अदा होगईहो .... ..	२४४
१०	खर्चा मुर्तगिन मा वाद डिगरी .... ..	२४५
११	इस्तहज़ाक मुर्तगिन दरमियानी निस्वत फ़हुन रेहन व वैवात ११	
१२	नीलाम जायदाद .... ..	११
१३	जर नीलाम किमतग्न नफ़्द होगा .... ..	११
१४	जायदाद मरहना के नीलाम जगने के नामने नालिश	

नम्बर कायदा	मजामीन	नम्बर सफा
	नीलाय जरूरी है .... .... २४६	
१५	आर्डर हाजा दीनर मवाखिज्जान से मुतम्मलिक होगा .... २४७	
	आर्डर ( ३५ )	
	इएटर पिलीडर यानी नालिश वमुराद तरिफ़या बैनुलमुतनाज़ईन	
१	अजीदावा नालिश वमुराद तरिफ़या बैनुल मुतनाज़ईन में २४७	
२	शैमुतदाविया का अदालत की तहवील में रक्खा जाना .... "	
३	कारिवाई अगर मुदआमलैह मुद्ई पर नालिश करै .... "	
४	कारिवाई वरवक्त समाअत अव्वल .... २४८	
५	एजन्ट और आसामी नालिश तरिफ़या बैनुल मुतनाज़ईन रजूअ नहीं करसक्ते .... .. "	
६	मुद्ई के खर्चा का मवाखिज्जह ... .... ४६	
	आर्डर ( ३६ )	
	सूरत खास	
१	इख्तियार निस्वत पेश करने किसी अम्र के बतौर मुक़दमा वास्ते राय अदालत के .... .... २४९	
२	इक़रारनामा में मालियत शै मुतनाज़िआ की दर्ज कीजायेगी २५०	
३	इक़रार नामा दाखिल होगा और उसपर नम्बर मुक़दमा डाला जायेगा .... .... "	
४	फ़रीक़ैन तहत इख्तियार अदालत होंगे .... २५१	
५	समामत और इनफ़िसाल मुक़दमा .... .. "	
	आर्डर ( ३७ )	
	ज़ाबता सरसरी निस्वत दस्तावेज़ात काबिल ख़रीद व फ़रोख्त	
१	तम्मलुक़ आर्डर हाजा .... .... २५१	
२	इरजाम नालिशात सरसरी वरविनाय विलआफ़ एकरा	

नम्बर क्रायदा	मजामीन	नम्बर सफा
	चेंज वगैरह .... २५२	
३	अगर मुद्आअलेह खयदाद मुकद्दमा की निस्वत जवाबदि- ही करसके तो उसको हाजिर होने की इजाजत मिलेगी ॥	
४	इस्लियार निस्वत मुस्तरद करने डिगरी के .... २५३	
५	इस्लियार निस्वत हुक्म सादिर करने के विल आफ एक्स चेंज वगैरह अदालत के किसी अहलकार की तहवील में रक्खा जाये .... ॥	
६	वसूलयावी उस खर्चाकी जो किसी विलआफ एक्सचेंज वगैरह के मुतअल्लिक उस अम्रकी तहरीर में आयद हुआ कि वह सकारा या अदा नहीं किया गया .... ॥	
७	वाकां कार्रवाई मिस्ल कार्रवाई नालिशत मामूलीके होगी आर्डर ( ३८ ) ॥	
	गिरफ्तारी और कुर्की क़व्ल फ़ैसला गिरफ्तारी क़व्ल फ़ैसला	
१	वह सूरत जिस में मुद्आअलेह की हाजिरीकी जमानत त- लव होसکتی है .... २५४	
२	जमानत ... .... २५५	
३	कार्रवाई जब हाजिर जापिन अपनी बरीउलजिम्मी के लिये टर्खास्तदे .... ॥	
४	कार्रवाई जब मुद्आअलेह हाजिर जापिनी या जमानत ज- दीद न देसके .... २५६	
	कुर्की क़व्ल फ़ैसला	
५	नियम मुक़्त में मुद्आअलेह से जमानत वाप्ते पेश करने जायदाद के तलव होसती है .... ॥	
६	कुर्की अगर बजद जादिर न कीजाय या जमानत दारिअल न रीजारे ... .... २५७	
७	बरीना कुर्की करने का ... .... ॥	

नम्बर कायदा	मजामीन	नम्बर सका
८	तहकीकान दावा निश्चत उस जायदाद के जो कबल सदूर फैसला कुर्क हुई हो .... २५७	२५७
९	दख्खानगी कुर्की जब जमानत दाखिल की जाय या मुकदमा खारिज हो .... ११	११
१०	कुर्की कबल फैसला अश्वार गैर फरीकैन मुकदमा के हकूक की मुखिल न होगी और न डिगरीदार को दख्खानगी नीलाम देनेसे बाज रखेगी .... ११	११
११	जो जायदाद कबल फैसला कुर्क हुई हो फिर इजराय डिगरी में कुर्क न होगी .... २५८	२५८
१२	पैदावार जिरामत कबल सदूर फैसला कुर्क न होसकेगी ११	११

### आर्डर (३६)

अहकाम इम्तिनाई चन्दरोज़ह और अहकाम

दरमियानी

अहकाम इम्तिनाई चन्दरोज़ह

१	किन मुकदमों में हुकम इम्तिनाई चन्दरोज़ह सादिर किया जा सक्ता है .... २५८	२५८
२	हुकम इम्तिनाई दरवारह इर्तिकाव या जारी रखने इर्तिकाव अहद शिकनी .... २५९	२५९
३	कबल इसदार हुकम इम्तिनाई अदालत तरफ़सानी को इत्तिला देगी .... २६०	२६०
४	हुकम इम्तिनाई मंसूख या मुबदल या फिस्ख हो सक्ता है .... ११	११
५	हुकम इम्तिनाई वनाम जमाअत सनदयाफ़ता उसके ओहदा दारान पर वाजिबुल इवताअ होगा .... ११	११

अहकाम दरमियानी

६	इस्तिथार हुकम दर मियानी निश्चत नीलाम .... ११	११
७	रोकना या कायम रखना या मुआयना वगैरह करना शै	

नम्बर क्रायदा	मजामीन	नम्बर सक्रा
	मुतनाज़आफिया मुकदमा का ....	२६१
८	दख्खिस्त निस्वत अहकाम मज़कूर बाद इत्तिलाअ के गुज़रेगी	॥
९	कव फ़रीक मुकदमा आराजी मुदआवहाय नालिशपर क- वज़ा पासकता है ....	॥
१०	अदालत में रुपया वगैरह का जमाहोना ....	२६२
आर्डर ( ४० )		
तक्रूर रिसीवर यानी मोहतमिम का		
१	तक्रूररिसीवर ....	॥
२	हक्कूल खिदमत रिसीवर ....	२६३
३	खिदमात रिसीवर ....	॥
४	तामील जिम्मेदारी रिसीवर ....	२६४
५	कव साहब कलक्टर रिसीवर मुक्रूर होसकता है ....	॥
आर्डर ( ४१ )		
अपील बनाराज़ी डिगरियात इब्तिदाई		
१	नमूना अपील याददास्त अपीलके साथ क्या २ दाखिल होगा	२६४
२	बज़ूहात जो अपील में पेश की जासक्ती हैं ....	२६५
३	याददास्त अपील की नामंजूरी या तरमीम ....	॥
४	कोई शख्स मिनजुम्ला चंद्र मुद्दयान या मुद्दमाअलेहुम कुल डिगरी मन्सूख करासकता है अगर डिगरी ऐसी वजह पर मुवनी हो जो उन सबपर एकसाँमसर हो ....	२६६
कारवाई हाय व इजराय डिगरी का इलतुवाय		
५	इलतुवाय अज़ तरफ अदालत अपील ....	॥
६	तमानत वास्ते इजराय डिगरी जेर अपील के ....	२६७
७	जमानत सर्कार या मोहदेदार सर्कार से वाज़ सुन्तों में न- लत न कीजायेगी ....	॥

नम्बर क्रायादा	मजामीन	नम्बर सफा
८	इजराय डिगरी की कार्रवाई के हुक्म की अपील में इस्ति- यारात का नफाज .... .... २६८	
	कार्रवाई वर मंजूरी अपील	
९	याददास्त अपील का दर्ज रजिस्टर होना .... .. ॥	
१०	अदालत अपील अपीलांटसे जमानत वास्ते अदाय खर्चा के तलब करसक्ती है .... .... ॥	
११	इस्तियार अपील के खारिज करने का वगैर भेजने इत्तिला के अदालत मातहत में .... .... ॥	
१२	तारीख वास्ते समाअत अपीलके .... .... २६९	
१३	अदालत अपील उस अदालत को इत्तिला देगी जिसकी डिगरी से अपील हुआ हो .... .... ॥	
१४	एलान और तामील इत्तिलानामा तअय्युन तारीख के वास्ते समाअत अपीलके .... .... २७०	
१५	मजमून इत्तिलानामा तअय्युन तारीख .... .... २७०	
	कार्रवाई वक्त समाअत	
१६	शुरूअ करने का हक .... .... ॥	
१७	खारिज किया जाना अपील का अदम पैरवी में .... २७१	
१८	खारिज किया जाना अपील का अगर इत्तिलानामा की तामील इस वजह से न हुई हो कि अपीलांट ने खर्चा नहीं दाखिल किया .... .... ॥	
१९	अदखाल सानी उस अपील का जो अदम पैरवी में खारिज हुआ हो .... .... ॥	
२०	इस्तियार इलतुवाय समाअत का और यह हुक्म देनेका कि जो अशखास नतीजै अपील से गरज रखते हों रिसपाडन्ट बनाये जायें .... .... २७२	
२१	अज सर नौ समाअत अपीलकी ऊपर दर्खास्त रिसपाडन्ट के जिसकी खिलाफ अपील यक्तर्फी फैसल हुआहो .... ॥	



नम्बर क्रायदा	मजामीन	नम्बर सज
२२	वक्त्तु समावृत अपील रिसपांडन्ट डिगरी की निस्वत इसी तरह उज़्र कर सकता है कि गोया उसने एक अलाहिदा अपील दायर किया ....	२७२
२३	अज़ तरफ़ अदालत अपील मुकदमा का दुवारा तजवीज़ के लिये वापस भेजा जाना ....	२७३
२४	अगर शहादत मौजूदह मिसिल काफी हो तो अदालत अपील मुकदमा की निस्वत तजवीज़ कतई सादिर कर सकती है	२७४
२५	कय अदालत अपील अमूर तनक़ीह तलव करार दे सकती है और उनको तजवीज़ के वास्ते उस अदालत में भेज सकती है जिसकी डिगरी से अपील हुआ हो ....	११
२६	तजवीज़ और शहादत शामिल अपील होगी और तजवीज़ की निस्वत उज़्र करने का फ़रीक़ैनको इस्तिथार न होगा	११
२७	अदालत अपील में शहादत मजीद का पेश करना ....	२७५
२८	शहादत मजीद लेने का तरीक़ा ....	११
२९	जिन अमूर पर शहादत महदूद होगी उनकी तखसीस और उनका कलम बंद किया जाना ....	११

### ज़िक्र तजवीज़ अपील

३०	तजवीज़ किस वक़्त और किस मुक़ाम पर सुनाई जायेगी ....	२७५
३१	तजवीज़ का मजमून क्या होगा तजवीज़ पर तारीख़ लिखी जायेगी और दस्तनयत सिब्त होंगे ....	२७६
३२	अहक़ाम तजवीज़ ....	११
३३	इस्तिथारान अदालत अपील ....	११
३४	जो जज़ तजवीज़ में इतिफ़ाक़ न करे वह अपनी तजवीज़ या हुक्म अलाहिदा लिखेगा ....	२७७

### डिगरी व मीमै अपील

३५	तारीख़ और मजमून डिगरी ....	११
३६	फ़रामिन को तजवीज़ और डिगरी की नक़लें मिल गयींगी	२७८

नम्बर कायदा	मजामीन	नम्बर सफा
३७	डिगरी अपील की नक्कल गुमदिका उस अदालत में भेजी जायेगी जिसकी डिगरी की नाराजीसे अपील हुआहो ....	२७८
	आर्डर ( ४२ )	
	अपील बनाराजी डिगरियात अपील	
१	जान्ना .... ..	११
	आर्डर ( ४३ )	
	अपील बनाराजी अहकाम	
१	अपील बनाराजी अहकाम . ....	११
२	आर्डर ४१ का तमल्लुक अहकामकी अपील से ....	२८०
	आर्डर ( ४४ )	
	अपील मुफलिसाना	
१	कौन शख्स अपील मुफलिसाना खजूअ कर सकता है ....	२८०
२	तहकीकात मुफलिसी .... ..	२८१
	आर्डर ( ४५ )	
	अपील बहजूर आलाहजरत मलिक मुअज़्ज़म बइजलास कौंसल	
१	डिगरी की तारीफ़ .... ..	११
२	दर्खास्त इस्तजाजत अपील उस अदालत में कीजायेगी जिसकी डिगरी की नाराजी से अपील करनाहो ...	११
३	सर्टीफिकेट दरवारह मालियत शै मुतनाज़्ज़ा या काविल अपील होनेकी , ....	११
४	चंद मुकदमात का शामिल कियाजाना - - - -	२८२
५	निजाअका अदालत मराफिआ औला में भेजा जाना ....	११
६	सर्टीफिकेट मिलने का असर .... ..	११

नम्बर कायदा	मजामीन	नम्बर सफा
७	सर्टीफिकेट मिलनेपर जमानत और रुपया दाखिल करना	११
८	अपील का मंजूर होना और उसके मुतअल्लिक कार्रवाई	२८
९	मंजूरी जमानतकी मंसूखी ....	२८
१०	इस्तिथार सदूर हुक्म वावत जमानत मज्जीद या मज्जीद रुपया दाखिल करने की ....	११
११	हुक्मकी न तामील करने का असर ....	११
१२	फाजिल रुपयाकी वापसी ....	२८
१३	दौरान अपीलमें अदालतके इस्तिथारात ....	११
१४	जमानत अगर गैर काफ़ी हो तो बढ़ाई जा सकती है ....	२८
१५	कार्रवाई मुतअल्लिक इजराय अहकाम मसदरह आलाहज़रत मलिकमुअज़्ज़म वइजलास कौंसल ....	११
१६	इजराय के हुक्मकी अपील ...	२८

### आर्डर ( ४६ )

#### इस्तिमवाव

१	इस्तिमवाव वहस कानूनी वहनूर हाईकोर्ट ....	११
२	अदालत इस शर्त पर कि हाईकोर्ट के फैसलाकी पाबंदी लाज़िम होगी दिगरी सादिर कर सकती है ....	२८
३	तजवीज़ हाईकोर्ट मुंसिल की जायेगी और उसके मुताबिक मुकद्दमा फैसल होगा ....	११
४	खर्ची इस्तिमवाव ....	११
५	इस्तिथार तज्दील दिगरी मसदरह अदालत इस्तिमवाव मुनिन्दा ....	११
६	इस्तिथार इस्तिमवाव हाईकोर्ट निम्न इस्तिथार अदालत मतालिवाज़ान गर्फ़ाए ....	२८
७	इस्तिथार अदालत जिला निम्न मुंसिल करने वास्ते नज़र मानी उस कार्रवाई की ज़िममें गलती दर्खाव इस्तिथार	

नम्बर क्रायदा	मजामीन	तम्बर सफा
	ममाञ्चन मतालिवाजात खफीफा के हुईहो .... २८६	
	आर्डर ( ४७ )	
	तजवीजसानी	
१	दरखास्त तजवीजसानी ... २६०	
२	दरखास्त तजवीज सानी किसके खबर दीजायेगी .... २९१	
३	तरीका दरखास्त हाय नजरसानी .... ११	
४	किस सूरत में दरखास्त मंजूर या ना मंजूर होगी .... ११	
५	दरखास्त तजवीज सानी व हजूर उस अदालत के जिसमें दो या ज्यादा जजहों .... २९२	
६	कब दरखास्त ना मंजूर होगी .... ११	
७	हुकम ना मंजूरी का अपील न होसकैगा उजरात मंजूरी दरखास्त .... ११	
८	दरखास्त मंजूर शुद्ध दर्ज रजिस्टर होगी और हुकम निस्वत समाप्त मुकररकी सादिरहोगा .... २६३	
९	इम्तिनाम बाज दरखास्तों का .... ११	
	आर्डर ( ४८ )	
	मुतफरिकात	
१	तामील हुकुमनामा फरीकजारी कुनिन्दा के सर्फ पर होगी २६३	
२	इत्तिलानामा या हुकमकी तामील क्यों कर होगी .... २९४	
३	इस्तेमाल नमूना जात मुन्दर्जा इपनडिक्स .... ११	
	आर्डर ( ४९ )	
	अदालत हाय हाईकोर्ट मुकररह हरब सनदशाही	
१	कौन शख्स हुकमनामजात अदालत हाईकोर्टके तामील करसक्ता है .... ११	

नम्बर कायदा	मजामीन	नम्बर सफा
२	इस्तिस्नाय निस्वत अदालत हाईकोर्ट मुकरर हद्दस्वसनदशाहीके	२६४
३	वाज कवाअद का तअल्लुक हाईकोर्टसे न होगा ....	२६५
	<b>आर्डर ( ५० )</b>	
	<b>अदालत मतालिवाजात खफीफा</b>	
१	अदालत मतालिवा जात खफीफा ... ..	११
	<b>आर्डर ( ५१ )</b>	
	<b>अदालत मतालिवाजात खफीफा बलाद प्रेसीडेंसी</b>	
१	अदालत मतालिवाजात खफीफा बलाद प्रेसीडेंसी	२६६
	<b>नमूना जात</b>	२६७
	<b>इपन डिक्स ( अलिफ )</b>	
	<b>पिलीडिंग</b>	
१	<b>उनवान मुकदमा</b>	
२	<b>कैफियत फरीकैन वमुकदमात खास</b>	
३	<b>अगयज़ दावा</b>	
नं. १	बायत रुपया के जो कर्ज दियागया ....	२६८
नं. २	बायत रुपया के जो जायद दियागया ....	२६९
३	बायत मालके जो कीमत मुअय्यन पर बेचागया ....	११
४	बायत माल की जो कीमत मुनामिवपर फरोख्त और हवाल किया गया ....	३००
५	बायत अशियाय के जो कि मुदयाअलेह की दख्वास्त से बनने गई और उसने नहीं ली ....	३०१
६	बायत हिमी नीलामगानी उस माल के जो नीलाग में फरोख्त कियागया था ....	११

नम्बर क्रायदा	मजामीन	नम्बर मफा
७	बावत अदाय खिदमत व उजरत मुनासिव ....	३०२
८	बावत उजरत खिदमात और ममालहा वकीमत बाजिवी	३०३
९	बावत इस्तेमाल और दखल के ....	११
१०	वर बिनाय फैसला सालसी ....	३०४
११	वर बिनाय फैसला मुल्क गर ....	११
१२	वनाम जामिनान अदाय किराया मकान ....	३०५
१३	बावत खिलाफ वरजी मज्माहिदा खरीद अराजी	११
१४	बावत न हवाले करने फरोख्त किये हुये मालके	३०६
१५	बावत मौकूफी बेजाके ....	३०७
१६	बावत खिलाफ वरजी मज्माहिदा मुलाजिमत	११
१७	वनाम मेमार के खराब काम बनाने की बावत	३०८
१८	बावत इकरारनामा दियानतदारी कर्क यानी मोहरिर के	३०९
१९	नालिश किरायादार की वनाम मालिक मकान बावत खास हर्जा के ....	३१०
२०	वर बिनाय इकरारनामा ....	११
२१	बावत फरेवन लेने मालके ....	३११
२२	दूसरे शख्स को फरेवन माल कर्ज दिलाने की बावत	३१२
२३	मुद्दे की जमीन के नीचे पानी नजिस गिरने की बावत	११
२४	बावत जारी रखने कारखाना तकलीफदिहके	३१३
२५	बावत मजाहिमत इस्तहकाक राह ....	३१४
२६	बावत मजाहिमत शारअआम ....	३१५
२७	बावत फेरने पानीकी नाली के ....	११
२८	बावत मजाहिमत इस्तहकाक लेने पानीके आवपाशी के लिये	३१६
२९	बावत जरर के जो रेलकी सड़कपर मुद्दआअलेह की गफ- लत से हुआ ....	११
३०	बावत उस नुकसानके जो वेइहतिपातीके साथ हांकनेसे हुआ	३१७
३१	बावत नालिश फौजदारी मुवनी वरअदावत ....	३१८

नम्बर कायदा	मजामीन	नम्बर सफा
३२	बाबत माल मन्कूला के जो बेजा तौरपर लेलिया गयाहो	३१६
३३	नालिश वनाम उस शख्सके जो फरेवन खरीदार हुआ और वनाम उसके जिसके नाम उसने मुन्तकिल किया दरहाले कि मुन्तकिल अलेहको उस फरेव का इल्म था ....	३२०
३४	वास्ते मन्सूखी मआहिदा के जो गलतीकी विनायपर हुआहो	३२१
३५	वमुराद सदूर हुक्म मुमानियत जियान ....	११
३६	अम्र तकलीफदिह के मौकूफ करने के लिये ....	३२१
३७	बाबत अम्र वायस तकलीफ आम ....	३२२
३८	पानी की नाली के फेर देने की मुमानियतका हुक्म हासिल करने के लिये ....	११
३९	व मुराद दिला पाने माल मन्कूलाके जिसके तलफ कर डाल- ने की मुद्आअलेह धमकी देताहै और व गरज सदूर हुक्म इम्तिनाई के ....	३२२
४०	नालिश अमीन व मुराद तस्फिया वैतुलमुतनाज्जिन ....	३२३
४१	व मुराद इहतिमाम मार्फत कर्ज ख्वाह अज जानिव खुद दीगर कर्जख्वाहान ....	३२४
४२	व मुराद इहतिमाम जायदाद मुतवफ्फी मार्फत खास मूसालहके	३२५
४३	वास्ते इहतिमाम जायदाद मुतवफ्फी के बजारिये मूसालह नकद पाने वाले के ....	११
४४	व गरज तामील गमानत ....	३२६
४५	बाबत बैवान या नीनाम ....	३२७
४६	बाबत इनफिकाक रेहन ....	३२८
४७	बाबत तामील खास नम्बर १ ....	३२९
४८	बाबत तामील खास नम्बर २ ....	११
४९	बाबत शगकत ....	३३०
	बयान तहरीरी	३३१
	जवाब दावा	११
	मुराद वि. वि. नाम ....	११

नम्बर कायदा	मजामीन	नम्बर सफा
	इन्कार ....	३३४
	उजर ....	११
	मीआद समाप्त ....	३३५
	इस्तिथार समाप्त मुकदमा ....	११
	दीवालह ....	११
	नावालिगी ....	११
	रुपया का अदालत में दाखिल करना ....	११
	दस्त बरदारी ....	११
	फ़िस्ख मआहिदा ...	११
	रस जुडीकीटा ....	११
	इस्टापल ....	११
	बिनाय जवाब दावा बाद दायर होने मुकदमा के ....	११
१	जवाब दावा नालिश वावत माल के जो फ़रोख्त करके हवाले किया गया ....	३३६
२	जवाब दावा नालिशात बर बिनाय तमस्सुक ....	११
३	जवाब दावा नालिशात बर बिनाय जमानत ....	११
४	जवाब दावा नालिश वास्ते दिला पाने कर्जाके ....	३३७
५	जवाब दावा नालिशात वावत जररके जो ग़फ़लतसे हांकने की वायस पहुंचा ....	११
६	जवाब दावा नालिशात वावत अफ़आल बेजाके ....	३३८
७	जवाब दावा नालिशात वावत रोक रखने माल के ....	११
८	जवाब दावा नालिशात वावत खलल अन्दाजी हक मुसन्फ़ी ....	११
९	जवाब दावा नालिशात वावत खलल अन्दाजी निशान तियारती के ...	११
१०	जवाब दावा नालिशात मुतअल्लिक अमूर तकलीफ़ दिह ...	३३९
११	जवाब दावा व मुकदमा वैवात ....	११
१२	जवाब दावा व मुकदमा इन्फ़िकाक रेहन ....	३४०



नम्बर कायदा	मजामीन	नम्बर सका
१३	जवाब दावा व मुकदमा तामील खास ....	३४०
१४	जवाब दावा नालिशत वादत इहतिमाम मिनजानिव मूसालह	
	जर नतद के ....	३४१
१५	पुरोधीट वसीयत तरीक सालह ....	३४२
१६	तफसीलान ...	३४३

## इपन डिक्स ( वे )

## परोसस

१	सम्मान वगरज इनफिसाल मुकदमा ....	३४४
२	सम्मान वगरज करार दाद अमूर तन्कीह तलय ....	३४५
३	सम्मान वगरज हाजिरी असालतन ....	३४६
४	सम्मान वगरज मुकदमा सरसरी वर विनाय दस्तावेज का- विल वैवशिशरा ....	३४७
५	इत्तिना वनाम उस शाहसके जिसको अदालत व जुमरह मुदडयान शामिल करना मुनासिव समझे ....	३४८
६	सम्मान वनाम कायम मुकाम कानूनी मुदआमलेह हुतवफकी के	३४८
७	हुकम इरमाल सम्मान दूसरी अदालत के इलाका में जारी होने के लिये— ....	३४९
८	हुकम इरमाल सम्मान कैदीपर तामील होने के लिये ....	३५०
९	हुकम इरमाल सम्मान मुलाजिम सरकारी फौजी सिपाही पर तामील होने के लिये— ...	"
१०	हुकम जो दूसरी अदालत के सम्मान के जवाब के साथ मुमिल होगा ....	३५१
११	वधान तलगी तामील करने वाले का जो सम्मान या इत्तिना नामा के वादन होने पर उसके शामिल रहेगा ....	"
१२	इत्तिनानामा वनाम मुदआमलेह ....	३५३
१३	सम्मान वनाम वनाम ....	३५४
१४	इत्तिना वनाम तामील वनाम ....	३५५

नम्बर कायदा	मजामीन	नम्बर सफा
१५	इश्तिहार बहुकम हाजिरी गवाह ....	३५६
१६	वारन्ट कुर्की जायदाद गवाह ....	११
१७	वारन्ट गिरफ्तारी गवाह ....	३६७
१८	वारन्ट हिरासत में रखने का ....	११
१९	वारन्ट हिरासत में रखने का ....	३५८

### इपन डिक्स ( जीम )

इनकिशाफ़हाल और मकबूली और दरपेशीदस्तावेजात

१	हुकम निस्वत हवाले करने बंद सवालात के ....	३५९
२	बंद सवालात ....	११
३	जवाब बंद सवालात ....	३६०
४	हुकम वास्ते तहरीरी बयान हलफी निस्वत दस्तावेजात के ....	११
५	तहरीरी बयान हलफी निस्वत दस्तावेजात के ....	३६१
६	हुकम निस्वत पेश करने दस्तावेजात वास्ते मुआयना के ....	३६२
७	इत्तिलानामा निस्वत पेश करने दस्तावेजात के ....	११
८	इत्तिलानामा निस्वत मुआयना दस्तावेजात के ....	३६३
९	इत्तिलानामा निस्वत तसलीम करने दस्तावेजात के ....	११
१०	इत्तिलानामा निस्वत तसलीम करने वाकिआत के ....	३६४
११	तसलीम वाकिआत बतामील इत्तिलानामा ....	३६५
१२	इत्तिला नामा बहुकम पेश करने के ( नमूना आम ) ....	३६६

### इपन डिक्स ( दाल )

नमूने डिगरियों के

१	डिगरी वमुकदमा इब्तिदाई— ....	३६६
२	डिगरी महज जर नक़्द की ....	३६७
३	डिगरी इब्तिदाई वैवात की ....	३६८
४	डिगरी इब्तिदाई नीलाम की ....	३६९
५	डिगरी इब्तिदाई इनफिकाक की ....	३७०

नम्बर कायदा	मजामीन	नम्बर समा
६	डिगरी वैवात की-मुर्तहिन अव्वल वनाम मुर्तहिन दोम व राहिन-मीआद मुतवातिर इनफिकाक रेहन की ....	३७१
७	डिगरी नीलाम की-मुर्तहिन अव्वल वनाम मुर्तहिन दोम व राहिन-एक मीआद इनफिकाक की ....	३७३
८	डिगरी नीलाम की-मुर्तहिन दोम वनाम मुर्तहिन अव्वल व राहिन-एक मीआद इनफिकाक की- ....	३७४
९	डिगरी नीलाम की-मुर्तहिन मातहत वनाम मुर्तहिन व राहिन जब कि रेहन असली की तादाद रेहन मातहत की तादाद से जियादह हो ....	३७६
१०	डिगरी कर्ई वैवातकी ....	३७७
११	डिगरी व मुक़ाविले ज्ञात राहिन के ....	३७८
१२	डिगरी तसदीह दस्तावेजातकी ....	३७९
१३	डिगरी मंगूखी इन्तिकाले दो वगरज फरेवदिही कर्ज ख्वा-दान के अमल में आया हो ....	॥
१४	हुक्म इम्तिनाई व खिलाफ़ फ़ेल तकलीफ़दिह खानगी के ....	॥
१५	हुक्म इम्तिनाई पुगनीसितहसे ऊंचीतामीर करने के खिलाफ़ ....	३८०
१६	हुक्म इम्तिनाई सहकर खानगीको इस्तेमाल करने के खिलाफ़ ....	॥
१७	डिगरी इब्तिदाई व मुक़दमा इहतिमाम तर्की ....	३८१
१८	डिगरी अर्गीर व मुक़दमा नालिश मुसालह दरदाव इहतिमाम तर्की हुतवप्रणी ....	३८४
१९	डिगरी इब्तिदाई व मुक़दमा नालिश मुसालह दरदाव इहतिमाम तर्की जिम हाल में कि बर्ती वज्ञात खुद जिम्मेदार नै नर्मायती का हो ....	३८५
२०	डिगरी अर्गीर व मुक़दमा नालिश क़रावनी क़रीब नर दर-दार इहतिमाम तर्की ....	॥
२१	डिगरी इब्तिदाई व मुक़दमा इम्तिनाशक़त व लेने दिमावान नर्मायती ....	३८७

नम्बर कायदा	मजामीन	नम्बर सफा
२२	डिगरीअग्रीर वमुकदमा फिरखशराकत व लेने हिसावात	३८८
२३	शराकती डिगरी बाजयाफ्त अराजी व वासिलातकी ....	३८९
<b>इपन डिकस ( हे )</b>		
<b>इजराय</b>		
१	इत्तिलानामा जाहिर करने वजह के कि अदा या तस्फिया वलफज तसदीकगुदह क्यों कलमबंद न कियाजाय	३९०
२	परीसष्ट ....	११
३	हुकम मुतजम्मिन इरसाल डिगरी वगरज इजराय दूसरी अदालत में ....	३९१
४	सार्टीफिकट अदमईफाय डिगरी ....	३९१
५	सार्टीफिकट डिगरी के इजराय का जो दूसरी अदालत में मुन्तकिल कीगई ....	३९२
६	दरख्वास्त इजराय डिगरी ....	११
७	नोटिश व गरज जाहिर करने वजह के कि क्यों इजराय न कियाजाय ...	३९४
८	वारण्ट कुर्की जायदाद मन्कूला वइल्लत इजराय डिगरी जर नक्द ....	३९५
९	वारण्ट जव्ती खास जायदाद मन्कूला तस्फिया शुदह अज रुय डिगरी ....	३९६
१०	इत्तिलानामा वास्ते करने उजरात दरबारह मसबिदहदस्तावेजके	११
११	वारण्ट वनाम वेलिफ वास्ते हवाले करने कब्जा अराजी वगैरह के ....	३९७
१२	इत्तिलानामा बिनाबर जाहिर करने वजह के कि वारण्ट गिरफ्तारी क्यों जारी न कियाजावे ...	३९८
१३	वारण्ट गिरफ्तारी वइल्लत इजराय डिगरी ....	११
१४	वारण्ट मदयून डिगरी पर जेलखाना में भेजने का ....	३९९

नम्बर क्रायदा	मजामीन	नम्बर सफा
१५	हुक्म रिहाई का निस्वत उस शख्सके जो वइलत इजराय डिगरी कैद किया गया .... .... ४००	
१६	कुर्की व सीगै इजराय डिगरी हुक्म इम्तिनाई उस हाल में कि जायदाद काविल कुर्की ऐसी शै मन्कूला हो जिसपर मुद्माअलेह का इस्तहकाक इतावअ किसी मवाविजह या इस्तहकाक किसी और शख्स के हो जो उस वक्त काविज उसकाहो .... .... ॥	
१७	कुर्की व सीगै इजराय डिगरी हुक्म इम्तिनाई उस हाल में कि जायदाद अज किसम दयूनके हो जिनके इस्तहकाकके लिये दस्तावेजात काविल वैवशिशरा न लिखी गई हों .... ४०१	
१८	कुर्की व सीगै इजराय डिगरी हुक्म इम्तिनाई उस हाल में कि जायदाद हिस्सा किसी कारपुरेशन का हो .... ४०२	
१९	हुक्म अफसर संकरी या मुलाजिम रेलवे या मुलाजिम हाकिम मुकामी की तनख्वाह कुर्क करने का .... ४०३	
२०	हुक्म कुर्की दस्तावेज काविल वैवशिशरा .... ४०३	
२१	कुर्की-हुक्म इम्तिनाई उस हाल में कि जायदाद जर नकद या कोई शै मन्कूला वकूजाअदालत या अफसर संकरीकेहो ४०४	
२२	इत्तिलानामा डिगरी की कुर्की का वनाम उस अदालत के जिसने डिगरी सादिर की हो .... ॥	
२३	इत्तिलानामा डिगरी की कुर्की का वनाम डिगरीदार के ४०५	
२४	कुर्की वसीगै इजराय डिगरी-हुक्म इम्तिनाई बहालत जाय दाद और मन्कूला .... ४०६	
२५	हाम बरमुराद कि नया बगैरह जो किसी शख्स मालस के अन्त में हो मुद्दर को दिया जाये .... ॥	
२६	इत्तिला वनाम दायन जगिक के .... ४०७	
२७	वागन्त यानी इत्तिलानामा नीलाम जायदाद दखन इजराय डिगरी परनकद .... ॥	

नम्बर नमूना	मजामीन	नम्बर सफा
२८	इत्तिला तारीख वगरज तस्फिया मगतिव इश्तहार नीलाम	४०८
२९	इश्तहार नीलाम .... ....	११
३०	हुक्म मयनाम नाज़िर वास्ते तामील कग्ने इश्तहार नीलामके	४११
३१	सार्दी फ़िकट ओहदादार नीलाम कुनिन्दा निरवत कमी की- मत के जो उस सूखत में हुई कि जायदाद वजह कसूर खरीदार के द्वारा नीलाम की गई ....	४१२
३२	इत्तिलानामा वनाम काविज शे मन्कूला जो वावत इजराय डिगरी नीलाम हुई .... ....	४१३
३३	हुक्म इम्तिनाई वहे मुराद किदयून जो वावत इजराय डिगरी नीलाम की गई वजुज मुश्तरीके और को न अदा किये जावें	११
३४	हुक्म मशअर मुमानिअत इन्तिकाल हिस्सिस जो वावत इ- जराय डिगरी नीलाम किये गये हों ....	४१४
३५	सार्दी फ़िकट वनाम मदयून डिगरी जिस में कि उसको इ जाजत दी गई कि जायदाद को रेहन करे या पट्टा परदे या फ़रोख्त करे ....	११
३६	नोटिस वगरज इजहार वजह कि नीलाम क्यों मसूख न न किया जाय ....	४१५
३७	नोटिस वगरज इजहार वजह कि नीलाम क्यों मसूख न किया जाय ....	४१६
३८	सार्दी फ़िकट नीलाम अराजी ....	४१७
३९	हुक्म हवाले करने कब्ज़ा अराजी का मुश्तरी सार्दी फ़िकट याफ़ता नीलाम इजराय डिगरी को ....	११
४०	सम्मन वगरज हाज़िरी व जवाबदिही इलजामे मज़ाहिमत इजराय डिगरी के ....	४१८
४१	वारन्ट हिरासत में रखने का ....	११
४२	इजाजत वनाम कलक्टर दरवाब मुलतवी रखने नीलाम अराजी के ....	४१९
<b>इपनडिक्स ( वाव )</b>		
<b>कारवाई हाय ज़िम्नी</b>		
१	वारन्ट गिरफ्तारी क़बूल फैसला ....	११

नम्बर तमूना	मजामीन	नम्बर सन्
	जमानत वास्ते हाजिरी मुद्आअलेह के जो कब्ज फैसला गिरफ्तार हुआ .... ४२०	
३	सम्पन वगारज हाजिरी मुद्आअलेह जब कि जामिन के वास्ते वरियत के दरख्वास्त की हो .... ४२१	
४	हुकम हिरासत में रखने का .... ४२२	
५	कुर्की कब्ज फैसला मये हुकम अदखाल जमानत वास्ते डिगरी के .... ४२३	
६	जमानत वगारज पेश करने जायदाद के .... ४२४	
७	कुर्की कब्ज फैसला दरसूरत सबूत अदम अदखाल जमानत हुकम इम्तिमाई चन्द रोजह .... ४२५	
८	तक़रूर रिसीवर यानी मोहतमिम .... ४२६	
१०	इकरारनामा जो रिसीवर यानी मोहतमिम को दाखिल करना होगा .... ४२७	

### इपन डिक्स (जे)

#### अपील व इरितसवाव व तजवीज़ सानी

१	याददास्त अपील .... ४२८	
२	जमानतनामा जो वगारज सदूर हुकम इलतुवाय इजराय डिगरी दिया जायगा .... ४२९	
३	जमानतनामा जो दौरान अपील में दिया जायेगा .... ४३०	
४	जमानत रावा अपीलकी .... ४३१	
५	अदखाल अपील की इतिला मदालत मानहतको .... ४३२	
६	इतिलानामा बनाम रिसपाण्डंट मशमूर इतिला तारीफ मुद्गरेह समामत अपील .... ४३३	
७	नोटिम बनाम फरीक मुद्दमा जो अपीलमें फरीक न किया गया मगर निमको अदखाल ने रिसपाण्डंट मददाना .... ४३४	
८	याददास्त उजगत मुनाबिन .... ४३५	
९	डिगरी अपील की .... ४३६	
१०	उजगत अपील मुनाबिन .... ४३७	

नम्बर नमूना	मजामीन	नम्बर सफा
११	इत्तिलानामा अपील मुफलिसाना ... ..	४३७
१२	नोटिस व गरज जाहिर करने वजहके फिसाटीफिकट अपील व हजूर मलिक मुअज़म वइजलास कौसल क्यों अता न किया जावे ... ..	४३८
१३	नोटिस अदखाल अपील व हजूर मलिक मुअज़म वइजलास कौसल रिसपांडन्ट को ... ..	४३९
१४	नोटिस व गरज इजहार वजह कि तजवीज़सानी क्यों मंजूर न की जाय ... ..	११

## इपन डिवस ( हे )

### मुतफर्रिक

१	इकरारनामा फरीकैन दरबारह अम्र तन्कीहतलव जिसकी तहकीकात की जाय ... ..	४४०
२	इत्तिला दरख्वास्त इन्तिकाल मुकद्दमा दूसरी अदालत को व गरज तजवीज़के ... ..	४४१
३	इत्तिला अदखाल जर अदालत में ... ..	११
४	इत्तिला इजहार वजह ( नमूना आम ) ... ..	४४२
५	फेहरिस्त दस्तावेजात पेशकरदह ... ..	११
६	इत्तिला वनाम फरीकैन तारीख की जो वास्ते इजहार गवाह के जो इलाका अदालत से बाहर जानेको है मुकर्ररहो ...	४४३
७	कमीशन वास्ते लेने इजहार गवाहान गैर हाज़िर के ...	११
८	चिट्ठियात मुतजम्मिन दरख्वास्त इजहार गवाहान ...	४४४
९	कमीशन वास्ते तहकीकात मौका या तहकीकात हिसाबातके ...	४४५
१०	कमीशन विनावर करने बटवारह के ... ..	११
११	इत्तिला वनाम मुद्आअलेह नावालिग व बली ...	४४७
१२	इत्तिला तारीख समाअत शहादत मुफलिसी की फरीक सानीको	४४८
१३	इत्तिला जामिन को उसकी जिम्मेदारी की जो हस्व डिगरी मायद हुई ... ..	४४९



नम्बर नपूना	मजामीन	नम्बर सफा
१४	रजिस्टर मुकदमात दीवानी ....	४५०
१५	रजिस्टर अपील ....	४५१
<h2>जमीमा दोम</h2> <h3>सालसी</h3> <h3>मुकदमात की सालसी</h3>		
१	फरीकैन हुक्म सालसी के लिये दर्खास्त दे सकते हैं ..	४५२
२	तक़रूर सालस ....	११
३	हुक्म हवालगी ....	११
४	दरसूरत दी या ज़्यादा सालसों के इल्मिलाफ राय के वाक़्त हुक्म सरीह दिया जायगा ....	११
५	वाज़ सूरतों में अदालत सालस मुक़रर कर सकती है ....	४५३
६	जो सालस या सरपंच हस्ब त़िक़रर ४ या ५ के मुक़रर किया जावे उसके इल्मिलारान ....	४५४
७	गवाहों की तलबी और उनकी गैर हाज़िरी ....	११
८	तासीअ मीआद वास्ते सदूर फैसला सालसी ....	११
९	किस सूब में सरपंच बजाय सालसों के कार्रवाई करेगा ४५५	
१०	फैसला सालसी दस्तख़त होकर अदालत में दाखिल होगा ११	
११	तहरीर वज़ार मुक़दमा तास मित्जानिय सालसान या सरपंच ....	११
१२	फैसला सालसी में तर्गीम या उमकी उसलाह करने का इल्मिलार ....	११
१३	हज़म निस्वन ग़र्बा सालसी ....	४५६
१४	कर फैसला सालसी या ख़ध्र महला सालसी वापस किया जायगा— ....	११
१५	तहा मंसूगी फैसला सालसी ...	११

नम्बर नम्ना	मजामीन	नम्बर सका
१६	फैसला अदालत मुनाधिक फैसला सालसी के होमा .. हुकम सालसी हस्व इक्करनामा सिपुर्दगी	४५७
१७	दख्खिस्त वास्त अदखाल इकरार नामा सालसी अदालतमें	४५७
१८	इलतुवाय मुकदमा दरसूरत इकरारनामा सालसी ...	४५८
१९	अहकाम मुतअल्लिक कार्रवाई फिकरह १७ ....	४५९
	<b>सालसी विला तवस्सुत अदालत</b>	
२०	अदखाल फैसला सालसी जो विलातवस्सुत अदालत के हुआहो ....	४५९
२१	अदखाल और निफाज फैसला मजकूर ....	४६०
२२	ऐकट दादरसी खासकी कुछ इवारत का खारिज होना ...	११
२३	नम्ना जात ....	११
	<b>इपन डिकस</b>	
१	दख्खिस्त निस्वत हुकम सिपुर्दगी सालसी ....	४६०
२	हुकम सिपुर्दगी सालसी ....	४६१
३	हुकम निस्वत तकरर सालस जदीद ....	११
४	सूरत खास ....	४६२
५	फैसला सालसी ....	११
	<b>जमीमा सोम</b>	
	<b>इजराय डिगरी मार्फत</b>	
	<b>कलक्टर</b>	
१	कलक्टर के इस्तिथारात ....	४६३
२	कलक्टरी कार्रवाई खास सूरतोंमें ....	११

नम्बर नमूना	मजामीन	नम्बर सद
३	नोटिस बनाम डिगरीदार और दीगर अशस्वासके जो जाय- दाद पर कुछ दावा रखते हों .... ....	४६४
४	तादाद डिगरी जर नकद और उसके ईफा के लिये जाय- दाद गैरमन्कूला मौजूदह दरियाज्त की जायेगी ....	४६४
५	कब अदालत जिला नोटिस जारी और तहकीकात कर सक्ती है .... ....	४६६
६	अमर तजवीज अदालत निस्वत निजाअके ....	॥
७	तददीर वास्ते अदाय डिगरी जर नकद के ....	॥
८	वम्लयादी जरवाक्की वाद पट्टा या सरवराहकारी ....	४६८
९	कलक्टर अदालत में हिसाब पेशकरेगा ....	॥
१०	नीलाम किस तरह होगा .... ....	४६९
११	कयद निस्वत इन्तिफाल मिनजानिव मदयून या उसके जायम मुकाम के और डिगरीदार की चारहजोई ....	४७०
१२	हदम शगर जायदाद कई जिलों में हो ....	४७१
१३	इतिथाम कलक्टर निस्वत जवरन हाजिरी और पेशी दस्ता- वेजात ... ..	॥

## ज़मीना चहारुम

मेक्ट हाय तग्मीम शुद्ध

## ज़मीना पंजुम

मेक्ट हाय मेन्तुम शुद्ध

# मजमूआ जाब्ता दीवानी

याने

ऐक्ट नम्बर ५ वावत सन् १९०८ ई०

२१ मार्च सन् १९०८ ई० को पेशगाह

जनाब नवाब गवर्नर जनरल बहादुर

वइजलास कौंसिल से मंजूर हुआ—

ऐक्ट बगरज इजमाअ व तरमीम उन कवानीन के जो जाब्ता अदालतहाय दीवानी से मुतअल्लिक हैं.

हरगाह यह करीन मसलहत है कि कवानीन जो जाब्ता अदालत हाय दीवानी से मुतअल्लिक हैं जमा व तरमीम किये जायें—लिहाजा बजरिये इसके हस्वजैल हुकम होता है.

## मरातिब इब्तिदाई.

दफ्ता १—(१) जायज है कि इस ऐक्ट का नाम मजमूआ जाब्ता दी- दफ्ता १  
वानी सन् १९०८ ई० रक्खा जाय—

मुख्तसिर नाम शुरूअ  
नफाज व दायरे नफाज

(२) यह कि ऐक्ट यकुम जनवरी सन् १९०९ ई० से नाफिज होगा—

(३) यह दफ्ता और दफ्तात १५५ लगायत १५८ तमाम ब्रिटिश इण्डिया से मुतअल्लिक हैं बाकी मांदा मजमूआ वजुज अजलाअ मुन्दर्जे फेहरिस्त के कुल ब्रिटिश इण्डिया से मुतअल्लिक हैं—

दफ्ता २—इस ऐक्ट में अगर मजमून या लिखात इबारत में कोई अमर दफ्ता २  
खिलाफ इसके न हो तो—

तारीखत--

( १ ) लफ्ज “गजमूञ्चा” में कवायद टाखिल है-

( २ ) “डिगरी” से मुराद है दाजावता जाहिर करना फैसले का निम्न से वहद तअयलुक चदातलत सादिरकुनिन्दा डिगरी हुक्क फरीकैन निस्वत कुल या वाज उम्र मुननाजापिया मुकदमा कतअन तै होजायें और यह इन्निदाई और कतई दोनों होसक्ती है-और इस में नामंजूरी अजीदावा और तस्फिया किसी अम्र मुनज किरै दफा ४७ या दफा १२४ का टाखिल समझा जायेगा लेकिन-

( अलिफ ) कोई ऐसा फैसला जिसकी अपील मिन्ल अपीलहुक्म के दायर की जाये-

इन्तिथार न रखती हो और नब्बाव गवर्नरजनरल बलादुर के हुक्म से न तो अजरनेने कायमों और न कायम रखी गई हो—

( ६ ) “ तजवीज रियाजतों ” से अदालत रियासत गैर की तजवीज मुराद है—

( ७ ) “ गवर्नमेन्ट प्रीडर ” ( वकील सरकार ) में वह ओहदेदार दाखिल है जिने लोकल गवर्नमेन्ट ने उन तमाम खिदमात या उन्मों से किसी की अंजानदिली के लिये मुकर्रर किया हो जो सराइन उस मजमुना की खुसे गवर्नमेन्ट प्रीडर से मुतअल्लिक की गई हैं—और वह वकील भी दाखिल है जो वकील सरकार की हिदायात के मुताबिक काम करे—

( ८ ) “ जज ” से अदालत दीवानी का ओहदेदार इजलासकुनिन्दा मुराद है—

( ९ ) “ तजवीज ” से वह बयान जज का मुराद है जिसमें किसी डिगरी या हुक्म की वनूह हों—

( १० ) “ मदयन डिगरी ” से हर शख्स मुराद है जिसपर कोई डिगरी या हुक्म लायक तामील सादिर हुया हो—

( ११ ) “ कायम मुकाम कानूनी ” से वह शख्स मुराद है जो कानून में किसी शख्स मुतवफ्फाकी जायदाद का कायम मुकाम हो और इस लफ्ज में वह शख्स दाखिल है जो मुतवफ्फाकी जायदाद में दस्त-न्दाजीकरै और जिसमूरत में कोई फरीक वहैसियत कायम मुकाम मुद्ई या मुद्आअलेह हो तो वह शख्स भी दाखिल है जिसपर बाद वफात मुद्ई या मुद्आअलेह मजकूर की जायदाद ऊदकरै—

( १२ ) “ वासिलातजायदाद ” से वह मुनाफा मुराद है जो जायदाद के काबिज नाजायज ने फिलहकीकत जायदाद से वसूल किया हो या मागूली कोशिश से उससे वसूल करसक्ता था मय खूद ऊपर उस मुनाफेके—लेकिन उसमें वह मुनाफा दाखिल नहीं है जो उत तरकियातके तवव से हुया हो जो काबिज नाजायज ने की हों—

( १३ ) “ जायदाद मन्कूला ” में फसिल इस्तादा दाखिल है—

( १४ ) “ हुक्म ” से वाजायता जाहिर करना किसी फैसले अदालत दीवानी का मुराद है जो अजकिसम डिगरी न हो—

जदीद

दफा २  
तशरीह

जदीद

( १५ ) “ प्लीडर ” से कोई शख्स मुराद है जो किसी दूसरे शख्स की तरफ से अदालत में हाजिर होने और सवाल जवाब करने का मुस्तहक हो और उस में हाईकोर्ट का ऐडवोकेट और वर्काल और अटर्नी दाखिल हैं—

( १६ ) “ मुकर्ररा ” से मुकर्ररा अजरख कवायद मुराद है—

( १७ ) “ ओहदेदार सरकारी ” से मुराद दरशख्स है जो मिनजुमना अकसाय मुन्दर्जे जैल के किसी किस्म में दाखिल हो—याने

( अलिक ) हर जज—

( बे ) हर मेम्बर इन्डियन सिविल सर्विस का—

( जीम ) हर कमीशनयाफ्रना या गजटगुद्द ओहदेदार आला इज. रत मलिक मुअज्जम की अफवाज वर्सी या बहरी का—  
जिन में शाही इन्डियन मरीनमर्विम दाखिल है जय वर  
जेरहुकम गवर्नमेन्ट खिदमत अनजाम देता हो—

खलायक की तन्दुरुस्ती या मलामती या आराम की हिफाजत करता रहे—

- ( जे ) हर ओहदेदार जिनपर उसके ओहदे की रू से वाजिव है कि सरकार की तरफ से कोई माल ले या हासिल करे या रक्खे या सर्फ करे या सरकार की तरफ से कोई पैमायश या तगवीम या कोई मन्नाहिदा करे या सींगे माल के किसी हुक्मनामा की तारफ़ल करे या जर के मुतअल्लिक अगराज सरकारी की तहकीकातकरे या कैफियत लिखे या कोई दस्तावेज जो अगराज सरकारी मुतअल्लिकाजर से-इलका रखती हो मुरत्तब या मुसद्दक करे या अपने पास रखे या जो कानून सरकारी अगराज जरकीहिफाजत के लिये नाफिज है उस से खिलाफ बर्जी न होने दे—

खे ) और हर ओहदेदार जो सरकार की मुलाजिमत करता या सरकारसे तनख्वाह पाताहो या जो खिदमत सरकारी अनजाम देने के औज उजरत वजरिये फीस या कमीशन के पाताहो—

१८ ) “ कवायद ” के लफ्जसे वह कवायद और नक्शे मुरादहैं जो जमीने अव्वल में दर्ज हैं या हस्व दफा १२२ या दफा १२५ बनाये गये हैं—

१९ ) “ हिस्सि जमाअत सनदयाफ़ता ” में स्टाक या डिबैंचर स्टाक या डिबैंचर बांड दाखिल समझे जायेंगे—

( २० ) “ दस्तखती ” में व इस्तिस्नाय तजवीज या डिगरी के मुनक्किश होना नाम ( वजरिये स्टाम्प ) शामिल है—

दफा ३—वास्ते इगराज मजमूआ हाज़ा के अदालत जिला अदालत दफा २  
मातहत अदालत | हाईकोर्ट की मातहत है और हर अदालत दीवानी जो अदालत जिला से कम दर्जा रखती है और हर अदालत मतालिवजात खफीफा हाईकोर्ट और अदालत जिला दोनों की मातहत है—

दफा ४—( १ ) जब तक कि कोई हुक्म सरीह इसके खिलाफ में दफा ४  
मुस्तम्नियात | मा'द न हो कोई कानून खास या मुस्तमुत्तुक्काम जो विलफेल जारी है या कोई खास इस्तिथार समाअत या इस्तिथार



अताशुदः या कोई जायता खास मुकर्ररा हस्वदीगर कानून नाफिजुल्लन्  
मजमूआ हाजा के किसी मजमूनसे महदूद या मुतासिर नहीं होगा—

दिल खमूस और वगैर इसके मजमून मुन्दर्जे जिमन ( १ ) कि  
उम्मीयत में किसी तरह का फर्क आये कोई चाराजोई जो जर्मादार  
या मालिक आराजी किसी कानून नाफिजुल्लन् के बमूजिव निम्न  
बमूजयादी जर लगान आराजी काश्त के आराजी मजमूरकी पैदावार में  
रखताहो वह भी मजमूआहाजा के किसी मजमून से महदूद या मुतासिर  
न होगी—

ग ४ अलिक

दफ्ता ५—( १ ) जिस हालमें कि अदालतहाय मालतायै अहकाम  
मजमूआया नकल्लुक मजमूआ हाजाहों निस्वत ~~उन्~~ उमूर जावने के जिनके  
अदालतहाय मालने— निस्वत किसी कानून ~~निस्वत~~ ~~हो~~ जा अदालतहाय मजमूर  
से मुतअज्जिकहो कुछ जिकर न हो तो लोकल गवर्नमेन्ट नव्वाय गवर्नर  
जनरल वहादुर इजलाम कौन्सिल की मंजूरी हाविल करके मुकर्रर  
गजट मरकारी में यह ऐलान देसकी है कि कोई हुज्ज  
उन अहकाम का जो सरादनके साथ मजमूआहाजा की रुमे  
मुतअज्जिक न करदियागया हो अदालतहाय मजमूर से मुतअज्जिक नहीं  
होगा या कि मिर्फ ऐसी नरमीयों के साथ मुतअज्जिक होगा जिनको  
लोकल गवर्नमेन्ट वगैर मंजूरी मजमूरयाला तजरीज करदे—

( जब कि कोई तच्चयुक्त हो ) जियादाहो जिसकी समाञ्जत का उसे हस्व मामूल इस्तिथारहै—

दफा ७—अहकाम जैल उन अदालतों से मुतअल्लिक नहीं हैं जो पनाहतहाय खफीफा एक्ट ६ सन् १८८७ ई० एक्ट अदालतहाय मतालिव-मफरिसल जात खफीफा मुफरिसल सन् १८८७ ई० की रुसे कायम हुईहों या उन अदालतों से जो अदालत खफीफा कायमशुदा हस्व एक्ट मजकूर से इस्तिथारात रस्ततीहों—याने

( अलिफ ) मजमूआहाजा का उस कदर हिस्सा जो—

( १ ) उन नालिशत से मुतअल्लिक है जो अदालत खफीफाकी समाञ्जत से मुस्तस्ना करदी गई हैं—

( २ ) इजराय डिगरी वमुकदमात मजकूर—

( ३ ) इजराय डिगरी जायदाद गैरमनकूला से मुतअल्लिकहै—

( वे ) और दफात जैल — याने

दफा ६

दफात ६१ और ६२

दफात ६४ व ६५ जहां तक इहकाम इम्तिनाई और इहकाम दरमियानी से मुतअल्लिक हैं—

दफात ६६ लगायत ११२ व ११५—

दफा ८—बजुज उसके जैसा कि दफात २४ और ३८ लगायत ४१ दफा =

अदालतहाय खफीफा व ७५ फिकरात ( अलिफ ) व ( वे ) व ( जीम ) व एक्ट १५ स  
वाकैवलादप्रेमीडसी— ७६ व ७७ व १५५ लगायत १५८ और एक्ट अदा- १८८२ ई

लतहाय खफीफा मुतअल्लिक वलाद प्रेमीडसी सन् १८८२ ई० में हुवमहै इस मजमूआके इहकाम किसी अदालत खफीफा वाकै शहर कलकत्ता व मद्रास व बम्बई के किसी मुकदमा या काररवाई से मुतअल्लिक न होंगे—

## हिस्सा १

### नालिशात अललउमूम

इस्तिथार समाञ्जत व निजाअ फ़ैसलशुदह—

दफा ९—वरिआयत इहकाम मुन्दजै मजमूआहाजा अदालतों को दफा ११

सिवाय नालिशानेमम  
नृ उल्ममायत ने कुल  
नालिशात दीवानी का-  
गिल तजवीज अदालत में

सिवाय उन नालिशाने के जो सरीहन् या माने ममनूज  
समाजत हों तमाम नालिशाने किस्म दीवानी की तजवीज  
का इस्तिनयार हासिल है—

तजरीह जिस नालिश में तनाजा दरवाज हक मिलिकृत या हक  
किसी मन्सबके हो वह अज किस्म नालिश दीवानी है बावजूदे कि वह  
हक बिल्कुल मुनदसिर ऊपर तजवीज मसायल रस्म या रिवाज मजहबीके हो

फा १०

दफ्ता १०—अदालत ऐसे मुकदमे की तजवीज की काररवाई शुरू  
शुल्क मसूमा । न करैगी जिसमें अमर मुतनाजाफियासराहतन् या  
दरयसल बही हो जो किसी और पहिले रुजूअ किये हुये ऐसे मुकद  
में जो फीमावैन उनहीं अशत्वास के दरमियान ऐसे अशत्वास के मुतना  
कियहो जिनके जरिये से अशत्वास मजकूर या बाज़ उनमें से दावेदार  
और उमी इस्तिहकाक पर खुमूमत कायम करतेहैं और जो ब्रिटिश इण्डिया  
के अन्दर उमी अदालत या किसी और अदालत में जिसे दादर  
मनलूवा के अना करने का इस्तिनयार हो या ब्रिटिश इण्डिया की हुदूद  
बाहर किसी ऐसी हालत में दायर हो जो नब्वाय गवर्नर जनरल वहाद  
वजलताम कोमिलके हुक्मसे मुहरर हुई हो या कायम रखी गई हो  
और उमी तरहका इस्तिनयार रक्ती हो जो मलिक गुलाम वजलताम  
कोमिलके हुक्म में दायर हो—

तशरीह—( १ ) ( इबारत पहिला मुकदमा ) से मफहूम है वह नालिश जो नालिश माविउल्बदस से पहिले इजलास फैसल हो चुकी हो—  
इबाद वह उससे पहिले दायर हुई हो या नहीं हुई हो—

तशरीह—( २ ) दफा हाजाकी इगराज के लिये यह अमर कि आया फ़लां अदालत फ़लां मुकदमा की तजवीज़ की मजाज़ है विला लिहाज़ किसी सवाल निस्वत हक़ इरजाअ अशील अदालत मजकूर के तै किया जायेगा—

तशरीह—( ३ ) जरूर है कि मुकदमा सादिक में अमर मुतज़किरै सदर दो एक फ़रीक़ने बयान किया हो और दूसरे फ़रीक़ ने सराहतन् या मानियन् उससे इनकार या इक़बाल किया हो—

तशरीह—( ४ ) हर अमर जो उस मुकदमा सादिक में जवाब या दावा की बिना करार दिया जासक्ता था और करार देना चाहिये था समझा जायेगा कि वह ऐसे मुकदमे में एक अमर सरीहन् और दरअसल तनकीह-  
तलब था—

तशरीह—( ५ ) जिस दादरसी का दावा अजादावा में किया गया हो और वह डिगरी में सराहतन् मंजूर न की गई हो वह इस दफा की इगराज के लिये समझी जायगी कि मंजूर नहीं हुई—

तशरीह—( ६ ) जिस हाल में कि अशखास वावत किसी हक़ आम या किसी जाती हक़ के जिसका दावा वह वास्ते अपने और दीगर अशखास के बशिरकत करते हों वनेकनीयती अदालत में निज़ाअ रुजूअ करै तो तमाम अशखास जो उस हक़ में गरज़ रस्तते हों वास्ते मतालिव इस दफा के दावेदार बजरिये उन अशखास के समझे जायेंगे जिन्होंने ऐसी निजाअरुजूअ की—

दफा १२—जब कोई मुद्दै किसी कायदेकी रूसे कोई ताज़ामुकदमा जदीद मुकदमा जदीद को मम- निस्वत किसी खास बिनाय मुख़ासमत के दायर करने व अउल्समाअतहोना- से ममनूअ किया जाय तो वह कोई मुकदमा निस्वत बिनाय मुख़ासमत मजकूर के किसी अदालत दीवानी में जिससे मजमूआ हाजा मुतअल्लिक है दायर नहीं करसकेगा—

दफ्ता १४ दफ्ता १३—तजवीज रियासत गैर ऐसे अमरकी निस्वत कर्तई होगी किन सूरतों में तजवीज जो सरीहन् उसकी खुले दरमियान उन्हीं फरीक़ान रियासत गैर नातिक्र के गा दरमियान उनके जिनके जरिये से मुतस्वासरान नहीं है— तात या वाज उनमें से दावेदार हों और इसी इस्तकाक पर खुसूमत करते हों फैसल होचुकाहो—सिवाय सूरतहाय मुक़सिसला जैल याने—

(अलिफ) अगर अदालत मजाज ने सुनायाहो—

( बे ) अगर वह हरदख्यदाद मुकदमा न कीगईहो—

( जीम ) अगर मुकदमे से वादिउल्लनजर में मानूमहो कि वह तजवीज ऊपर गलत फहमी किसी ऐसे कानून के मुवनी है जो दरमियान मुकदमालिफ अक़वाम वाजिवउल्तामील है या उन सूरतों में जहां कानून नाफिजा वृटिशइण्डिया क तअल्लुक हो तो तजवीज से कानून मजकूर का तसलीफ़ किया जाना न पाया जाताहो—

दफा १९—नकद तादाद मालियत या और कूद के जो किसी दफा १६

नामिद नता मजसूमों  
जहां जायदाद मुनफा-  
जिया बाकै हो—

कानून की हरे मुकरर हुई है मुकदमान अज किस्म  
मुफरियलः जैत पाने—

(अलिफ) वास्ते हुसूल जायदाद गैर मनकूला साथ या बगैर जर  
लगान या मुताफे के—

( बे ) वास्ते तकसीप जायदाद गैर मनकूला के—

( जीम ) वास्ते कराने पैदात या नीलाग या इनफिकाक रहन या जा-  
यदाद गैर मनकूला के—

( दाल ) वास्ते तसफिया कराने किसी और दक या मुराफिक के  
जो जायदाद गैर मनकूला में या उससे मुतअल्लिक हों—

( हे ) वास्ते पाने मुआविजा किसी नुकसान के जो जायदाद गैर  
मनकूला को पहुंचा हो—

( वाव ) वास्ते पाने जायदाद मनकूला के जो फिलवाकै तहत हिरा-  
सत या कुर्की हो—

उस अदालत में दायर किये जायेंगे जिसके इख्तियार स-  
माअत की हुदूद अरजी के अन्दर जायदाद बाकै हो मगर  
शर्त यह है कि जो नालिश वास्ते हुसूल दादरसी के निस्वत  
ऐसी जायदाद या मुआविजा नुकसान गैर मनकूला के या  
मुआविजा नुकसान ऐसी जायदाद गैर मनकूला के हो  
जो मुदआअलेह के कब्जे में हो या मुदआअलेह के लिये  
किसी और के कब्जे में हो और खुद मुदआअलेह की  
तामील हुक्म से उस तमाम दादरसी का हुसूल मुमकिन  
हो तो जायज है कि उस अदालत में खजूआ की जाये जिसके  
इलाका की हुदूद अरजी के अन्दर जायदाद बाकै हो या  
उस अदालत में जिसके इलाके की हुदूद अरजी के अन्दर  
मुदआअलेह फिलवाकै और बिलइरादा सकूनत रखता हो  
या कारवार करता हो या हुसूल मुनफअत के लिये बजात  
खास काम करता हो—

तशरीह—उस दफा में “जायदाद” के लफ्जसे वह जायदाद  
मुराद है जो ब्रिटिश इण्डियामें बाकै हो—

का १६

दफ्ता ९७—( १ ) अगर नालिश वास्ते हुसूल दादरसी निस्बत या नालिश निस्बत ऐसी मुआविज़ः ऐसी जायदाद गैर मन्कूलाके हो जो अदालत हाथ मुतअदिदके इलाके इस्तिथार में बाँके हो तो जायज है कि नालिश उस अदालत में रुजू करवाये जिसके इलाके इस्तिथार की हुदूदके अन्दर उस जायदाद का कोई हुज बाँके हो—

दाद का कोई हुज बाँके हो—

बशर्ते कि कुल दावा बलिहाज मालियत शै मुआविहा काविल समाप्त अदालत मजकूरके हो—

( २ ) अगर वह जायदाद गैर मन्कूला अन्दर हुदूद इजलाअ मुतअदिद जब जायदाद मुतअदिक के बाँके हो तो नालिश को किसी अदालत में जो दमरे इजला में बाँके हो— मरातिव के लिहाज से उसकी समाप्त की मजाज हो और जिसके इलाके के अन्दर जायदाद मजकूर का कोई हुज बाँके हो रुजू करना जायज है—

रुजूअ नालिश कोई माकूल वजह शक की न हो निस्वत उसके कि अदा-  
लत जायदाद की निरदत इत्तियार समाज्जन रखती थी औरतावत्ते कि  
उस सबब से वे इन्साफी न हुई हो—

दफा १६—जात या जायदाद मन्कूअ को नुकसान पहुंचाने के मु- दफा १८

नालिशात मुआरिजा | आविजः की नालिश में अगर वह नुकसान किसी अ-  
वावत नुकसान जात | दालत के इलाके की हुदूद अरजी के अन्दर पहुंचा हो  
या जायदाद मन्कूना- | और मुद्आअलेह दूसरी अदालत के इलाके के हुदूद  
अरजी के अन्दर रहता या कारोबार करता या मुन्फअत के लिये वजात  
खुद काम करता हो तो मुद्ई को इत्तियार है कि अपनी मर्जी के मुता-  
विक दोनों अदालतों में से जिसमें चाहे नालिश रुजूअ करै

## तमसीलात ॥

( अलिफ ) जैदने कि दिहली में रहता है उमरू को कलकत्ते में मारा  
तो जायज है कि उमरू कलकत्ते में जैद पर नालिश करै  
या दिहली में—

( वे ) जैद ने कि दिहली में रहता है कलकत्ते में वयानात अजा-  
ले हैसियत उरफी निस्वत उमरू के साया किये तो जायज  
है कि उमरू कलकत्ते में जैद पर नालिश करै या दिहली में—

दफा २०—वरिआयत कयूद मुतजकिरै सदर के हर नालिश उस दफा १७

दीगर नालिशात बेहा | अदालत में रुजूअ की जायेगी जिस के इलाका इ-  
दायर होनी चाहिये जहा | त्तियार के हुदूद अरजी के अन्दर—  
मुद्आअलेह रहता हो  
या जहा विनाय मुआ-  
समत पैदा हो—

( अलिफ ) मुद्आअलेह या अगर एक से ज्यादा मुद्आअलेहुम् हों  
तो उन में से हर एकवरवक्त शुरू होने नालिश के फिल-  
वाकै और विले इरादः रहता हो या कारोबार करता हो या  
हुसूल मुन्फअत के लिये वजात खास काम करता हो या—

( वे ) अगर एक से ज्यादा मुद्आअलेह न हों तो मिन जुमला उनके  
कोई मुद्आअलेह वरवक्त शुरू होने नालिश के फिल वाकै  
और विले इरादः सकूनत रखता हो या कारोबार करता हो या



मुनफ़अत के लिये वज़ात खास काम करता हो—वशनें बि इस सूरत में नालिश के इसतरह रुजूअ होने की अदालत इजाज़त दे या वह मुदआअलेह जो कि हस्व मजकूरः बाल सकूनत न रखने हों या कारोबार न करते हों या मुनफ़अत के लिये वज़ात खास काम न करते हों इस इरजापर सकूनत इस्लियार करैं—या

( जीम ) विनाय दावा कुल न्या जुजन् पैदा हुई हो—

तशरीह १—जित हाल में कि कोई शख्स सकूनत मुस्तकिल एव मुकामपर रखता हो और दूसरी जगह सकूनत थारजी भी रखता हो तो निश्चय किसी विनाय दावा के जो उस चंद रोजा रहने के मुकामपर बाक़े हो यह समझा जायग कि वह दोनों मुकामपर सकूनत रखता था—

तशरीह २—किसी जमाअत सनद याफ़ता के कारोबार का होन उसके सदर या ताम दफ़तर बाक़े ब्रिटिश इण्डिया में समझा जायगा या निश्चय किसी विनायदावे के जो उस जगह पैदा हो जहाँ जमाअत मजकूर का कोई दफ़तर मा बहत हो तो उस दफ़तर मानहत में—

तससीलान

इतुलतलव याजिबुल अदा या लिखकर जैद के हवाले किया तो जायज है कि जैद उमर और बकर पर बनारस में नालिश करे जहां विनाय दाया पैदा हुई और यह भी जायज है कि जैद उनपर कलकत्ते में नालिश करे जहां उमर सकूनत रखता है या दिहली में जहां कि बकर रहता है मगर उन हर दो सूरतों में अगर वह मुद्दाअलेह जो वहां सकूनत नहीं रखता है एतराज करे तो मुकदमा बिला इजाजत अदालत के चल न सकेगा—

दफा २१—कोई उजरदारी निस्वत मुकाम इरजाअ नालिश अज दफा १६ (उजरदारी निस्वत इ- तरफ अदालत अपील या उस अदालत के जिसमें लिफजमन) गितयार समाअत— तजरसानी पेशहो मसमूअ न होगी तावक्ते कि यह उजरदारी अदालत इत्तिदाई में सबसे पहले मौके पर और हर हालत में कबल या वरवक्त करारदाद अमूर तनक्कीह के पेश न की गई हो और तावक्ते कि इसी सबब से वेइन्साफी न हुई हो—

दफा २२—अगर कोई मुकदमा जो दो या ज्यादा अदालतों में से दफा २० ऐसे मुकदमाको मुन्त- किसी एक अदालत में दायर होसक्ताहो उन में से किल करनेका इस्तियार किसी एक अदालतमें दायर कियाजाय तो कोई मुद्दाअ- जो एकसे ज्यादा अदा- लेह दूसरे फरीकों को इत्तिलाअ तहरीरी देकर और लतों में दायर होसके- अलेह दूसरे फरीकों को इत्तिलाअ तहरीरी देकर और सबसे पहिले मौके पर और जुम्ला सूरतों में वरवक्त या कबल करार- दाद उमूर तनक्कीह तलव के मुकदमे को किसी दूसरी अदालत में मुन्त- किल करने की दरख्वास्त देसक्ता है—और वह अदालत जिसमें यह दरख्वास्त गुजरे चाद और करने ऊपर उजरदारी हाय फरीकैन के (अगर कोई उजरदारी कीजाय) यह तैकरदेगी कि मुकदमे की समाअत उन मुतअदिद अदालत हाय मजाज में से किस अदालत में कीजाये—

दफा २३—अगर मुतअदिद अदालत हाय मजाज एकही अदालत दफा २३ वर किस अदालत में दर- अपील की मातहत हो तो दरख्वास्त हस्व दफा २२ स्वास्त गुजरेगी— अदालत अपील में गुजरेगी—

( २ ) अगर ऐसी अदालतें मुख्तलिफ अदालत हाय अपील की मातहतहों—लेकिन एकही हाईकोर्ट के तावेहों तो दरख्वास्त हाईकोर्ट मजकूरमें गुजरेगी—



मतालिबः जात सफीफा ने मुन्तकिल किया या वापस लिया जाय तो अदालत मुजव्विज मुकदमा मजकूर वास्ते इगराज उस मुकदमा के वमन्जिले अदालत मतालिबः जात सफीफा के समझी जायगी—

दफ्ता २५—( १ ) जब कोई फरीक नालिश-अपील या दीगर दफा २० व २१ इतिवार नव्वाब गवर्नर जनरल वहादुर व इजलास कौन्सिल निरवत इन्त-जाल मकदमान- कार्रवाई जो ऐसी हाईकोर्ट में जेर तजवीज हो जिसका हाकिम वाहिद जज हो उसके समाअत करने पर उअर कर और जजका इतमीनान होजायकि उअर की माकूल वजूह है तो वह बहुजर नव्वाब गवर्नर जनरल वहादुर व इजलास कौन्सिल रिपोर्ट करेगा साहब मयदूह को इस्तिवार होगा कि वजरिये ऐलान मुन्दर्जः गजट आफ इण्डिया ऐसी नालिश अपील या कार्रवाई को दूसरी हाईकोर्ट में मुन्तकिल करे—

( २ ) ऐसी नालिश-अपील या कार्रवाई से जो इसतरह मुन्तकिल कीजाये वह कानून मुतअल्लिक होगा जो कानून उस अदालत को जिसमें कि नालिश-अपील या कार्रवाई इवतिदाअन् दायर की गई थी ऐसे मुकदमे से-मुतअल्लिक करना लाजिम होता—

## इरजाअ नालिशात ॥

दफ्ता २६—मुकदमे की इवतिदाअदखाल अर्जीदावासे या ऐसे दूसरे दफा ४८ इरजाअनालिश- तरीके से होगी जो मुकर्रर किया जाय—

## सम्मन वइन्किशाफ ॥

दफ्ता २७—जब नालिश वजाअता तौर पर दायर होजाये तो जायज दफा ६४ सम्मन वनाम मुदआ-अलेह है कि सम्मन मुदआअलेह के नाम इस हुक्म से जारी किया जाय कि वह अदालत में हाजिर होकर दावेकी जवाबदिही करे और तामील इस सम्मन की हस्ब तरीकः मुकर्रर की-जायेगी—

दफ्ता २८—( १ ) जायज है कि सम्मन तामील के वास्ते किसी दूसरे दफा ८५ तामील सम्मन जब कि सूबे की अदालत में ऐसे तरीके पर इरसाल किया जाय जो वजरिये कवायद मुजव्विजः सूबः मजकूर मुकर्रर कर दिया जाये—

( २ ) जिस अदालत में सम्मन भेजा जाय उसको लाजिम है कि सम्मन के बसूल होनेपर उसी तरह कार्रवाई करे गोया कि सम्मन खुद उसने जारी कियाथा बादअजां वह सम्मन अदालत जारी कुनिन्दः के पास मय इस बयान के कि उसके मुतअल्लिक क्या कार्रवाई (अगर कोई हो) की गई वापसकरदे-

६५

लिफ )

दफ्ता २६—जो सम्मन कोई अदालत दीवानी या माल वाकै वेरून तामील सम्मन थेर— | हुदूद वृटिशइण्डिया जारी करै वह वृटिशइण्डिया की अदालतों में भेजे जासक्ते हैं और उनकी तामील उसी तरह होसक्तीहै गोया कि उनको खुद अदालत हाय मजकूर ने जारी किया—

मगर शर्त यहहै कि वह अदालतें जिनसे ऐसे सम्मन जारी हुयेहों नब्बाव गवर्नरजनरल बहादुर बइजलास कौंसिल के हुक्म से कायम हुई हों या कायम रक्खी गई हों या कि नब्बाव ममदूह ने गज़ट आफइण्डिया में एल्तान फरमा दिया हो कि मजसून दफाहाजा ऐसी अदालतों से मुतअल्लिक किया गया है—

द

दफ्ता ३०—वपावन्दी ऐसी शरायत व क्यूदके जो मुकरर करदी जाय इन्डिया सुदर हुक्म | अदालत किसी वक्त ख्वाह अपनी तजवीज़ से या किसी फरीक की दरख्वास्त पर उमूर ज़ैल करसक्ती है—याने

(अलिफ) असदार अहकाम ज़रूरी या मुनासिब निस्वत जुम्ला उमूर मुतअल्लिकः दवालगो व जवाबदिही बन्द सवालात वदकवाल दस्तावेजात व वाकिअत—वडन्किशाफ व मुआयना व पेशी व जव्ती व वापसी दस्तावेजात या दूसरी माटी चीजों के जो सबूत में पेश होसकें—

( बे ) इजराय सम्मन बनाम ऐसे अशरवास के जिनकी हाजिरी खाह अदाय शआदत के लिये या दस्तावेजात या टीगर अशियाय मजकूर पेश करने के लिये मतनूवहो—

( जीम ) इसदार हुक्म निस्वत इमके कि कोई वाकै वज़रिये अफी अद के साबित कियाजाय—

द

दफ्ता ३१—अहकाम दफा २७ व २८ व २९ ऐसे सम्मनों में भी मुतअल्लिक होंगे जो अदाय शआदत या ऐसी

दस्तावेजात या दीवर अशियाय माटी के वास्ते जारी किये जायें—

दफा ३२—अदालत उस शरूप की हाजिरी जिसके नाम सम्मन जर्द सजा वरसन अदम तामील— हरव दफा ३० जारी किया जाय जवरन करासक्ती है और इस गरज के लिये जायज है कि—

(अलिफ) चारन्ट निम्नत उसकी गिरफ्तारी के जारी करें—

( वे ) कुकी और नीलाम उसकी जायदादका करें—

( जीम ) उस पर जुर्माना जो पांचसौ रुपयासे ज्यादा न हो करें—

( दान्त ) वास्ते देने हाजिर जायिनी के उसको हुक्मदे और बसूरत

अदम तामील उसको जेलखाना दीवानी में कैदकरे—

## तजवीज व डिगरी

दफा ३३—वाढसमाअत मुकदमे के अदालत तजवीज सुनायेगी और दफा १६८ तजवीज व डिगरी— उस तजवीज की विनाय पर डिगरी सादिरहोगी—

## सूद

दफा ३४—( १ ) जिसहालमें कि डिगरी रुपये की अदाय की दफा २०६ डिगरी की रूते हुक्म होसक्ता है कि जरअ-सिल डिगरी पर सूद दिलायाजाय— हो तो अदालत मजाजहोगी कि डिगरी में हुक्म सूद का वावत उस जर असल के जिसकी डिगरी हो उस शरहसे जो कि अदालत मुनासिव तसव्वरकरै तारीख नालिश से तारीख डिगरी तक अलावा उस सूद के

जिसका कि जर असल मजकूर पर तारीख रजू नालिश तक वावत किसी मुदत माक्रबल इरजाय नालिश के इन्फसाल कियाजाय मयसूद मजीद उस जर मजमूई के जिसका उस निहजपर इन्फसालहो उस शरहसे कि अदालत मुनासिव तसव्वरकरै मिनइब्तिदाय तारीख डिगरी लगायत योम अदा या लगायत किसी और तारीख माक्रबल के जोकि अदालत मुनासिव समझै सादिरकरै—

( २ ) जब ऐसी डिगरी में जिक्र अदाय सूद मजीद का जर मजमूई मजकूर पर मिनइब्तिदाय तारीख डिगरी लगायत योम अदा या किसी और तारीख माक्रबल के कुछ न हो तो उससे समझा जायगा कि अदालत में वह सूद दिलाने से इन्कार किया और उसके वास्ते अलाहिदा नालिश खूअ न होराकेगी—

## खर्चा

- ५ ऐक्ट  
उलक चीर  
१८६० ई०
- दफ्ता ३५—( १ ) बरिआयत शरायत व कयूंद मुकर्ररा व अहकाम से तअल्लुक खर्चः | काम किसी कानून नाफिहुल्वक्त के जो खर्चः मुकदमा में या मुकदमः के मुतअल्लिकहुआदो वह अदालत के सवावदी पर मौकूफ है और अदालतको इस अमर के तै करने के पूरे इख्तियार हासिल हैं कि खर्चा कौनदेगा और किस जायदाद से और किस हदतः दिलाया जायगा—और अदालत जुझला जरूरी हिदायात निस्वत उस सादिर करसक्ती है—और यह अमर कि अदालत को मुकदमः की तजवीज व इख्तियार हासिल नहीं है ऐसे इख्तियारात के निफाज का मानै न होगा
- २३० ( २ ) अगर अदालत हुक्म दे कि कुछ खर्चः नहीं दिलाया जायगा त उसको उसकी वजह लिखनी पड़ेगी—
- २२२ ( ३ ) अदालतको इख्तियार है कि खर्चः पर सूद किसी हिसाब से दिला जो सालाना छः रुपया फीसदी से ज्यादा न हो और यह सू खर्चा में जोड़ दिया जायगा और मिसल खर्चः वसूल होसकेगा—

## हिस्सा २

### इजराय आम

दफ्ता ३६—अहकाम मजमूअः हाजा जो इजराय डिगरी से मुतअल्लिक अहकाम से तअल्लुक | हैं जहां पर मुतअल्लिक होसकेंगे इजराय अहकाम से भ मुतअल्लिकहोंगे—

६६  
शरीह

दफ्ता ३७—व तअल्लुक इजराय डिगरी के “ अदालत सादिर कु अदालत सादिर कुनि- निन्दा डिगरी ” या उसी मजमून के दीगर अलफाज न्दा डिगरी की तारीफ- से वजुज उस सूरत के कि वह मजमून या सियाक इवा रतके तुक्कीज हो—

(अलिफ) जब डिगरी इजराय तलव वनिफाज इख्तियारात अपील सादिर हुई हो तो अदालत मुराफअः ऊला मुराद है—

( वे ) अगर अदालत मुराफअः ऊला मौजूद न रहै या उस के जारी करने का इख्तियार उसको न रहै तो वह अदालत मुराद है जो दर सूरत दायर होने उस नालिश के जिसमें डिगरी सादिर हुई हो उस वक्त जब कि दरखास्त इजराय डिगरी

## दाखिल हुई थी उस नालिश की समाप्तकी मजाजहोती— अदालतहाय इजरा कुनिन्दः डिगरी ॥

दफ्ता ३८—इजराय डिगरी का ख्वाह उस अदालत के जरिये से दफा २२३  
कौन अदालत डिगरी होगा जिसने डिगरी सादिर की या उस अदालत के फिके अव्वल  
या इजरा करेगी— जरिये से जिसमें वह इजरा के वास्ते भेजी जाय—

दफ्ता ३९—( १ ) जायजह कि अदालत जिसने डिगरी सादिर की दफा २२३  
डिगरी का मुन्तकिल हो डिगरीदारकी दरख्वास्त गुजरने पर डिगरी को फिके दोयम  
होना— दूसरी अदालत में जारी होने के लिये भेजदे— व सोयम

( अलिफ ) अगर वह शख्स जिसके नाम डिगरी सादिर हुई हो उस दूसरी अदालत के इलाके के हुदूद अरजी के अन्दर फिल वाकै और यिलइरादः सकूनत रखता या कोई कारोवार करता या मुनाफे के लिये वजात खास काम करताहो—या

( वे ) अगर उस शख्स के पास उस अदालत के इलाके की हुदूद अरजी के अन्दर जिसने डिगरी सादिरकी हो उस कदर जायदाद न हो जो वास्ते वसूल करने जर डिगरी के काफी हो वलिक उस दूसरी अदालत के इलाके की हुदूद अरजी के अन्दर जायदाद रखताहो—या

( जीम ) अगर डिगरी में हुक्म नीलाम या हवालः करदेने ऐसी जायदाद गैरमन्कूला का हो जो अदालत सादिर कुनिन्दः डिगरी के इस्तिथार हुक्मत की हुदूद अरजी से बाहर वाकैहो—या

( दाल ) अगर अदालत जिसने डिगरी सादिरकी हो किसी और वजह से जो उसे लिखनी चाहिये यह मुनासिब समझे कि डिगरी उस दूसरी अदालत से जारी कीजाय—

( २ ) अदालत सादिर कुनिन्दः डिगरी को इस्तिथारहै कि अपनी मरजी से डिगरी को वास्ते इजराके अपनी किसी अदालत मातहत मजाज समाप्त में भेजदे—

दफ्ता ४०—अगर कोई डिगरी इजरा के वास्ते किसी दूसरे सूबः में जदीद मुन्तकिलहोना डिगरी भेजी जाय तो वह उस अदालत में भेजी जायेगी और  
का किसी दूसरे सूब की उस तरीकः पर जारी कीजायेगी जैसा कि उन कयायद  
अदालत में में हुक्महो जो उस सूबः में नाफिजहों—



२२३

करे चहारम

**दफ़ा ४१—**अदालत जिसमें डिगरी इजराके लिये भेजी जाय उसके

कारवाई इजराके नतीज की इत्तिलाअ-

इजरा पा जानेका हाल अदालत सादिर कुनिन्दे डिगरी को तसदीक करैगी या अगर अदालत अव्वलुल्लिफ़ उसका इजरा न करसकै तो उसके न जारी होसकने के हालात तसदीक करैगी-

२२८

**दफ़ा ४२—**जिस अदालत को डिगरी इजराके लिये भेजी जाय उस

इस्तिथारात अदालत निस्वत इजराय डिगरी मुन्तकिल शुद

को डिगरी मजकूरके इजरामें वही इस्तिथारात हासिल होंगे कि गोया खुद उसीने डिगरी सादिर की थी और वह सब लोग जो डिगरी के इजरा में अदालत हुक्मी करै या हारिज हों उसी तरह अदालत मजकूर की तजवीज़ से सजा पानेके लायकहोंगे कि गोया उसी अदालत में डिगरी सादिर की थी और अदालत मजकूर से जो अहकाम उस डिगरी के इजरा में सादिरहों उन्हीं कवायद के वमूजिव काविल अपील होंगे कि गोया उसी अदालत ने डिगरी सादिर की थी—

**दफ़ा ४३—**अगर किसी ऐसी अदालत दीवानी ने डिगरी सादिर की

इजराय डिगरी जो ऐसी अदालत अगरेजी से सादिरहो जो ऐसे मुक़दम मे बाक हो जहां अहकाम मुन्दर्ज हिस्सा हाजा तअल्लुक पि जीर नहों या अदालत रियासत गैर से सादिर हो—

हो जो किसी ऐसे जुज़्व बृटिश इण्डिया में कायमहो जहां अहकाम मुतअल्लिकः इजराय डिगरी तअल्लुकः पिजीर नहों या किसी ऐसी अदालत में सादिर की हो जो वमूजिव हुक्म नव्वाव गवर्नर जेनरल वहादुर इजलास कौंसिल किसी वाली या रईस मुमालिक गैर कलम रु के अन्दर मुक़रर हो या जारी रक्खी गई हो और उसका इजरा उस अदालत के इलाक़ः के अन्दर न होसके जहां से वह डिगरी सादिर हुई हो तो उसका इजरा मुताविक उन अहकाम के जो उस मजमूअः में मुन्दर्ज है बृटिश इण्डिया की किसी अदालत के इलाक़े में होसकैगा—

२२६

( ५ )

**दफ़ा ४४—**नव्वाव गवर्नर जेनरल वहादुर इजलास कौंसिल मजाज़ हैं

इजरा उम डिगरी का जो किसी अदालत या रियासत हिन्दोस्तानीसे सादिर हो—

कि गजट आफ इण्डिया में ऐलान फ़रमावें कि डिगरियां किसी अदालत हाय दीवानी या माल की जो किसी ऐसी रियासत हिन्दोस्तानी के कलमरु में बाकें हों जो माला हजरत मलिक गुमज़म से राबतः इत्तिहाद रखती हो

और नव्वाब गवर्नरजनरल बहादुर इजलास कौंसिल के हुक्म से मुकर्रर न हुई हो या जारी न रखी गई हो या ऐसी डिगिरियों की कोई क्रिम खास ब्रिटिशइण्डिया में इसीतरह जारी होसकैगी गोया कि वह खुद अदालत हाय ब्रिटिशइण्डिया की तरफ से सादिर हुई—

दफ्ता ४५—इस कदर हिस्सा उन गुजिस्तः दफ्तात हिस्साहाजा का दफा २०६ डिगिरियों का इजराय जिससे अदालत को इस्तिथार हासिल होता है कि (अलिफ) मुमालिक गैर में डिगरी वास्ते इजराके किसी दूसरी अदालतमें इस्ताल करै किसी अदालत ब्रिटिशइण्डियाको इस्तिथार बखशेगा कि कोई डिगरी वास्ते इजरा के किसी ऐसी अदालत में भेजे जो बहुक्म नव्वाब गवर्नरजनरल बहादुर इजलास कौंसिल किसी चाली या रईस मुमालिकगैर के कलमरु में मुकर्रर हो या जारी रखी गई हो जिससे मुहत्तशिमइब्ने ने बजरिये ऐनान मुन्तवआ गजट आफ इण्डिया दफाहाजा को मुतअल्लिक करदियाहो—

दफ्ता ४६—( १ ) अगर डिगरीदार अदालत सादिर कुनिन्दा डिगरी जदीद प्रेस्पट से दरखास्त करै तो अदालत मजकूर अगर मुनासिब समझेगी एक प्रेस्पट किसी दूसरी अदालत के नाम जारी करैगी जो डिगरी मजकूर के इजरा करने की मजाज हो मुतमस्मिन इसके कि वह अदालत जायदाद गमलूकः मदयूनडिगरी को जिसकी तसरीह प्रेस्पट में हो कुर्क करले—

( २ ) वह अदालत जिसके नाम प्रेस्पट भेजाजाय कुर्की जायदाद की कार्रवाई उस तरीक़े पर करैगी जो इजराय डिगरी में कुर्क जायदाद के वास्ते मुकर्रर है— मगर शर्त यह है कि प्रेस्पट की रूसे कुर्की दो महीने से ज्यादा अरसेके लिये कायम न रहेगी तावक्ते कि मीआद कुर्की की तौसीअ उस अदालत के हुक्म से न होजायें जिसने डिगरी सादिर कीहो या तावक्ते कि कुर्की मजकूर के खतम होनेसे पेशतर डिगरी उस अदालत में मुन्तकिल न करदी गईहो जिसने कि कुर्की की थी और डिगरीदारने ऐसी जायदाद के नीलाम के हुक्म के वास्ते दरखास्त न दीहो—

## तनाजिआत काबिल तजवीज अदालत इजराकुनिन्दः डिगरी ॥

न २४४

दफा ४७—( १ ) जुम्ला अमूर निजाई जो मावैन फरीकैन उस तनाजिआत काबिल मुकदमा के जिसमें डिगरी सादिर हुई हो या मावैन तजवीज अदालत इज- उनके कायम मुकामों के पैदाहों और जो डिगरी के राकुनिन्द डिगरी— इजरा या उसके ईफा या वेवाक्की से तअल्लुक रखते हों इस अदालत के हुक्म से फ़ैसलहोंगे जो डिगरी का इजराकरै न वज़रिये नालिश जुदागाना के—

( २ ) व रिआयत उज़रदारी निस्वतमीआद या इस्लियार समाअत अदालत मजाज़ है कि कार्रवाई तदत दफा हाज़ा को एक मुकदमः ख्यालकरै या मुकदमः को कार्रवाई ख्यालकरै और अगर ज़रूरीहो तो जायद कोर्टफ़ीस दाखिल करने का हुक्मदे—

( ३ ) अगर यह सवाल पैदाहो कि कोई शख्स किसी फरीक का कायम मुकाम है या नहीं तो अदालत सवाल मजकूर को इस दफाकी इगराज़ के लिये तै करदेगी—

तशरीह—इस दफा की इगराज़ के वास्ते वह मुद्दै जिसकी नालिश खारिज करदीगई हो और वह मुद्दाअल्लेह जिसके खिलाफ में नालिश खारिज करदीगई हो फरीकैन मुकदमः हैं—

## मीआद बिनावर इजरा ॥

दफा २३०

केकरा ३ व ४

दफा ४८—( १ ) अगर दरख्वास्त वास्ते इजरा किसी ऐसी डिगरी

डिगरी का इजरा निन के गुजरै जो सुदूर हुक्म इम्तिनाई की डिगरी न हो सरता में ममनूअ है - तो उसके बाद कोई हुक्म निस्वत इजरा उसी डिगरी

के किसी जदीद दरख्वास्त पर सादिर नहीं कियाजायगा जो बाद गुज़र जाने मुद्दत बारह साल के तारीख हाय मुफसिलतः जैल से गुजरानी जाय—याने

(अलिफ) तारीख डिगरी से जिसका इजरा मंज़ूर हो—या

( बे ) अगर डिगरी या हुक्म मावादमें यह हुक्महो कि फलां ताआद रुपये की किसी खास तारीखपर या आथंदा तारीख

हाय मुज्जयिनः पर अदा कीजाये या फलां माल हवाले किया जाय तो किस्तके न अदा और मालके न हवाला करने की तारीख से जिसकी वावत सायल वह डिगरी जारी कराना चाहताहो—

( २ ) इस दफा की किसी इजरात से यह नहीं समझा जायेगा कि—  
( अलिफ ) अदालत इजराय डिगरी का हुक्म देने से ममनूअ की गई है किसी ऐसी दरख्वास्त पर जो वाद गुजरने मीआद बारह साल मजकूर के गुजरानीजाये जिस हालमें कि मदयून ने किसी फरेव या जत्रसे डिगरी के इजराय को किसी अरसे में जो दरख्वास्त की तारीख से बारह वरस माकबलके अन्दर हो रोकाहो—या

( वे ) आर्टिकल १८० जमीमा दोयम कानून मीआद समाअत ऐक्ट १५ सन हिन्द सन १८७७ ई० का असर किसी तरहसे महदूद या १८७७ ई० मुतगैयर किया गयाहै—

## मुन्तकिलइलेहम् व कायममुक्कामान जायज

दफा ४६—हर शख्स जिसके नाम डिगरी मुन्तकिल कीजाये व दफा २३३ मुन्तकिलइलेह— पावन्दी उन हकूक के ( अगर कोई हों ) डिगरी का मालिकहोगा जिनको मदयून असल डिगरीदार के मुक्ताविला में नाफिज करासक्ता था—

दफा ५०—( १ ) अगर मदयून डिगरी डिगरी की तामील कामिल दफा २३४ कायम मुक्काम जायज होने से पहिले फौतकरै तो डिगरीदार को इस्तिथार है कि मदयून मुतवप्पफा के कायम मुक्काम जायज पर डिगरी जारीहोने की दरख्वास्त अदालत सादिर कुनिन्दः डिगरी को गुजरानै—

( २ ) अगर डिगरी वनाम कायम मुक्काम मजकूर जारी कराईजाये तो उसकी जिम्मेदारी सिर्फ उसीकदर होगी जिसकदर जायदाद शख्स मुतवप्पफा की उसके हाथ में आई हो और अजराह वाजिव उसपर कोई तसर्फ न हुवाहो और वास्ते दरियाफ्त मिक्कदार जिम्मेदारी के अदालत इजराय कुनिन्दा डिगरी मजाजहोगी कि अपनी मर्जी से या डिगरीदार की

दरखास्त पर कायम मुकाम मजकूर से ऐसे कागजात  
हिसाब जवरन दाखिल कराये जो अदालत को मुनासिब  
मालूम हों—

## जाबता इजरा

जदीद

दफ्ता ५१—व पावन्दी ऐसी शरायत व कयूद के जो मुकरर कर  
इम्तियारात अदालत जायँ अदालत डिगरीदार की दरखास्त पर डिग  
दर इजराय डिगरी— के इजरा का हुक्म करसक्ती है—

(अलिफ) वज्रिये हवालगी जायदाद के जिसकी तशरीह डिग  
में हो—या

( -वे - ) या वज्रिये कुर्की (यि नीलाष या नीलाम वगैर कुर्की कि  
जायदाद के—

( जीम ) या वज्रिये गिरफ्तारी व कैद जेलखाना के—

( दाल ) या वज्रिये मुकरर करने रिसीवर के—

( हे ) या किसी और तरीके पर जो दादरसी अता शुदकी ने  
इअत के लिहाज से जरूरी समझा जाये—

॥ २५२

दफ्ता ५२—( १ ) अगर किसी फरीक पर वहैसियत होने काय  
इजराय डिगरी बनाम मुकाम कानूनी शख्स मुतवफफा के डिगरी हुई हो औ  
कायम मुकाम जायज डिगरी मजकूर वास्ते दिलाने जर नक़्द के जायदाद शख्स  
मुतवफफा से हो तो इजराय डिगरी का वज्रिये कुर्की और नीलाम जाय  
दाद मजकूर के होसक्ताहै—

( २ ) अगर ऐसी कोई जायदाद मदयून डिगरी के कब्जे में बाकी न  
रहै और वह हस्व इतमीनान अदालत यह साबित न करसके कि  
उसने उस जायदाद शख्स मुतवफफा को जिसका उसके कब्जे  
में आना साबित हो वजासर्फ कियाहै तो मदयून डिगरी पर डिगरी  
वावत उस कदर जायदाद के जिसकी निस्वत वह अदालत  
का हस्व मजकूर वाला इतमीनान न करसके उसी तरीके से  
जारी होसक्ती है जैसे कि डिगरी मजकूर खुद उसी की जा  
दाद पर हुई हो—

दफ्ता ५३—वास्ते अगर राज दफ्ता ५० व दफ्ता ५२ के जो जायदाद जदीद जिम्मेदारी निम्नत जा- किसी शाख के बेटे या दीगर औलाद के कब्जे में यनाद मोरमी— इस तरह आये कि जायदाद मजदूर पर शाख की खुसे मुतवफफा के देनका दारहो तो समझा जायगा कि जायदाद मजदूर वही जायदाद शाख मुतवफफा की है जो उसके बेटे या दीगर औलाद के कब्जे में बहसियत उसके कायम मुकाम जायज के आई है—

दफ्ता ५४—अगर डिगरी बावत तक्रसीम या अलाहिदगी कब्जे कफा २६५ तक्रसीम मुहाल या हिस्सा मुहाल गैर मुनकस्मा के कि जिसकी मालगुजारी अलाहिदगी हिस्सा— सरकार में दीजाती हो सादिर हुई हो तो तक्रसीम मुहाल या अलाहिदगी हिस्सा की मारफत साहब कलक्टर के या किसी गजट शुदः मातहत साहब कलक्टर के जिसको उन्होंने ने इस काम के वास्ते मुकर्रर किया हो मुताबिक उस कानून के ( अगर कोई हो ) अमल में आयेगी जो दरबारः तक्रसीम या कब्जा जुदागाना हिस्स ऐसे मुहालातके उस वक्त नाफिज हो—

## गिरफ्तारी व कैद

दफ्ता ५५—( १ ) जायज है कि मदयून डिगरी किसी रोज और दफा ३३६ गिरफ्तारी व कैद म- किसी वक्त व इलत इजराय डिगरी गिरफ्तार किया जाये दयून डिगरी की— और लाजिम है कि जिसकदर जल्द मुमकिन हो अदालत में हाजिर किया जाय और जायज है कि वह उस जिले के जेल-खाना दीवानी में कैद रखा जाये जहां अदालत सादिर कुनिन्दः हुक्म कैद वाकै हो या अगर उस जेलखाना दीवानी में गुनाइश मुनासिब न हो तो किसी और जगह कैद किया जाय जिसे लोकल गवर्नमेन्ट वास्ते कैद रखने उन अशख़ास के मुकर्रर करै जिनके निम्नत उस जिले की अदालतों से कैद रखने का हुक्म हो—

मगर शर्त अव्वल यह है कि इस दफा के बमोजिब गिरफ्तारी करने की गरज से जायज नहीं है कि गुरुव आप्रताव के बाद या तुनूअ आप्रताव से पहिले किसी मकान सकूनत में दाखिल किया जाय—

और दूसरी शर्त यह है कि किसी मकान सकूनत का बेरुनी दर

वाजों न तोड़ा जायगा इत्यादि उस सूरत में जब कि ऐसा मकान सकूनत मदयून डिगरी के दरखल में हो और वह उसमें दाखिल होने को इन्कार करे या किसी तरह रोके लेकिन जब ओहददार मजाज गिरफ्तारी किसी मकान सकूनत के अन्दर दजाबतः पहुँच गया हो तो उसे इस्तिथार है कि किसी कमरे का दरवाजा तोड़ डाले जिसमें किसी वजह से उसको यकीन हो कि मदयून डिगरी दस्तियाव हो जायगा—

और तीसरी शर्त यह है कि अगर वह कंपरा किसी ऐसी औरत के दरखल वाकई में हो जो मदयून डिगरी न हो और जो हस्वरिवाज मुल्क बाहर न निकलती हो तो ओहददार मजाज गिरफ्तारी औरत मजकूर को जतादेगा कि उसको बाहर निकल जाने का इस्तिथार है और वाद देने मुहलत माकूल वास्ते निकल जाने औरत मजकूर के और निकलने के लिये उसको हरतरह की सहूलियत मुनासिब देकर ओहददार मजकूर मजाज होगा कि गिरफ्तारी के लिये कमरे के अंदर जाय—

और चौथी शर्त यह है कि अगर वह डिगरी जिसके इजरा में कोई मदयून डिगरी गिरफ्तार हुवा हो वावत जर नफ़द के हो और मदयून डिगरी उसकी तादाद और खर्चा गिरफ्तारी का ओहददार गिरफ्तार करनेवाले को अदा करदे तो ओहददार मजकूर उसको फौरन् रिहा करदेगा—

( २ ) लोकल गवर्नमेन्ट इस अध्र का ऐलान मुकामी गज़ट सरकारी में देसक्ती है कि फलांशख़स या किस्मअशख़ास जिनकी गिरफ्तारी वाइश खतरा या तकलीफ़ आमेखलायक हो इजराय डिगरी में गिरफ्तार नहीं किये जायेंगे, सिवाय इस के कि जाब्ता मुकर्ररा गवर्नमेन्ट मजकूर उनकी गिरफ्तारी में मलहूज रक्खा जाय—

( ३ ) जब कोई मदयून डिगरी वइल्लत इजरा किसी डिगरी जर नफ़द के गिरफ्तार होकर अदालत के रोबख़ हाज़िर किया जाय तो अदालत उसको मुत्तिला करेगी कि उसको इस्तिथार करेगी कि दिवालिया करार पाने के लिये दरख्वास्त दे और अगर उसने कोई फेल वदनियती का निस्वत मजमून अपनी दरख्वास्त के न किया हो और अगर वह अइकाम कानून दिवाल नाफिज़ुल वक्त की तामील करेगा तो उसको रिहाई दी जायगी—

( ४ ) अगर मदयून डिगरी दिवालिया करार दियेजाने की दरखास्त देने का इरादा जाहिरकरे और जमानत हस्व इतमीनान अदालत व वाद्वे इस अत्र के दाखिलकरदे कि एक महीने के अंदर दरखास्त मजकूर गुजरानेगा और यह कि दरखास्त मजकूरकी या उस डिगरी की किसी कार्रवाई में कि जिसके इजरा में वह गिरफ्तार हुआहो जिस वक्त अदालत उसे तलब करेगी हाजिरहोगा तो अदालत उसको गिरफ्तारी से रिहाई देगी और अगर वह ऐसी दरखास्त न दे और अदालत में हाजिर न हो तो अदालत हुक्म देसक्ती है कि जमानत का रुपया वसूल कियाजाय या वइलत इजराय डिगरी वह जेलखाने दीवानी में कैद कियाजाय—

दफा ५६—वावजूद किसी मजसून मुन्दर्जे हिस्से हाजा के अदालत दफा २४५  
इजराय डिगरी जरनन्द किसी औरत की गिरफ्तारी या दीवानी जेल में कैद (अलिफ)  
में कोई औरत गिरफ्तार का हुक्म व इल्लत इजराय डिगरी जर नकद के सादिर  
या कैद नहींहोसक्ती— नहीं करेगी—

दफा ५७—( १ ) लोकलगवर्नमेन्ट को इख्तियार है कि मदारिज दफा ३३८  
जर खुराक | शरह खुराक माहवारी के जो मदयूनान डिगरी को वास्ते  
गुजारे के दीजायेंगी व लिहाज उनके दर्जे और कौम और मुल्क के मु-  
करर करै—

दफा ५८—( १ ) हर शख्स जो वसीगा इजराय डिगरी जेलखाने दफा ३४२  
कैद व रिहाई— | दीवानी में कैद कियाजाये—

(अलिफ) जब कि डिगरी पचास रुपये से ज्यादा की अदा की बावत  
हो तो छः महीने तक और—

( बे ) किसी दूसरी सूरत में छः हफ्तह तक कैद में रहैगा—मगर  
शर्त यह है कि सूरत हाय जेल में कबल गुजरने छः महीने या छः दफा ३४१  
हफ्तह की मीआद मजकूर की वह कैद से रिहाई पाजायगा—

( १ ) जब तादाद मुन्दर्जः वारन्ट कैद अप्रसर मुहतमिम जेलखाने  
को अदा करदीजाय—या

( २ ) जब कि उसकी डिगरी का इफाय कामिल और तौर पर  
होजाये—या



( ३ ) जब वह शख्स चाहे जिस के दरख्वास्तपर वह कैद किया गया हो—या

( ४ ) जब वह शख्स जिसकी दरख्वास्तपर वह कैद किया गया हो जर खुराक दाखिल न करै—

मगर शर्त यह है उन सूरतों में जो फिकरे ( २ ) या ( ३ ) में मजकूर हैं वह बिला हुक्म अदालत रिहा न किया जायेगा—

( २ ) मदयून डिगरी जो इस दफा के बमूजिव कैद से रिहाई पाये महज अपनी रिहाई की वजह से कर्जा से निजात नहीं पाये गा लेकिन उसी डिगरी की इल्लत में वह फिर गिरफ्तार नहीं होसक्ता है जिसकी इजरा में वह जेलखाने दीवानी में कैद किया गया था—

का ६५३

दफा ५६—( १ ) बाद इजराय वारन्ट गिरफ्तारी मदयून डिगरी रिहाई वजह वीमारी के के किसी वक्त अदालत को इख्तियार होगा कि वारन्ट मजकूर बसवव उसकी सख्त वीमारी के मन्सूख करै—

( २ ) अगर मदयून डिगरी गिरफ्तार हो तो अदालत को इख्तियार होगा कि उसे रिहा करदे अगर उसके नजदीक ऐसा तन्दुरुस्त न हो कि दीवानी जेल में कैद किया जाय —

( ३ ) अगर कोई मदयून डिगरी किसी जेलखाने दीवानी में भेजा जाय तो वह कैद से रिहाई पासक्ता है—

( अलिफ ) बहुक्म लोकल गवर्नमेन्ट इस बुनियाद पर कि वहां कोई सारी या मुतअदी वीमारी मौजूद है—

( वे ) या बहुक्म उस अदालत के जिसेने उसको जेल में भेजा हो या किसी और अदालत के जिसकी अदालत मजकूर मातहत हो उस बुनियाद पर कि वह किसी सख्त वीमारी में मुव्तिला है—

( ४ ) जो मदयून इस दफा के बमूजिव रिहाई पाये वह फिर गिरफ्तार होसक्ता है लेकिन जेलखाने दीवानी में उसकी कैदकी मजमूई मीआद उस मीआद से ज्यादा न होगी जो दफा ५८ की रु से मुकरर करदी गई है—

## कुर्की

दफा २६६

दफा ६०—( १ ) जो जायदाद किं व इल्लत इजराय डिगरी काविल

जायदाद काविल  
कुर्की व नीलाम व ?-  
इल्लत इजराय डिगरी-

कुर्की और नीलाम के हैं तफसील उसकी यह है याने अराजियान या मकानात या दीगर इमारात और अस-  
बाव और जर नकद और बंक नोट और चिक याने रुक्का और विलआफ एक्स चेञ्ज और हुंडियात और प्रामेसरी नोट और नोट सरकारी और तमस्सुकात या दीगर किफालतनामजात जर नकद और जर कर्जा और हिस्सः किसी जगअत रानदयाफ्तः का और सिवाय उन अ-  
शियाय के जिनका जिक्र आयन्दा है तमाम दीगर जायदाद मन्कूला या गैरमन्कूला काविल फरोख्त जो मदयून डिगरीके हो या जिसपर या जिस के मुनाफे पर उसको ऐसा इख्तियार तस्रूफ का पहुँचताहो कि वह उस को अपनी मुनफअत के लिये अमल में लासके ख्वाह वह उसके नाम से हो या बतौर उसकी अमानत के या मिनजानिव उसके दूसरे शख्स के पास हो—

मगर शर्त यह है कि अशियाय मुन्दर्जे जैल काविल ऐसी कुर्की या नीलाम के न होंगी—याने

( अलिफ ) जखरी पोशाक और पकाने के वरतन और पलंग और विस्तर मदयून डिगरी और उसकी जौजा और अतफाल के और ऐसे जेवर जिनको कोई औरत मुताबिक अपने रिवाज मजहबी के जुदा न करसक्ती हो—

( - वे ) अहल हिरफाके औजार और अगर मदयून डिगरी जिराअत पेशाहो तो जिराअतके आलात और ऐसी मवेशी और तुख्म गल्ला जो बदानिस्त अदालत मदयून डिगरी को बजह मु-  
आश हासिल करने के लिये जखरीहों और इस कदर हिस्सा पैदावार जिराअत या किसी किस्म खास के पैदावार जिरा-  
अत का जो बमूजिव अहकाम दफा ऐन मावाद के कुर्की व नीलाम से बरी जाहिर कर दियागया है—

( जीम ) मकानात व दीगर इमारात में उनके माल मसाला और अराजी मौका के और उस अराजीके जो उनके विलकुल

मुत्तसिलहो और उनके इस्तेमाल के लिये जरूरीहो (ममलूकः व मकबूजा ) जिराअत पेशा —

( दाल ) वहीजात हिसाब—

( हे ) मदज़ हक रूजूअ नालिश हर्जा—

( वाव ) हर हक जाती खिदमत का—

( ज़ाल ) बज़ीफा और आतायात जो पेंशनदारान सरकारी को अताहोतेहों या जो किसी सर्विस फेमिली फण्ड में से जिस का एलान नव्वाव गवर्नर जनरल बहादुर व इजलास कौंसिल ने इस वारे में गज़ट आफ इण्डिया में कियाहो क़ाविल अदाहों और पेंशन सीगा पुलदिकिल—

( हे ) अलाउन्स याने ज़र मवाजिव जो तनख्वाह से कमहो इसी ओहदेदार सरकारी का या किसी रेलवे कंपनी या हाकिम मुक्तामी के मुलाज़िम का जब कि अपने काम से गैरहाज़िर हो—

( तो ) तनख्वाह या अलाउन्स वरावर तनख्वाह के किसी ऐसे ओहदेदार सरकारी या मुलाज़िम का जिसका जिक्र फि करे ( हे ) में है जब कि वह कामपर हो ताहदमुफस्सिले जैल—याने

( १ ) कुल तनख्वाह अगर बीस रुपया माहवारसे ज़ियादह न हो—

( २ ) बीस रुपये माहवार जब कि तनख्वाह बीस रुपये माहवार से ज़ियादहहो मगर चालीस रुपये से ज़ियादह न हो—

( ३ ) और निस्फ तनख्वाह किसी और सूरत में—

( ये ) तनख्वाह और अलाउन्स उन लोगों के जिनसे आईन लश्करी हिन्दोस्तानी मुतअल्लिक हैं—

( काफ ) जुम्ला जरूरी डिपज़िट व दीगर रकूम जो किसी ऐसे फंड शरमाये में हों या ऐसे फंड से हासिल कियेजायें जिससे ऐक्ट मुतअल्लिक प्रावीडेंट फंड सन् १८६७ ई० वरवक्त मुतअल्लिक हो जहांतक कि रकूम मजकूर मजकूर के जरिये से गैरक़ाविल हुकी करार दीगई हों—

( लाम ) उजरत मजदूरान और मुलाज़िमान खानगी की ख्वाह व नक़दी में क़ाविल अदा हुवा जिन्स में—

० ५ सन्  
=६६ ई०

० ५ सन्  
=६७ ई०

- ( धीम ) उम्मीद विरायत व हालत पयमोंदगी या और हक या इस्तेहकाक जो मजदूर मौकूफ व वकूअ अमरदीगर या विल्द खैर इमकान हो—
- ( नून ) एक नान व नफका आयन्दा का—
- ( सीन ) वह अलाउन्स जो किसी कानून मजरिये तहत ऐक्ट कौ- २४ व २५ वि- सिलहाय हिन्दू सन् १८३१ ई० व सन् १८५२ ई० की कयोग्या बाव रुसे कुर्की व नीलाम बदलत इजराय डिगरी से मुस्तस्ना ६०५६ विक्टो- रिया बाव १४ कर दिया गया हो—
- ( ऐन ) अगर मदयून डिगरी मालगुजार सरकार हो तो कोई जायदाद मन्कूला जो किसी कानून नाफिजुल वक्त मुतअल्लिक शख्स मजदूर की रुसे नीलाम व गरज वसूली व कायाय मालगुजारी से मुरतस्ना करदी गई हो—
- ( तशरीह ) तफसीलात मुतजकिरे फिकरात ( जे ) व ( हे ) घ ( तो ) व ( ये ) व ( लाम ) व ( सीन ) कुर्की व नीलाम से मुस्तस्ना हैं ख्वाह, कव्ल, ख्वाह बाद चाकई वाजबुल अदा होने के—
- (२) इस दफा की किसी इवारत से ये मफहूम न होगा कि—
- ( अलिफ ) मकानात व दीगर इमारत मय उनके माल मसाला और आराजी मौक़े के और उस आराजी के जो उनसे विल्कुल मुत्तसिल हो और उन के इस्तअमाल के लिये जरूरी हो डिगरी जर लगान के इजरामें जो उसी मकान या इमारत या अरजी मौक़ा या आराजी की निस्वत हो कुर्की व नीलाम से बरी हैं—या
- ( वे ) अहकाम ऐक्ट मुतअल्लिकै फौज या उस किसम के और ४४ व ४५ विक्टो- कानून पर जो किसी वक्त निफाजपिजीर हो असर पड़ता है— रिया बाव ५८

दफा ६१—नब्बाव गवर्नर जनरल बहादुर, इजलास कौंसिल की जदीद शुर्जई इस्तस्ना पैदावार जिंराअती का कुर्की से— इजाजत हासिल करके लोकल गवर्नमेन्ट को, इस्ति- यार है कि व सुदूर हुक्म आम या खास मतवूआ गज़ट सरकारी मुकामी यह आलान करदे कि इस कदर हिस्सा पैदावार जिंरा- अती या किसी किसम खास पैदावार जिंराअती का जो लोकल गवर्नमेन्ट

मौसूफ के नज़दीक व गरज काश्त आराज़ी ताफ़स्ल आयन्दा और व गरज परवरिश मदयून और उस की अहल अयालके जरूरी हो दरसूत जुम्ला अशस्वास ज़िराअत पेशा या किस्म स्वास अशस्वास ज़िराअत पेशाके कुर्की या नीलाम इजराय डिगरी से वरी करदियाजाय—

का २७१

**दफ़ा ६२—( १ )** कोई शख्स जो अहकाम मजमूआ हाजा के मुजज़नी उस जायदाद की जो किसी मकान सकूनत में हो— ताविक ऐसे हुक्म नामे की तामील में मसरूफ हो जिसमें माल मन्कूला पर कब्ज़ा करलेने का हुक्म या इस्तिथार दिया गया हो किसी मकान सकूनत में गुरुव आफताव के दाद और तुलूअ आफताव से पहिले दाखिल न होसकैगा—

**( २ )** कोई बेरूनी दरवाज़ा किसी मकान सकूनत का न तोड़ा जायगा इला उस सूरत में जब कि ऐसा मकान सकूनत मदयून डिगरीके दखल में हो और वह उसमें दाखिल होनेको इन्कार करै या किसी तरह रोकै लेकिन जब शख्स मजकूर किसी मकान सकूनत के अन्दर बजावते पहुँचजाय तो उसको इस्तिथार होगा कि किसी कमरे का दरवाज़ा जिसमें माल मजकूर के मौजूद होनेकी वाश्र करने की बजेहो तोड़ डाले—

**( ३ )** अगर कोई कमरा किसी मकान सकूनत में किसी ऐसी औरत के दखल बाकई में हो जो हस्व रिवाज मुल्क बाहर न निकलती हो तो तामील कुनिन्दा हुक्मनामा उसको मुत्तिलाअ करैगा कि उसको निकलजाने का इस्तिथार है और कुछ अरसे माकूल तक उसके निकलजाने का इन्तिज़ार करके और निकलने के लिये उसको हरतरहकी सहूलियत मुनासिब देकर शख्स मजकूर मजाज होगा कि मालको कब्ज़े में लाने के लिये कमरे के अन्दर जाय मगर मुताबिक इन अहकाम के मालको खुफिया उठजाने से रोकने की हर तरह से इहतियात करै—

का २८५

**दफ़ा ६३—**जिस हालमें कि जायदाद जो किसी अदालत के हिस्से जो जायदाद कर व रासत में न हो एकसे ज़्यादे अदालतों के डिगरी से दाखिल की गिरियों, इजरा में जेर कुर्कीहो तो उस जायदादको लेना या बेचना न करेगा— बसूल करना और उसकी निश्चत हर दावा और उस

की कुर्की पर हर ऐतराज की वाजत तजवीज करना उस अदालत से मुतमल्लिक होगा जो सब से जालाः दर्जेकी हो-और अगर उन अदालतों के दर्जे में कुछ फर्क न हो तो उस अदालत से मुतमल्लिक होगा जिसकी डिगरी की इज्जतमें जायदाद पहिली कुर्क हुई हो-

( २ ) इस दफाके किसी मजदूनसे वह कर्जवाई वातिल नहीं समझी जायगी जो किसी ऐसी अदालत ने की हो जिसने उनमें से किसी एक डिगरी का इजरा किया हो-

दफा ६४-जब कोई कुर्की यकूज में आये तो इन्तकाल खानगी या दफा २७६

इन्तकाल खानगी जाय-  
दादका बाद उनके कुर्के  
रीजानेके वातिल हो-

हवालगी जायदाद मकरुका की या उसके किसी हककी और अदा करना मजदून डिगरी को कर्जा या मुनाफा सरमाये का या दीगर रुपये का खिलाफ कुर्की मजकूरके वमुक्ताविले उन तमाम मतालिवेजात के जिनका ईफा उस कुर्की की रुसे होसक्ताहो वातिल होगा-

तशरीह-वास्ते अगर राज दफा हाजा के उन मतालिवेजात में जिनका ईफा कुर्कीकी रुसे होसक्ताहो वह दावा दाखिल हैं जो जायदाद की तकसीम रसदी की निस्वत किये जाय-

## नीलाम

दफा ६५-अगर कोई जायदाद गैरमन्कूला इजराय डिगरी में नी-जदीद दफा  
खरीदारका इस्तहकाक | लाम कीजाय और नीलाम मजकूर कतई होजाय तो २१६ से मुका-  
खरीदार का इस्तहकाक जायदाद में उस वक्तसे समझा जायगा जब कि विलाकरी-

जायदाद नीलाम हुई न उस वक्त से जब कि नीलाम कतई हुआ-

दफा ६६-( १ ) कोई नालिश किसी ऐसे शख्स के नाम समा-दफा ३१७

नालिश वनाम खरीदार  
इस बिनापर कि खरीद  
मुद्ई की तरफसे की-  
गई मन्म न होगी-

अत न की जायगी जो किसी खरीद मुसद्दिकके अदा-  
लत हस्व तरीका मुर्करकी रुसे किसी हकका दावे-  
दारहो इस बिनापर कि खरीद मुद्ई की तरफ से की  
गई थी या ऐसे शख्सकी तरफ से कीगई थी जिसके

जरिये से मुद्ई दावा करताहै-

( २ ) कोई इवारत इस दफेकी माने नालिश हासिल करने इस हुक्म की न होगी कि नाम खरीदार सार्टीफिकटयाफ्रता मजकूर

बाला का सार्टीफिकेट में करीबन या बिला रिजामन्दी अ-  
सिल खरीदार के दाखिल किया गया है और किसी शस्त्र  
सालिस के उस हकमें सुखिल न होगी जो उसको जायदाद  
मजकूर की निस्वत कार्रवाई करने का हासिल है हरचंद की  
जायदाद खरीदार सार्टीफिकेट या जते के हाथ बजाहिर फरोख्त  
की गई हो इस बिना परकी जायदाद मजकूर शस्त्र सालिस  
मजकूर के दावे के ईफाकी वखिलाफ मालिक असली के  
मस्तूजिव है—

का ३२७

**दफ्ता ६७—**नव्बाव गवर्नर जनरल ब्रह्मादुर इजलास कौंसल व  
इस्तिथार लोकल गवर्नमेन्ट निस्वत व-  
जह कवाअद मुतासिक नीलाम अराजी व  
इसत इजराय डिगरी जरनन्द—  
मंजूरी हासिल करके लोकल गवर्नमेन्ट को इस्तिथार  
है कि वजरिये आलान मतवूये गजट सरकारी मुकामी  
कवाअद किसी रकबे अरजी की निस्वत मुन्जवित व  
वतायुन ऐसी शरायत के जो जर नकदकी डिगरियों  
इजरा में और अराजी के किसी किसम के मराफि  
को नीलाम करने की निस्वत हों जिस हाल में कि वह मराफिक ऐ  
मैर मोअइयन व गैर मुतहक्कि हों कि वदामिस्त लोकल गवर्नमेन्ट उन  
मालियत का तअइयुन करना गैर मुमकिन हों—

**तफवीज किया जाना इस्तिथार इजराय डिगरी—  
जायदाद गैर मन्कूले का साहब कलक्टर को**

का ३२०

**दफ्ता ६८—**लोकल गवर्नमेन्ट को इस्तिथार है कि नव्बाव गवर्नर  
जनरल ब्रह्मादुर इजलास कौंसल की मंजूरी हासिल  
करके वजरिये इस्तिथार मुन्दर्जे गजट सरकारी मुकामी  
के आलान दे कि फलां इलाका अरजी में इजराय  
डिगरियात का उन मुकदमात में जिनमें अदालत के हुक्म  
से कोई जायदाद गैर मन्कूला नीलाम होनेवाली हो या इजराह किसी  
खास किसम की डिगरी का मिनजुम्ला ऐसी डिगरियों के या इजराह  
डिगरियात का जिनमें हुक्म नीलाम किसी खास किसम के जायदाद  
गैर मन्कूला या हकीयत वाकै जायदाद गैर मन्कूला का दिया गया हो  
कलक्टर के पास मुन्तकित किया जावे—

दफा ६६—अहकाम मुन्तज्जे जमीमे सोपम उन्नदुम्ला सूखों से जदीद  
अहकाम जमीमे मो- मुताल्लिकहोंगे जिनगे इजरा किसी डिगरी का दफा  
यम या ताल्लुक— ऐन माक़ुल के वमूजिव कलक्टर के पास मुन्तकिल  
कियाजाय—

दफा ७०—( ? ) लोकल गवर्नमेन्ट को अख्तियार है कि मुताबिक दफा ३२०  
कियायन, मुताल्लिक आहकाम मजकूर कयाअद वजह करे याने— फिरे २ व ३  
जाता—

( अलिफ ) निस्वत मुरसिल होने डिगरी के अदालत से वख्तिदमत  
कलक्टर और वतकरर उस जावते के जिसकी पावन्दी  
वदक्त इजराय डिगरी कलक्टर और उसके मातहतों पर  
वाजिव होगी और निस्वत उसके कि डिगरी कलक्टर के  
पास से अदालत में वापिस कीजाये—

( बे ) दरवाय उसके कि साहब कलक्टर या किसी गजट शुदा  
मातहत साहब कलक्टर को वो जुम्ला या वाज अख्तिय-  
यारात अदा कियेजायें जिनको अदालत इजराय डिगरी  
में नाफिज करसक्ती अगर डिगरी कलक्टर के पास मुन्त-  
किल न हुई होती—

( जीम ) निस्वत इसके कि जो अहकाम अजमरफ साहब कलक्टर  
या किसी गजट शुदा मातहत साहब कलक्टर के सादिर  
कियेजायें या जो अहकाम वसीगै अपील अहकाम मजकूर  
पर सादिर किये जायें उनकी अपील और नजरसानी आला  
हुकाम मालके पास जहांतक मुमकिन हो इसी तरीक़े पर  
होगी जिस तरह उन अहकामकी अपील और नजरसानी  
जिनको अदालत सादिर करै या उन अहकामकी जो वसीगै  
अपील अहकाम मजकूर की निस्वत सादिर हों मजमूअय  
हाजा या किसी दूसरे कानून नाफिजउल वक्तके वमूजिव  
अदालत अपील या नजरसानी में दायर होती अगर डि-  
गरी साहब कलक्टर के पास मुन्तकिल न हुई होती—



३२०

करे ५-४

( २ ) जो अख्तियारात कवायद मौजुआ हस्वदफे तहती ( १ ) की अख्तियारात अदालत दीवानी का सम्बन्धना रु से साहब कलक्टर या किसी गजटशुदा मातहत साहब कलक्टर को या किसी हाकिम अपील या नज़रसानी को अताहुये हैं उनकी तामील अदालत या कोई अदालत जो अहकाम या डिगरियात अदालत मजकूर की निस्वत इख्तियारात अपील या नज़रसानी का निफाज़ करती हो नहीं कर सकेंगी—

३२०

करे ५-

दफ़ा ७१—किसी ऐसी डिगरी के इजरा में जो साहब कलक्टर कलक्टर की कार्रवाई के पास दफा ६८ के वमूजिय मुन्तकिल कीजाय साहब कलक्टर मौसूफ और उसके मातहत कार्रवाई अदालताना समझे जायगी अदालताना करनेहुये समझे जायेंगे—

३२६

दफ़ा ७२—( १ ) अगर किसी इलाका अरजी में जिस में हसर जिस हाल में कि मन्सा दफा ६८ के कोई आलान नाफिज न हो जायदाद मकूरखां किस्म आराजी या हिस्सा आराजी से हो और कलक्टर अदालत को ये राय लिखभेने कि आराजी या हिस्सा आराजी का नीलाम करना नामुनासिब है और वसूल करना जर डिगरी का अंदर मौआद माकूल के उस तरह मुमकिन है कि आराजी या हिस्सा मजकूर चंदरोज के लिये मुन्तकिल कियाजाय तो अदालत कलक्टर को इजाजत देसक्ती है कि वजाय नीलाम आराजी या हिस्सा मजकूरके हस्व तरीका मजूज़ा अपने के जर डिगरी के वसूल करने का बन्दोबस्त करै—

( २ ) हरऐसी सूरत में दफायत ६६ निहायत ७१ और कवायद मौजुआ तहत दफायत मजकूर के अहकाम जहांतक मुताल्लिक होसकें मुताल्लिक किये जायेंगे—

## तक़सीम जर

३२७

दफ़ा ७३—( १ ) अगर जर पुदासिल अदालत में जपाहो और तजवीम रजदी मु एकसे ज्यादा अशवास ने उसके वसूल होनेसे पहिले हाकिम नीलाम वसूल दरखास्ते वास्ते जारी होनेअवनी अपनी डिगरियात जर रजदी रजियात डि नकद के ऊपर एकही मुन्धियां डिगरी के अदालतमें दासिल गरीदाना— की हों मगर डिगरियात का राया न पायाहो तो रुपया वसूलशुदा वाद

मिनदाई खर्चा बसूल करनेके उन जुम्ला अशस्वास मजकूर के दरमियान वदिसाव रसदी तकसीम किया जायगा—मगर शर्त यह है कि:—

( अलिक ) जब कोई जायदाद तावे रहन या मुवाफ़जे के नीलाम की जाय तो जर समल नीलाम से जो कुछ फाजिल निकले उसमें मुर्तहिन या मुवाफ़जेदार हिस्से पानेका मुस्तहक न होगा—

( बे ) जब वह जायदाद जो सीगे इजराय डिगरी से नीलाम होनेके काबिल है किसीके पास मरहूनहो या उसपर कुछ मुवाफ़जा हो तो अदालत मजाज होगी कि बरिजामन्दी मुर्तहिन या मुवाफ़जेदारके ये हुक्म दे कि जायदाद बिला वार रिह्न या मुवाफ़जे के नीलाम कीजाय और मुर्तहिन या मुवाफ़जेदार को नीलाम के जर समल पर वही इस्ते-काक़दे जो उसको जायदाद नीलामशुदापर हासिल था—

( जीम ) जब जायदाद गैर मन्कूला ऐसी डिगरी के इजरा में नीलाम कीजाय जिसमें यह हुक्म मुन्दर्ज हो कि जायदाद किसी मुवाजे की बेवाक़ी के लिये नीलाम कीजाय तो जर सम्मन नीलाम हस्व तरतीब मुफ़रिसले ज़ैल के सर्फ़ किया जायगा याने—

पहिले—इख़राजात नीलाम की बेवाक़ी में—

दूसरे—उस रक़म के अदा करने में जो डिगरी की रुसे वाजिवहो—

तीसरे—मुवाफ़जे हाय मा वाद के अगर कोई हो असिल व सूत के अदा करने में—

चौथे—तकसीम रसदी में दरमियान उन अशस्वास के जो डिगरियात जरनवद के मदयून पर रखतेहों और जिन्होंने जायदाद के नीलाम से पहिले दरख्वास्त जारी कराने अपनी डिगरियात के उस अदालत में दाखिल की हो जिसने डिगरी बहुक्म नीलाम जायदाद मजकूर सादिर की थी और जिनकी डिगरियां हनौज बेवाक़ न हुई हों—

( २ ) अगर वह कुल रुपया या जुज उसका जो इस दफेकी रु से तकसीम रसदी में सर्फ़ होना चाहिये किसी ऐसे शख्स को

दियाजाय जो उसके लेनेका मुस्तहक न हो तो वह शख्स जो लेने का मुस्तहक हो उस शख्स पर नालिश वास्ते जरूर वापिस दिलाने ऐसे रुपये के दायर करसक्ता है—

( ३ ) इस दफेकी कोई इवारत सरकार के किसी हुकमें खलन अन्दाज़ न होगी—

## मुजाहमत इजराद

दफ्ता ७४—अगर अदालत को इतमीनान हो कि डिगरी कब्जे मुजाहमत इजराद जायदाद गैर मन्कूला की डिगरीदार को या जायदाद गैर मन्कूला नीलामशुदा वइल्लत इजराय डिगरी के खरीदार को जायदादका कब्जा हासिल करने में अजतरफ मदयून डिगरी या उसकी तरफसे किसी और शख्सके ताअरुज या मुजाहमत हुई है और यह ताअरुज या मुजाहमत विला वजह जायज़ थी तो अदालत मजाज है कि हस्व इस्तदुवा डिगरीदार या खरीदार के मदयून डिगरी या दीगर शख्स मजकूर को वास्ते उस कदर मियाद के जो तीस दिन तक होसक्ती है जेलखाने दीवानी में भेजने का हुक्मदे और नीज यह हिदायत करै कि डिगरीदार या खरीदार को या डिगरीदार को इस जायदाद का कब्जा दिलाया जाय—

## हिस्सा ३

### कार्रवाई हाय लाहका मिरुल

दफ्ता ७५—बमलहूजी शरायत व कयूद सुकररा के अदालत इग्नितमार निरस्त राजज़ैल के लिये कमीशन जारी करसक्ती है—याने इजरात कमीशन

(अलिफ) वास्ते लेने इजहार किसी शख्स के—

( बे ) वास्ते करने तहकीकात मौक्के के—

( जाम ) वास्ते जांचने या तस्फिया हिसावात के—

( दाल ) या वास्ते बटवारे के—

दफ्ता ७६—( १ ) कमीशन वास्ते लेने इजहार किसी शख्स के किसी अदालत में ( जो हाईकोर्ट न हो ) भेजा जा सकता है जो सिवाय उस सूबे के जिसमें कि अदालत के जारी कुनिन्दा कमीशन बाकैहो किसी दूसरे सूबे में बाकैहो और उस मुकाममें इस्तिथारात रखतीहो जहां वह शख्स कि जिसका इजहार लिये जाने को हो सकूनत रखताहो—

( २ ) हर अदालत जिसमें दफ्ता तहती ( १ ) कि रूसे कमीशन वास्ते लेने इजहार किसी शख्सके भेजा जाय मुताबिक उसके उसका इजहार खुद लेगी या किसी औरसे लेवायेगी और जब कमीशन बजावते तामील पाया जाय तो वह मय शहादतके जो उसकी रूसे लीगईहो उस अदालत में वापिस भेजा जायगा जहांसे कि वह जारी हुवा था वशते कि हुक्म मुतजम्मिल इजराय कमीशन में कुछ और हिदायत न हो कि वह सूरत में कमीशन उसी हुक्मके मुताबिक वापिस किया जायगा—

दफ्ता ७७—बजाय जारी करने कमीशनके अदालत मजाजहै कि एक चिट्ठी मुतजम्मिन दर-ख्वास्त— चिट्ठी मुतजम्मिन दरख्वास्त निस्वत लेने इजहार ऐसे गवाहके जो ब्रिटिश इण्डियाके बाहर सकूनत रखताहो जारी करै—

दफ्ता ७८—अहकाम दरवाब तामील और वापसी कमीशन निस्वत लेने इजहार गवाहों के उन कमीशन हायसे भी मुताबिक होंगे जो अदालत हाय मुफसिले जैल से जारी हों—

( अलिफ ) वह अदालतें जो ब्रिटिश इण्डियाके हुदूद से बाहर हों और वमूजिव फरवान आला हजरत मुल्क मौअज़्जिम या नन्वाब गवर्नर जनरल बहादुर व इजलास कौंसिलके मुकर्रर हुये हों या कायम रखे गयेहों—

( बे ) या वह अदालतें जो सिवाय मुमालिक ब्रिटिश इण्डियाके ब्रिटिश अस्यायर के किसी और जुजमें बाकैहों—

( जीम ) या वह अदालतें जो किसी ऐसी रियासत गैरमेंहों जो उस वक्त आला हजरत मुल्क मौअज़्जिमके साथ राबते इतहाद रखतीहो—

## हिस्से ४

नालिशात व सूरत हाय खास-

नालिशात अज जानिब या बनाम सरकार या  
अफसरान सरकारी व हैसियत अफसरी

४१६

जारज

म वाव

५

दफ्ता ७६-( १ ) नालिशात जो अज तरफ या बनाम गवर्नमेन्टहों

नालिशात अज तरफ वह अज तरफ सेक्रेटरी आफ इस्टेट वहादुर हिंद व  
या बनाम सरकार- इजलास कौंसल रूजू कीजायगी-( २ ) यह तसौवर न कियाजायगा कि कोई अमर दफा हाजा में  
किसी इत्तिलाको जो साहब येडोकेट जनरलने व निफाज  
इख्तियार मजहरे हस्व दफा १११ ऐस्ट इण्डिया कम्पनी ऐक्ट  
सन १८१३ ई० जाहिरकीहो महदूद या किसी दीगर नोहज  
पर असर पजीर करता है-

४२४

दफ्ता ८०-कोई नालिश बनाम सेक्रेटरी आफ इस्टेट वहादुर हिन्द  
इत्तिलानामा ] इजलास कौंसल या बनाम किसी ओहदेदार सरकारी  
के वावत किसी फेलके जो ओहदेदार मजकूरने अपने इख्तियार मन्सवी  
से कियाहो रूजू न कीजायगी उस वक्ततक कि जिस तारीखको इत्तिला-  
नामा तहरीरी व इन्दराज विनाय दावा और नाम और पता वह सकूनत  
मुद्ई व दादरसी मुतदाविया मुद्ईकी जिस हालमें कि नालिश बनाम  
सेक्रेटरी आफ इस्टेट वहादुर इजलास कौंसलके होनेवालीहो तो लोकल  
गवर्नमेन्टके किसी सेक्रेटरी के पास या उसके दफ्तरमें या जिले के साहब  
क्लकटरके पास या उसके दफ्तर में और जिस हालमें कि नालिश बनाम  
किसी ओहदेदार सरकारके होनेवालीहो तो ओहदेदार मजकूरके पास या  
उसके दफ्तर में पहुँचा दियागयाहो उससे दो महीनेका अरसा न गुजरके  
और अरजीदावे में ये वयान मुन्दर्ज होना चाहिये कि ऐसा इत्तिलानामा  
कुछ इस तौरपर हवाले कियागया या पहुँचा दियागया-

दफ्ता ४०७

व ४०८

दफ्ता ८१-उस मुक्तदमे में जो बनाम किसी ओहदेदार सरकार के  
इस्तनाफ गिरफ्तारी वावत किसी ऐसे फेलके दायर कियाजाय जो उसने  
व अस्तानतराजिगी अपने इख्तियार मन्सवी से कियाहो-

( थलिक ) न मुद्दाचल्यकी जात लायक गिरफ्तारीके होगी न उसकी जायदाद काबिल चुकीके होगी इन्ना बहालत जारी होने डिगरीके-और

( वे ) अदालत मुद्दाचल्यको अदालतन हाजिर होने से बरी कर देगी अगर अदालतका इतमीनान इस अमर में होजाय कि मुद्दाचल्य विला हरज कार सरकार अपने ओहदे से गैर हाजिर नहीं रहसवना-

दफा ८२-( १ ) जबकि डिगरी सेक्रेटरी आफ इस्टेड वहादुर दफा ४२६

इजराय डिगरी | हिंद इजलास कौंसल पर या किसी ओहदेदार सरकार पर दावत किसी फेल मुजक़िरेवाला के हो तो डिगरी में एक मियाद उसकी इफायके लिये मुन्दर्ज होगी और अगर डिगरीका इफाः उस मियाद मुअय्यन के अन्दर हो तो अदालत मुकदमेकी कैफियत लिखकर वास्ते सुदूर हुबम के लोकल गवर्नमेन्टके मुसिल करैगी-

( २ ) किसी ऐसी डिगरी की दावत हुक्मनामा इजराय सादिर न कियाजायगा इन्नाः उस हालमें कि वह तीन महीनेतक जिस का शुमार कैफियत मजकूरकी तारीखसे कियाजायगा विला-इफाः रहै-

नालिशात अजतरफ रिआयाआय मुमालिकगैर  
और अजतरफ या बनाम वालियानरियासत  
हिन्दुस्तानी और वालियान मुमालिकगैर-

दफा ८३-( १ ) दुश्मन के मुल्ककी रिआया जो ब्रिटिश इण्डियाके दफा ४३०

कव रियाआय मुमालिक गैर नालिशकर सकैगी- अन्दर नव्वाव गवर्नर जनरल वहादुर इजलास कौंसलके इजाजत से रहती हो और दोस्तकी मुल्ककी रिआया उसी तरह ब्रिटिश इण्डियाके अदालतों में नालिशकर सकैगी गोया वह आला हजरत मुल्क मुवज्जमकी रियाआ है-

( २ ) दुश्मन के मुल्ककी कोई रैयत जो विलाइजाजत मजकूर ब्रिटिश इण्डिया के अन्दर रहती हो या किसी मुल्क गैर में रहती हो अदालत हाय मजकूर में से किसी में नालिश न कस्सकैगी-

**तशरीह**—हरशख्स जो किसी मुल्क गैरमें रहता हो जब कि दरमियान सरकार उस मुल्कगैर और मुमलिकत मुहदई गजट पेटिन् और एलैन्डकी लड़ाई होरही हो वह मुल्क मजकूर में बिलाहमूल लैसंस दस्तखती किसी सेक्रेटरी आफ इस्टेड मिलजुम्ले सेक्रेटरी हाय आला हजरत मुल्क मोवज़म या दस्तखती किसी सेक्रेटरी गवर्नमेन्ट हिन्दके कारबार करता हो दफा तहती ( २ ) की गरज़ के लिये दुश्मन के मुल्क की रैयत साकिन मुल्कगैर तसौवर होगा—

दफा ४२१

**दफा ८४—( १ )** जायज है कि कोई रियासत मुल्कगैर बृटि

कब रियासत हाय  
मुल्कगैर नालिश  
फरसकेरी--

इण्डिया की किसी अदालत में नालिशकरै वशतें आला हजरत मुल्क मोवज़म नव्वाव गवर्नर जनरल वहादुर इजलास कौंसलमें उस रियासत को तसली किया हो और नीज वशतें कि नालिश का ये मकसूद हो कि कोई खानगी जो उस रियासत गैरके वाली या रियासत मजकूर के कित अफसर को बहसियत अफसरी हासिल हो व दिलाया जाय—

( २ ) हर अदालत को इस अमर बाकैपर अदालताना लिहाज करन होगा कि रियासत गैरको आला हजरत मुल्क मुवज़म या नव्वाव गवर्नर जनरल वहादुर इजलास कौंसल ने तसलीम किया या नहीं किया—

दफा ४२२

**दफा ८५—( १ )** वह अशखाय जो हस्व दरख्वास्त किसी वाली

अशखान जिनकी वा-  
स्ते पैरवी या जवाब-  
दिही करने अजतरफ  
वालियान या रमाय  
के गवर्नमेन्ट नेमान  
तौम्पन मुकर्र किया  
हो--

खुद मुख्तार या रईस हुक्मराके आम इससे कि वह वतवैयत बृटिश गवर्नमेन्ट के गवर्नमेन्ट मौसूफसे इत हाद रखता हो या न रखता हो और बृटिश इण्डिया के अन्दर रहता हो या उससे बाहर या हस्व दरख्वास्त उस शख्स के जो गवर्नमेन्ट के नजदीक उसवाली या रईस की तरफ से कार्रवाई करनेका मजाज हो वाली या रईस मजकूरकी तरफ ने नालिशकी पैरवी या जवाबदिही करने के लिये गवर्नमेन्ट के हुक्म रास के जरिये से मुकर्र रहें—वमंजिले ऐसी एजन्टिन मरुयला के समझी जायगी जिनकी मार्फत हाजिरी अदालत और को

वाई और अदालत दरखास्त मिनजानिव वाली या रईस मजकूरके हरव मजदूरीय हाजा अमल में आसक्ता है—

( २ ) जो शख्स इस दफा के वमूजिव मुकर्रर किया जाय वह किसी एक नालिश खास या मुतादिद नालिशात खासकी गरज से या जुम्ला नालिशात मजकूर के वास्ते मुकर्रर होसक्ताहै जैसा कि मिनजानिव वाली या रईस मजकूर नालिश में पैरवी या जवाबदिही करना वदतन् फवक़तन् जरूरीहो—

( ३ ) जो शख्स इस दफेकी रूसे मुकर्रर किया जाय वह दूसरे अश-खास को नालिश या नालिशात मजकूर में हाज़िर होने और दरखास्तें गुज़राने और अफआल करनेका मजाज कर सक्ताहै या उनको मुकर्रर करसक्ताहै गोया कि शख्स मजकूर गुद फरीक नालिश है—

दफा ८६—जायज है कि नालिश वनाम किसी वाली या रईस मज- दफा ४३३

नालिश वनाम वाली कूर और वनाम सफीर या ऐलची किसी रियासत गैरके या रईस या सफीर वाद-हसूल इजाजत नवाय गवर्नर जनरल वहादुर या ऐलची के— वइजलास कौंसल जिसकी तसदीक के लिये सार्टी-फिकट दस्तखती किसी सेक्रेटरी गवर्नमेन्ट हिन्दका जरूर होगा किसी अदालत मजाज में दायर कीजाय मगर विला हसूल इजाजत मजकूर के दायर न होगी—

( २ ) ऐसी इजाजत किसी एक या मुतादिद नालिशात खास की निस्वत या जुम्ला नालिशात किस्म या इक्लामे खास की निस्वत दीजायगी और उसमें ये तअल्लुक नालिश या किस्म नालिशात के तसरीह उस अदालत की होगी जिसमें वाली या रईस या सफीर या ऐलची मजकूर के नाम नालिश दा-यर कीजाय लेकिन इजाजत मजकूर नहीं दीजायगी तावक्ते कि गवर्नमेन्ट को जाहिर न हो कि वाली या रईस या सफीर या ऐलची मजकूर ने—

( अलिफ ) इसी अदालत में उस शख्सके नाम नालिश दायर की है जो उसपर नालिश करना चाहता है—या



- ( वे ) वह उस अदालत के इलाके के हुदूद अरजी के अन्दर खुद या मारफत और शख्सके तज्जारत करता है—या
- ( जीम ) कोई जायदाद गैर मन्कूला वाकै हुदूद मजकूर उसके कब्जेमें है और उसपर नालिश इसी जायदाद की निस्वत या इस रुपये के निस्वत जिसका वार जायदाद मजकूर पर है दायर होनेवाली है—
- ( ३ ) कोई वाली या रईस या सफीर या ऐलची मजकूर अहकाम मजमूअ हाजाकी रूसे गिरफ्तार नहीं होसकैगा और तावक्ते नव्वाब गवर्नर जनरल बहादुर बइजलास कौंसलके इजाजत मुसदिके हस्व मजकूर वाला हासिल न करली जाय कोई डिग वाली या रईस, या सफीर, या ऐलची, मजकूरकी जायदाद पर जारी नहीं की जायगी—
- ( ४ ) नव्वाब गवर्नर जनरल बहादुर बइजलास कौंसल गज़ट आर्डिण्डिया में इश्तिहार देकर किसी लोकल गवर्नमेन्ट को या किसी सेक्रेटरी गवर्नमेन्ट मौसूफ को अख्तियार अता कर सकते हैं कि निस्वत किसी वाली या रईस, या सफीर, या ऐलची, मुतज्जकिरे इश्तिहार मजकूर के वह अख्तियारात अमल में लायें जो नव्वाब गवर्नर जनरल बहादुर बइजलास कौंसल सेक्रेटरी गवर्नमेन्ट हिन्दको इस दफाके गुजश्ते दफाआत तहकी रू से हासिल हैं—
- ( ५ ) जायज हैं कि कोई शख्स बहैसियत आसामी जायदाद बगैर मन्कूलाके नालिश वगैर उस इजाजतके जिसका जिकर इदफा में है उस वाली या रईस, या सफीर, या ऐलची, पर दायर करै जिसकी तरफ से जायदाद मजकूर उसके कब्जे हो या वह क़ाबिल होने का दावा करता हो—

दफ्ता ८७—कोई वाली खुद मुअ्तियार या रईस हुक्मरां अपन या निजान व रत्ता का रियासत के नाम से नालिश करसक्ता है और लाजि नाम बेहमियन क़ीर है कि उसकी रियासत के नाम से उसपर नालिश मुअ्तमा की जाय—

मगर इजाजत मुतज्जकिरे दफा मजकूर वाला देनेमें नव्वाब गवर्नर

जनरल बहादुर बइजलास कौंसल या लोकल गवर्नमेन्ट ये हुक्म देसक्ती है कि वाली या रईस मजकूर पर किसी ऐजन्ट के नामसे या किसी और नामसे नालिश कीजाय—

## ऐन्टर प्लीडर याने नालिश बमुराद तस्फिये वैनुल्मुताज्जईन—

दफ्ता ८८—जब दो या कई अशखास दावा मुखालिफ एक दीगर दफा ४७०

कब नालिश बमुराद तस्फिये वैनुल्मुताज्जईन दायर होसक्ती है—  
एकही जरक्जर्जा या जरनफ्तद या दूसरी जायदाद मन्कूला या गैरमन्कूला के मिलने का दूसरे शख्स से रखते हों और उस दूसरे शख्सको जिसमें सिवाय मवारिजात या खर्चे के कुछ और दावा न हो और वह आमादा हो कि जर कर्जा या जायदाद मजकूर हक्कदार दावेदार को अदा या हवाले करे पर जायज है कि वह दूसरा शख्स खुद नालिश तस्फिया वैनुल् मुताज्जियेन के वनाम उन तमाम दावेदारों के बगरज तजवीज इस अमर के करे कि किस शख्स को वह जर अदा कियाजाय या जायदाद हवाले कीजाय और यह कि उसको वरियत हासिल हो—

मगर शर्त यह है कि अगर कोई ऐसी नालिश जेर तजवीज हो जिस में हुक्क तमाम फरीकों के वतौर मुनासिब तस्फिये पासक्ते हों तो जरूरत किसी नालिश बमुराद तस्फिये वैनुल्मुताज्जईन दायर करने की न होगी—

## हिस्सा ५

### कार्रवाई हाय खास—

### सालसी—

दफ्ता ८९—( १ ) बइस्तिस्नाय अहकाम ऐकट सालसी हिन्द सन् दफा ६-५ १८९९ ई० या किसी दीगर कानून नाफिजुल वक्त के जुम्लः मआमि- न० ६ सन् १८९९ ई० लात तफवीज वसालसी, सालसीखाह अजरुय हुक्महों जो दर अस्नाय मुकदमः सादिर हो या उसके सिवाय किसी और तरह हों और जुम्लः कार्रवाई हाय सालसी अहकाम जमीमः दोयम की ताव होंगी—

( २ ) अहकाम जमीमाः दोयम किसी ऐसे सालसीपर मवस्सर व होंगे जो इस ऐक्ट के निफाज के वक्त जेःतजवीज हो मगर उस सालसीसे मुतअल्लिक होंगे जो बाद तारीख मजकूर किसी ऐसे मवाहिदे या हवाले की रूसे अमल में आये जो कल निफाज ऐक्टहाजा किया गया हो—

## सूरत खास—

दफा ५२७

दफा ६०—अगर बाज अशखास इकरार तहरीरी करें कि वह को अश्रितयार वयान सूरत मुकदमा वास्ते राय अदालत पेश करेंगे तो अदालत उस मुकदमे की तजवीज और तस्फियः हस्व तरीक मुकररा करेगी—

## नालिशात मुताल्लिक मावलात आम—

जदीद

दफा ६१—( १ ) दरसूरत किसी अमर वाइस तकलीफ आमके साह अमर वाइस तकलीफ आम— एडोकेट जनरल या दो या ज्यादे अशखास बा हुमूल मंजूरी तहरीरी साहब एडोकेट जनरल के नालिश वास्ते सुदूर हुक्म इम्तिनाई या किसी और दादरसी के जो हाजि मुकदमे के मुनासिब हों दायर करसक्ते हैं गोकि कोई हरजा खास न हुआ हो—

( २ ) इस दफाके किसी मजमून से कोई ऐसा हक नालिश जो अदावे मजमून दफा हाजा के हासिल हो महदूद नहीं होगा न किसी तरह का उसपर कुछ असर पहुँचेगा—

दफा ५३६

दफा ६२—( १ ) जो अमानत शरीहून या मानियन वास्ते अगर अशियाय रैरात आम रैरात आम या अमूर मजहबी के करार दी गई हो ज उमकी खिलाफ वरजी वयान कीजाये या ऐसी अमानत के इन्तिजाब के लिये अदालत की हिदायत जरूरी मुत्तसौबिर हो तो एडोकेट जनरल या दो या कई अशखास जो उस अमानत में गरज रखते हों और एडोकेट जनरल की रज़ामन्दी तहरीरी हासिल करचुके हों असल अदालत दीवानी मराफयाजला में या किसी दूसरी अदालत में ज़िम्मे

लोकल गवर्नमेन्ट ने इस बारे में इन्विन्यार दिया हो जिसके इन्विन्यार समाजत की हुदूद अरजी के अन्दर कुल या कोई जुज व शय अमानती का वाकै हो वास्ते हुसूल डिगरी अपूर गुफसिले जैलके नालिशरनुअ करसक्ते हैं आम इससे कि नालिशमें शय दावा निजाई हो या न हो—

(अलिफ) मौजूफी किसी अभीनकी—

( वे ) तकरूर नये अभीनका—

( जीम ) हवाला किया जाना किसी जायदादका अभीनकी—

( दाल ) हुक्म देना तैयारी हिसावात और तहकीकातका—

( हे ) करार देना कि जायदाद अमानतीका किस कदर हिस्सा या हक किसी खास गरज अमानत के वास्ते अलाहिदः किया जायगा—

( वाव ) इस बातकी इजाजत देना कि फुल या कोई जुज जायदाद अमानती किराया पट्टापर दिया जाय या वै किया जाय या रिहन रक्त्ताजाय या बदल लिया जाय—

( जे ) करार देना जवावितका—

( हे ) या दादरसी मजीद या और किसी तरह की ऐसी दाद- नंबर २० सन्  
रसी करना जो व नजर नोअयत मुकद्दमे के जरूरी हो— १८६३ ई०

( २ ) सिवाय उसके जैसा कि ऐक्ट वोकाफ मजहबी सन् १८६३ ई० की दफा १४ में हुक्म है कोई नालिश निस्वत हसूल किसी दादरसी मिसरह दफा तहती ( १ ) दफा हाजा के किसी अमानत मिसरह दफा तहती मजकूरकी निस्वत दायर नहीं कीजायगी सिवाय वमुताविकत अहकाम उसी दफा तहती के—

दफा ६३— इन्विन्यारात जो दफा ६१ वा ६२ की रूसे येडोकेट दफा ५३६

नफाज इन्विन्यारात  
येडोकेट जनरल-वेल्  
वलाद प्रेसीडसी

जनरल को दिये गये हैं जायज है कि वलाद प्रेसीडसी  
के बाहर बाद हसूल मंजूरी लोकलगवर्नमेन्ट के साहब  
कलेक्टर भी या वह ओहदेदार जिसे लोकल गवर्न-  
मेन्ट इस काम के लिये मुकर्रर करे अमल में लाये—

फिकरे आखीर

## हिस्सा ६

### कार्रवाई हाय ज़म्नी—

दफ़ा ६४— ताकि अगर राज़ इन्साफ में किसी तरह का हर्ज व नुक़सान कार्रवाई हाय ज़म्नी—। न आने पाये अदालत मुकदमा की किसी नौबत पर अमूर मुफ़्तिले ज़ैल करसक्ती है अगर उनके करने का हुक्म हो—

(अलिफ) जारी करना वारन्ट गिरफ्तारी मुद्दाअलतयका और उस को अदालतके ख़दरु हाज़िर करना कि वह वजह दिखाये कि उससे जमानत वास्ते उसकी हाज़िरी के क्यों न दाखिल कराई जाय और अगर वह किसी हुक्म मुत्तजम्मिन अदखाल जमानत की खिलाफ़ वरज़ी करै तो अदालत उसको जेलखाने दीवानी में भेजे—

( वे ) सादिर करना हुक्मका वनाम मुद्दाअलतय वावत अदखाल जमानत निस्वत उसके कि वह कोई जायदाद ममलूकःख़द अदालत में पेशकरै और उसकी निस्वत राय अदालत पर कार वन्दहो या हुक्म कुर्की निस्वत किसी जायदाद के सादिर करना—

( जीम ) सदूर हुक्म इस्तिनाई चंदरोजा और दरसूरत न फरमानी हुक्म मज़कूर उस शख्स को जो न फरमानी करै जेलखाने दीवानी में भेजना और हुक्म देना कि उसकी जायदाद कुर्क और नीलाम कीजाय—

( दाल ) किसी जायदाद कारसयूर मुकर्र करना और यह हुक्म देना कि अगर वह अपनी खिदमात अच्छी तरह न बजाय लायगा तो उसकी जायदाद कुर्क और नीलाम कीजायगी—

( हे ) ऐसे दीगर अहकाम दरमियानी सादिर करना जो अदालत को करीन इन्साफ और आसान मालूमहों—

दफ़ा ६५— ( १ ) अगर किसी मुकदमे में जिसमें गिरफ्तारी या

मिलने वसूल हमल  
गिरफ्तारी या कुर्की  
या हुक्म इम्तिनाई व  
वज्रगैरकाफी--

कुर्की हुई हो या कोई हुक्म इम्तिनाई चंदरोजा हस्व  
दफा ऐन माकूल सादिर हुआ हो-

(अलिफ) अदालत को दरयाफ्त हो कि दरख्वास्त गिरफ्तारी या कुर्की या हुक्म इम्तिनाई मजकूरकी वज्रह गैर काफी की गई थी—

( वे ) या अगर मुद्दै की नालिश साबित न हो और अदालत को दरयाफ्त हो कि नालिश रजुअ करने की कोई वजह माकूल या गालिब न थी—तो मुद्दाअलय अदालत में दरख्वास्त गुजरा सकता है और अदालत मजाज़होगी कि दरख्वास्त मजकूर पर अपने हुक्म में मुद्दै के ज़िम्मे उस कदर रुपया जो एक हजारसे ज्यादा न हो और जो मुद्दाअलय के लिये वयवज़ उस खर्च या नुफ़्सान के जो उसके लाहक हाल हुआ हो माविजा माकूल मालूम हो आयद करे—

मगर शर्त यह है कि अदालत इस दफा के वमूजिव उस कदर रुपया नहीं दिला सकती है जो उसके इख्तियारात नक्दी से बढ़के हो—

(-२) अगर किसी हुक्मकी रू से तस्फिया किसी दरख्वास्त मजकूर का कर दिया जाय तो वावत उसी कुर्की या गिरफ्तारी या हुक्म इम्तिनाई के फिर नालिश माविजा की नहीं हो सकती है—

## हिस्सा ७

### अपील—

अपील बिनाराज़ी डिगरियात इब्तिदाई—

दफा ६६—सिवाय उस सूरत के कि खास मजमूअय हाज़ा या किसी दफा ५४०  
अपील बिनाराज़ी डिग- और कानून मजरिये वक्त में कोई और हुक्म शरीह हो  
रियात इब्तिदाई— और सूरतों में अपील बिनाराज़ी डिगरियात या किसी

हिस्से डिगिरियात अदालत हायजी इल्लियार समाअत इबित्दाई के उन अदालतों में दाखिल होसकेगा जो अदालत हाय समाअत इबित्दाई के फ़ैसलों की नाराजी से अपील सुनने की मजाज हैं—

( २ ) अपील विनाराजी डिगरी इबित्दाई एक तरफ़ा भी दाखिल होसकेगा—

( ३ ) कोई अपील उस डिगरी की नाराजी से रज़ूअ न होगा जिस को अदालत ने वरिजामन्दी फ़रीकैन सादिर किया हो—

दफ़ा ६७—अगर कोई फ़रीक किसी डिगरी इबित्दाई से अपनी अपील विनाराजी डिगरी कतई जब कि हक़तलफ़ी समझे जो वाद मफ़ाज मजमूअः हाज़ाके सादिर कीजाय और वह उस डिगरी का अपील न करे तो किसी ऐसे अपील में जो कतई डिगरी की नाराजी से रज़ूअ कियाजाय वह फ़रीक डिगरी इबित्दाई और मजकूर की सेहत में कुछ तथरज न करसकेगा—

दफ़ा ६८—( १ ) जब कोई अपील दो या ज़्यादा जजों की इज-  
तजवीज जब कि अपील की समाअत दो या ज़्यादा जजों के—  
लास में समाअत कियाजाय तो अपील की तजवीज मुताबिक़ राय उन जजों के या मुताबिक़ कसरत राय ( अगर कोई हों ) उन जजों के सादिर कीजायेगी—

( २ ) अगर तजवीज में कसरतराय का इत्फ़ाक़ वास्ते तब्दीली या मन्सूखी उस डिगरी के न हो जिसकी नाराजी से अपील दायर हुवाहो तो वह डिगरी बहाल रखी जायगी—

मगर शर्त यह है कि अगर अपील उस अदालत के दो जजों के इज-  
लास में समाअत कियाजाय तिसमें दो से ज़्यादा जज हों और दोनों जज मजकूर इजलास कुनिन्दः के दरमियान किसी अन्न कानूनी के वावत इल्लितलाफ़ रायहो तो जायज है कि जिस अन्न कानूनी की वावत इल्लितलाफ़ रायहो वह उसको तहरीर करें और वाद अजां उस अपील को सिर्फ़ उही अन्न कानूनी पर उस अदालत के दीगर जजों में से एक या ज़्यादा जज समाअत करेंगे और फ़ैसला अन्न मजकूर मुताबिक़ कसरत राय ( अगर कोईहो ) उन जजों के होगा जिन्होंने अपील की समाअत की हो मय उनकी जिन्होंने उसकी समाअत पहिले की थी—

दफ्ता ६६—कोई डिगरी इस वजह से मन्सूख या नफस्सुल अम्र में दफा ५७५

रिगरी बमबव ऐसी  
गलती या बेजाब्तगी  
के जो ख्यदाद मुक्त-  
दमे या हद्द नस्तिथार  
अदालतकी मुस्लिम न  
हो मन्सूख या बदल  
न जायगी—

बदल न जायगी और न कोई मुक्तदमा वसीगै अपील  
इस जिहन से वापिस किया जायगा कि इस्तिमाल बेजा  
फरीकैन या बिना हाय दावा का हुआ है या मुक्तदमा  
की किसी कार्रवाई में कोई ऐसी खता या सुकम या  
बेजाब्तगी हुई है कि जो ख्यदाद मुक्तदमा या हद्द इ-  
स्तिथार अदालत की मुस्लिम न हो—

## अपील बिनाराजी डिगरियात अपील—

दफ्ता १००— ( १ ) सिवाय उस सूरत के कि खास मजमूआ हाजा दफा ५८४

अपीलसानी—

या किसी और कानून नाफिजुल वक्त में कोई और  
हुकम शरीहो हर डिगरी जो वसीगा अपील किसी अदालत मातहत हाई-  
कोर्ट से सादिर हो उसका अपील अदालतुल आलिया हाईकोर्ट में वजूह  
मुन्दर्जे जैल से किसी वजह पर हो सकता है—याने

( अलिफ ) यह कि तजवीज वरखिलाफ किसी कानून या ऐसे रिवाज  
के है जो हुकम कानून रखती है—

( बे ) यह कि तजवीज में तस्फिया फलां जरूरी अम्र तनक्कीह  
तलव मुतअल्लिक कानून या रिवाज का जो हुकम कानून  
का रखता है नहीं हुआ—

( जीम ) यह कि कोई गलती अजीम या सिकमजाब्ता महकूमा  
मजमूआ हाजा या दीगर कानून नाफिजुल वक्त वाकै  
हुआ जिसके सबब से मुमकिन है कि कोई गलती या सुकम  
मुक्तदमे की तजवीज ख्यदादी में पैदा हुआ हो—

( २ ) इस दफ्ता के बमोजिब डिगरी अपील एकतरफा का भी अपील  
दायर हो सकेगा—

दफ्ता १०१— कोई अपील सानी वजुज उन वजूह के जो कि दफा दफा ५०५

अपील सानी किसी  
और वजह की बिना  
पर रजुअ न होगा—

१०० में मजकूर हुई किसी और वजह की बिनापर  
रजुअ न होगा—



२ नं० — **दफ्ता १०२—** किसी मुकद्दमा अदकिस्म काविल समाकृत अदालत काजमुकद्दमात में क- हाय मतलबों त्वफ्रीका में अपीलसानी न होगा जब पेलतानी नहीं होगा तादाद या मालियत शय मुद्दावहीकी असल नालिश में पांचसौ रुपयेसे ज्यादा न हो—

**दफ्ता १०३—** किसी अपील सानी में हाईकोर्ट मजाज है कि अगर इफ्तियार हाईकोर्ट शहादत मुन्दजे मिस्तल काफ्रीहो तो किसी ऐसी तनकीह नित्वत तजवीजतन- वाक्याकी तजवीज करदे जो अपील के फैसलाकेलिये कीहात वाकै- जरूरी हो लेकिन अदालत अपील मातहतने उसको तै न कियाहो अपील बिनाराजी अहकाम—

३७ वि- **दफ्ता १०४—** ( १ ) सिर्फ अहकाम मुन्दजे जैलका अपील दायर या वाव अहकाम जिनकी ना- होसक्ताहै और सिवाय उस सूरत के कि खास मज- दफ्ता राजीले अपील होनका मूअय हाजा या किसी और कानून नाफिजुलवक्त में व दफ्ता है— कोई और हुक्म सरीह हो किसी और अहकाम अपील शिकरेर दायर नहीं होगा—

( अलिक ) हुक्म मुतजम्मिन इनफिसाख कारवाई सालसी जबकि फैसला उस मुद्दत में पूरा न हो जो अदालत की तरफ से हुक्मर हो—

( वे ) हुक्म वर तवक फैसला सालसी जो मुकद्दम या खासकी शकल में तहरीर करके दियाजाय—

( जीम ) हुक्म मुतजम्मिन तरमीम या तहरीह फैसलों सालसी—

( दाज ) हुक्म मुतजम्मिन मंजूरी या न मंजूरी अदुखाल इकरार नामा हवालगी बसालसी—

( हे ) हुक्म मुतजम्मिन मंजूरी या न मंजूरीउलतोये नालिश जब कि कोई इकरारनामा हवालगी बसालसी का हुवाहो—

( वाव ) हुक्म मुतजम्मिन मंजूरी या न मंजूरी फैसला किसी ऐसी सालसी में जो वगैर तदस्सित अदालतके हुई हो—

( जे ) हुक्म मसदरह तहत दफ्ता २५—

( हे ) हुक्म इस्व शरायत मजसूअय हाजा मशकर आपद करने जुर्माना या वावत गिरफ्तारी या कैद किर्मी शरज के

दीवानी जेल में सिवाय उस सूरतके कि वह कैद सीगा इजराय डिगरीसे हो-तो

( तो ) कोई ऐसा हुक्म जो कवाअद के वमूजिव सादिर हुआ हो और जिस के अपील के निस्वत कवाअद मजकूर में सरा-हद के साथ इजाजत हो—

( २ ) कोई अपील किसी ऐसे हुक्म का दायर नहीं होगा जो इस दफा दफा ५६१ के वमूजिव अपील में सादिर हो—

दफा १०५—( १ ) सिवाय उस सूरत के कि कोई हुक्म शरीह दीगर अहकाम—

खिलाफ इसके पायाजाय कोई अपील बनाराजी ऐसे हुक्म के मसमूअ न होगा जो किसी अदालत ने वतामील अपने इख्तियार समाअत इब्तिदाई या अपील के सादिर किया हो लेकिन जिस हालमें कि डिगरी का अपील हो तो जायज है कि जो गलती या सिकम या बेजावतगी किसी हुक्मकी ऐसी कि मुकदमे की तजवीज पर मुवत्सिर हो वह यादशत अपील में वतौर एक वजह उजर के बयान कीजाय—

( २ ) वावस्फ मजमून मुन्दर्जे दफा तहती ( १ ) के अगर कोई फरीक जो किसी ऐसे हुक्म वापसी मुकदमे से नाराज हो जो बाद नफाज ऐक्ट हाजा सादिर कियाजाय और जिसका अपील दायर होसکتाहो और फरीक मजकूर अपील दायर न करै तो वह बाद अजां उसकी सेहत में तरुज न करसकैगा—

दफा १०६—अगर अपील किसी हुक्म का जायजहो तो वह उस दफा ५६६

अपील किस अदालत में सुना जायगा जिसमें अपील बनाराजी डिगरी मस्दरः उस मुकदमे के सुनाजाता जिस मुकदमे में वह हुक्म सादिर हुआहो या अगर ऐसा हुक्म किसी अदालत ने ( जो हाईकोर्ट न हो ) वतामील इख्तियार समाअत अपीलके सादिर किया हो तो अपील हाईकोर्ट में दायर होगा—

## अहकाम आम मुतअल्लिक अपील

दफा १०७—( १ ) वपावन्दी शरायत व कयूद मुकररः के अदालत दफा ५८२

इख्तियारात अदालत अपील मजाज होगी-के:—

किवरे अव्वल—

(अलिफ) मुकदमे को कतई तौरपर फैसल करै—

( वे ) मुकदमे को वापिस करै—

(जीम) तनकीहात कायम करै और उनको तहकीकात के वास्ते सिपुर्द करै—

( दाल ) शहादत मजीदले-या-ऐसी शहादत के लेने का हुक्मदे-

( २ ) वपावन्दी मजकूर नाला अदालत अपील को वही इस्तिथारत हासिल होंगे और हत्तुल मकदूर वही खिदमात अंजाम देने पढ़ेंगे जो इस मजमूअ की रुसे अदालत हाय समाअत इन्तिदाई को उन मुकदमातमें हासिल है और उनपर आयद की गई है जो उनमें दायर हों—

५८७

६०

दफ्ता १०८—अहकाम उस हिस्से के जो उन अपीलों से मुतअल्लिक जानते उन अपीलों में है जो डिगरियात इन्तिदाई की नाराजी से दायर किये जायँ जहां तक मुमकिन होगा जैल के अपीलों से मुतअल्लिक होंगे—याने जो डिगरियात वअहकाम अपील की नाराजी से दायर किये जायँ

(अलिफ) अपील बनाराजी डिगरियात अपील है—और

( वे ) उन अहकाम के अपील जो मजमूआ हाजा की रु से या किसी ऐसे उस कानून खास या मुख्तसुल मुकाम की रु से सादिर हों जिसमें कोई मुख्तलिफ जाब्ता मुकर्रर न हो—

## अपील बहुजूर मुल्क मोअज्जिम बइजलास कौंसल—

५६५

दफ्ता १०९—वपावन्दी उन कवायद के जो वक्तुन फवक्तुन आला वअ अपील बहुजूर मुल्क हजरत मुल्क मोअज्जिम बइजलास कौंसल से दरबाव मोअज्जिम बइजलास अपील अज अदालत हाय बृटिश इण्डिया के मुन्जबित कौंसल दायर हो सकेंगे— हों और उन वपावन्दी उन अहकाम के जो वाद अर्जी मुन्दर्ज हैं अपील बहुजूर मुल्क मोअज्जिम इजलास कौंसल रजूअ होगा—

(अलिफ) बनाराजी हर डिगरी या हुक्म अखीर के जो वसीत अपील अदालत हाईकोर्ट या और ऐसी अदालत से सादिर हो जिसे इस्तिथार अखीर अपील की समाअत का है—

( वे ) बनाराजी हर डिगरी या हुक्म अखीर के जो अदालत हाईकोर्ट से बतामील इस्तिथार समाप्ति इन्तिदाई सीगा दीवानी के सादिर हो-और

( जीम ) बनाराजी हर डिगरी या हुक्म के उस हालमें कि जैसा बाद अजी वयान किया गया है यह तसदीक किया जाय कि मुकदमे का अपील लायक समाप्ति आला हजरत मलिक मोअज्जिम व इजलास कौंसल के हैं-

दफा ११०- हर सूरत मुतजिकरह फिकरः ( अलिफ ) व ( वे )

मालियतशय मुतना-  
जचाफिया

दफा १०६ में जरूर है कि तादाद या मालियत से मुतनाजचाफिया की मुकदमः भरनूआ अदालत मराफि-याओला दशहजार रुपया या उससे ज्यादा हो और तादाद या मालियत दफा ५६६ शय मुतनाजचाफिया की उस अपील में जो वहजूर आली हजरत मलिक मोअज्जिम व इजलास कौंसल रजुअ किया जाय व तादाद मजकूर या उससे ज्यादा हो-

या डिगरी या हुक्म अखीर सराहतन या और निहजसे मुतजम्मिन किसी दावा या वहस मुतम्मलिकः या वावत जायदाद उसी तादाद या मालियत के हो-

और जिस हाल में कि डिगरी या हुक्म अखीर अपीलशुदः मुतजम्मिन वहाली तजवीज उस अदालत के हो जो खास मोतहत अदालत सादिर कुनिन्दः डिगरी या हुक्म अखीर मजकूरके है तो जरूर है कि अपील मुतजम्मिन किसी वहस अमरअहम् कानूनीके हो-

दफा १११- वावजूद किसी इवॉरते मुन्दर्जे दफा १०६ के कोई

कौन अपील नहीं दा  
यर होसक्ता

अपील वहजूर आला हजरत मलिक मोअज्जिम व इज-  
लास कौंसल रजुअ न होगा-

दफा ५६७

( अलिफ ) बनाराजी ऐसी डिगरी या हुक्म के जो अदालत हाई-

कोर्ट मुकररः हस्व ऐक्ट अदालत हाय हाईकोर्ट हिन्द सन २४ व २५  
१८६१ ई० के एक जज के तजवीज से या किसी ज्यूवी- विक्टोरिया  
जन कोर्ट के एक जजकी तजवीजसे सादिर हुवा हो या वाव १०४  
हाईकोर्ट मजकूरके दो या कई जजोंकी तजवीजसे या ऐसे  
डप्टीजन कोर्टकी तजवीजसे सादिर हुवा हो जो हाईकोर्ट

मजकूर के दो या कई जजों से मौजूअ हो अगर वह जज बाहम बतादाद मसावी मुख्तलिफुलरायहों और इतने न हों कि मिनजुम्लःकुल हाकिमान वक्त अदालत हाईकोर्ट के कसरत उनकी तरफहो—या

( वे ) बनाराजी ऐसी डिगरी के जिसका अपीलसानी दफा १०२ की रूसे न होसक्ताहो—

दफा ११२— ( १ ) मजमूअःहाजाकी कोई इवारत ऐसी न समझी मुस्तस्नियात् जायेगी कि—

( अलिफ ) मान अमल में लाने उस इख्तियार कुल्ली और विला कैद की है जो आली हजरत मलिकमोअज़म को दरवाब मंजूरी या नामंजूरी अपील मरजूआ हज़ूर मलिकमोअज़म इजलास कौन्सल के हासिल है या किसी और निहजपर—

( वे ) या मुखिल किसी कवायद मरतवा जुडीशल कमेटी पिरेवी कौन्सल नाफिज़ह वक्तकी है जो वहज़ूर मलिक मोअज़म इजलास कौन्सल अपीलों के पेश होनेके बाव में या जुडीशल कमेटी मजकूर के हज़ूर उन अपीलोंकी कार्रवाई के बाव में हैं—

( २ ) मजमूअः हाजा की कोई इवारत किसी मामिलः मुतअल्लिक इख्तियारात फौजदारी या ऐडमरलटी या वायस ऐडमरलटीसे या अपील हाय बनाराजी अहकाम व डिगरियात परायज कोर्ट से मुतअल्लिक न होगी—

## हिस्सा ८

### इस्तिस्वाव तजवीज़सानी व निगरानी

दफा ११३—वमलहजी उन शरायत व कयूद के जो मुकरर की इस्तिस्वाव अत हाई जायें कोई अदालत मुकदमः की कैफियत लिखकर मुकदमः को हाईकोर्ट में इस्तिस्वाव न भेजसक्ती है और

उसपर हाईकोर्ट ऐसा हुक्म सादिर करेगी जो उसको मुनासिब मालूम हो—

दफ़ा ११४—वमलहूजी मजकूरःवाला जो शख्स अपनी हकतलफ़ी दफ़ा ६०३  
दरख्वास्त तजवीज | समझे—

( अलिफ ) किसी डिगरी या हुक्म से जिसका अपील अजरूये मज-  
मूअः हाजा जायज है मगर जिसका अपील हिनोज़ दायर न  
हुवाहो—

( बे ) किसी डिगरी या हुक्म से जिसका अपील इस मजमूअः  
की रूसे जायज नहीं है—या

( जीम ) किसी फैसलह से जो अदालत मतालवा खफीफ़ाके इस्ति-  
सबाव पर सादिर हुवाहो—

तो उसको इख्तियारहै कि उस अदालत में जिसने डिगरी या हुक्म  
सादिर कियाहो तजवीजसानी की दरख्वास्तकरै और अदालत इस पर  
जो हुक्म मुनासिब समझे सादिर करेगी—

दफ़ा ११५—हाईकोर्ट मजाज है कि मिसल किसी मुक़दमः की कि दफ़ा ६२२

<p>हाईकोर्ट उन मुक़द- मातकी मिसल तलव करसक्ती है जिनका अ- पील हाईकोर्ट में न हो सक्ताहो</p>	<p>जिसको किसी अदालत मातहत हाईकोर्ट मजकूरने फैसल कियाहो और जिसका अपील हाईकोर्ट में नहीं होताहै अपने पास तलव करै और अगर यह जाहिरहो कि अदालत मातहत मजकूरने—</p>
--	--

( अलिफ ) वह इख्तियार नाफिज किया जो उसको क़ानूनन् हासिल  
न था—या

( बे ) जो इख्तियार उसको क़ानूनन् हासिल था उसे अमल में  
नहीं लाये—या

( जीम ) अपने इख्तियारातकी तामील में खिलाफ़ क़ानून कार्रवाई  
की या कोई बेजान्तगी अजीमकी—

तो हाईकोर्ट मुक़दमः में ऐसा हुक्म सादिर करेगी जो मुनासिबहो—

## हिस्सा ९

# अहकाम खास मुतअल्लिकः अदालत हाय हाईकोर्ट— मुक़ररः हस्ब सनदशाही—

६३१ दफ़ा ११६—यह हिस्सा सिर्फ़ उन अदालत हाय हाईकोर्ट से मुत  
व २५ वि- हिस्सा हाज़ाका तअल्लु- अल्लिक है कि जो हस्ब ऐक्ट हाईकोर्ट हाय हिन्द सन  
रिया वाव कज़रूर बाज़ हाईकोर्टों १८६१ ई० के मुक़रर हैं या आयेन्दः हों—  
से होगा

६३३ दफ़ा ११७—बज़ुज़ उसके जिसका कि हिस्सा हाज़ा या हिस्सा १०  
मजमूअ हाज़ाका त- या क़वायद में ध्यान है अहकाम इस मजमूअ के अ  
अल्लु क़ हाईकोर्ट से दालत हाय हाईकोर्ट मज़कूर से मुतअल्लिक होंगे—

६३४ दफ़ा ११८—अगर किसी अदालत हाईकोर्ट मज़कूर की दानिस्त में  
इस्तिथार इजराय डि- यह ज़रूरी हो कि डिगरी जो उसके मामूली इन्तिदाई  
गरी क़व्ल मुतहक्कि- इस्तिथार समाअत सीमा दीवानी की तामील में सा-  
हाने खर्चा के दिर की गई हो क़व्ल अज़आंकि तादाद उस खर्चा की  
जो मुक़दमा में आयद हुआ हो अज़ख़य तशखीस मुतहक्कि होसके जारी  
होजानी चाहिये तो अदालत मौसूफ़ यह हुक्म देसकेगी कि वह डिगरी  
फ़ौरन जारी कीजाये वज़ुज़ उस क़दरके जोकि खर्चा से इलाक़ा रखती  
हो और यह कि जिस क़दर डिगरी खर्चा से इलाक़ा रखती हो वह वमु-  
जर्द इसके कि तादाद खर्चा की अज़ख़य तशखीस मुतहक्कि हो जारी की  
जायेगी—

६३५ दफ़ा ११९—इस मजमूअ की किसी इवारत से यह मुतसव्वर न होगा  
अग़लब और मजाज कि वह किसी शख्स को यह इजाज़त देती है कि दूसरे  
वहज़र अदालत तअ- की तरफ़ से वहज़र अदालत दरहाले कि वह अपने  
गैर न क़रारेंगे इस्तिथार समाअत इन्तिदाई सीमा दीवानी की रु से  
अमल कर रही हो तक्ररी करे या गवाहों से सवाल व जवाब करे वज़ुज़  
उम सूरत के कि अदालत व तामील इस्तिथार मफ़विजः हस्ब सनद  
तक्ररी अपने के दम शख्स को इजाज़त इस अमर की दे—या हाईकोर्ट के

उन इस्तिथारात में जो उसको एडोकेट और त्रिकलाय और अटरनी के वाचमें कवाअद मुजबित करनेका हासिल है मुखिल होती है—

दफा १२०—( १ ) अहकाम जैल अदालत हाईकोर्ट से जब कि दफा ६३८ अहकाम हाईकोर्टमें मुन- वह अपने इस्तिथारात समाअत इबितदाई सीगा दी- अल्लिक नहीं है जब कि वानी नाफिज करती हो मुतअल्लिक न होंगी यानी अदालतमजकूर इस्तिथारात सीगा दीवानी दफात १६ व १७ व और २० या दीवालियह— समाअत इबितदाई नाफिज करती हो

( २ ) इस मजमूअः की किसी इवारत की तौसीअया तअल्लुक हाईकोर्ट के जज से न होगा जब वह अपने इस्तिथारात तौर इन्सालोनियट कोर्ट के नाफिज करता हो—

## हिस्सा १०

### कवाअद

दफा १२१— जो कवाअद जमीमः अव्वल में दर्ज हैं और उसी जदीद कवाअद मुन्दर्ज जमीमः अव्वलका असर तरह असरपिजीर होंगे कि गोया इस मजमूअःमें दाखिल हैं तावकते कि इसी हिस्से के अहकाम के बमूजिव मसूख न होजाय या बदल न जाय—

दफा १२२— वह हाईकोर्ट जो ऐक्ट हाईकोर्ट हिन्द सन् १८६१ ई० जदीद २४ व २५ विक्टोरिया वाव १६४ की रुसे कायम हुई हैं और चीफकोर्ट पंजाब दलोदर ब्रह्मा वकतन् फवकतन् मुश्तहर करेंगे त्वाद कवाअद निस्वत खुद अपने जाबतः के और नीज निस्वत जाबतः उन अदालत हाय दीवानी के जो उनके मातहत हों बनासक्ती हैं और उन्हीं कवाअदके बमूजिव कुल या वाज कवाअद मुन्दर्जः जमीमः अव्वल को मसूख करसक्ती हैं या बदल सक्ती हैं या उसमें इजाफा करसक्ती हैं—

दफा १२३— ( १ ) एक कमेटी जिसका नाम रूल कमेटी होगा जदीद रूल कमेटीयोंकी त्क- वलाद कलकत्ता व मदरास व बम्बई व इलाहाबाद व रीर वाज मुक्रामातमें लाहौर व रंगूनमें से हर वलदह में कायम की जायेंगी—

( २ ) हर ऐसी कमेटी में अशखास जैल शामिल होंगे—यानी



(अलिफ) तीन जज उस मुकाम की हाईकोर्ट के जहाँ कि कमेटी कायम हो जिनमें से कमसे कम एक ऐसा हो जिसने ओहदा डिस्ट्रिक्ट जजीपर या ( पंजाब या ब्रह्मा में ) ओहदा डिवीजनल जजीपर तीन सालतक काम किया हो—

( वे ) एक वैरिस्टर उसी अदालत का—

( जीम ) एडोकेट ( जो वैरिस्टर न हो ) या वकील या झीडर उसी अदालत का—

( दाल ) एक जज ऐसी अदालत दीवानी का जो उस हाईकोर्ट के मातहत हो—और

( हे ) दरसूरत बलाद कलकत्ता व मदरास व बम्बई एक अटरनी—

( ३ ) हर ऐसी कमेटी के मेम्बरों को साहब चीफ जस्टिस या चीफ जज मुकर्रर करेंगे और वही उनमें से एक शख्स को प्रेसीडेंट नामजद करेंगे—

मगर जिस सूरत में कि खुद साहब चीफ जस्टिस या चीफ जज कमेटीके मेम्बर होना चाहें तो और जज जो मेम्बर मुकर्रर किये जायें तादाद में दो होंगे और साहब चीफ जस्टिस या चीफ जज कमेटी के प्रेसीडेंट होंगे—

( ४ ) हर मेम्बर ऐसी कमेटीका वहैलियत मेम्बरी उतने अर्सातक रहैगा जो साहब चीफ जस्टिस या चीफ जज की तरफ से इस बारह में मुकर्रर करदिया जाये—और जब कभी कोई मेम्बर अपनी खिदमत से किनाहकश हो या इस्तीफा दे या फौत करे या उस मुकाम पर कि जहाँ कमेटी कायम हो न रहे या कमेटी की मेम्बरी की काबिलियत उसमें बाकी न रहे तो साहब चीफ जस्टिस या चीफ जज मजकूर उसकी जगह किसी दूसरे शख्स को मेम्बर मुकर्रर करमक्ते हैं—

( ५ ) हर ऐसी कमेटी के वास्ते एक मेकंटरी भी मुकर्रर किया जायगा जिसका तकर्रर साहब चीफ जस्टिस या चीफ जज करेंगे और उसको वह तनख्वाह मिलेगी जो नव्वाब गवर्नर जनरल बहादुर इजलास बौमल या लोकल गवर्नमेन्ट के हुक्म से यानी जैसा मौका हो इस बाब में मुकर्रर की जाय—

दफा १२४— हर रूल कमेटी एक रिपोर्ट उस हाईकोर्ट की खिदमत जदीद रिपोर्ट कमेटी बखिद- में जो उस बलदह में कायम है जहां कि कमेटी कायम मत हाईकोर्ट की गई है निस्वत तजवीज मंसूखी या तब्दीली या इजाफा कवाअद मुन्दर्जः जमोमा अव्वल या निस्वत बनाने नये कवाअद के पेश करेगी और हाईकोर्ट उस रिपोर्ट पर गौर करेगी कबल इसके कि कवाअद दफा १२२ के बमूजिव बनाये जायें—

दफा १२५— हाईकोर्ट सिवाय उनके जिनका जिक्र दफा १२२ में जदीद दीगर हाईकोर्टों के इ- है वह इस्लियारात जो उस दफाकी रूसे अता हुए हैं इस्लियारात निस्वत उस तरीका व शरायत के बमूजिव अमल में लासक्ती वजाकवाअद हैं जो नव्वाव गवर्नर जनरल बहादुर इजलास कौंसल मुक्करर करें—

मगर यह होसक्ता है कि कोई ऐसी हाईकोर्ट इश्तिहार देने के बाद ऐसा कायदा बनाये जिसकी रूसे वह अपने इस्लियारातकी हदूद अर्जों के अन्दर उन कवाअद में से किसी की तौसीअ करे जो किसी दूसरी हाईकोर्टने वजा कियेहों—

दफा १२६—जो कवाअद दफात मजकूरह वालाकी रूसे बनायेजायें जदीद कवाअद ताबअ मजूरी उनके वास्ते हुक्म जैलकी मंजूरी लेना जरूरी होगी- होंगे यानी

(अलिफ) अगर कवाअद किसी ऐसी हाईकोर्टकी तरफ से बनायेजायें दफा २४ व २५ जो ऐक्ट हाईकोर्ट हिन्द सन् १८६१ ई० की रूसे मुक्करर विक्टोरिया वाव १६४ हुईहो तो मंजूरी उस हाकिमकी जिसकी तसरीह दफा १५ ऐक्ट मजकूर में इन कवाअदकी निस्वत है जो उसी दफाके बमूजिव बनायेजायें—

( बे ) अगर कवाअद किसी दूसरी हाईकोर्टकी तरफ से बनाये जायें तो लोकल गवर्नमेन्टकी मंजूरी—

दफा १२७—जो कवाअद इसी तरहपर वजा कियेजायें और मंजूर जदीद कवाअदकी मुश्तहरी कियेजायें वह गजट आफ इण्डिया या गजट सरकारी मुकामी में मुश्तहर होंगे यानी जैसा मौकाहो—और तारीख मुश्तहरी से या किसी दीगर तारीख मखसूस से उनका असर उस हाईकोर्टके इलाका

अर्जीके अन्दर कि जिसने उन्हें बनाया हो ऐसाही होगा गोया कि वह जमीनमे अव्वल में दोखिल हैं—

दफा १२८—( १ ) ऐसे कवाअद अहकाम मजमूअः हाजाके सि-  
मामिलात जिनकी नि- लाफ न होंगे वलिक वरिआयत उन्हीं अहकामके उन  
स्वत कवाअद वजा हो अमूरकी निस्वत होंगे जो ज़ावतः अदालत हाय दीवानी  
सक्ते हैं से मुतआलिक हैं—

( २ ) विलखसूस और वगैर इसके कि उन इस्तिथारातकी अमूमि-  
यत में कुछ फर्क आये जो दफा तहती ( १ ) की रूसे अता  
हुएहैं कवाअद मजकूर निस्वत जुम्ला या बाज अमूर जैलके  
होंगे—यानी

(अलिफ) तामील सम्मन व नोटिश व दीगर हुक्मनामों की वजरिये  
डाक या किसी दूसरे तरीक पर और ख्वाह आम तौरपर हो  
या वतअल्लुक रक्तवात खासके और सबूत ऐसी तामीलका-

( बे ) खिलाई पिलाई और हिफाजत बहालत कुर्की जानवरों  
और दीगर माल मन्कूलाकी और फीस निस्वत हिफाजत  
और खिलाई पिलाई मजकूरके और नीलाम जानवरों और  
जायदाद मजकूरका और मुहासिल नीलाम मजकूर—

( जीम ) निस्वत उन कार्रवाइयों के जो नालिशत मुक्ताविल में की  
जायें और तख्मीन मालियत नालिशत मजकूरकी वास्ते  
अगराज इस्तिथारात समाअतके—

( दाल ) निस्वत ज़ावतः मौसमवगारनेशी और चार जंग आर्डर के  
जो ख्वाह अलावह कुर्की व नीलाम जर हाय कर्जाके हो  
या वजाय उसकेहो—

( हे ) निस्वत उस ज़ावतःके जब कि मुदाअलेह दावीदार इस्तह-  
काक हिस्सा रसदी का हो या मुआविजा नुकसान का व  
खिलाफ किसी शख्सके ख्वाह वह शख्स फरीक मुकदमा  
हो या न हो—

( वाव ) निस्वत ज़ावतः सरमरीके उन नालिशत में जिनमें मुद्दे  
सिर्फ वसलयावी जर कर्जा या जर मतालिया मुअयना

का मुद्दाअलेह से साथ या वगैर सूदके ख्वाहांहो दरहाले  
कि नालिश अमूर मुफस्सिलः जैलपर मुवनीहो—

- ( १ ) वर बिना किसी मुआहिदः शरीह या मानवीके—
- ( २ ) या वर बिना एक इक्करारनामाके जब कि रक्तम जो वसूल होने वालीहो एक रक्तम मुक्कररहो या ऐसा कर्जाहो जो अज किसम तावानके न हो—
- ( ३ ) या वर बिना जमानतके जब कि दावा मालिकपर निस्वत सिर्फ जर कर्जा या जर मतालिवः मुअइयनाके हो—
- ( ४ ) या वर बिनाय अमानत—
- ( ५ ) या उन नालिशत में जिनको जिर्मीदार वावत वसूलयावी जा-  
यदाद मन्कूलः साथ या वगैर दावा जर लगान ( या किराया )  
या वासिलातके उस आसामीपर दायरकरे जिसकी मोआद  
क़ब्ज़ः गुजर गईहो या वजरिये-नोटिश वेदखली खतम होगईहो  
या वसवव न अदा करने लगान ( या लगान ) के लायक  
मंसूखी होगईहो—या उन अशखासपर दायर करे जो आसामी  
मजकूर के जरिये से दावीदारहों—
- ( जे ) निस्वत ज़ाबतः इजराय सम्मनके—
- ( हे ) निस्वत इज़ितमाअ नालिशत व अपील व दीगर कार्रवाईयोंके—
- ( तो ) निस्वत तफवीज खिदमात जुडीशल वहमशक़ जुडीशल वगैर  
जुडीशलके किसी रजिस्टरार या “ प्रोथोनोटरी ” या  
“ मास्टर ” या दीगर अफसर अदालतको—और —
- ( ये ) निस्वत जुम्ला-फारम व रजिस्टर व कुतुब व दाखिलजात  
व हिसावात के जो वास्ते करने कार्रवाई अदालत हाय  
दीवानी के जरूरी या मुनासिब हों—

दफ्ता १२६— वावस्फ किसी मजमून मजमूअः हाजा के किसी हाई-दफ्ता ६५२

इस्तिथारत अदालत  
हाय हाईकोर्ट मुक्कररह  
हस्व सनद शाही निस्वत  
वजा कवाअद मुतअलि-  
क अपने ज़ाबत दीवानी  
समाअत इन्तिदाई के

कोर्ट को जो ऐक्ट हाईकोर्ट हाय हिन्द सन् १८६१  
ई० की रूसे कायम हुई हो इस्तिथार है कि वह क-  
वाअद मुनासिब जो लेटर्सपेटन्टके अहकाम के नकीज  
न हों जिनके जरिये से वह कायम हुईहो दंगरज  
इन्तिजाम ज़ाबतःखुद वतामील अपने इस्तिथार स-

फिल. सोम  
२४ व २५ वि-  
क्योरिया वाव  
१०४

मअंत इतिदाई सीगा दीवानी के मरातिव करे—और इस मजमूआःका कोई मजमून उन क़वाअद के जो अज़पुर मवसिर नहीं होगा जो ववज़त नाफ़िज़ होने मजमूआः हाज़ा के जारी हों—

दफ़ा १३०— जो हाईकोर्ट कि ऐक्ट हाईकोर्ट हाय हिन्द सन् १८६१ ई० के मुताबिक न कायम हुई हो उसको अख्तियार है कि बाद हुसूल मंजूरी लोकल गवर्नमेन्ट कोई कायदा निश्चय किसी मामले दीगर गैर ज़ाव्तेके बज़ा करे जिसको कोई हाईकोर्ट मुकर्ररः हस्व ऐक्ट मजकूर ऐक्ट मजकूर की दफ़ा १५ की रुसे निश्चय उसी मामले के अपने इलाक़े इख्तियारात के किसी हिस्से के लिये जो हुदूद बुल्दे प्रेसोडेंसी से बाहर हो बनासक्ता है—

दफ़ा १३१— क़वाअद जो दफ़ा १२२ या दफ़ा १३० के मुताबिक मुश्तहगी बवाअद बनाये जायें गज़ट आफ़ इण्डिया या गज़ट सरकारी मुकामी में याने जैसी सूरत हो मुश्तहर होंगे और तारीख़ मुश्तहरी से या किसी दीगर तारीख़ मखसूस से हुक्म क़ानून का रक्खेंगे—

## हिस्सा ११

### मरातिव मुतफ़रिक्

दफ़ा १३२— वह मन्तूरान जो हस्व दस्तूर व रिवाज मुल्क लोगों के सामने होने पर मजहूर नहीं की जासक्ती असालतन हाजिरी अदालत से माफ़ हैं—

( २ ) लेकिन किसी इज़ारन हुन्दमें दफ़ा हाज़ा से यह न समझना चाहिये कि मन्तूरान मजकूर व इज़राय हुक्मनामा दीवानी गिरफ्तारी से माफ़ हैं उस सूरत में जबकि उनकी गिरफ्तारी की इस मजमूआः की रुसे मुमानियत नहीं है—

दफ़ा १३३— ( १ ) लोकल गवर्नमेन्ट मजाज है कि दज़रिये इन्ति-  
मुकामी के मुकामी हाय हुन्दमें गज़ट सरकारी मुकामीके किसी मन्तूरान

जो बलिहाज मस्तवे के गवर्नमेन्ट मजकूरकी राय में मुश्तहक माफी का हो असालतन् हाजिरी अदालतसे माफ करदे—

( २ ) लोकल गवर्नमेन्ट उन अशत्यास के नाम और सकूनत जो हस्व मजकूर माफ हुयेहों वक्तन् फवक्तन् हाईकोर्ट में इरसाल करैगी और एक फेहरिस्त ऐसे अशत्यास की अदालत मजकूर में रहैगी और एक फेहरिस्त उन अशत्यास की जो हाईकोर्ट की अदालत मातहतके इलाके में रहतेहों हर ऐसी अदालत मातहत में रहैगी—

( ३ ) जब कोई शाख्त जो हस्व मजकूर माफ किया गयाहो इस माफी का इस्तहकाक पेशकरे और इस वजह से उसका इजहार लेना वजरिये कमीशन के जरूरी हो तो उसे लाजिम है कि कमीशन का खर्चा अदाकरे वजुज उस मूरतके कि जो फरीक उसकी शहादत दिलाना चाहै खुद खर्चा मजकूर अदा करदे—

दफ्ता १३४— अहकाम- दफ्तात ५५ व ५७ व ५९ जहांतर गिरफ्तारी वजुज इस्त | मुमकिनहो उन तमाम अशत्यास से मुतअल्लिक होंगे इजराय डिगरी | जो इस मजमूआ की वमूजिव गिरफ्तार किये जायें—

दफ्ता १३५— ( १ ) कोई जज या मजिस्ट्रेट या और ओहदेदार दफ्ता ६४२ गिरफ्तारी व तामील | अदालत हुक्मनामा दीवानी की तामील में उस अदालत में गिरफ्तार न होसकैगा जब कि वह अपनी इस्तिस्ना | अदालत को जाता या उसमें इजलास करता या वहां से वापस आताहो—

( २ ) जब कोई मामला किसी ऐसी अदालत के खारू पेश हो जो उसपर अख्तियार समौअिन रखती हो या नेकनीयती से वावर करती हो कि उसको अख्तियार समाअत हासिल है तो फरीकैन इस मामलेके और उनके विकल और मुस्तारान और रिबन्यू एजन्टान व एजन्टान मकबूला और उनके गवाह जो सम्मनके मुताबिक तलव होकर हाजिरहों उस दरमियानमें हुक्मनामा दीवानी के वमूजिव सिवाय उस हुक्मनामा के जिसेको अदालत मजकूरने निस्वत तौहीन अदालतके जारी

कियाहो गिरफ्तार होने से वरी रहेंगे जब वह अदालत मजकूर में मामला मजकूरकी गरजके लिये जातेहों या वहां हाजिरहों और नीज जब इस अदालत से वापस आतेहों—

- ( ३ ) इस दफाकी दफा तहती ( २ ) की रुसे-मदयून डिगरी उस गिरफ्तारी से मुस्तस्ना होनेका दावा न करसकैगा जो किसी हुक्म मुतजम्मिन इजरायफोरी के वमूजिव कीजाय या जब कि मदयून डिगरी मजकूर इस अमरकी वजह दिखाने के लिये हाजिरहो कि वह इजराय डिगरी में जेल क्यों न भेजाजाय—

दफा १३६—( १ ) अगर कोई दरख्वास्त गुजरे कि इस मजमूआ:

जान्ना उस सूरत में कि शख्स गिरफ्तार तलब या जायदाद कुर्की तलब जिले के बाहरहो

के किसी हुक्मके वमूजिव जो इजराय डिगरी से तम्म-लजुक न रखताहो कोई शख्स गिरफ्तार या कोई जाय-दाद कुर्की करलीजाय और ऐसा शख्स या ऐसी जाय-दाद उस अदालतके इलाके हुक्मतकी हुदूद अरजीके

बाहर रहता या बाकैहो कि जिसमें दरख्वास्त मजकूर गुजरानी गईहो तो अदालत मजाज है कि हस्व इफ्तितजाय राय अपने के वारन्ट गिरफ्तारी जारी करे या हुक्म कुर्कीका सादिरकरे और एक नकल वारन्ट या हुक्म की मय खर्चः तखमीनी गिरफ्तारी या कुर्कीके उस अदालत जिना में भेजदे जिसके इलाके हुक्मतकी हुदूद अरजीके अन्दर वह शख्स रहता या जायदाद बाकैहो—

- ( २ ) अदालत जिलेको लाजिम है कि नकल और रकम मजकूर हासिल होनेपर मारफन अपने अहलकारों के या किसी अदालत मातहत अपने के गिरफ्तारी या कुर्की अमल में लाये और उस अदालतको जहांसे वारन्ट या हुक्म जारी हुवाहो गिरफ्तारी या कुर्कीकी इत्तलाकरे—

- ( ३ ) वह अदालत जो उस दफेकी वमूजिव गिरफ्तारीकरे शख्स गिरफ्तार शुद्दः को उस अदालत में भेजदेगी जहां से वारन्ट गिरफ्तारी जारी हुवा था इल्ला उस सूरत में कि शख्स मजकूर अदालत जव्वल जिक्रको वजह काफी इस बातकी कि वह अदालत आखिरतलजिक्रमें क्यों न भेजाजाये दिखादे—याकि वह जमानत काफी अदालत आखिरतल जिक्रमें हाजिर होने

की दाखिलकरे या जमानत काफी वास्ते ईफा उस डिगरी के जो अदालत मजकूर से उसके नाम साधिर कीजाये दाखिल करे कि उन दोनों सूरतों में वह अदालत जिसने गिरफ्तारी कीहो उसको रिहाई देगी—

- ( ४ ) अगर वह शख्स जिसकी गिरफ्तारी या जायदाद मन्कूलः जिसकी कुर्की इस दफाकी रूसे मंजूरहो हाईकोर्ट आफ जो-डीक्चर वाकै फोर्ट वलियम बंगाल या वाकै मदरास या बंबई या चीफकोर्ट लोवर ब्रह्माके इस्तिथारात समान्त इब्तिदाई सीगै दीवानीके हुदूद अरजीके अन्दरहो तो नकल वारन्ट गिरफ्तारी या हुक्म कुर्कीकी मय खर्चा तखमीनी गिरफ्तारी या कुर्की मजकूरकी अदालत मतालवे जात खफीफा वाकै कलकत्ता या मदरास या बंबई या रंगून में भेजी जायगी याने जैसा मौकाहो—और वह अदालत नकल और रकम मजकूर वसूल होनेपर उसी तरह कार्रवाई करेगी गोया कि एक अदालत जिलाहै—

दफा १३७—( १ ) जो जवान कि वक्त नाफिज होने मजमूअः दफा ६४५

जवान अदालत हाय मातहत	हाजाके किसी अदालत मातहत हाईकोर्टकी जवानहो वही उस अदालत मातहतकी जवान उस वक्तक रहेगी कि लोकल गवर्नमेन्ट दूसरी निहजका हुक्मदे—
----------------------	---

- ( २ ) लोकल गवर्नमेन्ट यह करार देसक्ती है कि कौन जवान किसी अदालत मजकूरकी जवान समझी जायगी और दरख्वास्तें जो अदालत मजकूर में गुजरें और कार्रवाई अदालत किस खतमें तहरीर होगी—

- ( ३ ) जबकि अहकाम मजमूअः हाजा की रूसे यह जरूरीहो या उसकी इजाजत हो कि सिवाय कलमबन्द किये जाने शहादत के कोई चीज अदालत मजकूर में जव्त तहरीर में आये तो यह तहरीर वजवान अंगरेजी होगी लेकिन अगर कोई फरीक मुकदमा उसका वकील अंगरेजी न जानता हो तो उसकी दरख्वास्त पर उसका तर्जुमा वजवान अदालत उस



को दिया जायगा और अदालत हुक्म मुनासिव निस्वत दाखिल करने खर्चा तर्जुमा मजकूरके सादिर करेगी—

दफा १२५

अलिफ

दफा १३८— ( १ ) लोकल गवर्नमेन्ट को इख्तियार है कि गजट लोकल गवर्नमेन्ट शहादत वजवान अंगरेजी कलमबन्द किये जाने की हुक्म देसकते हैं। सरकारी मुकामी में एल न दें कि फलान जज जिसकी तसरीह एलान मजकूर में हो या जिसपर वह तसरीह सादिक आती हो उन मुकदमात में जिनमें अली होसकती हो शहादत वजवान अंगरेजी खुद दतरीके मुकर्ररह कलमबन्द करै—

( २ ) अगर कोई जज किसी वजह काफी से हिदायत दफा तहती

( १ ) की तामील न करसकता हो तो उसको चाहिये कि

वजह मजकूर लिखै और शहादत वरसरे इजलास अपने

वयानसे लिखवादे—

दफा १६७

दफा १३९— हर तहरीरी वयान हलफी की सूरत में जो इस मज-  
वयान हलफी में हलफ मूअः के वमूजिवहो—  
कौन अशखास देसकते हैं।

(अलिफ) हर एक अदालत या मजिस्ट्रेट—

( वे ) या वह ओहदेदार दूसरा शख्स जिसको इस कामके लिये हाईकोर्ट मुकर्रर करै—

( जीम ) या वह ओहदेदार जो किसी और अदालत से मुकर्रर हुवाहो जिसको लोकल गवर्नमेन्ट ने इस गरजसे इख्तियार आम या खास दियाहो—

मजाजहै कि हलफ तहरीरकुनिन्दः वयान हलफी को दे—

दफा १४७

अलिफ

दफा १४०— ( १ ) जब कोई मुकदमा वायत हक वचाने माल जहाज मगरुमात जहाज मगरुमात या उजरत पहुँचाने जहाज के समुद्र तावाजत वगैर में या वायत नुक्सान के जो जहाज के टकर खाने से पहुँचाहो किसी अदालत ऐडमरल्टी या वायस ऐडमरल्टी में पेशहो वह अदालत आम इससे कि वह अपने इख्तियारान इख्तियार या इख्तियारान अर्पिल नाफिज करती हो मजाज होगी कि अगर मुनासिव समझे तो खुद और अगर कोई फरीक दरख्ताम्न करे तो उस पर लाजिम होगा कि अपनी इमदाद के नामे दो शख्स अमेसर आजमदाकार

मुताबिक उस कायदे के जो अदालतकी हिदायत से मुकर्रर किया जाये या मुताबिक तरीके मुकर्ररह के तलब करले और ऐसे अशस्त्रास असेसर को लाजिम है कि उसके मुताबिक अयानत करने के लिये हजरिहों—

( २ ) ऐसे हर असेसर को उस कदर जर फीस वयवज हाजिरी के और फरीकैन में से उस फरीक की तरफसे दिलाया जायगा जिसकी निस्वत अदालत हिदायत करै या जो मुकर्रर कर दिया जाये—

दफ्ता १४१— अदालत दीवाणी के तमाम कार्रवाइयों में इतवा दफ्ता ६४७  
मुताबिक कार्रवाई | उस जावतेका जो इस मजमूआ में नालिशत की निरवत  
मुकर्रर हुआ है हांतक होगा जहांतक कि मुमकिन हो—

दफ्ता १४२— तमाम अहकाम व इत्तिलानामा जात जो वसूजिव दफ्ता ६४  
अहकाम व इत्तिला- | अहकाम मजमूआ में हाजो किसी शख्सपर तामील हों  
नामाजात तहरीरी होंगे | या किसी शख्सको हवाला किये जायें तहरीरी होंगे—

दफ्ता १४३— जब किसी इत्तिलानामा या सम्मन या चिट्ठी पर दफ्ता ६५  
महसूलडाक | जो इस मजमूआ की वसूजिव जारी होकर वसबील  
डाक खान कीजाय महसूल डाक वाजबुन्मुख हो तो वह महसूल  
और रसूम इसकी रजिस्टरी की खानगी से पहिले अन्दर मीआद मुअ  
इयन के अदा करनी होगी—

मगर शर्त यह है कि लोकल गवर्नमेन्ट को इख्तियार है कि बाद हुसूल  
मंजूरी जनाव नवाब गवर्नर जनरल दहादुर व इनलास काउंसिल ऐसे  
महसूलडाक या रसूम या दोनों को माफ करै या कोई शर्ह रसूम अदा-  
लत की मुकर्रर करै जो इसके बदले लीजायगी—

दफ्ता १४४— ( १ ) अगर कोई डिगरी बदल दीजाय या मन्सूख दफ्ता ५=३  
दरखवास्त निस्वत वाज- | कर दीजाय तो अदालत मराफियः औला किसी ऐसे  
याफत | फरीककी दरखवास्तपर जो वाजयाफत से या किसी  
और तरह नफा उठानेका मुतदकदो वाजयाफत मजकूर इसतरह करयेगी  
जिससे ताब इमेवान फरीकैनकी बढ़ी हंसियत होजाये जो इस सूरत में  
होती अगर डिगरी या जुज डिगरी मजकूर जो बदला या मन्सूख किया

गया हो सादिर न हुवा होता—और इस गरज़ से अदालत कोई अहकाम सादिर करसक्ती है जिनमें अहकाम निस्वत वापसी खर्चा व अहकाम निस्वत अदाय सूद व तावान व माविजा व वासिलात शामिल हैं—जो वजह तबदील या मन्सूखी मजकूरके जरूर होजायँ—

( २ ) कोई नालिश वास्ते हासिल करने वाजयाफत या दीगर दाद-रसी के जो वजरिये दरख्वास्त हस्व दफा तहती ( १ ) के हासिल होसक्ती थी दायर न होसकैगी—

दफा २५३

दफा १४५—जब कोई शख्स वहेसियत जामिन जिम्मेदार हो—

इजरा बनाम जामिन

( अलिफ ) किसी डिगरी या उसके किसी जुर्जोकी तामीलके लिये—

( वे ) या वास्ते वाजयाफत किसी जायदादके जो इजराय डिगरी में ली गई हो—

( जीम ) या वास्ते अदा करने किसी रकम या ईफा किसी शर्तके जो किसी शख्सपर आयद की गई हो मुताबिक हुक्म अदालत जो किसी मुकदमा या ऐसी कार्रवाई में जो इसकी वजह से जरूरी हो सादिर हुवा हो—

तो जायज़ है कि डिगरी या हुक्म उसकी ज़ातर उस हदतक कि वह उसका वज़ात खुद जिम्मेदार होगया है उस तरीक़ेपर जारी किया जाये जो मजमूअः हाजामे इजराय डिगरीके बारे में मुकर्रर है—और शख्स मजकूर अपीलकी इगराजके वास्ते हस्व मुराद दफा ४७ एक फरीक़ समझा जायगा—

मगर शर्त यह है कि इत्तिला जिसको अदालत हर सूरतमें काफी समझे जामिनको पहुँचाई जाय—

जदाद

दफा १४६—सिवाय उसके जैसा कि मजमूअः हाजा या किसी दूसरे ज़ावत मिदजनिब या क़ानून नाफिजुल वक्तमें खिलाफ इसके हुक्महो अगर बनाम ज़ायमनाम कोई कार्रवाई या दरख्वास्त किसी शख्सकी तरफ से या बनाम उसके की जाये या दी जाये तो वह कार्रवाई या दरख्वास्त ऐसे शख्स की तरफ से या बनाम उसके की जासक्ती है या दी जासक्ती है जो उसके जरिये से दावा करना हो—

दफ़ा १४७—हुम्ला मुकदमात में जिनमें कोई शख्स नाकाबिल जदीद

रजामन्दी या इकरार-  
नामा अज तरफ पश-  
खास नाकाबिल—

फरीकहो कोई रजामन्दी या इकरार निस्वत किसी कार्र-  
वाईके अगर अदालतकी इजाजत सरीह से रफीक या  
वली दौरान मुकदमः की तरफसे हुवाहो इसीतरह म-  
वसिर होगा गोया कि शख्स मजकूर में कोई नाकाबिलियत न थी और  
उसने खुद रजामन्दी मजकूरदी या इकरार मजकूर किया —

दफ़ा १४८—अगर कोई मुदत अजजानिब अदालत वारते करने जदीद

तौसीअ मुदत

किसी फेलके जो मजमूअः हाजाकी रुसे मुकरर हुवाहो  
या जायज रक्ता गयाहो मुअय्यन कीजाये या वरुशी जाये तो अदालत  
मजकूर अपनी सबावदीद से वक्तन् फवक्तन् मुदत मजकूरकी तौसीअ  
करसवती है गोकि असिल वक्त जो इब्तिदा में मुकरर हुवाहो गुजर  
चुकाहो—

दफ़ा १४९—अगर कुल फीस जो कानून नाफिजुल वक्त मुतअल्लिक जदीद

कोर्टफीसकी कमी का  
पूरा कियाजाना

कोर्टफीसकी रुसे किसी दस्तावेजके लिये मुकरर हु  
हो या उसका कोई हिस्सा अदा न हुवाहो तो अदा-  
लत अपनी सबावदीद से किसी नौबतपर उस शख्सको जिसको फीस  
मजकूर देना वाजिवहो इजाजत देसवती है कि वह कुल या जुज कोर्ट  
फीस दाखिल करै जैसा मौका हो—और जब कोर्ट फीस-दाखिल कर  
दीजाये तो वह दस्तावेज जिसकी निस्वत वह फीस वाजिवहो उसी तरह  
मवसिर होगा गोया कि फीस मजकूर मौके अव्वल पर दीगई—

दफ़ा १५०—सिवाय उसके जैसा कि उसके खिलाफ हुक्म हुवा जदीद

इन्तकालकार्रवाई

अगर एक अदालत का काम किसी दूसरी अदालत  
में मुन्तकिल कियाजाये तो उस अदालत को जिसमें काम मुन्तकिल  
कियाजाये वही इख्तियारात हासिल होंगे और वही फरायज मन्सवी वजा  
लायेगी जो इस ऐकटकी रु से उस अदालतको हासिल हों या उसपर  
आयद किये गयेहों जहां से कि काम मुन्तकिल हुवाहै—

दफ़ा १५१—इस मजमूअः के किसी मजमून से वह इख्तियार जदीद

इस्तिस्नादरवारे इख्त-  
यार असली अदालत

असली किसी तरह महदूद या हुतासिर न होगा जो  
अदालत को निस्वत सादिर करने ऐसे अहकाग के

हासिल है जो वास्ते अंगरेज इन्साफ या रोकने खराबी जाब्ता अदालत के जरूरी हैं—

दफ्ता १५२— अलफाज या हिन्दुसोंकी गलतियां जो तजवीज या तजवीज व डिगरी व डिगरी या हुक्म में वाकै हों या ऐसी गलतियां जो हुक्म की तरमीम किसी लम्जिस या तरक इत्तफाकी की वजह से उनमें वाकै हों किसी वक्त अज तरफ अदालत ख्वाह तहरीक अदालत से या फरीकैन की दरखास्तपर दुरुस्त होसकती हैं—

दफ्ता १५३— अदालत को इस्तिथार है कि किसी वक्त और व इन्तिथार आम निस्वत पावन्दी शरायत निस्वत खर्चा या दीगर अमूर के जिन तरमीम के को वह मुनासिव समझै कोई सुकुम या गलती जो किसी कार्रवाई मुकदमे में रह गई हो दुरुस्त करदे और जुम्ता जरूरी तरमीम इस गरज से कीजियेगी कि वह असली मस्ला या तनकीह जो कार्रवाई मजकूर से पैदा हो या उसपर महबल हो तै पाजाये—

दफ्ता ३ कि—  
कगह ३

दफ्ता १५४— मजमूअः हाजाका कोई मजमून मुखिल किसी मौजूदह इन्तिथाना मौजूदह हक हक अपीलकी न होगा—जो किसी फरीक को वक्त अमीनता शुरू निफाज मजमूअः हाजा हासिल हो—

जदीद

दफ्ता १५५— वह ऐक्ट जिनका हवाला चौथे जमीमा में है उस हद तक ऐक्टो की तरमीम तक तरमीम किये गये जिसकी तसरीह जमीमा मजकूर के चौथे खाने में कर दी गई है—

दफ्ता ३ डिक्कह  
मदगल

दफ्ता १५६— वह ऐक्ट जिनका हवाला पांचवें जमीमा में है उस हद तक मन्सूख किये गये जिसकी तसरीह जमीमा मजकूर के चौथे खाने में कर दी गई हैं—

मुअय्यन कियेगये तैयार कियेगये और कियेगये और बख्शेगये हैं जहां तक इस मजमूआ के मजमून के मुवाफिकहों उसी तरह मवासिर होंगे गोया कि इस मजमूआ की रूओ और अजतरफ उस हाकिम के जो मजमूआ हाजा की रू से उनके दारते बाइखितयार किया गया हो मुश्तहर और मुरत्तिर और मुकरर और दाखिल और मुअय्यन और तैयार किये गये थे और बख्शे गये थे—

दफा १५८—और जहां किसी ऐकट या इश्तिहार में जो इस मजमूआ की नाफिज होनेकी तारीख से पहिले नाफिज या सादिर हुवाहो ऐकट ८ सन् १८५६ ई० या किसी मजमूआ जाबते दीवानी या ऐकट तरमीम कुनिन्दः मजमूआ मजकूर या किसी ऐकट मन्सूख शुदः का या उसके किसी वाव या दफा का हवाला दिया गया हो तो वह हवाला जहां तक मुरकिनहो इस मजमूआ या उसके मुनासिब हिस्सः या आर्डर या दफा या कायदा की तरफ सम्झा जायेगा—

## जमीमा जात

## जमीमे अव्वल

## आर्डर ( १ )

## फरीकैन मुक्तदमा

१—जायज है कि ऐसे जुम्ता अशखास एक मुक्तदमे में बहुमरे मुद्दह दफा : कौन कौन अशखास व आन शामिल कियेजायें जिनको किसी दादरसी के छमरे मुद्दहआन शामिल इश्तहकाकका होना जो एकही फेल या मामला या सिलसिला अफआल या मामलात कि वाइतहो या उससे पैदा होताहो मुस्तर्कन् या मुन्फर्दन् या वाजको वजाय वाजके वयान कियाजाये—जब कि अगर अशखास मजकूर अलाहिदा अलाहिदा मुक्तदमा दायर करते तो कोई मुश्तरिक अमर कानूनी या वाक्याती पैदा होता—

२—जब अदालतको मालूमहो कि मुद्दहों के शामिल किये जाने से जदीद

अग्नियार अदालत नि-  
स्वत देने हुक्म अला-  
हिदा अलाहिदा व तज-  
वीज मुकद्दम के

मुकद्दमे की तजवीजमें खलल या ताखीर वाकै होसक्ती  
है तो अदालत मजकूर मुद्दियों की मरजीपर छोड़सक्ती  
है या अलाहिदा तजवीज मुकद्दमे का हुक्म देसक्ती है  
या और मुनासिव हुक्म सादिर करसक्ती है-

दफा २८

३-जायज है कि वह जुम्ला अशखास जुमेरे मुद्दाअलेहुम् में शामिल  
कौन कौन अशखास व  
जुमेरे मुद्दाअलेह में शा-  
मिल किये जासक्ते हैं

कियेजायें जिनके मुकाबिल किसी दादरसी के इश्तह-  
काकका होना जो एकही फेल या मामला या सिल-  
सिला अफआल या मामलातकी वावतहो जब कि

अगर अलाहिदा अलाहिदा नालिशत अशखास मजकूरके मुकाबिल दायर  
कीजायें तो कोई मुस्तरिक अमर कानूनी या वाकियाती पैदा होता मुस्त-  
र्कन् या मुन्फर्दन् या वाजको वजाय वाज के होना बयान कियाजाये-

दफा २६  
और २८

४-जायज है कि फैसला बगैर किसी तरमीमके सादिर कियाजाये -  
अदालत फैसला सादिर  
करसक्ती है वहक या व  
नाम एक या कई मुत्त-  
रिक फरीक के

फैसला बगैर किसी तरमीमके सादिर कियाजाये -

(अलिफ) उन मुद्दियों में से एक या कईके हकमें जोकि मुश्तहक दा-  
दरसी के पायेजायें वावत उस दादरसीके जिसका इस्तह-  
काक मुद्दै या मुद्दयान मजकूर को पहुँचताहो-

( वे ) उन मुद्दाअलेहुम् में से एक या ज्यादा मुद्दाअलेहुम् पर  
जिनकी ज़िम्मेदारी साबितहो मुदाफिक ज़िम्मेदारी हरएकके-

५-यह जरूर नहीं कि हरएक मुद्दाअलेह उस कुल दादरसी में जो  
यह जरूर नहीं कि हर  
एक मुद्दाअलेह उस  
दादरसी मुतदाविया में  
समय २०

रज रखलै-

दफा २२

६-मुद्दैको इस्तिथारहै कि अगर उसकी मरजीहो एकही मुकद्दमे में  
मामला तियाजना चद उन अशखास में से सबको या वाजको मुद्दाअलेह कर  
नामाजना जो एकां जो एकही मुद्दाअलेह की वावत मुन्फर्दन् या मुस्त-  
र्कन् और मुन्फर्दन् ज़िम्मेदारहों और उन अश-  
खान में वह लोगभी शामिल कियेजामक्ते हैं जो

बिलआफ एक्स चेंज और हुंडियात और परामेसरी नोटोंके फरीकहों—

७—जब मुद्दैको शकहो कि वह किस शख्स से दादरसी पानका मुश्त-  
जब मुद्दैको शकहो कि हकहै तो उसको इखिनयारहै कि दो या कई मुद्दाअ-  
किस शख्ससे दादरसी लेहुइको शामिलकरै ताकि इस अमरका फ़ैसला मा-  
मिलेगी वैन कुल फरीकों के होजाये कि कौन मुद्दाअलेह जि-  
म्मेदार है और किस हदतक—

८— ( १ ) जब बहुत से अशखास एकही मुकदमे में एकही हक दफा ३० व ३२

एक शख्स जुम्ला अश- रखते हों तो जायजहै कि उनमेंसे एक या चंद फरीक  
खास हकदारकी तरफ बइजाजत अदालत जुम्ला अशखास हकदारकी तरफ  
से नालिश या जवाब- से या उनके फायदे के लिये नालिश करै या उनपर  
दिही करसक्ताहै नालिश कीजाये या ऐसी नालिश में जवाबदिही करै-  
लेकिन अदालत ऐसी सूरत में मुद्दै के खर्च से इत्तिलाअ रुजूअ नालिश  
की उन तमाम अशखास को उनकी जात पर इत्तिलानामः की तामील-  
करने से या अगर बसवव मुत्ताहिद होने अशखास के या और किसी  
वजह से ऐसी तामील अकलन् मुमकिन न हो तो वजरिये इश्तिहार  
आमके पहुँचाये याने जैसा कि अदालत हर सूरत में हुक्म दे—

( २ ) जिस शख्सकी तरफ से या जिसके फायदे के लिये हस्व दफा ३२  
कायदा तहती ( १ ) नालिश रुजूअ कीजाये या जवाबदिही  
कीजाये वह अदालत से दरख्वास्त करसक्ताहै कि उस नालिश  
में वह फरीक मुकदमा बनाया जाये—

९— किसी मुकदमे को बसवव इस्तिमाल बेजा या अदम इस्तिमाल दफा ३१  
इस्तिमाल बेजा और फरीकैन के कुछ नुक्सान न पहुँचैगा और अदालत  
अदम इस्तिमाल को जायजहै कि हर मुकदमे में जो अहाली मुकदमा  
फिल्वाकै हाजिरहों उनके हकूक व मराफिक से जिस कदर मुकदमा को  
तअल्लुकहो सिर्फ उसी कदर की वावत अमर मावउल्निजाका तस्फि-  
या करै—

१०— ( १ ) जब मुकदमा किसी ऐसे शख्स के नाम से जो मुद्दै सही दफा ३७  
नालिश जो मुद्दै न हो रुजूअ किया जाये या इश्तिवाह हो कि आया  
नालतके नामसे हो मुकदमा मुद्दै सहीके नाम से रुजूअ हुवाहै या नहीं  
अगर अदालत को इतमीनान होजाये कि मुकदमा वाकई सहीसे इस



तौरपर दायर किया गया है और असल अमर निजाई के तस्फिया के लिये जरूर है कि बजाय मुद्दई गलत के कोई और शख्स बतौर मुद्दई के कायम या ज्यादा किया जाय तो अदालत मुकद्दमः की किसी नौबत पर हुक्म दे सकती है कि बकैद उन शरायत के जो उसके नजदीक करीन इन्साफ हों ऐसा किया जाये—

दफा २२

( २ ) अदालत को इख्तियार है कि कार्रवाई की किसी नौबत पर अदालत फरीकों का किसी फरीक की दरख्वास्त पर या विदून या उसके नाम खारिज या शॉ-मिल कर सकती है और ऐसी शरायत से जो अदालत के नजदीक करीन इन्साफ हों यह हुक्म दे कि नाम किसी फरीक का जो बतौर बेजा मुद्दई या मुद्दाअलेह के जुमरे में दाखिल हुआ हो खारिज किया जाये और नाम किसी शख्स का जिसको बतौर मुद्दई या मुद्दाअलेह शरीक करना चाहिये था या जिसका अदालत में हाजिर होना इस वजह से जरूर है कि अदालत जुम्ला मरातिव मुतनाजिआ मुतअल्लिकः मुकद्दमः को वखूवी और तकमील के साथ फैसल और तै करसके शामिल किया जाये—

( ३ ) कोई शख्स बगैर अपनी रजामन्दी के बतौर मुद्दई जिसका मुकद्दमा में कोई रफीक न हो या बतौर रफीक मुद्दई के जो नाकाबिल हो शामिल न किया जायगा—

दफा २३

( ४ ) जब कोई मुद्दाअलेह शामिल किया जाये तो अरजीदाने में जिस जब नउं मुद्दाअलेह शामिल किया जाये तो अरजीदाना में तरमीम की जायेगी तौर पर कि जरूरी हो तरमीम की जायेगी इला उम सूरत में कि अदालत और तरह पर हिदायत करे और सम्मन और अरजीदावा की तरमीम शुद्ध नकलें की तामील नये मुद्दाअलेह पर और अगर अदालत के नजदीक मुनासिव हो तो इख्तिदाई मुद्दाअलेह पर की जायेगी—

दफा २०

( ५ ) बरियायत अहकाम दफा २२ कानून तमाटी हिंदू सन् १८७७ ई० के किसी शख्स के मुकाबिल में जो बतौर मुद्दाअलेह शामिल किया जाये मुकद्दमः की कार्रवाई का शुरू होना सिर्फ उस तारीख में सम्भवा जायेगा जब सम्मन की उस पर तामील हुई हो—

नया १५ नव  
१८७७ ई०

११-अदालत को इस्तिथार है कि पैरवी मुकदमे की इस मुद्दे के दफा ३२ पैरवी मुकदमा | हनाले करै जिसे वह मुनासिब समझे-

१२- ( १ ) जब मुकदमा में एक से ज्यादा मुद्दे हों तो जायज है कि दफा ३३ चर मुद्दों या मुद्दा-उनमें से एक या ज्यादा मुद्दों को उनमें से किसी लेहुम में से एक शर्त दूसरे मुद्दे की तरफ से इजाजत दीजाये कि वह किसी दूसरी की जानिब में कार्रवाई में उसकी तरफ से हाजिर होकर सवाल व जवाब या अमल करै और उसी तरह जब मुकदमे में एकसे ज्यादा मुद्दाअलेह हों जायज है कि उनमें से एक या ज्यादा मुद्दाअलेहों को उनमें से किसी दूसरे मुद्दाअलेह की तरफ से इजाजत दीजाये कि किसी कार्रवाई में उसकी तरफ से हाजिर होकर सवाल व जवाब या अमल करै-

( २ ) वह इजाजत तहरीरी होगी और उसपर इजाजत देनेवाले के दस्तखत होंगे और वह अदालत में दाखिल कीजायगी-

१३- तमाम उजरात निस्वत अदम इस्तिमाल या इम्तिमाल बेजा दफा २४ उजरदारी वर निना फरीकैन जिस कदर जल्द मुमकिनहों और हमेशावर अदम-इन्तिमाल- या दफत या कबूल अपूर तनकीह तलब के करार दिये इस्तिमाल बेजा जाने के पेश किये जयेंगे इल्ला उस सूरत में कि उजरदारी की बिना बद को पैदा हुई हो और अगर ऐसा उजर इस तरह न किया जाये तो समझा जायगा कि उजरदार उनसे बाज आय है -

## आर्डर २

### नालिशकी तरतीब

१- हर नालिश जहां तक मुमकिन हो इस तौरसे गुरत्तिव कीजायेगी दफा ४२ नालिश की तरतीब | कि तमाम मरातिव मुतनाजिआ की निस्वत तजदीज कतई करनेकी उससे बजह पाईजाये और मरातिव मजकूर की वावत आयन्दः फिर निजा अदालत न हो सके-

२- ( १ ) हर नालिश में वह तमाम दावा शामिल किया जायगा दफा ४३ नालिशमें तमाम दावा जिसके पेश करनेका इश्तइकाक बिनाय दावा मजकूर शामिल निया जायगा की दावत मुद्दे रखता हो मगर मुद्देको यह इस्तिथार

है कि मुकदमे को किसी अदालतकी समाअतके लायक करनेकी गरज से अपने दावे में से जिस कदर जुजो चाहै छोड़दे—

( २ ) अगर मुद्दै अपने दावे में से किसी जुजोकी बाबत नालिश न जुजोदावाकी नालिश करै या अमदन् उनके नालिश करने से बाज आये तो करने ने बाज आना आयेन्दः उस जुजोकी बाबत जो इम तौरपर मतरूक रहा हो या जिसके दावा करने से मुद्दै बाज रहा हो नालिश न कर सकैगा—

( ३ ) जिस शख्सको एकही विनायदावा की निस्वत कई चारः जो चार चार जोइयों में से इयोंका इस्तहकाकहो उसे इख्तियार है कि उन तमाम किता एककी नालिश चारः जोइयों की या उनमे से किसी की नालिश करै तर्क करना लेकिन जिस हालमें कि बजुज इंजाजत अदालत के उन तमाम चारः जोइयोंकी नालिश तर्क करै तो मिनवाद बाबत किसी चारः जोई के जो तर्क की गई हो मजाज नालिशका न होगा—

तशरीह-इस कायदेकी इगराजके लिये दस्तावेज मुआहिदा और कफालतनामा जो उसकी तामीलके इतमीनानके लिये हो और मुतवातिर दआवी जो दस्तावेज मजकूरकी रूसे पैदा हो यह सब बमंजिले विनाय दावा बाहिदके मुतसब्बिर होंगे—

तमसील

उनका हक मुस्तरिकहो दावा पहुँचताहो उनकी अस्तित्वारहै ऐसी बिना हाथ दावाको एकही नालिशमें शामिल करें—

( २ ) जब चंद बिना हाथ दावा शामिल कीजायें तो अस्तित्वार स-माप्त अदालतका निस्वत उस मुकदमे के शय मुतदावियाकी उस तादाद या मालियत मजमूअपर मुनहसिर होगा जो व ता-रीख रुजूअ नालिशहो—

४-( १ ) जो नालिश वास्ते वाजयाफत जायदाद गैर मन्कूलाकेहो दफा ४४

नालिश वाजयाफत जा- वगैर इजाजत अदालतके कोई बिनाय दावा उसमें यदाद गैर मन्कूला मे शामिल न कीजायगी वजुज—  
सिर्फ वाजदवावी शामि-  
ल किये जासके हैं

( अलिफ ) दआवी वासिलात या वाक्रियात जर लगान या किराया जायदाद मुतदाविया या उसके किसी जुजोके—

( वे ) दआवी हरजा वावत इनहराफ किसी माहिदः के जिसकी खुसे जायदाद या उसके किसी जुजोपर कब्जाहो—और—

( जीम ) दआवी कि जिनमें दादरसी मतलूबा एकही बिनाय मुखा-समतपर मुवनीहो—

मगर शर्त यहहै कि उस कायदे के किसी मजमून से यह मुतसव्विर न होगा कि कोई फरीक मुकदमा वयवात या इन्फिकाक रिह्न में जायदाद मरहूनापर कब्जा पाने से रोकाजाये—

५-कोई दावा जो किसी वसी या मोहतमिम तर्की या वारिस को या दफा ४४

दावी अज तरफ या व- उसपर उसके उस मन्सब से पहुँचताहो उस दावे में नाम वसी या मोहतमिम शामिल न कियाजायगा जो उसकी जात खास को या तर्की या वारिसके जात खासपर पहुँचताहो इल्ला उस हालमें कि दावा अखिलजिककी निस्वत वयान कियाजाय कि वह उसी जायदाद से पैदा होताहै जिसकी वावत मुद्ई या मुद्आअलेह मजकूर वसी या मोहत-मिम तर्की या वारिस होनेके हैसियत से नालिश करताहै या उसपर ना-लिश कीगई है या कि वह दावा ऐसा है जिसको वह वशिरकत शरूस् मुतवफ्फीके जिसका वह कायम मुकामहै दिला पानेका मुतहक या अदा करनेका सजावार है—

मुताबिल कर- ६-जब अदालतके नजदीक चंद विनाहाय दावा सुस्तेमिलः का एक  
दह दफा ४६ व इस्तिथार अदालत नि- मुकदमा में साथ साथ और तै करना दुशवार मालूम हो  
४७ व ४५ स्वत हुक्म देने अला- तो अदालत येजाज होगी कि एक एक विनाय मुखा-  
हिदा तजवीज के- स्मितकी अलाहिदा तजवीज होनेका हुक्म दे या जो कुछ  
हुक्म मुकतिजाय मसलहत समझे सादिरकरै—

७-उजर इस बातका कि चंद विनाहाय दावा बेजा तौरपर शामिल  
उजर्दारी वर विनाय कीगई है जिस कदर जल्द मुमकिन हो और हमेशः वर-  
इस्तिमाल बेजा वक्त माकबल करारदाद अमूर तनकीह तलबके किया  
जायगा इला उस सूरत में कि उजर्दारी कि विना घादको पैदाहुई हो और  
अगर ऐसा उजर हस्व मुन्दर्जेवाला न कियाजाय तो समझा जायगा कि  
उजर्दार उससे वाज आयाहै—

## आर्डर ३

### एजन्टान याने मुख्तारान मकबूला और विकलाय-

दफा ३६

१-जब कालून यह हुक्म हो या इस्तिथार दिया गया हो कि कोई फरीक  
हाजिरी अदालत वगेर अदालत उस अदालत में हाजिर हो या दरख्वास्त दे या  
अमालतन या मारफत कोई और अमल करै तो वजुज उस सूरतके किसी क्रा-  
एजन्ट मकबूलाय वकी- नून नाफिजा वक्त में कुछ और हुक्म सराहतन मुन्दर्जे  
तके होमकी है हुदा हो जायज है कि फरीक मजकूर अमालतन या मा-  
रफत आने एजन्ट मकबूला या वकील के जो हस्व जावता उसकी तरफ  
से पैरवी करने के लिये मुकरर हुवा हो हाजिर हो या दरख्वास्त दे या  
अमल करै—

मगर शर्त यह है कि अगर अदालत अमालतन हाजिर होनेका हुक्म  
दे तो फरीक मजकूर को अमालतन हाजिर होना पड़ेगा—

२-एजन्टान मकबूला जो फरीकों की तरफ से अदालत में हाजिर  
होसके और दरख्वास्त देसके और अमल करसके हैं यह हैं—

( अलिफ ) अशनास जो मुताबारनामात रखने हों और मुस्तिथार-  
नामोंमें मजहूरी जाना फरीकों की तरफ में हाजिर होने

और दरखास्त देने और अमल करने का इस्तिथार दिया गया हो—

( बे ) अशस्वाम जो उन फरीकों की तरफ से या उनके नाम से कुछ तिजारत या कारोबार करते हों जो उस अदालत के इलाके की हुदूद अरजी के अन्दर न रहते हों जिसकी हुदूद का अन्दर हाजिर होना या दरखास्त देना या अमल करना हां भगर सिर्फ तामिलान मुतअल्लिके तिजारत या कारोबार में और उस सूरत में जब कि कोई और एजन्ट जिसको ऐसी हाजिरी अदालत और दरखास्त देने और अमल करने की इजाजत बसराहत दी गई हो वहां मौजूद न हो—

३-( १ ) वह हुक्मनामजात जिनकी तामील किसी फरीक के दफा ३८ तामील हुक्मनामा ए- एजन्ट मकबूला पर की जाये उसी कदर मजबूर होंगे जन्ट मकबूल पर कि गोया वह खुद फरीक की जातपर तामील किये गये थे वजुज उस सूरत के कि अदालत से कोई और हिदायत हो—

( २ ) वह अहकाम जो फरीक मुकद्दमः पर हुक्मनामा की तामील के बावमें हैं उस सूरत से भी मुतअल्लिक होंगे जब उसके एजन्ट मकबूला पर हुक्मनामा की तामील की जाये—

४-( १ ) तर्कहर वकील का किसी शख्स की जानिव से अदालत में दफा ३६ वकील का तर्कहर हाजिर होने या दरखास्त देने या कोई फैल करने के लिये वजरिये तहरीर के होगा और उसपर शख्स मजबूर के या उसके एजन्ट मकबूला या किसी दूसरे शख्स के जो अजख्य मुख्तारनामा इस बारे में कार्रवाई करने के लिये बाजाब्ता मजाजन् गरदानी गया हो दस्तखत होंगे—

( २ ) जब वकील इसको कबूल करले तो तहरीर तर्कहरी मजबूर अदालत में दाखिल काजायगी और तावक्के कि वह वजरिये किसी तहरीर दस्तखती मवकिल या वकील याने जैसा कि मौक्ता हो मदखिलः अदालत के अदालत की इजाजत से फिस्व न करदीजाये या तावक्के कि वह मवकिल या वकील फौन न होजाये या तावक्के कि मुकद्दमः की तमाम कार्रवाइयां

जहांतक कि उस मवकिल से इलाका रखते हों इस्तिताम को न पहुँचें नाफिज समझी जायगी—

( ३ ) किसी हाईकोर्ट मुकर्रर हासव ऐक्ट हाईकोर्ट हाय हिन्द सन् १८६१ ई० के या किसी चीफकोर्ट के ऐडोकेट के लिये या किसी दीगर हाईकोर्ट के ऐडोकेट के लिये जो वैरिस्टर हो जरूर नहीं है कि किसी तरह का नविस्ता मुतजम्मिन अपने इस्तिथार पैरवी मुकद्दमः की अदालत में दाखिल करै—

दफा ४०

५-हुक्मनामजात आम इससे कि उनमें फरीक मुकद्दमा के असाल तामील हुक्मनामा तन् हाजिर होनेका हुक्म हो या न हो जो किसी फरीकके वकील पर तामील कियेजायें या वकील के दफ्तर या मस्कन् मामूलीपर छोड़ दियेजायें उनकी निस्वत फहमायश कियाजायगा कि गोया वे मवकिल को जिसका कि वकील कायम मुक्ताम है वजावता पहुँचा दियेगये और मवकिल को उनकी इत्तिला होगई और वजुज उस सूरत के कि अदालत और तरहपर हुक्मदे वजमीअ वजूह वैसेही मवसिर होंगे कि गोया वह असालतन् फरीक मजकूर को दियेगये या खुद उसपर उनकी तामील कीगई—

दफा ४१

६-( १ ) अलावह एजन्टान मकबूला के जिनका जिक्र कायदा २ एजन्ट हुक्मनामे की तामील कबूल करगे के लिये में हुवाहै हरशरूप जो अदालत के इलाके के अन्दर रहता हो हुक्मनामा की तामील को कबूल करने के लिये एजन्ट मुकर्रर होसक्ता है—

( २ ) जायज है कि ऐमा तकर्रर खासहो या आम मगर तहरीरी तकर्रर तहरीरी होना होना लाजिम है और उसपर मुकर्रर करनेवाले के और अदालत में दाखिल कियाजायगा दस्तखत होंगे और वह तहरीर या अगर तकर्रर आमहो तो उसकी नक़ल उसदिका अदालत में दाखिल की जायगी—

## आर्डर ४

### इरजाय नालिशात

१-( १ ) हर नालिश इम तरह कबूल कीजायगी कि परजीदावा

नालिशोंकी इत्तिदा | अदालत में या उस ओहदेदार के पास जो अदालत से  
अरजीदाने से होगी | उस कामके लिये मुक़र्रर हो दाखिल किया जाय —

( २ ) हर अरजीदावा गुताविक क़वाअद मुन्दर्जे आर्डर ६ व ७ के  
होगा जहांतक कि क़वाअद मजकूर मुतअल्लिक होसकें—

२—अदालत हर नालिशके मरतिबको एक किताब में जो उसी गरज दफा ५८  
रजिस्टर मुक़दमात दी- | से मुरत्तिब रहैगी और जिसका नाम दीवानी मुक़दमात  
वानी | का रजिस्टर होगा दर्ज करायेगी और जो मुक़दमात  
रजिस्टर मजकूर में दर्जहों उनपर हरसाल बतरतीब तारीख मंजूरी  
अरजीदावाके नम्बर चढ़ाये जायेंगे—

## आर्डर ५

### इजराय व तामील सम्मन

#### इजराय सम्मन

१—( १ ) जब नालिश वाजाव्ता रुजूअ होजाय जायजहै कि सम्मन दफा ६४  
मुद्दाअलेहके नाम इस हुक्म से जारी किया जाय कि वह तारीख मुन्दर्जे  
सम्मनपर अदालत में हाजिर होकर दावेकी जवाबदिही करै—

मगर शर्त यहहै कि अगर अर्जीदावा दाखिल होनेके वक़्त मुद्दाअलेह  
अदालत में हाजिर होकर मुद्देके दावे से अकवाल करचुकाहो तो सम्मन  
उसके नाम जारी न किया जायगा—

( २ ) जिस मुद्दाअलेहके नाम सम्मन हस्व मजमून कायदा तहती

( १ ) जारी किया जाये वह हाजिर होसकता है—

( अलिफ ) असालतन्—या

( बे ) मारफत किसी वकीलके जिसको वखूनी हिदायत करदीगई  
हो और जो तमाम सवालात जरूरी मुतअल्लिकै मुक़दमे का  
जवाब देसके—या

( जीम ) मारफत किसी वकीलके जिसके हमराह ऐसा कोई शख्सहो  
जो तमाम सवालात मजकूरका जवाब देसके—

( ३ ) ऐसे हर सम्मनपर जज या उस ओहदेदारके दस्तखत सव्त



३-हर सम्मनके साथ अर्जीदावाकी एक नकल-या वशत इजाजत सम्मन के साथ नकल एक वयान मुख्तसिर भेजा जायगा-  
अर्जीदावा या वयान मुख्तसिर

३-(१) अगर अदालत के नजदीक मुद्दाअलेह का असाततन् हा-  
अदालत मुद्दाअलेह या जिर होना जरूर हो तो सम्मन में उत्तकी निश्चित यह  
मुद्दे के असाततन् हाजिर हुकम होगा कि मुद्दाअलेह अदालत में बतारीख मुस-  
र हाने का हुकम देमस्ती है रहे सम्मन असाततन् हाजिर हो—

२ अगर अदालत के नजदीक मुद्दईका भी उसी रोज असात तन् हाजिर होना जरूर हो तो अदालत मजाज होगी कि मुद्दईके उस रोज असात-तन् हाजिर होनेका हुक्म दे-  
 ३

४-किसी फरीक़की निश्चय असाततन् हाजिर होनेका हुक्म न दिया  
 किसी फरीक़के असात- जायगा इला उस सूरत में कि-  
 तन् हाजिर होनेका हुक्म  
 न दिया जायगा इसा  
 उस सूरत में कि उसका  
 सकूनत हदूद मुकर्ररः क  
 अन्दर हो

( अलिफ ) उसकी सकूनत अदालत के मामूली इस्तिथार समाजन  
इस्तिथारकी हुदुद अर्जीके अन्दरहो-या

( धे ) हुद्द मजकूर के बाहर मगर अदालत से पचास मील से कम फासिले पर हो या अगर रेल या इग्टीमर या कोई और मुक़ररा चाम सवारी उसकी जाय सकूनत से मुक़ाम अदालत तक के दूठे हिस्से के पांच गुना फासिले पर चलती हो तो मुक़ाम अदालत से दो सौ मील से कम फासिले पर हो-

५-सरपत जारी करने के वक्त अदालत ये अफसर नै करेगी कि सम्मन मिला सही या नहीं भिर्फ वास्ते कगारदाद अफसर तनकीद तलबके होगा या नारत उनदिमाल कतई मुकदमाके और सम्मनमें उसके मुताबिक दिदायत लिखी जायगी-

मगर शर्त यह है कि हर मुकदमा मजसूआ अदालत मतलिवे जात खफीकामें सम्मन वास्ते तस्फिया कतई मुकदमे के जारी किया जायगा—

६—मुद्दाअलेहकी हाजिरीके लिये तारीख मुकर्रर करने के वक़्त अदालत मुकदमे के तारीख वास्ते हाजिरी मुद्दाअलेहके लत मरातिव मुन्दर्जेजेलका ख्याल रखेगी याने किल्लत या कसरतकार मरजूआ अदालतकी और मुद्दाअलेहकी सकूनत का मुकाम और मुद्दत जो सम्मन की तामील के लिये जरूर है और वह तारीख ऐसी मुकर्रर की जायगी कि मुद्दाअलेह को तारीख मुकर्रर तक हाजिर होकर मुकदमे की जवाबदिही करने की मुदत काफ़ी मिले—

७—सम्मन में जिनकी रु से हाजिर होने और जवाबदिही करने का दफा सम्मनमें हुकम होना कि मुद्दाअलेह जुम्ला तस्तीफात पेश करे कि जिनपर वह इस्तदलाल करना चाहता हो हुकम हो मुद्दाअलेह के नाम यह हुकम मुन्दर्ज होगा कि तमाम दस्तावेजात जो उसके कब्ज़ा या इस्तिथार में हों जिनपर मुद्दाअलेह को अपनी जवाबदिही की ताईद के लिये इस्तदलाल करना मंज़ूर हो पेश करे—

८—जब सम्मन वास्ते इनफिसाल कतई मुकदमे के हो उसमें मुद्दाअलेह को हिदायत की जायगी कि जो तारीख उसकी हाजिरी के लिये मुकर्रर हुई हो उसपर जुम्ना गवाह कि जिनपर अपनी जवाबदिही की ताईद में उस को इस्तदलाल करना मंज़ूर हो पेश करे—

## तामील सम्मन

९—( १ ) अगर मुद्दाअलेह उस अदालत के इलाक़े के अन्दर रहता हो या उसका कोई सम्मन वास्ते तामीलके हो जहां नालिश रजुअ हुई हो या वहां उसका कोई एजन्ट रहता हो जो सम्मन लेने का मजाज हो तो अगर अदालत किसी दूसरी तरह का हुकम न दे सम्मन अहलकार मजाजको इस गरजसे हवाला किया जायगा या उसके नाम भेजा जायगा कि वह खुद या मारफत अपने किसी मातहतके उसकी तामील करे—

( २ ) अहलकार मजकूर किसी अदालत का अहलकार हो सकता है जो वह न हो कि जहां नालिश रजुअ न हुई हो और अगर वह ऐसा अहलकार हो तो सम्मन वसगील हाक या और

-- होंगे जिसको जज इस काग़ज़ पर मुहर करे और उसपर अदा-  
लत की मोहर की जायगी--

दशा ६५

२-हर सम्पन्नके साथ अर्जीदावाकी एक नकल-या वशत इजाजत

सम्मान के साथ नक़ल  
अर्जोदिवा या वयान मु-  
हम्मद

एक वयान सुरुवातसिर भेजा जायना—

दृका ६६

३-( १ ) अगर अदालतके नजदीक मुदाअलेहका असादन न्हा-

अदालत मुद्राचलेह या  
मुद्राके अस्तित्व हाजि  
र होने का हुक्म देन ली है

जिर होना जरूर हो तो सम्मन में उसकी निश्चित यह हुक्म होगा कि मुद्दा अज्ञेह अदालत में बतारीख मुस-रहे सम्मन असाततन् हाजिर हो—

२. अगर अदालतके नज़दीक मुद्दईका भी उसी रोज असात तन् हाज़िर होना जरूर हो तो अदालत मजाज़ होगी कि मुद्दईके उस रोज असात-तन् हाज़िर होनेका हुक्म दे-

दफा ६७

४-किसी फरीकदी निश्चत असात्ततन् हाजिर होनेका हुक्म न दिया

मिस्री फरीकके अताल-  
तन् हाजिर हेनेना हुवम  
न दिया जायना इहा  
उत्त सरत में कि उत्तकी  
रकूनत हदुद मुकर्रर. क.  
अन्दर हो

जायगा इला उस सूरत में कि—

( अलिफ ) उसकी सकूनत अदालत के मायूली इस्तिथार समाजन  
इस्तिथारकी हुदुद अर्जोके अन्दरहो-या

( धे ) हुद्द मजकूरके बाहर मगर अदालत से पचास मील से कम फासिलेपर हो या अगर रेल या इण्टीमर या कोई और मुकर्ररा चाम सवारी उसकी जाय सकूनत मे मुकाम अदालत तकके छठे हिस्से के पांच गुना फासिलेपर चलती हो तो मुकाम अदालत से दो सौ मीलसे कम फासिलेपर हो-

५०३३ =

५-सम्मत जारी करने के वस्तु अदालत ये अमर नै करेगी कि सम्मत

मत्तं चान्ते मत्तं चान्ते  
मत्तं चान्ते मत्तं चान्ते  
मत्तं चान्ते मत्तं चान्ते  
मत्तं चान्ते मत्तं चान्ते

विर्षा नास्ते कृगरदाद यस्मिन् तनकीद तनचके होगा या  
 नारते उनप्रियाल कर्तुं शुक्रदमाके और सम्पन्नमें उसके  
 मुताविक हिदायत लिखी जायगी-

मगर शर्त यह है कि हर मुकदमा मजसूअः अदालत मतालिवे जात खफीफामें सम्मन वास्ते तस्फिया कतई मुकदमे के जारी किया जायगा—

६—मुद्दाअलेहकी हाजिरीके लिये तारीख मुकर्रर करने के वक़्त अदालत मुकदमे के जारी करेगी।  
 लत मरालिव मुन्दर्जेजेलका ख्याल रखेगी, याने किल्लत या कसरतकार मजसूआ अदालतकी और मुद्दाअलेहकी सक्नत का मुकाम और मुद्दत जो सम्मन की तामील के लिये जरूर है और वह तारीख ऐसी मुकर्रर की जायगी कि मुद्दाअलेह को तारीख मुकर्रर तक हाजिर होकर मुकदमे की जवाबदारी करने की मुद्दलत काफी मिले—

७—सम्मन में जिनकी रु से हाजिर होने और जवाबदारी करने का दफा ७०

सम्मनमें हुक्म होगा हुक्म हो मुद्दाअलेह के नाम यह हुक्म मुन्दर्ज होगा कि मुद्दाअलेह जुम्ला कि तमाम दस्तावेजात जो उसके कब्जा या इस्तिथार में हों जिनपर मुद्दाअलेह को अपनी जवाबदारी की ताईद के लिये इस्तदलाल करना मंजूर हो पेश करे—

८—जब सम्मन वास्ते इनफिसाल कतई मुकदमे के हो उसमें मुद्दाअलेह को हिदायत की जायगी कि जो तारीख उसकी हाजिरी के लिये मुकर्रर हुई हो उसपर जुम्ला गवाह कि जिनपर अपनी जवाबदारी की ताईद में उस को इस्तदलाल करना मंजूर हो पेश करे—

जब सम्मन वास्ते इनफिसाल कतई के हो उसमें मुद्दाअलेह को हिदायत होगी कि अपने गवाह पेश करे—

## तामील सम्मन

९—( १ ) अगर मुद्दाअलेह उस अदालत के इलाके के अन्दर रहता हवातगी या इस्ताल सम्मन वास्ते तामीलके हो जहां नालिश रुजूअ हुई हो या वहां उसको कोई एजन्ट रहता हो जो सम्मन लेने का मंजाज हो तो

अगर अदालत किसी दूसरी तरह का हुक्म न दे सम्मन अहलकार मजाजको इस गरजसे हवाला किया जायगा या उसके नाम भेजा जायगा कि वह खुद या मारफत अपने किसी मातहतके उसकी तामील करे—

( २ ) अहलकार मजकूर किसी अदालत का अहलकार हो सकता है जो वह न हो कि जहां नालिश रुजूअ न हुई हो और अगर वह ऐसा अहलकार हो तो सम्मन वसवील डाक या और

तरह जिसकी अदालत हिदायत करै उसके पास भेजा जासक्ता है—

दफा ७३

१०—तामील उस तरह होगी कि उसके एक परत जो दस्तखती तरीका तामील जज या दस्तखती उस ओहदेदार के जिसको जज उस शरज से मुक़रर करै और मर्जी बमोहर अदालत हो दवाले या पेश की जायगी—

दफा ७४

११—बहुज इसके कि दूसरी तरह पर हुक्म हो जब एक से ज्यादा तामील चन्द मुद्दअ-मुद्दाअलेहुद् हों तो लाजिम है कि हर एक मुद्दाअलेह लेहुद्पर पर सम्मन की तामील कीजाय—

दफा ७५

१२—जब मुयकिन हो सम्मन की तामील मुद्दाअलेह की जातपर तावइमकान तामील कीजायगी इला उस हालमें कि उसका कोई कारिन्दा मुद्दाअलेह की जातपर सम्मन लेने का मजाज हो कि उस वक़ कारिन्दः को सम्मन देना काफी होगा—

दफा ७६

१३—( १ ) अगर नालिश किसी कारोवर या कामकी दावत ऐसे तामील कारिन्दापर कि शख्स के नामहो जो अदालत जारी कुनिन्दः सम्मन जिसके जजिसे से मुद्दा-के इलाके की हुदूद अर्जी के अन्दर सकूनत न रखता अलेह बमोहर कारिन्दा हो तो तामील सम्मन की किसी सरदराहकार या कारिन्दापर जो दरवक्त तामील सम्मन वजात खुद उस कारोवर या काम को उस शख्स की तरफ से हुदूद मजसूर के अन्दर करताहो तामील काफी मुतसव्विर होगी—

( २ ) इस क़ायदे की गज के लिये मास्टर किसी जहाज वा जहाज के मालिक या किगया करनेवाले का कारिन्दः समझा जायगा—

दफा ७७

१४—उस नालिश में जोकि वास्ते दादरसी निरखन जायदाद गैर मन्दूलाया मुद्दाविजा लुक्सान जायदाद गैर मन्दूला के हो अगर सम्मन की तामील मुद्दाअलेह की जात पर न होयके और मुद्दाअलेह का कोई ऐसा मजन्द न हो जिस को सम्मन लेनेका इस्तिथार हो तो जायज

है कि सम्मनकी तामील मुद्दाअलेह के किसी एजन्ट मोहतमिम जायदाद मजकूर पर कीजाये—

१५—अगर किसी मुकदमे में मुद्दाअलेह दस्तियाब न हो और कोई दफा ७५  
 तामील मुद्दाअलेह के एजन्ट भी उसका न हो जो उसकी तरफ से सम्मन  
 अहल खानदान अज क्रिस्म जकूर पर लेनेका मजाजहो तो जायज है कि तामील सम्मन  
 मजकूर की मुद्दाअलेह के किसी अहलखानदान वा-  
 लिंग अजक्रिस्म जकूर पर जो उसके साथ रहताहो कीजाय—

तशरीह—मुलाजिमहस्ब माने इस कायदे के अहलखानदान में दाखिल नहीं है—

१६—जब अहलकार तामील कुनिन्दः सम्मन की नकल मुद्दाअलेह दफा ७६  
 जिस शख्सपर तामील को असाततन् या मुद्दाअलेह के लिये उसके किसी  
 कीजाय उसको तामी- एजन्ट और शख्स को हवाले या उसके सामने पेश  
 लकेइकवाल पर दस्त- करै तो तामीलकुनिन्दः सम्मन को जरूर है कि  
 खत करनाहोंगे उस शख्स से जिसको नकल सम्मन हवाले हो या  
 जिसके खबल नकल मजकूर पेश कीजाये सम्मन की तामील के अकवाल  
 पर असिल सम्मन की पुस्तपर दस्तखत कराले—

१७—अगर मुद्दाअलेह या उसका एजन्ट या दीगर शख्स मजकूरे दफा ८०  
 जान्ता अगर मुद्दाअलेह वाला तामीलके अकवालपर दस्तखत करने से इन्कार  
 सम्मन लेने से इन्कार करै या अगर अहलकार तामीलकुनिन्दः को वाद को-  
 करै या दस्तियाब न हो शिश् बाजबी व माकूलके मुद्दाअलेह न मिलसकै और  
 कोई एजन्ट उसका न हो जो उसकी तरफ से सम्मन लेनेका मजाजहो  
 और कोई दूसरा ऐसा शख्स भी न हो जिसपर सम्मनकी तामील होसके  
 तो अहलकार तामीलकुनिन्दः सम्मनकी एक नकल उस मकानके बेरुनी  
 दरवाजा या किसी और मंजर आमपर चस्पां करदेगा जिसमें मुद्दाअलेह  
 अमूमन् रहताहो या कारवार करताहो या हुसूल मुन्फातके लिये वजात  
 खास कोई काम करताहो और वाद अजां असिल सम्मन जारी करने  
 वाली अदालत को वापिस करदेगा और उसकी पुस्तपर या किसी परचा  
 मुन्सलिका पर यह लिखदेगा कि इस तौरपर नकल चस्पां कीगई और  
 चस्पां करने के हालात और नाम और पता उस शख्सका ( अगर कोई  
 शख्सहो ) कि जिसके जरिये से मकान मजकूरकी शिनाखत हुईहो और

जिसके सामने नक़ल चर्खा की गई हो उस तहरीर में दर्ज करैगा—

दफा ८१

१८—मुस्लाम मूरतों में जब सम्मनकी तामील वगूजिव कायदे १६ के सम्मनकी पुस्तपर वक्त की जाय अहलकार तामील कुनिन्दः को लाजिम है कि और तरीका तामील असिल सम्मनकी पुस्तपर या किसी परचे मुस्लकालिखना चाहिये पर यह हाल खुद लिखै या किसी और से लिखवाये कि सम्मनकी तामील किस वक्त और किस तौरपर की गई और नीज नाम और पता उस शख्सका दर्ज करना चाहिये ( अगर कोई ऐसा शख्स हो ) जिसने उस शख्सकी शिनाख्त की हो जिसपर सम्मनकी तामील हुई और जिसने यह भी देखा हो कि सम्मन उसके हवाले या पेश किया गया—

दफा ८२

१९—जब कोई सम्मन वगूजिव कायदे १७ के वापिस आये तो अदालतको अगर वापसी मुतअल्लिकः कायदा मजकूर के तसदीक अहलकार तामील कुनिन्दः के हलफनामों से न हुई हो—लाजिम होगा—और अगर वापसी की तसदीक हस्व मजकूर हुई हो तो अदालतको इस्तिथार होगा कि अहलकार तामील कुनिन्दः को हलफ देकर हाल कार्रवाईका जो उसने की हो दरयाफ्त करै या दूसरी अदालतकी मारफत दरयाफ्त कराये और जायज है कि उस वाकमें तहकीकात मज्हीद जो उसकी दानिस्तमें मुनासिब हो अमल में लाये और ख्वाय यह करार देगी कि सम्मनकी तामील हस्व ज़ाव्ता होगई या जिस तौरपर उसकी दानिस्तमें हो उसके तामील करनेका हुक्म देगी—

दफा ८३ कि—  
कगद हो

२०—( १ ) जब हरव इतमीनान अदालत यकीन करने की वजह हो तामील वक्त व तरीका कि मुद्दाअलेह इस गरज से कि सम्मनकी तामील उस मामली — पर न होने पाये खोस रहता है या किसी और वजहमें सम्मन की तामील मामुली तौर से नहीं होसकती है तो अदालत यह हुक्म सादिर करेगी कि वजरिये चर्खा करने एक पर्व सम्मन के अदालत की किसी नजरगाह आम पर और नीज मुद्दाअलेह के उस मकान के मंजूर जगहपर ( अगर कोई ऐसा मकान हो ) जिसमें आसिर मर्तवा उसका तख्त रखना या कारवार करना या वसूल मुनफात के लिये बज़ात नाम काम करना मान्य हो या किसी और तौर से जो अदालत को मुजानिव मान्य हो सम्मनकी तामील की जाय—

( २ ) सम्मनकी तामील उस तरीकेपर जो बजाय तरीका मामूली दफा ८३ तामीलमजकूरकाचमर के अदालत के हुदमसे मुस्तअमल किया जाय उसी तरह मजरिसर होगी कि गोया सम्मन की तामील मुद्दाअलेहपर असा- लतन् कीगईधी—

( ३ ) जब सम्मन की तामील किसी और तरीकपर बजाय तरीके दफा ८४ तामील मजकूर में हा- मामूली के वगूजिव हुदम अदालत के कीजाय तो अ- जिनीका वक्त मुकर्रर दालत मुद्दाअलेह की हालिरी के लिये उस कदर होना चाहिये मियाद मुकर्रर करैगी जो वनजर हालात उस सूत के मुतासिब मालूम हो—

२१—जब सम्मन किसी अदालतकी तरफसे जारी हो तो जायज है दफा ८५ तामील सम्मन जब मु- कि अदालत जारीकुनिन्दः उसको बजरिये डाक या द्दाअलेह किसी दूसरी अपने किसी अहलकार के हाथ किसी अदालत में अदालतके इलाके में- ( सिवाय हाईकोर्ट के ) जिसके इलाके में मुद्दाअलेह सकूनत रखताहो रहताहो इरसाल करै ख्वाह यह अदालत उस सूवे में वाकैहो जहां अदालत जारीकुनिन्दःहो या किसी दूसरे सूवे में—

२२—जब कोई सम्मन ऐसी अदालतसे सादिर हुवाहो जो बलाद दफा ८६ तामील बलाद प्रेमी- कलकत्ता और मदरास और बम्बई और रंगूनके हुदूद उसी और रंगून में ऐसे के बाहर मुकर्रर हो और उसकी तामील हुदूद मजकूर सम्मनों की जिनको के अन्दर करानी मंजूर हो तो सम्मन मजकूर उस बाहरकी अदालत जारी करै अदालत मतालवाजात खफीफा में मुसिल कियाजायगा जिसके इलाके में सम्मन मजकूरकी तामील कराना मंजूरहो—

२३—जिस अदालत में सम्मन वगूजिव कायदे २१ या कायदे २२ दफा ८५ फर्ज उस अदालतका भेजा जाय वह उसके वसूल होनेपर उसी तरह करिवाई जिस में सम्मन भेजा करैगी गोया खुद उसने सम्मन जारी कियाथा वाद जाय अजां उस सम्मन को उस करिवाई के साथ जो उसके मुतअल्लिक कीगई हो- ( अगर कुछ करिवाई हुई हो ) अदालत जारी कुनिन्दः के पास मुसिल करैगी—

२४—अगर मुद्दाअलेह मुकैद जेलखानाहो तो लाजिमहै कि सम्मन दफा ८७ नं०



तामील मुद्दाअलेह पर  
जेल में

वजरिये डाक या और किसी तरीके से अप्रसर इन-  
चारज कैदखाना के पास भेजाजाय कि मुद्दाअलेह पर  
उसकी तामील कराये—

दफा ८६

२५—अगर मुद्दाअलेह ब्रिटिशइण्डियाके बाहर रहताहो और ब्रिटिश-  
तामील जब मुद्दाअलेह इण्डिया में ऐसा कोई एजन्ट न रखताहो जो सम्मन  
ब्रिटिशइण्डियाके बाहर लेनेका मजाज हो तो सम्मन लिफाफे में बंद होकर  
रहताहो और ब्रिटिश-  
इण्डिया में कोई एजन्ट  
न रखताहो मुद्दाअलेह के पास उसके घर के पते से वजरिये डाक  
मुसिल किया जायगा अगर उसके मकान से उस मु-  
काम तक जहां अदालत बाकै है डाक जारीहो—

दफा ९०

२६—जब—  
तामील रियासतों में  
मारफत पुलिटिकल ए-  
जन्ट या अदालतके

(अलिफ) व तामील इस्तिथारात खारजिया जो आला हजरत मलि-  
कमोअज़म या नवाब गवर्नरजनरल बहादुर इजलास  
कौंसल को हासिल हैं कोई पुलिटिकल एजन्ट मुकर्रर हुवा  
हो या कोई अदालत मुकर्रर हुई या कायम रखी गईहो  
यये इस्तिथार तामील ऐसे सम्मन के जिसको किसी  
अदालत ने हस्ब मजमूअः हाजा किसी रियासत गैर में  
जहां मुद्दाअलेह रहता हो जंज़र कियाहो—

( ये ) या जब नवाब गवर्नर जनरल बहादुर इजलास कौंसल ने  
गज़ट आफइण्डिया में यह एलान कर दियाहो कि सम्मन  
मजकूर की तामील ऐसी अदालत बाकै रियासत मजकूर  
के जरिये से कीजाय जो तामील इस्तिथारात खारजिया  
मजकूरकी मुकर्रर न हुईहो और ने कायम रखी गईहो—

तो जायज है कि सम्मन मुद्दाअलेहपर तामील पानेकी गरज से पुलि-  
टिकल एजन्ट के पास या अदालत में वजरिये डाक या और तरहपर  
भेजाजाय और अगर पुलिटिकल एजन्ट या अदालत सम्मन को साथ  
इवान्त जोहरी दस्तखत पुलिटिकल एजन्ट मजकूर या जज या टीगर  
अदालतके वापिस करे कि सम्मन की तामील हम्बतरीका हो

कबलअर्जी कवाअद हाजा में दर्ज है मुद्दाअलेह पर करदी गई तो वह इवारत जोहरी सम्मन की तामीलका सबूत समझी जायगी—

२७—अगर मुद्दाअलेह अफसर सरकारीहो ( मगर आला हजरत दफा ४२२ तामील सिविलअफसर मलिकमोअज्मकी अफवाज वरीं या वहरी या इण्डियन सरकारी या मुलाजिम मरियन सरविससे तअल्लुक न रखता हो ) या किसी रेलवे कम्पनी या हुकाम मौका का मुलाजिमहो तो ज़िम हुकाम मौकेपर अदालत सम्मन को मुद्दाअलेह पर तामील होने के लिये मये एक नक़ल के जिसको मुद्दाअलेह रखलेगा उस दफ़्तर के सरदफ़्तर के पास इरसाल करैगी जिसमें कि मुद्दाअलेह मुलाजिमहो— अगर इस तरीके से तामील सम्मन का बसहूलत होना पायाजाय—

२८—जब कि मुद्दाअलेह फौजी सिपाही है तो अदालत सम्मन की तामील सिपाहीपर दफा ४६८ तामील के लिये मये एक नक़ल के जिसको मुद्दाअलेह रखलेगा उसके कमान अफसर के पास इरसाल करैगी—

२९— ( १ ) जब सम्मन हस्ब कायदे २४ या कायदे २७ या कायदे दफा ४६८ फर्दे उस शास्त्र का जिसके हवाले सम्मन तामीलके लिये किया जाय २८ तामील के लिये किसी शख्स के हवाले किया जाय या उसके पास भेजा जाय तो उसको लाजिम होगा कि हत्तुल इमकान इसकी तामील कराये और बाद अपने दस्तखतके और मुद्दाअलेह से रसीद लिखवाके उसको वापिस करै और उसके दस्तखत तामील का सबूत समझे जायेंगे—

( २ ) अगर किसी वजह से तामील मुमकिन न हो तो सम्मन अदालतमें मय पूरी कैफियत वजह अदम तामील और उन तदावीर के जो तामील कराने के लिये कीगई वापिस भेजाजायगा और यह कैफियत सम्मन की अदम तामील का सबूत मुतसब्बिर होगी—

३०— ( १ ) अदालत को इख्तियार है कि बावजूद किसी इवारत दफा ६१ ख़तबजाय सम्मन मुन्दर्जे मासवक के सम्मन के यवज़ एक खत जिस पर जज के दस्तखत या किसी और ओहदेदारके दस्तखत सिब्तहों जिसको जज उस काम के लिये मुक़र्रर करै मुद्दाअलेह के नाम भेजै जब कि उसका ख़तवा अदालत के दानिस्त में ऐसी मराआत के लायक हो—

( २ ) उस खत में जो कायदे तहती ( १ ) की रू से बजाय सम्मन के भेजा जाय वह तमाम मरातिव दर्ज होंगे जो सम्मन में दर्ज होना चाहिये और बहिफज अहकाम मुन्दर्जे कायदे तहती ( ३ ) वह वहमावजूह एक सम्मन समझा जायगा—

दफा ६२

( ३ ) जो खत बजाय सम्मन भेजा जाय वह बजरिये डाक या मारफत कासिद खास मुन्तरिब कियेहुये अदालत के या और किसी तरीके से जो अदालत के नजदीक मुनासिब हों मुद्दा अलेह के पास भेजा जायगा और जब कि मुद्दा अलेह ऐसा कोई एजन्ट रखता हो जो सम्मन लेनेका मज्ज हो तो जायज है कि खत मजकर एजन्ट के हवाले किया जाय या बजरिये डाक उसके पास भेजा जाय—

## आर्डर ६

### प्लीडिंग असूमन

जदीद

१—प्लीडिंग से अर्जिदावा या वयान तहरीरी मुराद है—

प्लीडिंग

२—हर प्लीडिंग में सिर्फ एक मुख्यतः वयान उन वाक्यात नफ्स लीडिंग ने वाक्यात नफ्स मुकदमा जादिर होना चाहिये और उनमें मजबूत दाखिल नहीं है मुकदमः का दर्ज होना चाहिये जिनपर प्लीडिंग पेश करनेवाला फरीक अपने दावा या जवाबदारी में ( जैसी सूरत हो ) इस्तदलाल करना चाहता हो—लेकिन इसमें शहादत दाखिल नहीं है जो उनके सबूत में पेश की जाय और हस्व जल्दत प्लीडिंग की तकसीम दफआत पर होगी जिनपर नम्बर मिल्सिलेवार पढ़ना चाहिये—और तारीख और रकूम और नम्बर हिन्दुओं में लिखना चाहिये—

३—अगर मुतअद्विक हों तो यह नफ्स जो जमीमा ( अलिफ ) में दर्ज है और अगर मुतअद्विक न हो तो दूसरे नफसे करीब करीब उसी तरह के प्लीडिंग के बान्ने इस्तेमाल होना चाहिये—

४—मुक्ता मुम्ता में जिनमें प्लीडिंग पेश करनेवाला फरीक किसी

दीगर जन्मी वॉ भी रिफलाफ वयानी या फरेव या रियानत या कसूर विल्अ-  
दर्ज कीजामर्ता है । मद या दाव नाजायज पर इस्तदलाल करै और जुम्ला  
दीगर सूरतों में जिनपे सिदाय सरातिव मुन्दजै फार्म मजकूर के और  
घातोंका भी लिखना जरूरी हो यह दूसरे सरातिव भी ( मये तारीख और  
रकम के अगर जरूरत हो ) प्लीडिंग में दर्ज होना चाहिये—

५-जायज है कि वॉल्लिज शरायत मुनासिब निस्वत खर्चा और निहज  
वयान या तफसीलात दीगर के जुम्ला सूरतों में इस घातका हुक्म दियाजाय  
मजीद उम्दा तौर से कि नौवय्यत दावा या जवाबदिही मजीद और उम्दा  
तौरसे दयान कीजाय या कोई अगर मुन्दजै प्लीडिंग ज़्यादा तफसील  
के साथ दयान कियाजाय—

६-लाजिम होगा वह शर्त मुकदम जिसके ईफा और वकूअ का वहम  
शर्त मुकदम तलबहोना मकसूद हो मुद्ई या मुद्आअलेह जैसी सूरत  
हो-अपनी प्लीडिंग में साफ साफ सराहत के साथ दर्ज करै-और बकैद उस  
के लाजिम होगा कि जुम्ला शरायत मुकदम के ईफा और वकूअका एक  
वयान जो वमुकदमा मुद्ई या मुद्आअलेह जरूरी हो उसकी प्लीडिंग से  
समझाजाय—

७-सिवाय वतौर तरमीमके किसी प्लीडिंग में कोई नई बिनायदावा  
तर्जवीजे करना मुन्दजै नहीं कीजायगी और न उसमें कोई अगर हुत-  
अल्लिक वाकिया जो फरीक पेश कुनिन्द प्लीडिंगकी साविक प्लीडिंगके  
खिलाफ हो वयान कियाजायगा—

८-जब किसी प्लीडिंग में किसी माहिदेका वयान हो तो महज इन्कार  
इन्कार निस्वत मआहिदा वतअल्लिक माहिदा मजकूर से जो भिन्जानिव फरीक  
सानीहो सिर्फ वह इन्कार समझा जायगा जो फिलवाकै माहिदे सरीह  
इन्कार समझा जायगा मजहरा या उन अमूर वाकियातीसे मुतअल्लिक है जिनसे  
माहिदा मजकूर जादिर होताहो और न कि माहिदा मजकूरके जो अज़वा  
तुक्कस कानूनी से—

९-जब मजमून किसी दस्तावेजका अगर नफ्स मुकदमाहो तो यह  
असर दस्तावेज का व-वाफा होगा कि किसी प्लीडिंग में जहाँतक मुमकिनहो  
यान करना चाहिये इस्तिासारके साथ दगैर दयान करने कुल या किसी  
जुजो मजमून मजकूरके सिर्फ उस मजमूनका असर वयान कियाजाय इत्ता

उस सूरत में कि जब दस्तावेज़ या उसके किसी जुज़ोके ठीक अलफ़ाज़ अमूर नफ़स मुक़द्माहों—

१०—जब किसी शख्सकी अदावत या फ़रेव आमेज़ इरादा या इल्म अदावत इल्म वगैर. | या उसके दिलकी और हालत वयान करना ज़रूरीहो तो सिर्फ़ अदावत या फ़रेव आमेज़ इरादा वगैरः को बतौर एक अमर वाकिआके वयान करदेना काफी होगा वगैर वयान करने उन हालातके जिनसे वह इस्तनबात होसक्ताहो—

११—जब यह जाहिर करना ज़रूरीहो कि किसी अमर वाकिआ या नोटिस | मामिला या चीज़की निस्वत किसी शख्सको नोटिस है तो उस नोटिसको बतौर एक अमर वाकिआके वयान करना काफी होगा इल्मा उस हालमें कि जब उस नोटिसका फार्म या उसकी ठीक शरायत या वह हालात जिनसे वह नोटिस समझा जासक्ताहो अमूर नफ़स मुक़द्माहों—

१२—जब कोई माहिदा या तअल्लुक मावैन किन्हीं अशखासका मु-  
माहिदा या तअल्लुकका | स्लसल खतूत या गुफ़तगू या वनिहज दीगर मुतादिद  
मफ़हम होना | हालात से समझना मकसूदहो तो माहिदा या तअल्लुक  
मजकूरको बतौर एक अमर वाकिआके वयान करना और अमूमन् ऐमे  
खतूत या गुफ़तगू या हालातको मजकूर करना काफी होगा वगैर वयान  
गुफ़सिलके—और अगर ऐसी सूरत में शख्स पेश कुनिन्दः प्लीडिंग  
मजकूरको वजाय एक माहिदा या तअल्लुकके ज्यादा माहिदाद या तअ-  
ल्लुकात पर इस्तदलाल करना मंज़ूरहो जो हालात मजकूरसे समझे  
जायें तो उसको इख्तियार होगा कि यवज़न् उन्हें वयान करै—

१३—जहर नहीं कि कोई फरीक किसी प्लीडिंगमें वह अमर वाकिआ  
कानून खतूत का | जाहिरकरै जिसका क़यास अजरूय क़ानून वहक़ उसके  
हो या जिसका बार सबूत फरीक खानी पर हो इल्मा उस हाल में कि जब  
उनसे अज्वलन् सराहत के साथ इन्कार किया गया हो ( मसलन् मा-  
विजा वास्त विल पाण एन्स चेज के जब कि मुद्दै सिर्फ़ वर बिना विल  
आफ़ एवम चेज़ मजकूर के नालिश करै और न कि वास्ते माविजा ब-  
तौर दिनाय दाया असली के )

१४—लाज़िम होगा कि हर प्लीडिंग पर फरीक और उमका बकील

सीडिंगपर दस्तखत सिद्ध ( अगर कोई बकील हो ) दस्तखत सिद्ध करे वशर्त  
 होंगे कि जब फरीक पेशकुनिन्दः प्लीडिंग वजह गैर हा-  
 जिरी या और किसी वजह माकूल के प्लीडिंगपर दस्तखत न करे सके तो  
 जायज है कि वह शख्स उसपर दस्तखत करे जो उसकी तरफ से प्ली-  
 डिंग मजकूर पर दस्तखत करने या नालिश या जवाबदिही करने के  
 वास्ते मुकतारजी इस्तिनयार किया गया हो-

१५-( १ ) वजुज उसके कि कानून नाफिजुल वक्त में वनिहज दीगर दफा ५१  
 तसदीक सीडिंग की हुक्म हो हर प्लीडिंग के जैल में फरीक या मिन्जुम्ला  
 फरीकैन प्लीडिंग के एक फरीक या कोई और शख्स जिसका मुकदमे  
 के बाकियात से बाकिफ होना हस्य इतमीनान अदालत साबित हुआ तो  
 उसकी तसदीक करेगा-

( २ ) तसदीककुनिन्दः नम्बर दी हुई दफाआत प्लीडिंग का इदाला दफा ५२  
 देकर इस अमर को सराहत के साथ बयान करेगा कि किस  
 बात की तसदीक अपने इल्म से करता है और किस बात की  
 तसदीक वर विनाय इत्तिला के करता है जो उसको मिली है  
 और जिसका सच होना वह यक़ीन करता है-

( ३ ) इवारात तसदीक पर तसदीक करनेवाले के दस्तखत सिद्ध  
 होंगे और दस्तखत की तारीख और मुकाम लिखा जायगा-  
 १६-अदालत कार्रवाई की किसी नौबत पर हुक्म देसक्ती है कि  
 इज्जराज सीडिंग फलों अमर मुन्दजे प्लीडिंग जो गैर जरूरी या इत-  
 कआमेज हो या जिससे मुन्सिकाना तजवीज मुकदमे में जरर या खलल  
 या तोखीर पड़े खारिज या तर्मीय किया जाये-

१७-अदालत कार्रवाई की किसी नौबत पर इजाजत देसक्ती है कि मुकदिला को  
 तर्मीय सीडिंग कोई फरीक मुनासिब तौर और शरायत पर अपनी दफा ५३  
 प्लीडिंग को बदले या उसकी तरमीय करे और इस किरम की सब  
 तरमीमात अमल में आयेंगी जो बिगर्ज तस्फिया असिल अमूर मुतना-  
 जिआ फरीकैन के जरूरी हों-

१८-अगर कोई फरीक जिसने हुक्म इजाजत तरमीय हासिल किया मुकदिला को  
 बाद हुक्म के तरमीय हो अन्दर मुदत मुअय्यना हुक्म मजकूर या अगर कोई दफा ५३  
 न करना मुदत उस हुक्म में मुअय्यन न हो तो तारीख इसदर  
 १३

हुकम से चौदह रोज के अन्दर मुताविक हुकम मजकूर तरमीम न करै तो उसको बाद इनकजाय मुदत मुअय्यना मजकूर या मुदत चौदह रोज मजकूर के याने जैसा मौक्का हो तरमीम करने की इजाजत न होगी इल्ला उस हाल में कि जब मुदत मजकूर को अदालत बढ़ादे—

## आर्डर ७

### अर्जीदावा

दफा ५०

१- अर्जीदावे में मरातिव मुन्फसिले जैल मुन्दर्ज होंगे—

मरातिव जो अर्जीदावे  
में मुन्दर्जहोंगे

- (अलिफ) नाम उस अदालत का जिसमें नालिश रजूम कीजाय—
- ( वे ) नाम और वलदियत और कौम और पेशा वगैरा और जाय सकूनत मुद्ई की—
- ( जीम ) नाम और वलदियत और कौम और पेशा और जाय सकूनत मुद्आम्लेह की जहांतक की दरयाफ्त होसके—
- ( दाल ) जब किं मुद्ई या मुद्आम्लेह नावालिग वा फातिरुल् अकल हो तो एक वयान उस मजमूनका—
- ( हे ) वह वाकिआत जो मुक्तदमःकी विनाय दावा हों और यह कि विनाय दावा कब पैदा हुई—
- ( वाव ) वह वाकिआत जिनसे मालूमहो कि अदालतको इस्तिथार समाप्त हासिलहै—
- ( जे ) वह दादरसी जो मुद्ई चाहताहो—
- ( हे ) अगर मुद्ई ने दावा में कुछ गुजरा दियाहो या दावाके किसी जुजो को तर्क कियाहो तो गुजरा दिये हुये या तर्क किये हुये जुजोकी तादाद—और
- ( तो ) एक वयान मालियत शय मुतदाविया नालिशका बगरज इस्तिथार समाप्त दरमूम अदालत के जहांतक कि बलि-राज मुक्तदमा मुमकिनहो—

( २ ) अगर मुद्दै जरनफ्तद दिलापाने का दावीदार हो तो अर्जीदावे दफा ५० नालिशानकदी में / में जरदावे की सही तादाद लिखी जायगी—

मगर जब कि मुद्दै की नालिश जर वासिलातकी हो या इस तरहकी हो कि जर याफ्तनी मुद्दै उसके और मुदाअलेह के दरमियान हिसा-वात गैर तैशुदः के लिये जानेपर मालूम होगा तो अर्जीदावेके अंदर जर मुतदावियाकी तखसीनी तादाद लिखनी होगी—

( ३ ) जब कि शय मुदा वहाय नालिश जायदाद गैर मन्कूला हो तो दफा ५० जन कि शय मुदा व- अर्जीदावे में जायदाद का पता व निशान दर्ज होगा कि फिकरह ३ हाय नालिश जायदाद जिससे उसकी वखूधी शिनाख्त होसके अगर जायदाद गैर मन्कूलाहो -- मजकूरकी शिनाख्त चौहद्दी या नम्बर हाय मुन्दर्जे का-गजात वन्दोवस्त या नक्शशा पैमायश से होसकी हो तो अर्जीदावे में चौहद्दी व नम्बर हाय मजकूर सराहत के साथ मुन्दर्ज होंगे—

( ४ ) जब कि मुद्दै वहाँसियत कायम मुकामी के नालिश करै तो दफा ५० जब कि मुद्दै वहाँसियत अर्जीदावे में न सिर्फ यह जाहिर किया जायगा कि फिकरह ४ कायम मुकामी के ना- मुद्दै शय मुदावहा में एक दाकई गरज मौजूदः रखताहै लिश करे वलिके यह भी लिखा जायगा कि उसके दिलापानेकी नालिश कर सकने के लिये जो जो कार्रवाई ( अगर कोई कार्रवाई हो ) जरूरीथी उसको मुद्दै अमल में लाचुकाहै—

५— अर्जीदावे में यह जाहिर करना चाहिये कि मुदाअलेह शय मुदा दफा ५० मुदाअलेहकी गरज व वहाँमें गरज रखताहै या गरज रखनेका दावा करताहै फिकरह ५ जिम्मेदारी जाहिर करना और जिम्मेदार इस बातका है कि मुद्दै के मतालवः चाहिये की जवाबदिही उससे कराईजाय—

६—अगर नालिश उस मुदतके मुन्कजी होजाने के बाद खजूअ की दफा ५० वजह इस्तस्ना कानून जाय जो कानून हद समाअत में मुक्तरर है तो अर्जी- फिकरह ६ हदसमाअतसे दावे में वह वजह जाहिर की जायेगी जिससे मुद्दै कानून मजकूर से इस्तस्नाका दावा करताहै—

७— हर अर्जीदावे में वह दादरसी सराहत के साथ लिखी जायेगी दादरसी की सराहत सिर्फ जिसका मुद्दै दावा करताहै या वजाय उसके करना चाहिये किसी और दादरसी का—और उस आम या दीगर दादरसी का दावा करना जरूर न होगा जो हमेशः उसी हदतक अता



होसक्ती है कि गोया उसका दावा किया गया है जैसा अदालत करीन इन्साफ समझे और वही कायदा मुद्दाअलेहकी दादरसी से मुतअल्लिक होगा जिसका वह बयान तहरीरी में दावेदारहो—

८— जब मुद्ई दादरसी निस्वत चंद मुख्तलिफ दंआवी या विनाहाय दावाका मुस्तदर्हो जो मुख्तलिफ व अलाहिदा दादरसी जो अलाहिदा दावाका मुस्तदर्हो जो मुख्तलिफ व अलाहिदा वजूह पर मुवनी हों तो जहांतक मुमकिन होवे अलाहिदा अतहिदा और साफ सफ बयान कीजायगी—

९— ( १ ) मुद्ई को लाजिम है कि एक फेरिस्त उद्ये तमाम दस्तावेजात कारवांवाद मजगी की ( अगर कोई हों ) जो मुद्ई अर्जीदावे के साथ अर्जीदावे के साथ मुख्तलिफ करते और अगर अर्जीदाना मंजूर हो तो मुद्दाअलेहूम हों इला उस सूरत में कि अदालत अर्जीदावे की तवालत या मुद्दाअलेहूम की तादाद के लिहाज से या किसी और वजह काफी से दयानान नदरयत दावा या दादरसी मुतदाविया के जिसेकी नालिश कीजाय दाखिल करै पस ऐसी सूरत में मुद्ई ऐसे बयानात दाखिल करैगा—

( २ ) अगर मुद्ई वहैसियत कायम मुकामी नालिश करै या मुद्दाअलेह पर या मुद्दाअलेहूम में से किसीपर वहैसियत कायम मुकामी नालिश कीजाय तो बयानान मजकूर से बाजेह होना चाहिये कि मुद्ई किम हैसियत से नालिश करता है या मुद्दाअलेह पर उसकी किस हैसियत से नालिश हुई है—

( ३ ) मुद्ई को इस्तिथार है कि वइजाजन अदालत बयानात मजकूर वो हम गरज से दुरुस्त करै कि वह अर्जीदावे के मजकूर के मुताबिक होजाये—

( ४ ) अदालत का अला अलकार अहकाम के तामील करने वाला उन फेरिस्त और नकलों या दयानान मुतजिकरह मकर पर उम सूरत में दस्तनयत करैगा जब वह उनका मुकाम नालिश करने के दक उनको मही पाये—

( ५ ) अर्जीदावा मुकामी की किमी नौबतपर उम अदालत में

अर्जीदावे की वापिसी दाखिल होने के लिये वापिस किया जायेगा जिस में  
इ मुकद्दमा दायर होना चाहिये था—

( २ ) अर्जीदावा वापिस करने के वक्त जज अर्जीदावा की पुस्तपर  
रखाई अर्जीदावा की पिसी पर उसकी अदखाल की तारीख और नीज तारीख वापिसी  
की और नाम शख्त पेश कुनिन्दः का मुख्तसिर हाल  
स अमर का कि किस वजह से वापिस किया गया लिख देगा—

११—नीचे लिखी हुई सूरतों में अर्जीदावा नामंजूर किया जायेगा—

दफा ५३  
व ५४

अर्जीदावा की ना-  
जरी

( अन्तिम ) अगर अर्जीदावे से कोई विनाय दावा जाहिर न होती हो—

( वे ) अगर दादरसी मुतदाविया का तअय्युन मालियत कम किया  
गया हो और मुद्दई उस मीयाद के अन्दर जो अदालत  
मुक़रर करेगी अदालत के हुक्म के बमोजिब कमी मालि-  
यतकी इसलाह न करे—

( जीम ) अगर दादरसी मुतदाविया का तअय्युन वाजिबी किया गया  
हो लेकिन अर्जीदावा कम कीमत के इस्टाम पर तहरीर  
हुआ हो और जब मुद्दई को अदालत हुक्म दे कि वह अन्दर  
मीयाद मुअय्यनः अदालत के इस्टाम मतलूबा को पूरा  
करदे और वह उसमें कासिर रहे—

( दाल ) अगर अर्जीदावे की वयान से नालिश कानून की रू से  
ममनूअल समाअत हो—

१२—जब अर्जीदावा नामंजूर किया जाय तो जज को लाजिम है कि दफा ५५  
रखाई अर्जीदावे की मजरीपर हुक्म नामंजूरी का मये वजह उस हुक्म के तहरीर करे—

१३—नामंजूर होना अर्जीदावे का बरबिना किसी वजह मिनजुम्ला दफा ५६  
वकि नामजरी अर्जी- वजह मरकूमे वाला बतौर खुद मानै इसका न होगा  
वेसे नई अर्जीदावे कि मुद्दई उसी विनाय दावा की यावत नया अर्जीदावा  
उजरानना ममदू- गुजराने—  
न हो

होसक्ती है कि गोया उसका दावा किया गया है जैसा अदालत करीन  
इन्साफ समझे और वही कायदा मुद्दाअलेहकी दादरसी से मुतअल्लिक  
होगा जिसका वह वयान तहरीरी में दावेदार हो—

८— जब मुद्ई दादरसी निस्वत चंद मुस्तलिफ दआवी या विनाहोय  
दादरसी जो अलाहिदा दावाका मुस्तदर्हो जो मुस्तलिफ व अलाहिदा  
वजह पर मुवनी हों तो जहांतक मुमकिन होवे अला-  
हिदा अलाहिदा और साफ साफ वयान कीजायगी—

९— ( १ ) मुद्ई को लाजिम है कि एक फेहरिस्त उक्त तमाम दस्तावेजात  
कारवा-बाद मजरी की ( अगर कोई हों ) जो मुद्ई अर्जीदावे के साथ  
अर्जीदावेके पेश की हों अर्जीदावे की पुस्तपर लिखदे या अर्जी-  
दावे के साथ मुस्तलिक करदे और अगर अर्जीदावा मंजूर हो तो  
अर्जीदावा की उस कदर नकलें सादे कागज पर पेश करे जिस कदर  
मुद्दाअलेहुम् हों इला उस सूरत में कि अदालत अर्जीदावे की तवालत  
या मुद्दाअलेहुम् की तादाद के लिहाज से या किसी और वजह काफी से  
मन्मनिय वयानात मुद्ई को इजाजत दे कि उसी तादाद के मुस्तसिर  
वयानात नदय्यत दावा या दादरसी मुतदाविया के जिसकी नालिश कीजाय  
तालिश करे पर ऐसी सूरत में मुद्ई ऐसे वयानात दाखिल करैगा—

( २ ) अगर मुद्ई वहेसियत कायम मुकामी नालिश करे या मुद्दाअ-  
लेह पर या मुद्दाअलेहुम् में से किमीपर वहेसियत कायम  
मुकामी नालिश कीजाय तो वयानात मजकूर से बाजेह होना  
चाहिये कि मुद्ई किम हैसियत से नालिश करता है या मुद्दाअ-  
लेह पर उसकी किस हैसियत से नालिश हुई है—

( ३ ) मुद्ई को तल्लियार है कि वइजाजत अदालत वयानात मज-  
कूर को इस गरज से दुरुस्त करे कि वह अर्जीदावे के मज-  
रान के मुताबिक होजाये—

( ४ ) अदालत का अला अल्लकार अहकाम के तामील करने  
जाना उन फेहरिस्त और नकलों या वयानात मुतजिकरह  
मदर पर उस सूरत में दस्नरात करैगा जब वह उनका मुता-  
बिक करने के बन्क उनको मर्दी पाये—

( ५ ) अर्जीदावा मुकामा की किसी नौबतपर उन अदालत में

अर्जीदावे की वापिसी दाखिल होने के लिये वापिस किया जायेगा जिस में यह मुकदमा दायर होना चाहिये था—

( २ ) अर्जीदावा वापिस करने के वक्त जज अर्जीदावा की पुस्तक पर वापिस अर्जीदावा की पेशी पर उसकी अदखाल की तारीख और नीज तारीख वापिसी की और नाम शख्स पेश कुनिन्दः का मुख्तसिर हाल और अमर का कि किस वजह से वापिस किया गया लिख देगा—

११—नीचे लिखी हुई सूक्तों में अर्जीदावा नामजूर किया जायेगा—

दफा ५३  
व ५४

अर्जीदावा की ना-  
हूरी

( अलिफ ) अगर अर्जीदावे से कोई विनाय दावा जाहिर न होती हो—

( बे ) अगर दादरसी मुतदाविया का तअय्युन मालियत कम किया गया हो और मुद्दै उस मीयाद के अन्दर जो अदालत मुक़रर करेगी अदालत के हुक्म के वमूजिव कमी मालियत की इसलाह न करे—

( जीम ) अगर दादरसी मुतदाविया का तअय्युन वाजिबी किया गया हो लेकिन अर्जीदावा कम कीमत के इस्थाम पर तहरीर हुआ हो और जब मुद्दै को अदालत हुक्म दे कि वह अन्दर मीयाद मुअय्यनः अदालत के इस्थाम मतलूबा को पूरा करदे और वह उसमें क़ासिर रहे—

( दाल ) अगर अर्जीदावे की बयान से नालिश कानून की रू से ममनूअउल समाअत हो—

१२—जब अर्जीदावा नामजूर किया जाये तो जज को लाजिम है कि दफा ५५ वापिस अर्जीदावे की नामजूरपर हुक्म नामजूरि का मये वजह उस हुक्म के तहरीर करे—

१३—नामजूर होना अर्जीदावे का बरविना किसी वजह मिनजुम्ला दफा ५६ वकि नामजूरि अर्जी-  
विसे नई अर्जीदावे  
उत्तरानना ममनू-  
न हो वजह मरकूमे वाला बतौर खुद मानै इसका न होगा कि मुद्दै उसी विनाय दावा की धावत नया अर्जीदावा गुजराने—

## दस्तावेजात जिनपर अर्जीदावा में इस्त- दलाल किया गया हो—

दफा ५६

१४-( १ ) अगर मुद्दई किसी दस्तावेज की रू से नालिश करे वं  
उन दस्तावेजात की उसको पास या उसके इख्तियार में हो तो उसको  
पेशी जिनकी बिना लाजिम है कि-दस्तावेज मजकूर अर्जीदावा दाखिल  
पर मुद्दई नालिश करे करने के वक्त अदालत में पेश करे और दस्तावेज  
दस्तावेज या नकल उसकी एक नकल अर्जीदावा के साथ नत्थी होने के  
दस्तावेजकी हवालगी लिये उसी वक्त हवाले करे—

( २ ) अगर मुद्दई किसी और दस्तावेजात पर अपने दावाकी ताउ  
फेहरिस्त दीगर दस्ता- में वतौर सुबूत के इस्तदलाल करे ( आम इससे कि  
वेजकी वह उसके पास या उसके इख्तियार में हो या न हो ) तो  
उस को लाजिम है कि दस्तावेजात मजकूर को एक फेहरिस्त में दर्ज करे  
जो अर्जीदावे में शामिल या उसके साथ नत्थी कीजायगी—

दफा ६०

१५-अगर कोई ऐसी दस्तावेज मुद्दई के पास या उसके इख्तियार में  
मुद्दई जाहिर करेगा न हो तो जहांतक मुमकिन हो मुद्दई यह जाहिर करेगा  
जब कि दस्तावेजात कि वह किसके कब्जा या इख्तियार में है—  
उसके कब्जा या इख्तियार में न हो

दफा ६१

१६-जब कोई मुकदमा किसी कागज काबिल खरीद व फरोख्त  
नालिशात व बिना मुवनीहो और कागज मजकूरका तलफ होजाना सादि  
दस्तावेजात काबिल तहो और मुद्दई इस बातका इकरारनामा हस्व इनमी  
सर्गद व फरोख्त नान अदालत लिखदे कि आयन्दः अगर कोई और  
शख्स उस कागजकी रू से दावा करे उसका जिम्मेदार मुद्दई रहेगा वं  
अदालत उसी तरह डिगरी सादिर करसकेगी जिसतरह उस मजकूर  
सादिर करती जब कि मुद्दई कागज मजकूरको अपने अर्जीदावेके साथ  
अदालत में पेश करना और उसी वक्त कागजकी एक नकल अर्जीदावे  
के साथ नत्थी होनेके लिये दाखिल करदेता—

दफा ६२

नवा १०२  
१८६१ ई०

१७-( १ ) बगियायत सूरत हाथ खास मुतजिकरः ऐक्ट शासन  
दस्तावेजात सर्गद व फरीजात सर्गद सन् १८६१ ई० अगर दस्तावेज

जिसकी रूसे मुद्दै नालिशीहो तहरीर मुन्दर्जा किसी वहीखाता दूकान या दूसरे हिसाबकीहो जो उसके पास या उसके इख्तियारमें हो तो मुद्दैको लाजिमहै कि अर्जीदावा दाखिल करने के वक्त वह वही और हिसाब और नकल तहरीरकी जिसपर उसको इस्तदलालहै पेशकरै—

( २ ) अदालत या वह अहलकार जिसको अदालत उस कामके असिलपरनिशान होकर लिखे मुक्तरर करै फौरन् उस दस्तावेजपर शिनाख्तके वापिस कीजायेगी लिखे कुछ निशान करैगा और नकलको मुआयना असिलके साथ मुक्ताविला करके और अगर नकल सही पाईजाय तो उस की सेहतकी तसदीक लिखकर वही मुद्दैको वापिस करैगा और उस नकलको शामिल मिसिल करायेगा—

१८-( १ ) जो दस्तावेज कि मुद्दैको बरवक्त गुजरने अर्जीदावे के दफा ६३ दस्तावेज जो बरवक्त गुजरने अर्जीदावे के पेश न कीजाय वह न ली जा सकेगी अदालत में पेश करनी या जो फेहरिस्त मुन्दर्जः या मुन्सलिकः अर्जीदावे में दाखिल करनी जरूरहो अगर वह इसी तौरपर पेश न कीजाय या दाखिल न कीजाय तो मुकदमाकी समाअतके वक्त बगैर इजाजत अदालत के उसकी तरफ से वह सबूत में न लीजायगी—

( २ ) इस कायदेकी कोई इवारत उन दस्तावेजात से मुतअल्लिक नहीं है जो मुद्दाअलेहके गवाहों से जिरहके सवालात करने के लिये या बजवाब किसी मुकदमेके जो मुद्दाअलेहने कायम कियाहो अदालतमें पेशहों या जो किसी गवाह को महज उस की याददिहीके लिये दीजायें—

## आर्डर =

### बयान तहरीरी और मुजरा होनेका जिक्र—

१-मुद्दाअलेह को इख्तियारहै कि खुद या अगर अदालत हुक्मदे दफा ११० बयान तहरीरी तो उसको लाजिम होगा कि मुकदमः की समाअत अव्वलके वक्त या उससे पहिले या उस मीयादके अन्दर जिसकी अदालत इजाजतदे अपनी जवाबदिहीका एक बयान तहरीरी दाखिलकरै—

२-जब यह कि मुद्दा अलेह वजरिये अपने प्लीडिंग के वह जुम्मा इफ्त नये वाकियात जो वयान करै जिनसे यह साबित हो कि नालिश चल नो निस्वत खात तौरपर सक्ती है या यह कि मामिला अजरुय कानून वागिलो वहत मीजायगी या काबिल वातिल करार दिये जानेके है और हुम्मा ऐसी बजुह जवाबदिही की वयान करै कि जिनको वयान न करने से नालिश फरीक मुखालिफको परेशानी होगी या जिनसे ऐसे अमूर तनकीह तल्ल वाकियाती पैदाहो जिनका अजीदावे मे जिन्न न हो मसलन् फरेव या इन् कजाय मीयाद समोअत या इदराय अदायगी या अन्जामदिही या ऐसे वाकियात जिनसे कानूनकी खिलाफवर्जी साबितहो-

३-मुद्दा अलेह के लिये सिर्फ यह काफी न होगा कि अपने इफ्त इन्कार खात तौर पर तहरीरी में आमतौरपर उन बजुहात नालिशसे इन्कार करै करना चाहिये- जो मुद्दे की तरफ से वयान किये जायें बल्कि उसको लाजिम है कि हर वयान वाकियाती निस्वत जिसकी असलियत वह तन लीम न करताहो खासतौर पर जवाबदिही करै बजुज हजेके-

४-अगर कोई मुद्दा अलेह किसी वयान वाकिया मुन्दजे अजीदावा न करना मुजबब से इन्कार करै तो उसको चाहिये कि मुजबब तौर तौर पर पर उससे इन्कार न करै बल्कि आसिल अम्र की निस्वत जवाब दे मसलन् अगर यह वयान किया जाय कि उसने कोई खास रकम वसूल पाई तो यह काफी न होगा कि वह सिर्फ उस खास रकम के वसूल पाने मे इन्कार करै बल्कि उसको लाजिम है कि रकम मजकूर या उसके किसी जुजोके वसूल पानेमे इन्कार करै या यह लिखे कि रकम मजकूर का किम कदर दिरमा वसूल पाया और अगर कोई वाकिया मुखालिफ हालात के साथ वयान किया जाय तो उन्हीं हालात के शमूल में उससे इन्कार करना काफी न होगा-

५-हर वयान वाकिया मुखलिफे अजीदावा जिनमे खासकर या अन्य रकम या मुजबबन तौर लाजिमी इन्कार न किया जाय या दिम होना को तमल्लिम करना मुजबब की प्लीडिंग में वयान न किया जाय तो यह मुतवाधिर होगा कि वह मजबूत होगा बजुज उमूर के कि वह दिम मजबूत नागविल के निनाक हवा-

मगर शर्त यह है कि अदालत अपनी सचावदीद से किसी वाकियात को हस्व मजकूर मकबूल हुये हों मकबूली मजकूर के सिवा किसी और तरह साबित करने का हुक्म देसक्ती है—

६-(१) अगर किसी मुकदमेमें जो वास्ते दिला पाने जरनफ़द के हो वयान तहरीरी में मुदाअलेह वमुक्काबिले मुतालिवा मुद्ई के दावा मुजरा मतालिवा मुजरातलब की तफसील होना चाहिये दिला पाने निस्वत ऐसे जरनफ़द के करै जो मुअय्यन हो और जो उसको कानून मुद्ई से पाना है और जो अदालत के इस्तियारात नज़दी से बढ़के न हो और दोनों फरीक को वही हैसियत हासिल हो जो मुद्ई के दावे में उनको हासिल है तो यह बात जायज होगी कि मुदाअलेह मुकदमे की समाअल अव्वल के वक्त एक वयान तहरीरी जिसमें कर्जा मुजरा की तफसील हो दाखिल करै लेकिन उसके बाद किसी और वक्तपर दाखिल न कर-सकैगा इल्ला उस सूरत में अदालत से उसकी इजाजत मिले—

(२) ऐसा वयान तहरीरी भिस्त अर्जीदावा नालिश मुक्काबिल के मुजरा दिलाने का मवस्सर होगा इत्ता कि अदालत को इस्तियार होगा कि असिल दावा और उसके मुक्काबिल के मुजरा दिलाने के दावा दोनोंकी निस्वत एकही मुकदमा में फैसला कतई सा-दिरकरै लेकिन तादाद डिगरीशुदः पर जो हक किसी वकील का बावत उस खर्चे के हो जो डिगरी के वमूजिव उसको पाना हो उसपर वह फैसला मवस्सर न होगा—

(३) कवाअद मुतअल्लिक वयान तहरीरी मुदाअलेह उस वयान तहरीरीसे भी मुतअल्लिक होंगे जो मुजरा दिलाने के जवाबमें हो—

### तमसीलात

(अलिफ) जैदने दो हजार रुपये वास्ते उमरू के वरूय वसीयत छोड़े और वकर को अपना वसी और मूसालः वाक्ती मांदः का करार दिया उमरू फौत हुवा और खालिद ने मोह-तमभी तर्का उमरू के हासिलकी और वकरने एक हजार रुपया बावत जमानत खालिदके अदा किये बाद अजां खालिद ने वकर पर बावत जर वसीयती के नालिश की वकर जर वसीयती में से एक हजार रुपया बावत कर्जा



२-जबूरहै कि मुद्दाअलेह वजरिये अपने प्लीडिंगके वह जुम्ला कन नये वाकियात की वयान करै जिनसे यह साबितहो कि नालिश चल नो निस्वत खास तौरपर सक्ती है या यह कि मामिला अजरुय कानून वानिला वहस कीजायगी या काबिल वातिल करार दिये जानेके है और जुम्ला ऐसी वजूह जवाबदिहीकी वयान करै कि जिनको वयान न करने से नालिश फरीक मुखालिफको परेशानी होगी या जिनसे ऐसे, अमूर तनकीह तल वाकियाती पैदाहों जिनका अर्जीदावे में जिक्र न हो मसलन् फरेव या इन कजायें मीयाद समाअत या इवराय अदायगी या अन्जामदिही या ऐसे वाकियात जिनसे कानूनकी खिलाफवर्जो साबितहो-

३-मुद्दाअलेह के लिये सिर्फ यह काफी न होगा कि अपने दयान इन्कार खासतौर पर तहरीरी में आमतौरपर उन वजूहात नालिशसे इन्कारको करना चाहिये- जो मुद्दे की तरफ से वयान कियेजायें बल्कि उसको लाजिमहै कि हरवयान वाक्किआकी निस्वत जिसकी असलियत वह तालीम न करताहो खासतौर पर जवाबदिही करै वजुज हर्जेके-

४-अगर कोई मुद्दाअलेह किसी वयान वाक्किआ मुन्दजे अर्जीदावा इन्कार करना मुजबजब से इन्कार करै तो उसको चाहिये कि मुजबजब तौर तौर पर पर उससे इन्कार न करै बल्कि असिल अम्र की निस्वत जगह दे मसलन् अगर यह वयान कियाजाय कि उसने कोई खास रकम वसूल पाई तो यह काफी न होगा कि वह सिर्फ उस खास रकम के वसूल पाने से इन्कार करै बल्कि उसको लाजिमहै कि रकम मजकूर या उसके किसी जुजोके वसूल पानेसे इन्कार करै या यह लिखे कि रकम मजकूर का किस कदर हिस्सा वसूल पाया और अगर कोई वाकिया मुखालिफ हालात के साथ वयान कियाजाय तो उन्हीं हालात के समुल में उससे इन्कार करना काफी न होगा-

५-हर वयान वाक्किआ मुजबकरे अर्जीदावा जिनसे रामकर या मुसव्वयनन् वतौर लाजिमी इन्कार न कियाजाय या जिन को नसलमिन करना मुद्दाअलेह की प्लीडिंग में वयान कियाजाय तो यह मुतवायिह होगा कि वह मसलन् होगया वजुज उम सलम के कि वह निर्ग शुलम नाकाबिन के निनाफ दवा-

मगर शर्त यह है कि अदालत अपनी सबाबदी से किसी वाकियात को हस्व मजकूर मकबूल हुये हों मकबूली मजकूर के सिवा किसी और तरह साबित करने का हुक्म देसक्ती है—

दफा ५८  
ऐक्ट १ स  
१८७२ ई

६-(१) अगर किसी मुकदमेमें जो वास्ते दिला पाने जरनबन्द के हो दफा १११  
वयान तहरीरी में मुदाअलेह वमुकाबिले मुतालिवा मुद्ई के दावा मुजरा  
मतालिवा मुजरातलव दिला पाने निस्वत ऐसे जरनबन्द के करै जो मुअय्यन  
की तफसील होना हो और जो उसको कानूनन मुद्ई से पाना है और जो  
चाहिये अदालत के इस्तिथारात नबन्दी से बढके न हो और

दोनों फरीक को वही हैसियत हासिल हो जो मुद्ई के दावे में उनको हासिल है तो यह बात जायज होगी कि मुदाअलेह मुकदमे की समाअत अव्वल के वक्त एक वयान तहरीरी जिसमें कर्जा मुजरा की तफसील हो दाखिल करै लेकिन उसके बाद किसी और वक्तपर दाखिल न कर सकैगा इला उस सूरतमें अदालत से उसकी इजाजत मिले—

(२) ऐसा वयान तहरीरी भिस्त अर्जीदावा नालिश मुकाबिल के मुजरा दिलाने का मवस्सर होगा हत्ता कि अदालत को इस्तिथार होगा  
असर कि असिल दावा और उसके मुकाबिल के मुजरा दिलाने के दावा दोनोंकी निस्वत एकही मुकदमा में फैसला कतई सादिरकरै लेकिन तादाद डिगरीशुदः पर जो हक किसी वकील का बावत उस खर्चे के हो जो डिगरी के वमूजिव उसको पाना हो उसपर वह फैसला मवस्सर न होगा—

(३) कवाअद मुतअल्लिक वयान तहरीरी मुदाअलेह उस वयान तहरीरीसे भी मुतअल्लिक होंगे जो मुजरा दिलाने के जवाबमेंहो—

### तमसीलात

(अलिफ) जैदने दो हजार रुपये वास्ते उमरु के वरूय वसीयत छोड़े और वकर को अपना वसी और मूसालः वाक्की मांदः का करार दिया उमरु फौत हुवा और खालिद ने मोह-तमभी तर्का उमरु के हासिलकी और वकरने एक हजार रुपया बावत जमानत खालिदके अदा किये बाद अजां खालिद ने वकर पर दावत जर वसीयती के नालिश की वकर जर वसीयती में से एक हजार रुपया बावत कर्जा

के मुजरा नहीं पासक्ता है क्योंकि बकर और खालिद की जो हैसियत निस्वत अदायें मुवलिग एक हजार रुपया के है वही निस्वत माल वसीयती के नहीं है—

( बे ) जैद विला वसीयत और उमरु का मकरुज मरगया बकर ने मोहतमपी तर्का जैदकी हासिल की और उमरुने जुओ उस तर्का का बकर से खरीद किया पस जो नालिश बावत जर सम्मन मिन्जानिव बकर बनाम उमरु हो उसमें उमरु उस कीमत में से अपना कर्जा मुजरा नहीं पासक्ता है क्योंकि यहां बकर की दो हैसियत मुख्तलिफ हैं एक हैसियत दाया होनेकी वमुक्ताविले उमरु के जिसमें कि वह उमरु पर नालिश करता है और दूसरी हैसियत कायम मुकामी जैदकी है—

( जीम ) जैदने उमरु पर बजरिये विलयाफ एक्स चेंज के नालिश की उमरु येयान करता है कि जैदने उमरु के मालके बीमा कराधे में बेजा गफलत की और वह जिम्मेदार मुआविका का है जिसके मुजरा होनेका उमरु दावा करता है जोकि इस मामिले में तादाद रकम मुजराई की मुतहकिम नहीं है इसलिये मुजरा नहीं दिलाई जासक्ती—

( हाल ) जैदने उमरुपर पांच सौ रुपये के विलयाफ एक्स चेंजके जरिये से नालिशकी और उमरुके पास एक डिगरी बनाप जैद बावत मुवलिग एक हजार रुपये के हैं जोकि यह दोनों दवावी रकम मुअय्यन जर नक्दके हैं इसलिये एक वमुक्ताविले दूसरे के मुजरा दिलाया जासक्ता है—

( ने ) जैदने उमरुपर बावत दर्जा एक मदारिलत बेजाके नालिशकी उमरुके पास एक परामेमरी नोट एक हजार रुपये का जैदका लिखावत है और वह यह दावा करता है कि जो रुपया जैदको इस नालिश में दिलाया जाय उसमें से यह रकम मुजरा बीजाय उमरु ऐसा कम्मक्ता है इसममें कि जब जैदको रुपया दिलाया जायगा तब दोनों रकम जर नक्दकी मुतय्यन होजायगी—

( वाव ) जैद और वकरने गिलकर एक हजार रुपया की नालिश उमरुपर की उमरु ऐसा कर्जा जो तनहा याफ्तनी उसका जैदके ज़िम्मे है मुजरा नहीं पासक्ता है—

( जे ) जैदने वकर और उमरुपर एक हजारकी नालिशकी वकर ऐसा कर्जा जो तनहा याफ्तनी उसका जैदके ज़िम्मे है मुजरा नहीं पासक्ता है—

( हे ) जैद वकर और उमरुकी कोठी शराकतीका वकदर एक हजार रुपये के देनदार है वकर उमरुको छोड़कर फौत हो गया जैदने उमरुपर वावत कर्जा तादादी पन्द्रहसौ रुपया के जिसका उमरु वजात खास देनदार था नालिशकी उमरुको इस्तिथार है कि कर्जा एक हजार रुपयेका मुजराले—

७-जब मुद्दाअलेह जवाबदिही या मुजरार्की चंद जुदागाना वजूह

जवाबदिही या मुजरार्की पर इस्तदलाल करै जो अलाहिदा व सुख्तलिफ़ बाकि जो जुदागाना वजूहपर यातपर मुवनीहो तो जहांतक होसके वे अलाहिदा अलाहिदा और साफ साफ वयान कीजायगी—

८-कोई वजूह जवाबदिही या नालिशकी जो बाद इरजाय नालिश या जदीद जवाबदिही की वजूह अदखाल वयान तहरीरी के जिसमें मुजरा दिलाने का जदीद दावा कियाजाय पैदाहुईहो वह मुद्दाअलेह या मुद्दई के वयान तहरीरी में याने जैसी मूरतहो-पेश कीजासक्ती है—

९-कोई लीडिंग वजुज उसके जो मुजरा दिलानेकी जवाबदिहीमें हो दफा ११२ मावादकी लीडिंग मुद्दाअलेहका वयान तहरीरी दाखिल होजाने के बाद नहीं लीजायेगी सिवाय वइजाज़त अदालतके और ऐसी शरायतपर जो अदालत मुनासिव समझै लेकिन अदालतको इस्तिथार है कि जिसवक्त चाहै किसी फरीकसे वयान तहरीरी या तितम्मा वयान तहरीरी तलवकरै और उसके दाखिल होनेके लिये एक मीयाद मुकर्ररकरै—

१०-अगर कोई फरीक जिससे हस्व मजकूरैवाला वयान तहरीरी त- दफा ११३

कारवाई अगर कोई फरीक जिस से वयान तहरीरी तलव हुआ हो दाखिल न करै तबहुआहो उस मीयादके अन्दर वयान तहरीर दाखिल न करै जो अदालत से मुकर्रर हुई हो तो अदालत मजाज होगी कि उस फरीक के खिलाफ तजवीज सादिर करै या मुकद्दमा की निस्वत कोई हुक्मदे जो मुनासिव मालूमहो—

## आर्डर ६

### ज़िक्र फरीकैन की हाज़िरी का और गैर हाज़िरी के नतीजे का—

दफ़ा ६६

१— जो तारीख सम्मन में मुद्दाअलेह की हाज़िरी और जवाबदिहीके फ़रगकैन को उनवन्त हाज़िर होना चाहिये जो सम्मन में वास्ते हाज़िर और जवाब-दिही मुद्दाअलेह के मुक-र्रहो लिये मुक़र्रहो चाहिये कि फ़रीकैन असालतन् ख्वाह मारफत अपने विकलायके उसी तारीख पर अदालत में हाज़िरहों और तब मुक़दमा समाप्त किया जायगा वशर्ते कि मुक़दमाकी समाप्ति किसी तारीख आइन्दह पर जो अदालत मुक़र्रर करे मुलतवी न कीजाय—

दफ़ा ६७

२—अगर वतारीख मुक़र्रर यह बात दरयाफ़्तहो कि सम्मन मौसुमः दिनभिन कियाजाना मुक़दमे का जब सम्मन की तारीख इन व-जह में न हुई हो कि मुद्दा ने फौज इजराय न वाजिलगी हो मुद्दाअलेह की तामील इस वजहसे नहीं की गई कि मुद्दा ने उसकी तामील की रसूम अदालत मतलूवा या महसूल डाक (अगर कुछ हो) जो वाजिबुलवसूल था थदा नहीं किया तो अदालत मजाज होगी कि मु-क़दमेकी डिसमिसीका हुक्म दे पगर शर्त यह है कि वह सम्मन की तामील मुद्दाअलेह पर न हुई हो हुक्म मुतज़िकिरै वाला उस मूरतमें सादिरै न किया जायगा जब कि मुद्दाअलेह उस तारीख को जो उसकी हाज़िरी और जवाबदिहीके लिये मुक़र्रर हो अदालत में असाल-तन् या मारफत किसी एजन्ट के जब वह एजन्ट की मारफत हाज़िर होनेका मजाजहो हाज़िर होजाय—

दफ़ा ६८

३— अगर पेशी मुक़दमेके वक़्त फरीकैन में से कोई भी अदालत में हाज़िर न आये तो अदालत मजाज होगी कि हुक्म दे सादिर करे कि मुक़दमा डिसमिस किया जाय—

दफ़ा ६९

४—जब कोई मुक़दमा जायदा २ ग ३ के वज़िव टिमिन किया

मुद्दे एक दूसरी ना-  
लिश कज्ज करसक्ता  
है या अदालत ना-  
लिश अचल को फिर  
वक्तारार रखेगी

जाय मुद्दे को इस्तिथार रहैगा कि वमलहूजी कानून  
हह समाप्त के नई नालिश करै या वास्ते सदूर हुक्म  
मन्सूखी डिसमिसी के दरख्वास्त दे और अगर मुद्दे  
अदालत को इस बात से मुतमय्यन करदे कि रसूम  
अदालत मतलूवा और महमूल डाक वाजिवुल वसूल  
( अगर कुछ महमूल डाक हो ) अन्दर मीयाद मुक्कररः अदालत कबल  
अज इजराय सम्मन के न दाखिल करने या उसके न हाजिर होने की  
वजह काफी थी याने जैसी सूरत हो तो अदालत उस हुक्म डिसमिसी  
को मन्सूख करके एक तारीख वास्ते कार्रवाई मुकदमे के मुक्करर करैगी—

५-( १ ) अगर वाद जारी होने सम्मन बनाम मुद्दाअलेह या बनाम दफा ६६

डिसमिस किया जाना  
मुकदमे का अगर  
मुद्दे वाद इसके कि  
सम्मन गैर तामील  
शुदा वापिस आये  
एक वर्ष तक जदीद  
सम्मन जारी कराने  
की दरख्वास्त न दे

एक शख्स मिनजुम्ला चन्द मुद्दाअलेहुम् के और अलिक  
वाद विला तामील वापिस आने सम्मन के मुद्दे एक  
साल के अंदर तारीख वापसी से—जब सम्मन अदालत  
में वजरिये उस ओहदेदार के वापिस कियाजाये जो  
मामूलन् अदालत में अहलकारान तामील कुनिन्दः  
के सम्मन वापिस लाने की तसदीक करता है—सम्मन  
जदीद जारी कराने की दरख्वास्त न दे और हस्व

इतमीनान अदालत यह साबित न करदे कि उसने अपने मुकदूर भरे  
उस मुद्दाअलेह की सकूनत दरयाफ्त करने में कोशिश की है जिस  
पर सम्मन की तामील नहीं हुई या यह कि मुद्दाअलेह मजकूर सम्मन  
की तामील से गुरेज कर रहा है तो अदालत मजाज होगी कि वमुका-  
विले ऐसे मुद्दाअलेह के दावे को डिसमिस करने का हुक्म सादिर करै—

( २ ) ऐसी सूरत में मुद्दे को इस्तिथार रहैगा कि वमलहूजी कानून  
मीयाद समाप्त के नालिश जदीद दायर करै—

६-( १ ) अगर पेशी मुकदमे के वक्त मुद्दे हाजिर हो और मुद्दाअ- दफा १००  
कार्रवाई जब सिर्फ लेह हाजिर न हो तो—  
मुद्दे हाजिर हो

( अलिक ) अगर यह साबित होजाय कि सम्मन की तामील हस्व  
नगर सम्मन की व- जावता कीगई थी तो अदालत मजाज होगी कि मुक-  
जावता तामील हुईहो दमे में एकतरफा कार्रवाई करै—

( वे ) अगर सम्मन का हस्व जावता तामील पाना सावित न किया जा  
अगर सम्मन की व- तो अदालत यह हुक्म देगी कि एक दूसरा सम्मन जो  
जावता तामील न- जारी किया जाय और मुद्दा अलेह पर उसकी ता  
हुई हो मील की जाय—

( जीये ) अगर यह सावित हो कि सम्मनकी तामील मुद्दा अलेह पर  
अगर सम्मन की ता- होगई मगर उस मुद्दामें नहीं हुई जो उसके लिये  
मील हुई हो मगर मुद्दा तारीख मुन्दजे सम्मन तक हाजिर होकर मुक्तदमे की  
काफी के अन्दर न हुई हो जवाबदेही कर सकने के लिये काफी होती तो अदालत  
मुक्तदमा की समाजत किसी और तारीख आयन्दा पर जो अदालत की  
तजवीज से मुकर्र हो मुक्तवीर रखेगी और यह हिदायत करेगी कि तारीख  
आखिरत जिक्र की इत्तिला मुद्दा अलेह को दी जाये—

( २ ) अगर यह मुद्दे के कसूर से हो कि सम्मन न जावता तौर  
या मुद्दा काफी के अन्दर न तामील पाया हो तो अदालत  
मुद्दे को हुक्म देगी कि इलतुवा से जो खर्चा आयद हुआ हो  
अदा करै—

दफा १०१

७-अगर अदालत ने मुक्तदमे की समाजत यकतरफा मुक्तवी रखी  
करवाई जबकि मुद्दा- हो और मुद्दा अलेह वतारीख मजकूर को या उस में  
अलेह उम रोज हा- पहिले हाजिर होकर अपनी गैरहाजिरी सादिक की  
जिर हो जितपर मंगा- वजह काफी जाहिर करै तो जायज है कि मुद्दा अलेह  
यत मुक्तवी रखी की जवाबदेही ऐसी शरायत पर जिनकी अदालत  
गई हो और गैरहाजि- दरवाज अदाय खर्चा या टीगर असूर की हिदायत  
नी शायिक की वजह करै मुक्तदमे में उसी तरह मसमूम हो कि गोया वह  
काफी बयान करै उसी तारीख को हाजिर हुआ था जो उसकी हाजिरी के लिये मुक्तद  
हुई थी—

दफा १०२

८-अगर पेशी मुक्तदमे के वक्त मुद्दा अलेह हाजिर हो और मुद्दे  
जिनकी जय नि- हाजिर न हो तो अदालत मुक्तदमा को वजहिये उगदा  
परा कर हाजिर हो हुक्म के दिनमिम करेगी इला उन सरत में कि मुद्दा  
लेह दावा या हुजादावा को लयन करै कि उम सरत में अदालत मुद्दा  
उन्हे के जकवान के नगजिव दिगरी सादिक करेगी और जब नि-

जुजोदावा का अक़वाल हो उस कदर मुकदमा डिसमिस करैगी जो जुजो वाकी मांदा से मुतअल्लिक हो-

६-(१) जब कायदा ८ की बमूजिव कोई मुकदमा कुल्लन् या जुजन् दफा १०३

डिगरी बन्विलाफ मु- डिमिस किया जाय तो मुद्दै को इस्तिथार न होगा  
दर बसवव आदम पैर- कि उसी विनाय दावेपर नईनालिश करै-लेकिन उस  
वी माने जर्दाद ना- को इस्तिथार रहेगा कि वास्ते सुदूर हुक्म मन्सूखी  
लिश की है- डिमिसी के दरख्वास्त दे और अगर वह अदालत

को इतमीनान दिलाये कि पेशी मुकदमे के वक्त उसकी गैरहाजिरी की कोई बजह काफी थी तो अदालत को लाजिम होगा कि हुक्म डिमिसी को उन शरायत पर दरवाब खर्चा या दीगर अमूरके जो मुनासिव समझै मन्सूख करे और मुकदमे में कार्रवाई होनेके लिये एक तारीख मुकर्रर करै-

(२) तावक्ते कि मुद्दै अपनी दरख्वास्त की इत्तिला फरीकसानी पर तामील न कराये कोई हुक्म इस कायदे के बमूजिव सादिर न किया जायगा-

१०-अगर एकसे ज्यादा मुद्दै हों और उनमें से एक या चन्द हा- दफा १०५

कार्रवाई जब कि चद जिरहों और वाकी गैरहाजिर हों तो अदालतको  
मुद्दैयों में से एक या इस्तिथार है बमूजिव दरख्वास्त उस मुद्दै या मुद्दैयान  
ज्याद गैरहाजिरहों हाजिर के मुकदमे में उसी तरह पैरवी होने की इजाजत दे कि गोया सब  
मुद्दैयान हाजिरहुये थे या जो हुक्म मुनासिव समझै सादिर करै-

११-अगर एक से ज्यादा मुद्दाअलेहुम् हों और एक या चन्द उनमें दफा १०६

कार्रवाई जब कि चद से हाजिरहों और वाकी हाजिर न हों तो मुकदमे में  
मुद्दाअलेहुम् में से एक कार्रवाई जारी रहेगी और दरवक्त सुनाने फैसलाके  
या ज्यादा गैर हाजिर अदालत उन मुद्दाअलेहों की निस्वत जो हाजिर न हों  
हों- ऐसा हुक्म सादिर करैगी जो मुनासिव मालूम हो-

१२-अगर कोई मुद्दै या मुद्दाअलेह जिसको असाततन् हाजिर दफा १०७

नतीजा गैर हाजिरी का होनेका हुक्म दिया गया हो असाततन् हाजिर न  
अगर कोई फरीक जि- हो या असाततन् न हाजिर होने की बजह काफी  
सको असाततन् हाजिर होने का हुक्म हो बिना हस्व इतमीनान अदालत जाहिर न करै तो वह कवा-  
वजह वाकी गैर हाजिर अद मासवक्त के उन जुम्ला अहकाम का पाबन्द रहेगा  
हो जो उन मुद्दैयान और मुद्दाअलेहुम् से मुतअल्लिक है जो हाजिर न हों-



## दरवावे मन्सूख करने डिगरियात यकतर्फा के-

दफा १०८

१३-हर सूरत में कि डिगरी यकतर्फा मुद्दाअलेह पर सादिर कीजा मन्सूखी यकतर्फा डि-  
गरी की जो बखिलाफ मुद्दाअलेह सादिर हुई हो

मुद्दाअलेह मजाज़ है कि जिस अदालत से डिगरी सादिर हुई हो उसमें इस गरज़ से दरख्वास्त दे कि डिगरी की मन्सूखी का हुक्म सादिर हो और अगर वह अदालत को मुतमय्यन करदे कि सम्पन की तामील हस्व जान नही की गई या कि वह किसी बजह काफ़ी से उस रोज़ अदालत में हाजिर न हो सका जब कि मुक़दमा समाप्त के लिये पेश किया गया तो अदालत हुक्म मुतजम्मिन मन्सूखी डिगरी मये शरायत दरवावे खर्चा और नीज़ दरवावे दाखिल किये जाने रुपया के अदालत में या और तौर पर जो मुनासिब मालूम हो सादिर करेगी और मुक़दमे में कार्रवाई होने के लिये एक तारीख़ मुक़रर करेगी—

मगर शर्त यह है कि अगर डिगरी इस किस्म की है कि वह सिर्फ़ व मुक़ाविले मुद्दाअलेह मजकूर मन्सूख नहीं होसکتी है तो यह जायज़ होगा कि वह वमुक़ाविले जुम्ला मुद्दाअलेहुप् के या मिनजुम्ला मुद्दाअलेहुप् के किसी मुद्दाअलेह के मुक़ाविले में भी मन्सूख कीजाय—

दफा १०९

१४-कोई डिगरी बजह गुजरने दरख्वास्त किस्म मजकूर के मन्सूख डिगरी वगैर इत्तिला तफ़सानी के मन्सूख नहीं कीजायगी

न कीजायगी इल्ला उस सूरत में कि दरख्वास्त गुजरने की इत्तिला तरफ़सानी को पहुँचाई गई हो—

## आर्डर १०

फ़रीक़ैन की ज़वानबन्दी अदालत की सारफ़त—

उनसे इन्कार नहीं किया हो इस्तिफ़सार करैगी कि तुम उनको तस-लीम करते हो या उनसे इन्कार करते हो और उस तसलीम या इन्कार को अदालत कलमबन्द करैगी—

२-मुकद्दमे की समाप्त अवल या किसी समाप्त भावाद के वक्त दफा ११८ जवानबंदी फरीक की या किसी शाख की जिसको फरीक अपने साथ लाया हो अदालत को इस्तिफ़ार है कि जवानबंदी किसी फरीक की जो अदालत में असालतन् हाजिर आये या मौजूद हो या किसी शाख की जो मुकद्दमा के मरातिव जरूरी का जवाब दे सके और जिसको फरीक मजकूर या उसका वकील अपने साथ अदालत में लाया हो कलमबन्द करले और अदालत मजाज है कि अगर मुनासिब समझै जवानबंदी लिखे जाने के दरमियान उससे जो कुछ किसी फरीक को इस्तिफ़सार करना मंजूर हो इस्तिफ़सार करै—

३-जवानबंदी का खुलासा जज के हाथ से लिखा जायगा और शा- दफा ११९ जवानबंदी का खुलासा लिखा जायगा मिल मिसिल रहैगा—

४-( १ ) अगर वकील किसी फरीक का जो अदालतन् हाजिर हो दफा १२० या कोई शाख मुतजिकरे कायदा २ जो वकील के साथ हो किसी सवाल जरूरी मुतअल्लिकः मुकद्दमः के जवाब देनेसे मुन्किर या माजूर हो और अदालत के नजदीक उस फरीक पर जिसका वह कायम मुकाम है उसका जवाब देना बाजिव हो और वदानिस्त अदालत मुमकिन हो कि अगर उससे असालतन् इस्तिफ़सार किया जाय वह जवाब उसका देसकैगा तो अदालत मजाज होगी कि मुकद्दमे को किसी तारीख आयन्दातक मुल्तवी करके हुक्म दे कि वह फरीक वतारीख असालतन् हाजिर हो—

( २ ) अगर फरीक मजकूर वतारीख मोअय्यना विला उजूर जायज असालतन् हाजिर न हो तो अदालत को इस्तिफ़ार होगा कि उसके रिताफ तजवीज या ऐसा हुक्म मुकद्दमे की निस्वत जो उस के नजदीक मुनासिब हो सादिर करै—

## आर्डर ११

## इन्फिशाफ़ हाल और मुअय्यना—

दफा १०१

१—किसी मुकदमे में मुद्दै या मुदाअलेह को इस्लियार है कि बहुमूल इन्फिशाफ़ हाल वजगिये इजाजत अदालत के तहरीरी वंद सवालात जिनके वंद सवालात के जवाबत तरफसानी या उनमें से एक या ज़्यादा से लेने मंज़ूर हों अदालत की मारफत हवालेकरै और सवालात हवाले मुदः के जैल में यह सराहत करदीजायगी कि हरशख्स से किस किस सवाल का जवाब तलब है मगर शर्त यह है कि किसी फरीक को इस्लियार न होगा कि एकही फरीक को एक से ज़्यादा वंद सवालात के हवाले करै जबतक कि इस बारेमें अदालत से हुक्म न हो—

और नीजशर्त यह है कि जिन सवालात का तअल्लुक अमूर मुतनाजिआ नालिश से न हो वह गैर मुतअल्लिक मुतसव्वर होंगे बावजूदे कि वह गवाह से जवानी जिरहके करने में काबिल अदखाल हों—

२—जब दरख्वास्त निस्वत इजाजत हवालगी सवालात के गुजरे तो ग्राम खान सवालात खास खास सवालात जिनका हवाला कियाजाना पेश नियेजायेंगे मंज़ूर हो अदालत में पेश किये जायेंगे और उस दरख्वास्त के फैसल करने के वक्त अदालत को लाजिम होगा कि जिन फरीक से जवाब लेना मंज़ूर हो उसकी उस तजवीज़ पर लिहाज़ करै जो निस्वत हवाले करने तफसीलान के या करने अक़वाल के या पेश करने दस्तावेज़ात मुतअल्लिक अमूर मुतनाजिआ या उनमें से एक बात के कीजाय और लाजिम है कि इजाजत सिर्फ़ उसी सवाल पेशकरदः की जायत दीजाय जो अदालत के नजदीक वास्ते इन्फिसाल मुकदमा वजर्ज मुनासिब के वास्ते महफूजी मर्चे के जरूरी हो—

लत बेजाके साथ हवाला किया गया हो तो खर्चा जो बन्द सवालात मजकूर और उसके जवाब लेनेमें पड़ा हो फरीक कसूरवार पर बहरसूरत आयद किया जायगा—

४—बन्द सवालात मुताबिक फार्म नम्बर २ मुन्दर्जे इयन्डिक्स फार्म बन्द सवालातका ( जीम ) के होगा साथ उस रद्दोदल के जो बलि-हाज हालात जरूरी हो—

५—अगर मुकदमः में अहदुल फरीकैन कोई कारपुरेशन या ने कोई कारपुरेशन या ने जमाअत सनदयाफता हो या जमाअत मुस्तरिक हो ( आम इस से कि उसको कारपुरेशन की सनद मिली हो या नहीं ) जिसको कानूनन अपने नामसे या अपने किसी ओहदेदार या और शख्स के नामसे नालिश या जवाबदिही करने का इख्तियार हासिल हो तो हर फरीक सानी को इस मजमून की दरखास्त देने का इख्तियार है कि उसको इजाजत मिले कि ऐसे कारपुरेशन या जमाअत के किसी मेम्बर या ओहदेदार को बन्द सवालात हवाले करे और जायज है कि हुक्म मुताबिक 'मजमून' दरखास्त के दिया जाय—

६—अगर उजर निस्वत जवाब देने बन्द सवाल के इस बजह से हो कि वह सवाल इतक आमेज या गैर मुतअल्लिक मुकदमा जवाब किसी तवालके है या नेकनीयती से मुकदमे का मुकसूद हासिल करने के लिये नहीं पूछा गया है या वह अन्न जिसकी वाजुत इस्तिफसार हुआ है मुकदमे की उस नौबत पर मुकदमे में बकदर काफी मवसितर नहीं है या किसी और बजह से हो तो वह उजर जवाब में बतौर बयान हलफी दाखिल किया जासकेगा—

७—कोई सवालात इस बजह से मन्सूख किये जासक्ते हैं कि वह तिसवालातको मन्सूख या खारिज करना लावजह या बराह ईजारसानी पूछे गये हैं या इस बजह से खारिज किये जासक्ते हैं कि वह तूल तवील या तकलीफदे या गैर जरूरी या इतकआमेज है और जो दरखास्त इस गरज के लिये गुजरानी जाय जायज है कि हवालगी सवालात से सातदिन के अन्दर गुजरे—

८—बन्द सवालात के जवाबात बजरिये बयान हलफी दिये जायेंगे

वयान हलफ़ी जवाब  
में और उत्तरा अद-  
दाल

और दसरोज़ के अन्दर या किसी और मियाद के  
अन्दर जिसकी इजाज़त अदालत से हासिल हो दा-  
खिल किये जायेंगे—

८—वयान हलफ़ी जो बन्द सवाल के जवाब में दिया जाय मुताबिक़  
वयान हलफ़ी का फ़ार्म फ़ार्म नन्दर ३ इयन्डिक्स ( जीम ) के होगा साथ  
जो जवाब दिया जाय उस रदोवदल के जो बलिदाज़ हाज़ात ज़रूरी हो—

१०—जवाब में किसी वयान हलफ़ी की निस्वत एतराज नहीं किया जा-  
एतराज नहीं किया यगा लेकिन अगर वयान हलफ़ी मजकूर की निस्वत  
जायगा ना काफी होने का एतराज किया गया हो तो अ-  
दालत उसके ग़ैर मुक़तफ़ी होने या न होने की वाजत तजवीज़ करदेगी—

दफ़ा १२७

११—अगर कोई शख्स जिसके पास बन्द सवाल पहुँचा हो जवाब न  
हुक्म निस्वत देने ज- दे या जवाब ग़ैर मुक़तम्मिल दे तो सवाल करनेवाला  
वाब या जवाब मजीद अदालत में दरख़वास्त इस मजमून की देसक्ता है कि  
के शख्स मजकूर के नाम हुक्म भेजा जाय कि वह सवाल  
का जवाब या जवाब मजीद दे जैसी सूरत हो और उसके नाम हुक्म सादिर  
होसक्ता है कि वह बजरिये तहरीरी वयान हलफ़ी या वयान जवानी के जिस  
तौर पर अदालत हिदायत करे सवाल का जवाब या जवाब मजीद दे—

१३-जिस फरीक के नाम हुक्म मुतजिकरः कायदः अखीर मा- दफा १३२  
 दस्तावेजात की निस्वत | सबक सादिर हुआ हो उसके तहरीरी बयान हलफी में  
 बयान हलफी- | सराहत के साथ यह लिखा जायगा कि किस किस  
 दस्तावेज के पेश करने में अगर कोई ऐसी हो उसको उजम है और वह  
 मुताविक फार्म नम्बर ५ मुन्दर्ज इयन्डिक्स ( जीम ) के होगा साथ उस  
 रद्दोवदल के जो बलिहाज हालात जरूरी हो—

१४-मुकद्दमे के दौरानमें हरवक्त अदालत को जायज होगा कि किसी दफा १३०  
 पेसी दस्तावेजात की | फरीक को मिन्जुम्ला उन दस्तावेजात के जो नालिश  
 के किसी अम्र निजाई से मुतअल्लिक हो और उसके कब्जे या इस्तिथार  
 में हो जिस कदर दस्तावेजात का पेश करना अदालत की दानिस्त में  
 मुनासिब हो उनके हलफन पेश करने का हुक्म दे और जब वह दस्ता-  
 वेजात पेश होजायें अदालत उनकी निस्वत हस्व मुक्कितजाय इन्साफ  
 अमल करेगी —

१५-हर फरीक मुकद्दमे को इस्तिथार है कि किसी वक्त वजरिये दफा १३१  
 दस्तावेजात मुतजिकरै | इत्तिलानामा किसी और फरीक को जिसकी प्लीडिंग  
 प्लीडिंग या बयानात | या तहरीरी बयानात हलफी में किसी दस्तावेजात का  
 हलफी का माभिला | जिक्र हो इस मजमून की इत्तिला दे कि वह दस्तावेज  
 मजकूर को वास्ते मुआइना फरीक इत्तिलादिहन्दा या उसके वकील के  
 पेश करै और उसको या-उन्को इस दस्तावेजकी नकल लेनेदे और कोई  
 फरीक जो ऐसी इत्तिला की तामील न करै दस्तावेज मजकूर को उस  
 मुकद्दमेमें आइन्दा अपनी तरफसे वतौर सबूत के दाखिल न कर सकैगा इल्ला  
 उस सूरतमें कि वह अदालत को इतमीनान करदे कि दस्तावेज मजकूर सिर्फ  
 उसीके हकसे मुतअल्लिक थी क्योंकि वह इस मुकद्दमे में मुदाअलेह था  
 या कि उसके इत्तिला की तामील न करनेकी कोई और वजह वदानिस्त  
 अदालत काफ़ी हासिल थी कि उस सूरत में अदालत इजाजत देसकैगी  
 कि वक़ैद शरायत खर्चा वगैराके जो अदालत के नजदीक मुनासिब हो  
 दस्तावेज मजकूरको वतौर सबूतके पेश करै—

१६-जो इत्तिला किसी फरीकको निस्वत पेश करने किसी दस्तावे-  
 इत्तिला निस्वत पेश | जात मुतजिकराः प्लीडिंग या बयानात हलफी फरीकें न  
 करने के | मजकूरके दीजाये वह मुताविक फार्म नम्बर ७ मुन्दर्ज

इयन्डिक्स ( जीम ) के होगी साथ उस रद्दो बदलके जो बलिहाज हालात जरूरीहो—

दफा १३३

१७—जिस फरीकको ऐसी इत्तिला दीजाय उसको लाजिम है कि इ वक्त वास्ते मोआयनाके चित्ला पाने से दस रोजके अन्दर उस फरीकको जिसने जब इत्तिला दीजाये इत्तिला दीहो अपनी तरफ से इस मजमूनकी इत्तिलादे कि फलां वक्तपर जो उस इत्तिला देनेकी तारीख से तीनरोजके अन्दर हो दस्तावेजात मतलूवा या उनमें से उस कदर दस्तावेजात जिनके पेश करने में उसको उजर न हो उसके वकीलके दफ्तर में या वहीजात सर्राफी या और वहीखाता या और कुतुबकी सूरत में जिनका हमेशा तिजारत या फारवार में काम पड़ताहै—उनके मामूली मुकाम हिफाजतपर मोआयन होसकेंगी और इत्तिला में यह भी लिखाजायगा कि किम किस दस्तावेज के पेश करने में अगर कोई ऐसीहो उसको उजर है और किम वजह से उजर है—इत्तिला मजकूर मुताबिक नख्बर ८ मुन्दर्जे इयन्डिक्स ( जीम ) के होगी साथ उस रद्दोबदलके जो बलिहाज हालात जरूरीहो—

दफा १३३

१८—( १ ) अगर वह फरीक जिसपर कायदे १५ की बमोजिव इत्तिला हुक्म निस्बत मोआ- की तामीलहो इत्तिला इस बातकी कि दस्तावेजात यने के किस वक्त मोआयना होसकेंगी न भेजे या मोआयना कराने से इन्कार करै या मोआयनाके लिये कोई और मुकाम सिवाय दफ्तर वकीलके मुक्करकरै तो अदालत उस फरीककी दरख्वास्त पर जित्तहो मोआयना भेजूहै हुक्म सादिर फरमकेंगी कि मोआयना किसी मुनासिब मुकाम और तरीकेपर करायाजाये—मगर शर्त यहहै कि हुक्म सादिर नहीं कियाजायगा जब और जहांतक बदालिस्न अदालत मुकदमे के इन्किलात बतर्ज मुनाबिबके लिये और वास्ते महफूजी खर्चाके मोआयने की जरूरत न हो—

रातिबके दाखिल कियाजायगा कि किस किस दस्तावेजका मोआयना मंजूर है यह कि फरीक दरख्वास्तकुनिन्दः मोआयना करने का मुस्तहक है और यह कि वह दस्तावेजात फरीक सानी के कब्जे या इस्तिथार में हैं—अदालत ऐसा हुक्म दरतानेजात मजकूर के मोआयनेकी निस्वत सादिर नहीं करैगी जब और जहांतक वदानिस्त अदालत मजकूर दगारज इन्फिसाल मुकदमा वतर्ज मुनासिव के या महफ्जी खर्चा के उस की जरूरत न हो—

१६-( १ ) अगर दरख्वास्त वास्ते मोआयना किसी वहीखाते के नकल मुसदिका गुजरानी जाय तो अदालत अगर मुनासिव समझै वजाय हुक्म देने मोआयना असल वहीखाते के हुक्म देसकैगी कि उस वहीखाता की किसी रकमों या इवारतों की एक नकल उस शख्स के तहरीरी बयान हलफी से मुसद्दिक होकर दीजाय जिसने असिल रकमों या इवारतों से नकल मजकूर को मुक़ाबिला कर लिया हो और बयान हलफी मजकूर में लिखा जायगा कि आया असिल कुतुब में काटकूट या तहरीर बयनुलसतूर या तगैयुर वतबहुल है या नहीं अगर हो तो वह भी—मगर शर्त यह है कि बावस्फ देने नकल मजकूर के अदालत को इस्तिथार है कि जिस किताब की वह नकल हो—

( २ ) अगर उस दरख्वास्त में जो वास्ते सादिर कराने हुक्म मोआयना के गुजरे किसी दस्तावेज की निस्वत इस्तहकाक रिआयती का दावा हो तो अदालत को लाजिम है कि वास्ते तय कराने जो अज दावा इस्तहकाक रिआयती के इस दस्तावेज का मोआयना करै—

( ३ ) अदालत को इस्तिथार है कि किसी फरीक मुकदमा की दरख्वास्त पर किसी वक्त और आप इससे कि हुक्म तहरीरी बयान हलफी मुतअल्लिक दस्तावेजात का सादिर कियागया हो या नहीं या ऐसा बयान हलफी दाखिल कियागया हो या नहीं इस मजमून का हुक्म सादिर करै कि और कोई फरीक अपने बयान हलफी में लिखै कि एक या एक से ज्यादा दस्तावेजात मसलूम जो सराहत के साथ दरख्वास्त मजकूर में



लिखी जायेंगी उसके कब्जे या इस्तिथार में हैं या नहीं या किसी वक्त में थीं या नहीं और अगर उसके कब्जे में उस वक्त न हों तो कब दस्तावेजात मजकूर उसके कब्जे या इस्तिथार से निकल गई और क्या हुई दरखास्त मजकूर अजस्य त हरीरी बयान हलफी इस मजमून से गुजरानी जायगी कि ताह यकीन मजहिर उस फरीक के कब्जे या इस्तिथार में जिससे खिलाफ दरख्वास्त मजकूर गुजरानी गई हो दस्तावेजात या दस्तावेजात मुसररः दरखास्त है या किसी वक्त थीं और अमूर मुतनाजिया मुकदमासे या उनमें से बाजसे मुतअल्लिकहैं—

दफा १३५

२०—अगर वह फरीक जिससे किसी किस्म का अफ़शाय हाल या किसी अफ़शाय हाल कब्ज शय का मोआयना कराना मतलब हो उसके या उस अजवक्त के किसी जुजो के अफ़शायों मोआयना कराने से इन्कार करे और अदालत को इतमीनान हो कि इतहकाक ऐसे अफ़शायों मोआयना कराने का मुकदमे के किसी अम्र तनकीही या वहम तलब की तजवीज पर मुनहसिर है या किसी और वजह से ऐसे अफ़शायों मोआयना कराने का इस्तहकाक तय करने से पहिले उस अम्र तनकीही या वहम तलब की तजवीज करनी जरूर है तो अदालत यह हुक्म सादिर कर सकेगी कि उस अम्र तनकीही या वहम तलब की तजवीज पहिले हो जाय और अफ़शायों मोआयना कराने का अम्र पीले से तय किया जाये—

२२-किसी फरीक को इस्तिथार है कि वक्त तजवीज मुकदमा फ-  
 वद सवालात के जवा-  
 वात वक्त तजवीज मु-  
 कदमा इस्तेमाल होंगे

रीक सानी के एक या एक से ज्यादा जवादात या  
 जुजो जवाव को जो बंद सवालात की निस्वत हो वगैर  
 अदखालत वकीया या कुल जवाव मजकूर के वतौर  
 घजह सुबूत के इस्तेमाल करै मगर हमेशा शर्त यह है कि सूरत मजकूर में  
 अदालत को इस्तिथार है कि कुल जवाव को मोआयना करै और अगर  
 बदानिस्त उसके वकीया जवाव मजकूर जवाव दाखिल शुदः के साथ इस  
 कदर रजत रखते हों कि जवाव आखिरक जिक्र वगैर उनके मुस्तअमल  
 नहीं होसके हों तो अदालत मजाज है कि उनके अदखालत का हुक्म  
 सादिर करै—

२३-आर्डर होजा नावालिग मुद्दयान और मुदाअलेहुम् से और अ.  
 हुक्म नावालिगों से मुत-  
 अल्लिक होगा

शखास नाक्ताविल के रफीक और वली दौरान मुकदमा  
 से मुतअल्लिक होगा—

## आर्डर १२

### अकवाल

१-कोई फरीक वजरिये अपने प्लीडिंग के या और निहजपर इत्तिला  
 इत्तिला अकवाल मु-  
 कदमा

तहरीरी इस मजसून की देसकता है कि उसको दक्की-  
 कत कुल या जुजो मुकदमा फरीकसानी का अकवाल है—

२-कोई फरीक निस्वत मकबूली किसी दस्तावेज के दूसरे फरीक से  
 इत्तिला अकवाल द-  
 स्तावेजात

कहसकता है सिवाय उनके जो वतौर मुनासिब मुस्तस्ना  
 हैं—और अंगरे बाद इत्तिला मजकूर के मकबूली से  
 इन्कार या उनमें से गफलत कीजाय तो जो खर्चा किसी दस्तावेज मजकूर  
 के असवात में आयद हो वह फरीक गफलत या इन्कारकुनिन्दः के  
 जिम्मे होगा गो मुकदमे का नतीजा कुछही हो इल्ला उस सूरत में कि  
 अदालत और तरह पर हुक्म दे और किसी दस्तावेज के असवात का  
 खर्चा दिलाया नहीं जायगा इल्ला उस हाल में कि इत्तिला मजकूर देदीगई  
 हो वजुज उस सूरत के कि जब बदानिस्त अदालत अदम इत्तिलादिही  
 से खर्चेका वचाव हो—

३-इत्तिला मकबूली दस्तावेजात मुताविक फार्म नम्बर १२ इयन्डिक्स  
इत्तिला का फार्म ( जीम ) के होगी मय उन तगैयुरात के जिनकी अज-  
रूप मौका जरूरत हो-

४-कोई फरीक इत्तिला तहरीरी के जरिये से किसी वक्त जो तारीख  
इत्तिला अक्बाल वा- समाप्त मोअर्यना से २ रोज से कम न हो किसी मस-  
कियात सूस वाकिया या वाकियाते मुन्दर्जे इत्तिला मजकूर के  
तसलीम करने के लिये सिर्फ वास्ते अगर आज मुकदमा के दूसरे फरीक  
से कहसक्ता है—और अगर तामील इत्तिला मजकूर से छः रोज के  
अन्दर या अन्दर मुदत मजीद मुकररा अदालत के वाकिया या वाकि-  
यात मजकूर के तसलीम करने से इन्कार या उसमें गफलत कीजाय तो  
असबात वाकिया या वाकियात मजकूर का खर्चा फरीक गफलत या  
इन्कारकुनिन्दः के जिम्मे होगा जो मुकदमे का नतीजा कुछही हो इत्ता  
उस मूरत में कि अदालत और निहजका हुक्म सादिर करै—मगर शर्त यह  
है कि उस मकबूली से जो मुताविक इत्तिला मजकूर के अमल में आये यह  
समझा जायगा कि सिर्फ मुकदमा खासकी निस्वत अमल में आती है  
और मकबूली मजकूर से वह मकबूली नहीं समझी जायगी जो वमुक्ता-  
विले फरीक मजकूर के किसी और मौकेपर या वहक किसी शख्स गैर  
सिवाय फरीक इत्तिलादिइन्दः के मुस्तअमिलहो—और नीज शर्त यह है  
कि अदालत को इख्तियारहै कि किसी वक्त किसी फरीक को बशरायत  
मुनासिव किसी मकबूली को जो हस्व मजकूरेवाला कीगई हो तरमीम  
करने या उसको वापिस लेनेकी इजाजत दे—

५-इत्तिला मकबूली वाकियात मुताविक फार्म नम्बर १० इयन्डिक्स  
फार्म नम्बर १० ( जीम ) के होगी और मकबूली वाकियात मुताविक  
फार्म नम्बर ११ इयन्डिक्स ( जीम ) मय उन तगैयुरात के जिनकी  
जरूरत अजरूप हालात पड़े—

६-कोई फरीक मुकदमा की किसी नौबतपर अगर मकबूली वाकि-  
यात मजकूर के अमल में या और निहजपर वरूप में  
आई हो अदालत में चारो उम नजवीज या हुक्म के जिसका वह अ-  
जरूप मकबूली मजकूर के मुन्दर्हतो सवाल देसक्ता है बगैर इन्तिहार  
बगैर नजवीज निजाज दीगर के जो साबित फरीक के हो—और अदाल-

लतको इस्लियार है कि सवाल मजकूर पर वह हुक्म या तजवीज सा-  
दिरकरै जो उसके नजदीक मुनासिब हो—

७—तहरीरी बयान हलफी वकील या उसके मोहरिर का निस्वत  
तहरीरी बयान हलफी | दस्तखत बाजाब्ता उस मकबूली के जो मुताबिक इत्ति-  
निस्वत दस्तखत के | ला मकबूली दस्तावेजात या वाकियात के वकूअ में  
आये मकबूली मजकूर का सबूत कामिल समझा जायगा अगर उसके  
सबूतका हुक्म हो—

८—इत्तिला निस्वत दरपेशी दस्तावेजात मुताबिक फार्म नम्बर १२ इय-  
इत्तिला निस्वत पेशी | निडक्स (जीम) के होगी मय उन तंगैयुरात के जिनकी  
दस्तावेजात | हस्वमौका जरूरत हो—और तहरीरी बयान हलफी वकील  
या उसके मोहरिर का निस्वत तामील इत्तिला दरपेशी और निस्वत  
वक्त तामील इत्तिला मजकूर मय नकल इत्तिला दरपेशी के जुम्ला सू-  
रतों में तामील इत्तिला और वक्त तामील इत्तिला मजकूर को सबूत  
कामिल होगा—

९—अगर इत्तिला मकबूली या दरपेशी में तसरीह उन दस्तावेजात  
पेशी | की हो जो गैर जरूरी हों तो खर्चा जो उस सबब से  
आयद हो फरीक इत्तिलादिहन्दा के जिम्मे होगा—

## आर्डर १३

### पेशी और जवती और वापसी दस्तावेजात—

१—( १ ) फरीकैन या उनके वकला को लाजिम है कि मुकदमे की दफा १३८  
दस्तावेजात वजह सबूत | समाअत अव्वल के वक्त हर किसम की दस्तावेजात न १४०  
वरक्त समाअत अव्वल | वजह सबूत जो उनके कब्जे या इस्लियार में हों जिन  
पेश होना चाहिये | पर उनको इस्तदलाल करना मंजूर हो और जो उसके  
पेशतर अदालत में दाखिल न हो चुकी हों और ऐसी कुल दस्तावेजात  
जिनकी निस्वत अदालत ने पेश करने का हुक्म दिया हो पेश करें—

( २ ) जो दस्तावेजात हस्व मजकूर पेश की जायेंगी अदालत उनको  
ले लेगी मगर शर्त यह है कि दस्तावेजात के साथ एक सही फेहरिस्त  
उस नमूने की हो जिसकी अदालत हाईकोर्ट हिदायत करे—

दफा १३६

२-कोई दस्तावेजी सुबूत जो किसी फरीक के कब्जे या इस्तिबार नतीजा अदमपेशी में हो और-जिसको मुताबिक शरायत कायदा १ बेश दस्तावेजात करना जरूर था मगर जो पेश न हुआ हो मुकदमे की कार्रवाई की किसी नौबत आयन्दा पर शामिलमिसिल न किया जायगा इल्ला उस सूरतमें कि उसके पेश न करनेकी वजह मांकूल हस्व इतमीनान अदालत जाहिर कीजाय और अगर अदालत उसको शामिल मिसिल करले तो उसको शामिल मिसिल करने की वजह लिखना जरूर होगा-

दफा १४०

३-अदालत मजाज़है कि मुकदमे के किसी नौबत पर किसी नामजूरी दस्तावेजात दस्तावेज को नामंजूरकरै जो वदाविस्त उसके मुकदमे गैर मुतअल्लिक या ना-से गैर मुतअल्लिकहो या और तरह पर लेने के लायक काबिल अदजाल नहो और अदालत उसकी नामंजूरी की वजह लिखेगी-

दफा १४१

४-( १ ) हस्व शरायत कायदा तहती जैल के हर दस्तावेज की पुरत तहरीर जोहरी उस पर जो मुकदमे में वतौर वजह सबूत के लेली गई हो दस्तावेज पर जो वजह मुफासिले जैल तफसील लिखीजायगी याने—  
सबूत में लागई हो

( अलिफ ) मुकदमे का नम्बर और फरीकैन के नाम वगैरह—

( बे ) दाखिल करनेवाले का नाम—

( जीम ) दाखिल करने की तारीख— और

( दाल ) एक वयान इस मजमून का कि दस्तावेज इस तरह दाखिल की गई—

और इवारत जोहरीपर जज अपने दस्तखत या मुह्रितसर दस्तखत सिध्न करैगा—

५-( १ ) वरिआयत सूरत हाथ खास मुतजिकरे ऐकट शहादत वही दफा १४१  
 सहरौर जोहरी नकल जात सराफ़ी सन् १८९१ ई० अगर कोई दस्तावेज (अलिफ) ऐकट नम्बर  
 इन्दराजात कुतुब वही जो मुकदमे में वतौर वजह सबूत दाखिल की गई हो १८ सन्  
 साबात व कागजातपर किसी किताब खतूत और वही खाता दूकान या रोज़- १८९१ ई०  
 मरी के दीगर हिसाब किताब का इन्दराजहो तो वह फरीक मुकदमा  
 जिसकी जानिव से किताब या वहीखाता मजकूर पेश किया गया हो  
 मजाज है कि एक नकल इन्दराज मजकूर की दाखिल करै-

( २ ) अगर दस्तावेज मजकूर किसी ऐसे सरकारी कागजात का  
 इन्दराजहो जो किसी सरकारी दफ़तर से या बज़ारिये  
 किसी सरकारी ओहदेदार के पेशहुवाहो या ऐसी किताब  
 या हिसाब का इन्दराज हो जो उस शख्स की मिल्क न हो  
 जिसकी जानिव से किताब या हिसाब मजकूर पेश हुवाहो  
 बल्कि किसी शख्स ग़ैर की हो तो अदालत मजाज है कि  
 इन्दराज मजकूर की एक नकल तलब करै-

( अलिफ ) अगर कागजात या किताब या हिसाब किसी फरीक मुकद-  
 मा की जानिव से पेश किया गयाहो तो उस फरीक से-या

( वे ) अगर कागजात या किताब या हिसाब उस हुक्म के मु-  
 ताबिक पेश किया गयाहो जो अदालत ने अपनी मर्जी से  
 सादिर किया हो तो फरीकैन मेंसे एक फरीक से या किसी  
 फरीक से-

( ३ ) अगर किसी इन्दराज की नकल कायदे हाज़ाके अहकाम  
 मजकूरवाला की खुसे दाखिल कीजाय तो अदालतको  
 लाजिम है कि तरीक़े मुतजिकरे कायदा १७ आर्डर ७  
 के वमूजिव नकल मजकूर की जांच और मुक़ाविला और  
 तस्दीक कराने के बाद इन्दराज मजकूर पर निशान कर  
 के किताब या हिसाब या कागजात मजकूर जिनमें वह  
 इन्दराज हो शख्स पेशकुनिन्दः को वापिस देदे-

६-जब अदालत उस दस्तावेज को ग़ैर काबिल अदखाल सबूत स- दफा १४२

तहरीर जोहरी उन  
दस्तावेजात पर जो  
बजह होने और का-  
विल अदालत सबूत  
नामंजूर कीजायें

मझै जिसपर एक फरीक ने बतौर बजह सबूत इस्त-  
लाल कियाहो तो उसकी पुश्तपर अमूर ज़िम्नहार  
( अलिफ ) व ( वे ) व ( जीम ) कायदा ४ कायदा  
तहती ( १ ) मये एक तहरीर के जो दस्तावेज मज-  
कूर के नामंजूर होने की दावतहो लिखदियेजायेंगे और जज उस तहरीर  
जोहरीपर अपने दस्तखत या मुख्तिसर दस्तखत सिव्त करैगा—

( अलिफ )

दफा १४२

७-( १ ) हर दस्तावेज जो बजह सबूत में दाखिल कीगई हो या उस  
की एक नकल अगर इस कायदा ५ कोई नकल ब-  
जाय असिल के कायम कीगई हो मिसिल मुकदमे का  
एक जुजो होजायगी—  
दस्तावेजात दाखिल  
शुद का शामिल मि-  
सिल कियाजाना और  
दस्तावेजात नामजूर  
शुद का वापिसहोना

( २ ) दस्तावेजात बजह सबूत में दाखिल न कीजायें वह जुजो  
मिसिल मुकदमा न होंगी और अशखास दाखिलकुनिन्दः  
को वापिस करदीजायेंगी—

दफा १४३

८-बावजूद किसी हुक्म कायदा ५ या कायदा ७ आर्डरहाका या कायदा  
अदालत किसी दस्ता- ७ आर्डर७के अदालतको इस्तिथार है कि अगर बजह  
वेज के जज करने काफी देखे तो हिदायत करे कि कोई दस्तावेज या  
का इम देनहीं है किताव जो उसके खरू मुकदमे में पेशकीगई हो जज  
होकर अदालत के किसी ओहदेदार की हिरामत में उस मुदततक और  
उन शरायतके साथ रक्कीजाय जो अदालतको मुतामिय मालूम हों—

दफा १४४

९-( १ ) कोई शख्स आम इससे कि फरीक मुकदमा हो या न हो  
अदालत दाखिल किमी दस्तावेज को जो उसकी तरफ से मुकदमे में  
शुद का वापिसहोना दाखिल और शामिल मिसिल नई हो वापिस लेना  
चाहता हो उसके वापिस पानेका मुस्तहक होगा इन्ना उस सुरत में कि  
दस्तावेज कायदा ८ के वर्जिव जव्त होगई हो—

( अलिफ ) अगर मुकदमे का अशील न होसकता हो तो चाट तम्किया  
मुकदमा के—और

( बे ) अगर मुकदमे का अशील होसकता हो तो जज अदालत  
को इतमीनान होजाय कि वक्त इतनाय अशील गृहगमना

और अपील दायर नहीं हुवा और अगर अपील दायर होगयाहो तो वाद तस्फिया अपील के—

मगर शर्त यह है कि दस्तावेज वक्त मुकर्ररा कायदाहाजा से पहिले भी किसी वक्त वापिस होसकती है दरहाले कि वह शख्स जो उसकी वापिसी की दरखास्त करै दस्तावेज मजकूर की एक नकल मुसद्दिके असिले की जगह पर रखेजाने के लिये अदालत के अहलकार मुनासिव के हवाले करदे और असिल के पेश करने का जिम्मेदार होजाय अगर उस तरह का हुक्म हो—

और यह भी शर्त है कि कोई दस्तावेज जो डिगरी की रू से रद्द या बेकार होगई हो वापिस न कीजायगी—

( २ ) जब कोई दस्तावेज जो बजह सबूत में लीगई हो वापिस की जाय तो दस्तावेज का लेनेवाला उसके वापिस पाने की रसीद लिखदेगा —

१०—( १ ) अदालत मजाज है कि अपनी खुशी से और अगर फ-दफा १३७

अदालत कागजात अपने या और अदा- लतके दफ्तरसे तलब करसक्ती है	रीकैन में से किसी फरीक की तरफ से दरखास्त गुजरे तो बशर्त मुनासिव समझने के किसी और मुक- दमे या कार्रवाई की मिसिल को अपने या किसी और अदालत के दफ्तर से तलब करके इसका
---	--

मोआयना करै—

( २ ) बताईद हर दरखास्त जो इस कायदेके बमूजिव गुजरै (अगर अदालत और तरह का हुक्म न दे तो) लाजिम है कि दरखास्त कुनिन्दः या उसका वकील एक तहरीरी बयान हलफी बस्त-राहत इस अमर के दाखिल करै कि मिसिल मतलूवा उस मुकदमे में जिसमें दरखास्त गुजरी हो क्योंकि मन्सिस्तर है और यह कि नकल मुसद्दिका हस्व जावता कागजात मशमूला मिसिल की या उस जुजोकी जो सायल को दरकार है विला तबकुफ या सिर्फ नामुनासिव के नहीं मिलसकती है या यह कि पेशहोना असिल कागजात का वास्ते इगराज मआदिलत के जरूरी है—

( ३ ) इस कायदे की किसी इवारत से यह न समझा जायगा कि



अदालत किसी ऐसे कागजात को शहादत में मुस्तअमन करसक्ती है जो हस्व कानून शहादत उस मुकद्दमे में दाखिल न होसक्ता—

दफा १४५

११—अहकाम जो इस में दस्तावेजात की निस्वत दर्ज कियेगये हैं

अहकाम वावत दस्ता-  
वेजात दीगर अशि-  
यायमाही से भी मुत-  
अल्लिक होंगे

जहांतक होसकै तमाम और अशियाय माही से भी मुतअल्लिक होंगे जो वतौर शहादत पेश होसक्ती हैं—

## आर्डर १४

करारदाद अमूर तनक़ीहतलब का और त-  
स्क्रिया मुकद्दमे का ऊपर अमूर तनक़ीह तलब  
कानूनी या अमूर तनक़ीह तलब जिनपर  
वाहम इत्तिफाक कियाजाय

दफा १४६

१—( १ ) अमूर तनक़ीह तलब उस वक्त पैदा होते हैं जब कि कोई फरीक किसी अमूर नफ़स मुकद्दमा मुतअल्लिक वाकि-  
यत या कानून को बयान करै और फरीकसानी उस  
से इन्कार करै—

( २ ) अमूर नफ़स मुकद्दमा वह अमूर कानूनी या वाकियाती हैं जो मुद्दई को वास्ते जाहिर करने हक नानिश के बयान करने लाजिम हैं या जो मुद्दाअल्लेहको वास्ते कायम करने अपनी जवाबदिही के बयान करने लाजिम हैं—

( ३ ) हर अमूर नफ़स मुकद्दमा जिते एक फरीक बयान करै और दूसरा उससे इन्कार करै एक अल्लाहिदा अमूर तनक़ीह तलब करार दियाजायगा—

( ४ ) अमूर तनक़ीह तलब दो किस्म के हैं ( अल्लिक ) अमूर तन-  
क़ीहतलब मुतअल्लिक वाकियान ( बे ) अमूर तनक़ीह तलब  
मुतअल्लिक कानून—

( ५ ) मुद्दमे ती गवर्न मग़ायर पर मदालन वो लाजिम हैं कि

बाद पढ़ने अर्जीदावा और वयानात तहरीरी के अगर हो और फरीकैन की उस जवानवन्दीके बाद जो जरूरी मालूम हो यह दरयास्त करै कि किस अम्र वाकियाती या कानूनी नफ़स मुकदमे की वावत फरीकैन के दरमियान निज़ाहै उसके बाद अदालत उन अमूर तनकीह तलव को जिनपर बदानिस्त अदालत मुकदमे की सही तजवीज़ का मंदार है करार देकर कलम-बन्द करैगी—

( ६ ) इस कायदे की किसी इवारत से अदालत पर उस हालत में अमूर तनकीह तलव का करार देना और कलम बन्द करना लाज़िम नहीं है जब कि मुकदमा की समाप्त अव्वल के वक्त मुदाअलेह की तरफ से कुछ जवाबदिही न हो—

२—अगर अमूर तनकीह तलव कानूनी और वाकियाती दोनों एकही दफा १४६  
 अमूर तनकीह तलव मुकदमे में पैदाहों और अदालत की राय में सिर्फ अ- फिकरह ६  
 कानूनी और वाकि- मूर तनकीह तलव कानूनी की बिनाबर मुकदमा या  
 याती उसका कोई जुजो तै होसक्ता है तो अदालत को ला-  
 ज़िम है कि पहिले उन्हीं अमूर की तजवीज़ करे और उस गरज के लिये  
 अगर मुनासिब जाने तो उसको जायज़ है कि करार देना अमूर तनकीह  
 तलव वाकियाती का उस वक्ततक मुलतवी रखै कि अमूर तनकीह  
 तलव कानूनी तजवीज़ होजायें—

३—अदालत को इस्तिथार है कि अमूर तनकीह तलव तमाम या दफा १४७  
 मवाद जिससे अमूर वाज़ मवाद मुफ़सिले जैलसे मुरत्तिब करै—  
 तनकीह तलव मुरत्तिब  
 किये जासक्ते हैं

( अलिफ ) उन वयानात से जो फरीकैन ने या किसी अशखास ने जो उनकी तरफ से हाजिर थे हलफन् कियेहों या उन फरीक के विकलाने किये हों—

( बे ) उन वयानात से जो प्लीडिंग में या उन बंद सवालात के जवावात में कियेगये हों जो मुकदमे में दियेजायें—

( जीम ) उन दस्तावेजात के मजमून से जो फरीकैन में से किसीने पेश की हों—

क्रा १४८

४-अगर अदालत की रायमें विला इजहार किसी शख्सके जो अदालत कब्ज करार देने अमूर तनकीह नलवके गवाहो का इजहार लेसकी है और दस्तावेजात नो आपना करसकी है दालत में हाजिर न हो या विला मोआयना किसी दस्तावेज के जो मुकदमे में पेश न हुई हो अमूर तनकी हतलव सही तौरपर कायम नहीं होसके तो उसे इस्तिथार होगा कि कायम करना अमूर तनकीह तलव का किसी तारीख आयन्दा र मुलतवी रखै और वरियायत कानून मजरिया वक्त वजरिये इजराय सम्मन या और हुक्मनामे के जवरन किसी शख्स को हाजिर कराये या कोई दस्तावेज किसी शख्स से जिसके कब्जे या इस्तिथार में हो पेश कराये—

क्रा १४९

५-( १ ) अदालत को इस्तिथार है कि डिगरी सादिर करने से पहिले किसी वक्त अमूर तनकीह तलवको उन शरायन से जो मुनासिब मालूमहो तरमीम करै या और अमूर तनकीह तलव इजाजा करै और इस्ती तूरह वास्ते तस्फिया अमूर निजार्हि मावैन फरीकैन के जो तरमीम या इजाफा अमूर तनकीह तलव का जरूरी हो अमल में आयेगा—

( २ ) अदालतको यह भी इस्तिथार है कि डिगरी सादिर करने से पहिले किसी वक्त किसी अमूर तनकीह तलवको जो बराह गलती करारदिये या बढ़ायेहुये मालूमहो खारिजकरदे—

क्रा १५०

६-अगर फरीकैन मुकदमा बाहम इत्तिफाककरै कि फलां अमूर वा-  
अमूर वाकिफानी या कियती या कानूनी का तस्फिया फी मावैन उनके होना चाहिये तो उनको इस्तिथार है कि अमूर मजकूर को दतौर अमूर तनकीह तलव के कलमबन्द करके एक करारनामा तदरीरी कि जब अदालत निस्सव फामल तनकीह तलव मजकूर के अपनी राय मुतजम्मिन असदात वा नफी के कायम करै—

का मुस्तहक या ऐसी जिम्मेदारी का पाबन्द करारदिया जाय जिसकी सराहत इकरारनामा में मुन्दर्ज हो—

( वे ) कोई जायदाद जो इकरारनामा में मुन्दर्ज और मुक्तदमे में मुतनाजिआफियाहो एक फरीक दूसरे फरीक के या हस्ब हिदायत दूसरे फरीक के हवाले करै—या

( जीम ) फरीकैन में से एक या ज्यादा फरीक कोई खास फेल जो इकरारनामे में मजकूरहो और अम्र निर्जई से मुतअल्लिकहो अमल में लायें या उससे बाज रहें—

७—अगर बाद करने उस कदर तहकीकात के जो मुनासिब मालूमहो दफा १५१

अदालत फैसला कर सकती है मगर उसको इतमीनानहोजाय कि इकरारनामा नेकनीयती से कियागया

अदालतको इस अम्र का इतमीनान हो—

( अलिक ) इकरारनामा मुखासमीन की तरफ से बाजाब्ता मुकम्मिल हुवा—

( वे ) कि उनको अम्र तस्फिया तलब मजकूर के इन्फिसाल मे हकीकी गरजहै और

( जीम ) अमर मजकूर काविल तजवीज व इन्फिसाल है तो उस को लाजिम है कि अमर तनकीही को कलमबन्द कर के उसकी तहकीकातकरै और अपना फैसला या तजवीज बनिस्वत उसके उसी तरहसे लिखे कि गोया अदालतमें खुद उसको अम्र तनकीह तलब करार दियाथा—

और अदालतको लाजिमहै कि उस फैसला या तजवीज की बिनापर निस्वत अम्र मजकूर के वमूजिव शरायत इकरारनामा अपनी तजवीज सादिरकरै और वमूजिव तजवीज सादिरशुदा के डिगरी सादिर होगी—

## आर्डर १५

जिंक उस सूरत का जब मुकदमा समाप्त  
अव्वलपर फैसल किया जाय—

दफा १५२

१—अगर मुकदमा की समाप्त अव्वल के वक्त मालूम हो कि फरी-  
अगर फर्गकिन में व-  
हस्त न हो

कैन में निस्वत किसी मसलै कानूनी या अम्र वाकिया  
के बहस नहीं है तो अदालत को जायज होगा कि फैसला  
उसीवक्त सादिर करै—

दफा १५३

२—जिस हालमें कि एक से ज्यादा मुद्दा अलेह हों और उनमें से किसी  
अगर चन्द मुद्दा अले-  
हुस्मे से किसी एक  
की इन्तिलाफ न हो

एक को किसी अम्र कानूनी या वाकियाती में मुद्दै के  
साथ इख्तिलाफ न हो तो अदालत को इख्तियार है कि  
उस मुद्दा अलेह के हकमें या उसके खिलाफ मुद्दा  
फौरन फैसला सादिर करै और मुकदमे की कार्रवाई सिर्फ दीगर मुद्दा अ-  
लेहुस्मे मुकामिले में जारी रहैगी—

दफा १५४

३—( १ ) जब फी मावेन मुतसासमीन की बहस किसी अम्र कानूनी  
अगर फी मावेन मुत-  
सासमीन बहस हो

या वाकियाती की हो और अमूर तनकीह तलब हस्त  
तरीका मुतजिकरे आला अदालत ने मुकदमे किये हों  
और अदालत को इतरीनान हासिल हो कि निस्वत किसी अमूर तन-  
कीह तलब के जो मुकदमे के फैसले के लिये काफी हों कोई और द-  
लील या सबूत सिवाय उसके जो फरीकैन फिलफौर पेश करसकते हैं  
जरूर नहीं है और मुकदमे में फौरन कार्रवाई करने से कुछ बेइन्साफी  
न होगी तो अदालत को इख्तियार होगा कि उन अमूर तनकीहतलब  
की तजवीज शुरू करै और अगर तजवीज अमूर मजहूर की वास्ते इ-  
न्तिलाफ मुकदमा के कानूनी हो तो मुताबिक उसके तजवीज सादिर कर  
दे जाम हुस्मे कि सम्मान सिर्फ दगरज अगर देने अमूर तनकीह तलब  
के जारी हुवा हो या वाम्ने इन्तिनान कि मुकदमे के—

अगर यह यह है कि जब सम्मान सिर्फ दगरज अगर देने अमूर तन-  
कीह तलब के सादिर हो तो फरीकैन मुकदमा या उनके वकील हाजिर  
हों और कोई उनमें से एतराज न करै—

( २ ) अगर वह तजवीज वाम्ने इन्तिनान - मुकदमे के काफी न हो

तो अदालत मुक़द्दमे की समाप्त मज़ीद मुल्तवी करके कोई तारीख़ वास्ते पेश करने सबूत मज़ीद या और दलायल के जो बलिहाज हालात मुक़द्दमा जरूरी हों—मोअय्यन करैगी—

४—अगर सम्मन वग़रज इन्फिसाल क़तई मुक़द्दमे के जारी हुआ हो दफ़ा १५५ अदम पेशी सबूत | और कोई फ़रीक़ बिला वजह काफ़ी उस सबूत को जिसपर उसको इस्तदलाल हो पेश न करै तो अदालत को इस्तिथार होगा कि फ़ौरन् तजवीज़ सादिर करदे या अगर उसकी दानिस्त में मुनासिव हो तो तनकीहात क़रार देने और उनको क़लमबन्द करने के बाद मुक़द्दमे को वास्ते पेश होने उस शहादत के जो वर बिनाय तनकीहात मजकूर उसको फैसल करने के लिये जरूरी हो मुल्तवी रखै—

## आर्डर १६

### गवाहों की तलबी और हाज़िरी

१—किसी वक्त बाद इरजाय नालिश के फ़रीक़ैन को इस्तिथार है कि दफ़ा १५६ सम्मन हाज़िरी वास्ते | अदालत में या उस ओहदेदार के ख़बर जो इस काम अदाय शहादत या दर के लिये मुक़र्रर हो दरख़वास्त देकर सम्मन उन लोगों पेशी दस्तावेज़ के नाम हासिल करलें जिनकी हाज़िरी अदाय शहादत या दस्तावेज़ पेश करने के लिये जरूरी हो—

२—( १ ) जो शख्स इजराय सम्मन की दरख़वास्त करै उसको ला- दफ़ा १६० बवक्त दरख़वास्त इजराय | ज़िम है कि सम्मन के दिये जाने से पहिले और उस य सम्मन खर्चा गवाहान मिथाद के अन्दर जो अदालत ने मुक़र्रर की हो वा- अदालत में दाखिल क- वत ज़ादराह वग़ैरह इख़राजात उस शख्स के जिसपर रना चाहिये सम्मन भेजा जाय जिसक़दर रुपया उस अदालत के आमदरफ़्त के लिये जिसमें तलबी उसकी कीगई और नीज़ वाघत एक रोज़ की हाज़िरी के अदालत काफ़ी समझे अदालत में दाखिल करै—

( २ ) उस रुपये की तादाद तजवीज़ करने में जो इस कायदे की माहिरानफन् | रु से दिया जाय अदालत को इस्तिथार हासिल है कि दर सूरत उन लोगों के जो वहाँसियत माहिरानफन् गवाही में तलब हुये हों एक माविजा माकूल दिलाये निस्वत उस वक्त के जो अदाय शहादत

में और जो किसी अमल खास मुतअल्लिक वफन के करने में कि जो उस मुक्तदमे के लिये जरूरी हो सर्फ हुआ हो—

( ३ ) अगर वह अदालत मुहकमा हाईकोर्ट के मातहत हो तो शहर इखराजात का रह इखराजात मजकूरके मुकर्रर करने में उन कवाअद का लिहाज रहेगा जो उस वारे में मुकर्रर हों—

दफा १६१

३—मुवलिग जो वावत खर्चा मजकूर के अदालत में जमा किया जा खर्चा गवाह को पेश करवक्त तामील होने सम्मन के उस शख्स के खर्चा किया जाना हाजिर किया जायगा जिसके नाम का वह सम्मन हो अगर उसकी तामील उमकी जात पर गुमकिन हो—

दफा १६२

४—( ५ ) अगर अदालत को या उस ओहदेदार को जो इस काम अगर और काफी रकम के लिये अदालत से मुकर्रर हुआ हो यह दरयाफ्त दाखिल की जाय हो कि जो मुवलिग अदालत में दाखिल किया गया वह इखराजात मजकूर या मआविजा माकूल के अदा के लिये काफी नहीं है तो अदालत यह हिदायत करसक्ती है कि शख्स तलबशुद को उस कदर जर मजीद दिया जाय जो वावत इखराजात मजकूर के जरूरी मालूम हो और अगर जर मजकूर अदा न किया जाय तो अदालत यह हुक्म देसक्ती है कि जर मजीद मतलूमा उस शख्सकी जायदाद मन्कुना की कुर्की और नीलाम से वसूल किया जाय जिसने सम्मन हासिल किया हो या अदालत शख्स तलबशुद को वगैर लेने उमके इजहारके खर्खत करे या जर मजकूर के वसूल करने और उस शख्स को रगमत करने या ने दोनों बातोंका जैसा कि ऊपर बयान किया गया हुक्म दे—

वसूल करने और उस शख्स को रुखसत करने याने दोनों बातोंका जैसा कि ऊपर बयान किया गया हुवे मदे—

५—हर सम्मन में जो बहुकम हाजिर होने शख्स तलबशुदः के वास्ते दफा १६३ हाजिरी के वक्त और मुकाम और गरज की सम्मन में सराहत होगी अदाय शहादत या पेश करने दस्तावेज के हो सराहत उस वक्त और मौका के होगी जिस वक्त और जहां उसको हाजिर होना जरूर है और नीज इसके कि हाजिरी वगैरज अदाय शहादत या दरपेशी दस्तावेज या दोनों अमूके जिये मतनूय है और अगर शख्स तलबशुदः को किसी दस्तावेज खास के पेश करने का हुक्म हुवा हो तो कैफियत उस दस्तावेज की सेहत मुनासिब के साथ सम्मन में लिखी जायगी—

६—हर शख्स दस्तावेज के पेश करने के लिये बिदून इसके कि वास्ते दफा १६४ सम्मन निस्वत पेश देने इजहार के तलब हो तलब हो सकता है और अगर करने दस्तावेज के कोई शख्स जो सिर्फ वास्ते दरपेशी दस्तावेज के तलब हुआ हो दस्तावेज पेश करने के लिये असालतन हाजिर न हो बल्कि किसी और शख्स से दस्तावेज को पेश कराये तो उसकी निस्वत यह समझा जायगा कि उसने सम्मन की तामील की—

७—अदालत को इस्तिथार है कि किसी शख्स हाजिर अदालत को दफा १६५ अशख्स हाजिर अदालत को निस्वत अदाय शहादत या दरपेशी दस्तावेज के हुक्म देने का इस्तिथार हुक्म दे कि वह अदाय शहादत करै या ऐसी कोई दस्तावेज पेश करै जो उस वक्त और वहीं उसके कब्जे या इस्तिथार में हो—

८—जो सम्मन इस आर्डर के बमोजिव जारी किया जाय उसकी तामील दफा १६६ सम्मन की तामील किस हजुल इमकान करीव करीव उसी तौर से की जायगी जिस तरह मुद्दा अल्लेह पर सम्मन के तामील करने का हुक्म है और वह कवाअद जो आर्डर ५ में दरवाब सबूत तामील सम्मन के मुन्दर्ज हैं हर सम्मन से मुतअल्लिक होंगे जिसकी इस कायदे के बमोजिव तामील की जाय—

९—हर एक सूरत में सम्मन की तामील इतने असे पहिले उस वक्त दफा १६७ तामील सम्मन का बल के जो शख्स मतलूब की हाजिरी के लिये सम्मन में



मुन्दर्जहो कीजायेगी कि इसको वगैरज तहय्या और तयमनाजिल के उस मुकामतक जहां उसका हाजिर होना जरूर है मुहलत काफी मिले—

दफा १६८

१०—( १ ) अगर वह शख्स जिसके नाम सम्मन वास्ते हाजिरी करवाई अगर गवाह स-  
म्मन की तामील न करे | वगैरज अदाय शहादत या वगैरज दरपेशी किसी द-  
 स्तावेज के जारी हुवाहो मुताबिक सम्मन मजकूर के हाजिर न हो या दस्तावेज पेश न करे और अगर तामीलकुनिन्दः ने तामील की कैफियत अजरुय हलफ तहरीर न की हो तो अदालत को लाजिम है—वरना दरसूने कि तामील की तसदीक अजरुय हलफ होगई हो इस्तिथार है कि तामीलकुनिन्दः का इजहार दरवाच तामील या अदम तामील सम्मन के खुदले या किसी और अदालत से लिवाये—

( २ ) अगर अदालत इस बात के बाबर करने की वजह रखती हो कि ऐसी शहादत का अदा या दस्तावेज का पेशहोना जरूरी है और शख्स मजकूर वगैर उजर जायज के मुताबिक सम्मन मजकूर हाजिर नहीं हुवा या उसने दस्तावेज पेश नहीं की या क्रुदन् तामील सम्मन से गुरेज किया तो अदालत मजाज होगी कि इश्तहार इस हुक्म के साथ मुश्तहर कराये कि वह उसवक्त और मौके पर जो इश्तहार में मुन्दर्ज हो हाजिर होकर अदाय शहादत न करे या दस्तावेज पेशकरे और एक पक्ष उस इश्तहारकी उस मकान के दरवाजे बेरुनी पर या उसके किसी नुमायां मुकाम पर आवेजां कीजायगी जिमें शख्स मजकूर मामूलन् रहताहो—

( ३ ) वयवज या ववक्त इजराय इश्तहार मजकूर या उसके बाद किसी वक्त अदालत मजाज होगी कि अगर मुनामिब समझे एक किता वारन्ट साथ या वगैर जमानत के वास्ते गिरफ्तारी शख्स मजकूर के जारी करे और यह हुक्मदे कि जायदाद उस शख्स की उम मिहलत तक जो अदालत मुनामिब समझे और जो कर्ती के कुल सार्नी और उम जुर्माने की नायाद से ज्यादा न हो जो क्रायदे १२ के बमोजिब उसपर लायद होम क्लार्क करे कीजाये—

मगर शर्त यह है कि कोई अदालत मतालिया खर्कीफा जायदाद गैर मन्कूला की कुर्की का हुक्म न देसकेगी—

११—अगर शख्स मजकूर उसकी जायदादकी कुर्की के बाद किसी दफा १६६

अगर गवाह हाजिर हो तो कुर्की वागुजाशत होसकी है	वक्त हाजिर होकर अदालत को इस बातसे मुतमइ-यन करदे—
---	--

( अलिफ ) कि उसने वगैर उजुर जायज सम्मनकी तामील नहीं की और न क़रदन् सम्मन की तामील से गुरेज किया—और

( बे ) अगर वह उस वक्त और मौक़ेपर जो इश्तहार तहत कायदा अखीर मजकूरे वाला में मुन्दर्ज है हाजिर न हो तो यह कि उसको इस क़दर मुदत पेशतर से इश्तहार की इत्तिला नहीं हुई थी कि हाजिर होसका—

तो अदालत यह हुक्म देगी कि जायदाद कुर्की से वागुजाशत कीजाय और कुर्की के इख़राजात की निस्वत जो हुक्म मुनासिब समझै सादिर करैगी—

१२—अगर शख्स मजकूर हाजिर न हो या हाजिर आये मगर अदा-दफा १७०

कारवाई अगर गवाह हाजिर न हो	लत को इसतौर से मुतमइयन न करै तो अदालत म जाजहोगी कि उसपर उसकी हैसियत के मुताबिक और जुम्ला हालात मुक़दमा पर लिहाज करके अपनी राय से किसी क़दर जुर्माना आयद करै जो पांच सौ रुपये से ज़्यादा न हो और यह हुक्म दे कि उसकी जायदाद या जुजो उसका कुर्क होकर नीलाम कियाजाये या अगर कायदा १० के वमूजिव कुर्क होगया हो तो वास्ते अदाय जुम्ला इख़राजात मुतअल्लिका कुर्की मजकूर और जर जुर्माना मुतज़िकरे वाला के—अगर कुछ जुर्माना हो—नीलाम कियाजाय—
----------------------------	---

मगर शर्त यह है कि अगर वह शख्स जिसकी हाजिरी मतलूब है खर्चा और जुर्माना मजकूरे वाला अदालत में अदाकरदे तो अदालत जायदाद की कुर्की से वागुजाशत होनेका हुक्म सादिर करैगी—

१३—अहक़ाम कुर्की और नीलाम जायदाद वतामील इजराय डिगरी नदीद

कुर्की का तरीका | जहांतक मुनअल्लिक होसकें कुर्की और नीलाम तहत आ-

डर हाजा से मुतअल्लिक समझे जायेंगे गोया कि वह शख्स जिसकी जा-  
यदाद हस्व मजकूर चुर्क हुई एक मद्यून डिगरी है—

दफा १७१

१४—वपावन्दी अहकाम इस गजमूआ के जो अदालतमें हाज़िर रहने  
अदालत अपनी मर्जी और हाज़िर होने के वाय दे है, या वपावन्दी किसी  
ने घराबात और को कानून नाफिडुल वक़्त के अगर अदालत को किसी  
वक़्त ऐसे शख्स का इजहार लेना जरूरी मालूम हो  
माली है

जो फरीक मुकद्दमा न हो और जिसको किसी फरीक  
ने वतौर गवाहके नामजद न किया हो तो अदालत मजाज होगी कि खुद  
अपनी मर्जी से शख्स मजकूर के नाम सम्मन इस हुक्म के साथ जारी  
कराये कि वह तारीख मुक़र्रर पर वतौर गवाह के अदाय शहादत करे  
या कोई दस्तावेज़ मज़बूजा अपनी पेशकरे और अदालत मजाज होगी  
कि उसका इजहार वतौर गवाह के के या उससे दस्तावेज़ मजकूर पेश  
कराये—

दफा १७२

१५—वपावन्दी मुतअल्लिके कायदा मुल्हकै वालाके जिस शख्स के  
मजबूतानिन्के नाम नाम सम्मन किसी मुकद्दमे में हाज़िर होकर शहादत देने  
सम्मन जारी हुय हो के लिये जारी हुआ हो उसको लाजिम है कि उस  
वक़्त और मौके पर हाज़िर हो जो सम्मन में इस ग-  
रज से मुक़र्रर हुवा हो और जिस शख्स के नाम स-  
म्मन दस्तावेज़ पेश करने के लिये जारी हो उसको ला-  
जिम है कि उस वक़्त और मौके पर खुद हाज़िर होकर दस्तावेज़ पेश  
करे या दूसरे से पेश कराये—

जिम है कि उस वक़्त और मौके पर खुद हाज़िर होकर दस्तावेज़ पेश  
करे या दूसरे से पेश कराये—

अगर वह हाजिर जामिनी मजदूर दाखिल न करै तो अदालत उसकी निस्वत हुक्म देसक्ती है कि वह दीवानी जेल में कैद किया जाय—

१७—अहकाम कदाचिद १० लगायत १३ जहांतक मुतअल्लिक होसकै दफा १७७  
कदाचिद १० लगायत १३ का तसल्लुक उस शख्स से मुतअल्लिक समझे जायेंगे जो सम्मन के फिकरह अब  
हुक्म के बमूजिा हाजिर होकर बिला बजह जायज और दफा १९  
खिलाफ अहकाम कायदा १६ के अदालत से चलाजाय—

१८—अगर कोई शख्स जो वारन्ट के बमूजिव गिरफ्तार होकर अ-दफा १७८  
कारवाई अगर गवाह दालत के खबरू बहिरासत हाजिर कियाजाय फरीकैन  
गिरफ्तारखुद शहादत मुकदमा या उनमें से किसीकी गैर हाजिरी के सबब  
अदाया दस्तावेज पेश से वह शहादत अदा न करसकै या वह दस्तावेज पेश  
न करसकै जिसके अदाया पेश करने के लिये उसकी तलबी हुईथी तो अदालत मजाज होगी कि उससे हाजिर जामिनी मा-  
कूल या और जमानत उस वक्त और मौक़ेपर होजिर होने के लिये जो  
मुनासिब मुतसव्विर हो तलब करै और बाद दाखिल होने ऐसी हाजिर  
जामिनी या जमानत के उसको रिहाकरै और अगर वह हाजिर जामिनी  
या जमानत मजदूर दाखिल न करै तो अदालत मजदूर उसकी निस्वत  
यह हुक्म देसक्ती है कि वह दीवानी जेलमें कैद कियाजाय—

१९—किसी शख्सको अदालत में अदाय शहादत के लिये असाहत न दफा १७९  
किसी शख्सको अदा- हाजिर होनेका हुक्म नहीं दिया जायेगा इला उस सू-  
लत हाजिरी का हुक्म रतमें कि उसकी सकूनत—  
न देना चाहिये इला  
उस मूरत में कि वह  
हदूद मुकर्रर के अन्दर  
रहतीही

(अलिक) अदालत के इख्तियार समाश्त इब्तिदाई मागूली की हदूद अर्जी के अन्दर हो—या

(बे) हदूद अर्जी मजदूर के बाहर मगर ऐसी जगह पर हो जो मुकाम अदालत से पचास मील से कम फासिला पर हो या (अनर दरमियान मुकाम सकूनत शख्स मजदूर और मुकाम अदालत के रेल या स्टीमर की रद् या और सवारी आम मुकर्रर कुल फासिला के अर्धे हिस्सा के



किसी और रोज मुल्तवी करना किसी बज्रह से जो लिखी जायेंगी जरूरी हो—

२-अगर उस तारीखपर जो बाद इल्तुवाय के समाप्त के लिये दफा १५७ अगर फरीकैन बरोज मुक्करर हुई हो फरीकैन या उनमें से कोई हाजिर होने मुक्कररा हाजिर न हो से कासिर रहै तो अदालत को इस्तिथार होगा कि मुक्दमा को उन तरीकों में से किसी एकके बमूजिव फैसल करै जो अ. जरूय आर्डर नौके मुक्करर हुये हैं या ऐसा और हुक्म सादिर करै जो उसके नजदीक मुनासिव हो—

३-अगर फरीक मुक्दमा जिसको मोहलत मिली हो अपना बजह सबूत अदालत मुक्दमा फौत- पेश न करै या अपने गवाहों को हाजिर न कराये या ल करसक्ती है गो कि और कोई अन्न जो वास्ते जारी रहने कार्रवाई मुक्दमे के कोई फरीक बजह सबूत बगैरह पेश न करै जरूरी हो और जिसके लिये मोहलत मिली हो बजा न लाये तो अदालत वावस्फ उस अदम पैरवी के मुक्दमे को उसी वक्त फैसल करने की मजाज होगी—

## आर्डर-१८

बावत समाप्त मुक्दमा और लेने

इजहारात गवाहों के

१-शुरूअ करने का इस्तहकाक मुद्दै को है इस्ला उस सूरत में कि मु- शुरूअ करने का इस्तह- दाअलेह मुद्दै के वयान किये हुये वाकियात को तस- काक लीम करके यह इसरार करता हो अजरूये कानून या बरविनाय उन वाकिआत मज्जीद के जो खुद मुद्दाअलेह वयान करै मुद्दै उस दादरसी के किसी जुजो का मुस्तहक नहीं है जिसका वह दावा करता है ऐसी सूरत में शुरूअ करने का इस्तहकाक मुद्दाअलेह को होगा—

तशरीह  
दफा १७६

२-( १ ) मुक्दमे की समाप्त के लिये जो रोज मुक्करर हुआ हो उस हालात मुक्दमा का रोज या जिस रोज पर मुक्दमे की समाप्त मुल्तवी वयान और बजह सबूत की गई हो उस रोज वह फरीक जो शुरूअ करने का पेश करना इस्तहकाक रखता है अपने मुक्दमे के हालात वयान

दफा १७६

करने शुरू करैगा और-वताईद उन अमूर तनकीही के जिनका साबित करना उसके जिम्मे है अपना बजह सबूत पेश करैगा—

दफा १८०— ( २ ) तब फरीकसानी अपने मुकद्दमे के हालात बयान करके जो सबूत-रखता हो-पेश करैगा और उसवक्त उसेको इस्तिथार है कि तमाम मुकद्दमे की निस्वत आम तौरपर अदालत में गुजारिश हाल करै—

( ३ ) जिस फरीक ने शुरू किया हो बाद अजां वह तमाम मुकद्दमे की निस्वत आम तौर पर जवाबुल् जवाब देनेका मुस्तहक होगा—

दफा १८०

३-जब चंद अमूर तनकीह तलब हों और उनमें से बाज अमूर का सबूत अगर चंद अमूर संवृत फरीकमानीपर हो तो शुरू करनेवाले फरीक को तनकीह तलब हों इस्तिथार है कि अगर चाहे उन अमूर का सबूत उर्मा यक्त दाखिल करै या पीछे से बतौर जवाब सबूत गुजरानीदा फरीकसानी के पेश करै और पिछली सूरत में शुरू करनेवाला फरीक मजाज होगा कि जब फरीकमानी अपना कुल सबूत दाखिल कर चुके अपनी तरफ से उन बाज अमूर की यावत सबूत दे और उसवक्त फरीकसानी को इस्तिथार होगा कि शुरू करनेवाले फरीक ने जो शहादत इसतौर पर पेश की हो खास उसी का जवाब दे लेकिन उमवेक्त शुरू करनेवाला फरीक तमाम मुकद्दमे की निस्वत एक जवाब आम देने का मुस्तहक होगा—

४-इजद्वारात गवादान हाजिरके जवानी सरे इजलास मज के खबर ली गवाहों का इजहार नै। जेराहदायत और इहतमाम जातीजजकेलिये जायेंगे- इजलास होगा

तो वह इजहार जो कलमबन्द किया जाय गवाह को उस जवान में तर्जुमा होकर समझा दिया जायगा जिस जवान में उसने इजहार दिया हो-

७-इजहार जो हस्व दफा १३८ कलमबन्द किया जाय वह मुताबिक दफा १८५ इजहार हस्व दफा १३८ फार्म गुर्ररों कायदा ५ के होंगें और लाजिम है कि वह पढ़कर सुना दिया जाये और उसपर दस्तरपत किये जायें और अगर कुर्ररत हो तो उसका तर्जुमा समझा दिया जाय और उसकी इसलाह कर दी जाय गोया कि वह इजहार हस्व कायदा मजकूर कलमबन्द हुआ-

८-अगर इजहार गवाह का जजके हाथ से न लिखा जाय जज को दफा १८४ इजहार का खुलासा प- लाजिम है कि जैसे हर गवाह का इजहार होता जाय गर जज खुद इजहार हर गवाह के इजहार का खुलासा बतौर यादाश्त के न लिखे- लिखता जाय और लाजिम है कि जज ऐसी यादाश्त अपने हाथ से लिखे और उस पर दस्तेखत करे और वह भिसिल में शामिल की जायेगी-

९-जहां कि जवान अंगरेजी अदालत की जवान नहीं है लेकिन दफा १८५ इजहार जवान अंगरेजी तमाम फरीक मुकदमा जो असालतन हाजिर हों और में किसूरत में लिखा विकला-उनके जो विकालतन हाजिर हों उस शहादत जायगा को जो अंगरेजी में अदा की जाय अंगरेजी में लिखने पर एतराज न करे तो जज उसको अपने हाथ से अंगरेजी में लिख लेगा-

१०-अदालत को इख्तियार है कि खुद अपनी खुशी से या किसी कोई खास सवाल व ज- फरीक या उसके वकील की दरख्वास्त पर किसी वाय कलमबन्द हो सके है खास सवाल और उसके जवाब को या किसी एतराज को जो किसी सवाल पर किया जाय कलमबन्द करे बशर्ते कि इस बात की कोई बजह खास पाई जाय-

११-अगर किसी सवाल पर जो किसी गवाह से किसी फरीक या सवालात भिनपर एत- उसके वकील को एतराज हो और अदालत उस राज हो और अदालत सवाल का पूछना जायज रखे तो जजको लाजिम है उनका पूछना जायज कि सवाल और उसका जवाब और एतराज एतराज रखे करनेवाले का नाम और उस की दावा आनी तजवीज कलमबन्द करे -



दफा १८८

१२—अदालत को इस्लियारहै कि निस्वत वजा किसी गवाह जो इज्जत रायनिस्वत वजा गवाहान देनेके वक्त पार्जिजय जो कुछ लिखना जरूर समझ लिखे

दफा १८९

१३—जिन मुकदमात में कि अपील जायज न हो यह बात जरूर इजहार का खुलासा मुकदमात में कबिल अपील में होगी कि इजहारत गवाहोंके लफ्ज बलफ्ज लिखेना वलिक जज को लाजिम होगा कि जैसे हर गवाह का इजहार होताजाय हरगवाह के इजहार का खुलासा बतौर यादाश्त लिखता जाय और लाजिमहै कि जज ऐसी यादाश्त अपने हाथ से लिखकर उसपर अपने दस्तखत करे और वह यादाश्त मिसिल में शामिल कीजायगी—

दफा १९०

१४—( १ ) अगर जज उस यादाश्त के लिखने से जो इस आर्द्ध अगर जज खुलासा इजहार लिखने से मा-जूरहो तो माजूरी की वजह लिखेगा की वमूजिव लिखनी चाहिये माजूर हो तो वह अपनी माजूरी की वजह कलमबन्द करायेगा और यादाश्त अपनी जवान से सरे इजलास लिखवादेगा—

( २ ) ऐसी हर यादाश्त मिसिल में शामिल कीजायगी—

दफा १९१

१५—( १ ) अगर कोई जज बसवय फौत करने या बदल जानेके या जजका इस्लियार निस्वत कर्गिवा मुनमजिक उस इजहार के जो रिमी दूसरे जज ने कलमबन्द लिखा कीगई हो उसी तरह समझ करे कि गोया खुद उमीने इजहार या यादाश्त मजूर को लिखा या मुरत्तिव किया था या अपने इहतमाम में इम्न कवायद मजूर लिखवाया या मुरत्तिव कराया था और मुकदमे में कर्गिवा उम मुकान से शुल्म करे कि जहां पर पहिले हाकिम ने उसका बोदा हो—

( २ ) कायदा तहवी ( १ ) के अहतमाम जहां तक मुनमजिक हो-तके उन मुकदमे में मुनमजिक समझे जायेंगे जो रिमी जेमे मुकदमे में लीजाय जो दफा २४ की नये मुनमजिक होगा हो—

१६-(१) अगर कोई गवाह अनकरीब अदालत के इलाके इस्ति-दफा १६२  
गवाह का इजहार फौरन लिया जायता है यार से बाहर जानेवाला हो या वइजहार दीगर वजह  
काफी के अदालत का इतमीनान किया जाय कि उसे  
का फौरन इजहार लेना जरूर है तो अदालत को इस्तिथार है कि  
किसी फरीक या खुद गवाह की दरख्वास्त पर वाद खूब होने मुकदमे  
के किसी वक्त गवाह मजकूर का इजहार उसीतरह ले जिसतरह कबूल  
अर्जों हुक्म है—

(२) अगर ऐसे गवाह का इजहार फौरन खबर फरीकैन के न लिया  
जाय तो उसका इजहार लेने के लिये जो तारीख मुकरर हो  
उसकी ऐसी इत्तिला जो अदालत काफी समझै फरीकैन को  
दीजायगी—

(३) इजहार जो इसतौर से लिया जाय गवाह को पढ़कर सुना दिया  
जायगा और अगर वह उसकी सेहतको कबूल करै तो उसपर  
उसके दस्तखत किये जायेंगे और अगर जरूरत समझी जाय  
तो जन उसकी इसलाह करके उसपर दस्तखत करेगा और  
वह इजहार मुकदमा की किसी समाअत के वक्त पढ़ेजाने के  
लायक होगा—

१७-अदालत को इस्तिथार है कि मुकदमा की किसी नौबत पर दफा १६३  
अदालत गवाह को किसी गवाह को जिसका इजहार हो चुका हो अपने  
फिर तलब करसकी हुजूर फिर तलब करै और वरिआयत अहकाम मुन्दर्जे  
और इजहार लेसकी है कानून शहादत मजरिया वक्त उससे ऐसे सवाल  
करै जो अदालत को मुनासिब मालूमहों—

१८-अदालत को इस्तिथार है कि मुकदमे की किसी नौबत पर जदीद  
इस्तिथार अदालत मोआयना किसी जायदाद या शय का करै जिस के  
निस्वत मुआयनाके मुतअल्लिक मुकदमे में कोई रावाल पैदाहो—

## आर्डर-१९

### तहरीरी बयान हलफी

१-हर अदालत हरवक्त मजाज है कि अगर वजह काफी पाईजाय दफा १६४  
१६

इलिनियार सङ्गुहकम  
निरुक्त इसके कि कोई  
ज्ञात अत्र तहरीरी  
वयान हलफ़ी की होते  
साविन किया जाय

तो हुक्म दे कि उन शरायत पर जो बदानिस्त पड़ा-  
लत माकूलहों कोई खास अर्द्ध या अमूर बाकिबानी  
तहरीरी वयान हलफी की व से सादित कियेजायें या  
किसी गवाह का तहरीरी वयान हलफी मुकदमे की  
समाप्ति के वक्त पढाजाय—

यगर शर्त यह है कि अगर अदालत को दर्याप्त हो कि कोई फरीक वराय नेकनीयती किसी गवाहको इस गरज से इजहार के लिये हाजिर कराया चाहता है कि उससे जिरहके सवालान्त किये जायें और उस गवाह का हाजिर करना मुमकिन हो तो हुजूम इस मजमून का न दिया जायगा कि ऐसे गवाह का इजहार वजरिये तहरीरी बयान हलफी के लिया जाय-

२-(१) जायज है किसी दरख्वास्त पर शहादत वज़रिये तहरीरी हुक्म निस्वन हाज़िरी वयान हलफ़ी के लीजाय लेकिन अदालत मजाज़ है कि तहरीर कुनिन्द वयान फरीक़नेमें से किसी फरीक़ की दरख्वास्त पर तहरीर हलफ़ी के सवालनात कुनिन्द वयान हलफ़ी को जिरहके सवालनात के लिये निगह के लिये फरीक़ होनेका हुक्म दे—

( २ ) ऐसी हाजिरी अदालत में होनी चाहिये जहाँ उस हाल में कि तद्वरीरकुनिन्दः वयान हलफी अदालत में असाततन् हाजिर होने से माफहो या अदालत और तरह की हिदायत करै—

३-( १ ) तहरीरीं बयानात हलफी में सिर्फ वही जाहिर  
 तहरीरीं बयानात हल- किये जायेंगे जिनको तहरीरकुनिन्दः अपने इल्म खास  
 फी निज अफर पर से साबित करसक्ताहो वजुज उस मूरतके कि दगल्ल्या  
 मरद ह                      स्त हाय दगमियानी की निस्वत हों कि उम बवत ना-  
 मबुर्देह के बयानात जिनपर वह यकीन रखता हो मकतून होसके ह  
 वशतें कि यकीनकी वजह जाहिर कीजाय-

## आर्डर-२०

### तजवीज और डिगरी

१-अदालत को लाजिम है कि मुकद्दमे की समाप्त हो चुकने के दफा १६८ तजवीजें फर्मा सुनाई जायगी । बाद तजवीज उसी वक्त या किसी तारीख आयन्दा पर जिसकी इत्तिला हस्वजाब्ता फरीकैन या उनके विकला को दी जायगी सरे इजलास सुनादे—

२-जायज है कि जज ऐसी तजवीज सुनाये जो जज साबिकने जिस दफा १६९ इस्तिहार ऐसी तजवीज सुनाने का जो जज साबिकने लिखी हो । का वह कायम मुकाम है लिखी हो मगर सुनाई न हो—

३-जब तजवीज सुनाई जाय उसी वक्त जज सरे इजलास उसपर दफा २०२ तजवीज पर दस्तखत किये जायेंगे । अपने दस्तखत और तारीख लिखेंगे और जब एक मरतबे दस्तखत हो जायें तो तजवीजमें कुछ फिर बढ़ाया या बढ़ाया न जायगा इल्ला हस्व शरायत दफा १५२ या बरवक्त तजवीज सानी—

४-(१) अदालत मतालिवा खफ्रीफा की तजवीज में सिचाय अ. दफा २०३ अदालत मतालिवा खफ्रीफा की तजवीज में मूर तस्फिया तलब और फैसला बावत अमूर मजकूर के कुछ और लिखना जरूर नहीं है—

(२) बाक़ी जुम्ला अदालतों की तजवीज में बयान मुस्तिस्सर हीगर अदालतों की तजवीज में मुकद्दमे का और अमूर तस्फिया तलब और तस्फिया अमूर मजकूर का और तस्फिया की बजह लिखनी जरूर है—

५-जिन मुकद्दमात में अमूर तनकीह तलब करार दिये गये हों अदालत दफा २०४ अदालत अपना तस्फिया अरनी तनकीह या तस्फिया हरअम्र तनकीह तलब हरअम्र तनकीह तलब की निस्वत लिखेंगी । जुदागाना की निस्वत मये बजह लिखेंगी इल्ला उस हालत में कि भिन्जुम्ला अमूर तनकीह तलब के एक या चन्द अमूर की तनकीह वास्ते इन्फिसाल मुकद्दमे के काफी हो—

६-(१) चाहिये कि डिगरी मुताबिक तजवीज के हो—डिगरी में दफा २०६ व २२१ डिगरी में क्या क्या होते दर्ज होंगी । भिन्वर मुकद्दमा और फरीकैन के नाम और वल्दियन और कौम और पेशा और टावा की तफसील और

वयान साफ उस दादरसी का जो की गई हो या और इन्फिसाल मुकदमाका लिखा जायगा—

( २ ) हर डिगरी में तसरीह मिकदार खर्च की होगी जो मुकदमे में पड़ा हो और यह कि किरा कदर खर्चा किस हिसाब से किस किस फरीक के जिम्मे और किस जायदाद पर होगा लिखा जायगा—

( ३ ) अदालत मजाज है कि इस अम्रकी हिदायत करे कि मुकदमे का खर्चा जो एक फरीक को दूसरे से पाना हो उस रकम से मुजरा दिया जाय जिसको खुद फरीक तसलीम करे या जो उस के जिम्मे हिसाब से निकले—

दका २०५

७—डिगरी पर तारीख तजवीज सुनाने की लिखी जायगी और जब डिगरी की तारीज जजको इतमीनान होजाये कि डिगरी मुताबिक तजवीज के लिखी गई है तो वह डिगरी पर दस्तखत करेगा—

जदीद

८—अगर तजवीज सुनाने के बाद मगर डिगरी पर दस्तखत करने से बर्गवाई उन मूरत में पहिले जज अपने ओहदे से अलाहिदा होजाय तो कि जब जज डिगरी जो डिगरी मुताबिक तजवीज मजकूर के तैयार कीजाय पर दस्तखत करने से उसपर दस्तखत उसका जानशीन ओहदा करसکتा है पहिले अपने ओहदे से अलाहिदा होना या अगर अदालत का बजूद ही न रहा हो तो उस अदालतका जज दस्तखत करसکتा है जिसके मातहत अदालत मजकूर रही हो—

मजकूर के विलयवज उसके वाजिबुल अदा होगा लिखी जायगी—

११—( १ ) जब और जिस हदतक कोई डिगरी वास्ते अदाय जर दफा २१० डिगरीमें हुक्म होसता है कि रुपयेकी अदाई वसवील किस्तबन्दी कीजाय

नज़द के हो तो अदालत को इख्तियार है कि दरसूरत होने वजह काफी के वरयक्त सादिर करने डिगरी के हुक्म दे कि जर मजकूर की अदाई मुलतवी कीजाय या कि वह वसवील किस्तबन्दी मयसूद या विलासूद

अदा किया जाय वावस्फ शरायत इकरारनामा के जिसकी रूसे जर मता-लिवा वाजिबुल अदाहो—

( २ ) वाद सादिर होने ऐसी डिगरी के अगर मदयून डिगरी दर-डिगरी के बाद किस्त-वार अदायकी निस्वत हुक्म सादिर होसताहै ख्वास्त करै और डिगरीदार राजीहो तो अदालत यह हुक्म सादिर करसक्ती है कि वरिआयत शरायत अ-दाय सूद या कुर्की जायदाद मदयून डिगरी या लेने जमानत के मदयून डिगरी से या और तौरके जो अदालत मुनासिव सम-झै तादाद डिगरी शुदः की अदाई मुलतवी कीजाय या कि वह इइकसात अदा कीजाय—

१२—( १ ) अगर मुकदमा वास्ते दिलापाने कब्ज़ा ऊपर जायदाद दफा २११ डिगरी मुतअलिक कब्ज़ा व जर वासिलात औरमन्कूला या जर लगान ( या किराया या जर वासिलातके हो तो अदालत एक डिगरी सादिर कर-सक्ती है )—

(अलिफ) वास्ते दिलापाने कब्ज़ा जायदाद मजकूर पर—

( बे ) वास्ते जर लगान ( या किराया ) या जर वासिलात के जो जायदाद मजकूर पर मुकदमे के रजुअ होनेसे पेशतर वावत किसी मुद्दतके वाजिबुल वसूल होगयाहो—या वास्ते होने तहकीकात वावत जर लगान ( या किराया ) या जर वासिलात मजकूर के—

( जीम ) वास्ते होने तहकीकात वावत जर लगान ( या किराया ) या जर वासिलातके तारीख रजुअ नालिश से उस तारीखतक—

( १ ) जब तक कि डिगरीदारको कब्ज़ा मिलै—या

( २ ) जब तक मदयून डिगरी कब्ज़ा छोड़े और उसकी इत्तिला वजरिये अदालत डिगरीदारको दे—या

— ( १ ) जब तक कि तारीख डिगरी से तीन वर्ष गुजर जायें—बाने ज  
में से जो अम्र पहिले बाकै हो—

( २ ) अगर वमूजिव अहकाम फिकरह ( वे ) या ( जीम ) तरकी  
कात का हुक्म दिया जाय तो एक कतई डिगरी बावत अ  
लगान ( या किराया ) और जर बासिलातके नतीजा त  
कीकात मजकूर के मुतादिक सादिर कीजायगी—

दफा २१३

१३— ( १ ) जब नालिश इसलिये हो कि जायदाद का हिसाब लिय  
डिगरी नालिशत जाय और उसका इन्तिजाम करार बाकई अदालतकी  
इन्तिजाम जायदाद में डिगरी के वमूजिव किया जाय तो अदालत को लाजि  
है कि डिगरी कतई सादिर करने से पहिले एक इन्तिदाई डिगरी बा  
लिये जाने हिसाब और होने तहकीकात के सादिर करे और उसके  
लावा ऐसी और हिदायत करे जो मुनासिव मालूम हो—

( २ ) जब किसी शख्स मुतवफकीकी जायदाद का इन्तिजाम अद  
लत की मारफत हो तो अगर वह जायदाद इस कदर गुनाह  
न रखती हो कि उसके तमाम देवन और जिम्मेदारियां उसमें  
वेयाक हो जायें तो निस्वत इस्तहकाक दायनान कफालतदार  
और गैर कफालतदारके और निस्वत उन देवन और जि  
म्मेदारियों के जो काबिल सयून के हों और निस्वत नखुन  
मालियत जरदाय सालाना और जिम्मेदारी दाय आयन्दा  
और लाहकाके वही कवाअद मदनकर रहेंगे जो उस अदालत  
के ददू इन्तियारान के अन्दर किसमें नालिश मुतवफिक  
इन्तिजाम जायदाद जर तजवीज हो निम्बत तरकादाय अशनाम  
इन्मालोनियद् बाने दीवानिया मुजवियजा या करारयाफता के  
उम वक्त नफाजपिजीर हों और जुम्ना अशनाम जो पैमा

डिगरी नालिश हक सक्कामें बोवत हो और अदालत डिगरी सादिर करै और जर सम्मन अदालत में न दाखिल कर दिया गया हो तो डिगरी में—

(अलिफ) उस तारीख की सराहत होगी जिसमें या जिससे पहिले जर सम्मन अदालत में दाखिल किया जाय—और

( बे ) अदालत यह हुक्म देगी कि बतारीख मुतजिकिरे फिक्करह

(अलिफ) या उससे पहिले जर सम्मन मजकूर मये

खर्चा जो डिगरी में मुद्दै पर आयद किया गया हो (अगर

कुछ खर्चा पड़ा हो ) अदालत में दाखिल होनेपर मुद्दा अलेह

जायदादपर मुद्दैको कब्जादे और मुद्दैका हक तारीख

अदाय जर सम्मन से शुरू होना मुतसब्बर होगा, लेकिन

जिस हालमें कि जर सम्मन और खर्चा (अगर कुछ

खर्चा हो ) इस तौरपर न दाखिल किया जाय तो नालिश

मये खर्चा इसमिस होजायगी—

( २ ) अगर अदालत ने दो मुकाबिल के दआवी सफाका तस्फिया

किया हो तो डिगरी में करार दिया जायगा कि—

(अलिफ) अगर दोनों डिगरी शुदः दावादर्जे में मसावीहों—तो हर

दावासफीअ का जो शरायत कायदे तहती ( १ ) की पैरवी

करै जायदादके एक जुजो मुतनासिव की निस्वत असर

पिजीर होगा जिस में कोई ऐसा जुजो मुतनासिव दाखिल

है जिसकी निस्वत किसी ऐसे सफीअका दावा जोकि श-

रायत मजकूर की पैरवी में क्रमूर करै मवस्सर होता अगर

वसवव क्रमूर मजकूर के मवस्सर न हुवा—और

( बे ) अगर डिगरी शुदः दावा दर्जे में गैर मसावीहों—तो सफीअ

अदना का दावा मवस्सर न होगा तावक्त कि सफीअ आला

शरायत मजकूरकी तामील में क्रमूर न करै—

१५— जब मुकदमा वास्ते फिस्ख करने किसी शराकत के या वास्ते दफा २१५

डिगरी नालिश फिस्ख समझाने हिसाब शराकत के हो तो अदालत मजाज

शराकत में है कि कतई डिगरी सादिर करने से पहिले एक इच्छि-

आई डिगरी सादिर करै जिसमें फरीकैत के अलाहिदा अन्ताहिदा हिस्से



कायम करै और ऐसी तारीख मुक़रर करै जिस तारीख को शराकत फ़िस्व होजायगी या फ़िस्व समझी जायगी और वास्ते लेने ऐसे हिसाब के और अमल में आने ऐसे फेलों के जो मुनासिब मालूम हों हिदायत करै—

दफ्ता २१५  
अलिफ

१६—जब मुक़दमा वास्ते समझा जाने हिसाब दाद व सितद नक़री डिगरी नालिश हिसाब मावैन मालिक और एजन्ट के हो और बाक़ी कुन मुक़दमात में जिनकी बावत कवाअद वाला में हुज्जत अहकाम सादिर नहीं हुये हैं और वास्ते दरियाफ़्त में अम्र के कि किस फ़रीक़ को किस कदर मुबलित लेना या देना है यह अम्र ज़रूर हो कि हिसाब दाखिल कराया जाये मे अदालत को लाज़िम है कि डिगरी कतई सादिर करने से पहिले ए इन्तिदाई डिगरी दरबाब लेने हिसाब के जिस तौर से मुनासिब समझे सादिर करै—

जदीद

१७—अदालत मनाज़ है कि ख़्वाह वजरिये डिगरी जिसमें हिसाब हिदायत ख़ास निस्वत लेने की हिदायत की गई हो ख़्वाह वजरिये हुक्म या हिदायत के वाद के हिदायत ख़ास दरबार तैरीका लेने हिसाब या तसदीक़ हिसाब के सादिर करै और बिलखसूस यह हिदायत करै कि हिसाब लेने में वहीजात जिनमें कि हिसाबत मुतनाज़िआ दर्ज हैं मुन्द्जें वहीजात की सच होने की शहादत वादउल नज़री मुतसव्वर हो और फ़रीक़ों को जो गरज रखते हों हिसाबत के बावत उन उजरात करने का इस्तिथार होगा जिनका उनको मशविरा दिया जाय—

नदी

१८—अगर अदालत कोई डिगरी निस्वत तक्सीम जायदाद डिगरी उन नालिश में निस्वत कब्ज़ा जुदागाना हिस्सा जायदाद मजबूर जो तक्सीम जायदाद या उरदगी हिस्से सादिर करै—

( १ ) तो और अगर जहां तक कि डिगरी ऐसी जायदाद से मुतसव्वर हो जिनकी बावत सरकारी मालतगुजारी अदा की जाय हो तो डिगरी में उन मुनासिब फ़रीक़ों के दख़्क़ करार दिखाना जो जायदाद में रह रखते हों लेकिन यह हुक्म होगा कि

तक़सीम या अल्लाहिदगी हिस्सा बज़रिये कलक्टर के या किसी मजदशुदः मातहत कलक्टर के जिसको कलक्टर ने इस बारह खास में मुक़रर किया हो मुताबिक़ इस्तक़रार मजकूर और अहकाम दफ़ा ५४ के अमल में आये—

( २ ) और अगर जहां तक कि—डिगरी किसी दीगर जायदाद और मन्कूआ से या किसी जायदाद मन्कूला से मुतमल्लिक हो—

तो अदालत को इस्तिनयार है कि तक़सीम या अल्लाहिदगी और सहक़ीक़ात मज़ीद के बसहूलतन होसकती हो एक इबतिदाई डिगरी मस-आर इस्तक़रार हकूक उन मुताहिद फ़रीक़ों के जो जायदाद में हक़ रखतेहों सादिर करै और डिगरी में ज़रूरी मज़ीद हिदायतें तहरीर करै—

१९-( १ ) अगर मुद्दाअलेह को कोई मतालिवा वपुक्ताबिले मुद्ई है दफ़ा २१६

डिगरी अगर कुछ | दावे में मुजरा दिलाया गया हो तो डिगरी में यह लिखा जा-  
मुजरा दिलाया जाय | यग़ा कि किस क़दर : तादाद याफ़तनी मुद्ई है और  
किस क़दर याफ़तनी मुद्दाअलेह और डिगरी की रू से वह तादाद दि-  
लाई जायगी जो एक फ़रीक़ को दूसरे फ़रीक़ से याफ़तनी मालूम हो—

( २ ) डिगरी जो ऐसे मुक़दमे में सादिर हो जिसमें मतालिवा मुजरा

अरील डिगरी की जि- | दिये जाने की इस्तदुवा की गई हो निस्बत अपील के  
समें कुछ मुजरा दि- | उन्हीं शरायत की पाबन्द होगी जिनकी— एवन्दी दर  
लाया जाय | सूरत न होने दावा मजकूर के लाज़िम होती—

( ३ ) अहकाम कायदे हाज़ा असर पिज़ीर होंगे आम इससे कि मु-  
जरा दिलाना कायदे ६ आर्डर ८ की रू से जायज़ हो  
या न हो—

२०—तजवीज़ और डिगरी की नक़ूल मुसद्दिका फ़रीक़ैन को अदा दफ़ा २१७

तजवीज़ और डिगरी | लत में दरख़्वास्त करने पर और उन्हीं के सर्फ़ से दी  
की तसदीक़शुद नक़- | जायेंगी—

## आर्डर २१

इजराय डिगरी और इजराय अहकाम अदाय  
जर डिगरी

दफा २५७

१—( १ ) कुल रुपया जो डिगरी के वमूजिव वाजिवुल अदा हो  
 तरीका अदाय जर डिगरी हस्व तफसील मुन्दजे जैल अदा कियाजायगा याने

(अलिफ) उस अदालत में जिससे डिगरी जारी करना मुतअझिब  
 हो-या

( वे ) डिगरीदार को अदालत के बाहर-या

( जीम ) जिसतरह अदालत सादिर कुनिन्दः डिगरी हिदायत करे-

( २ ) जब कोई अदा हस्व फिकरह अलिफ कायदे तहती ( १ ) के  
 अमल में आये तो अदा मजकूर की इत्तिला डिगरीदार को  
 दीजायगी-

दफा २५८

२—( १ ) अगर कोई मुवलिग जो किसी किस्म की डिगरी की रूसे  
 अदाय जर डिगरी वे- वाजिवुल अदा हो अदालत के बाहर अदा कियाजाय  
 रूत अदायत या शय डिगरीशुदः कुल या जुजो का तस्फिया हस्व  
 रजामन्दी डिगरीदार के और तौर पर होजाय तो डिगरीदार को लाजिम  
 है कि ऐसे मुवलिग के अदा होने या ऐसे तस्फिये के वकूअ में आने की  
 इत्तिला उस अदालत में करदे जिससे डिगरी का इजरा मुतअझिब है  
 और अदालत मुताबिक उसके उसको कलमबन्द करलेगी-

( २ ) मद्यून डिगरी को नीज इस्लियार है कि ऐसे मुवलिग के  
 अदाया तस्फिये के वकूअ से अदालत को मुत्तिला करे और  
 अदालत से दरख्वास्त वास्ते जारी होने नोटिस बनाम डिगरी-  
 दार बिडी मजमून करे कि नामबुर्दा एक तारीख मुकर्रग  
 अदालत पर हाजिर होकर उस बातकी वजह जाहिर करे कि  
 ऐसा अदाया तस्फिया क्यों बलप्रज तसदीक शुदः कलम-  
 बन्द न किया जाये और अगर बाद तामीन ऐसे नोटिस के  
 डिगरीदार वजह उसकी जाहिर न करे कि ऐसा अदाया तस्फिया

क्यों बलप्रज्ञ तसदीक शुदः कलमबन्द न किया जाये तो  
अदालत उसको कलमबन्द करलेगी—

( ३ ) कोई अदाय जर या तरफया जिसकी तसदीक या इन्दराज  
हस्व मुतजिकरे वाला न हुआहो अदालत जारीकुनिन्दः डिगरी  
में तसलीम न किया जायगा—

## अदालत जारीकुनिन्दः डिगरी

३—अगर जायदाद गैरमन्कूला—ऐसी एक जायदाद या मकबूजा हो जदीद  
घराजी जो एकसे जो दो या ज्यादा अदालतों के इलाके के हदूद अर्जी  
ज्यादा इलाके में हो के अन्दर वाकैहो तो उन अदालतों में से किसी एक  
को इख्तियार है कि कुल जायदाद या मकबूजा को कुर्क या नीलाम करै—

४—अगर डिगरी किसी ऐसे मुकदमे में सादिर हुई हो जिसकी मा-दफा २२३  
इत्तिकाल अदालत लियत हस्व अर्जीदादा दो हजार रुपये से ज्यादा न हो फिकरह ५  
मतालियाजात खफी-फा में और बलिहाज शय मुदाबिहा कानून नाफिजुल वक्त के  
मुताबिक समोअंत अदालत मतालियाजात खफीफा  
मेसीडेंसी या मुफस्सिलात से मुस्तस्ना न कर दिया गयाहो और अदा-  
लत सादिर कुनिन्दः डिगरी यह चाहै कि उसकी तामील कलकत्ता, या  
मद्रास, या बम्बई, या रंगून में हो तो अदालत मजकूर को इख्तियार  
होगा कि नकूल और सार्टीफिकेट मुतजिकरे कायदा ६ अदालत मता-  
लिवेजात खफीफा कलकत्ता या मद्रास या बम्बई या रंगूनमें भेजदे याने  
जैसा मौका हो और वह अदालत मतालियाजात खफीफा इसीतरह डिगरी  
को तामील करैगी कि गोया उसने डिगरी सादिर की थी—

५—अगर वह अदालत जिसमें डिगरी का वास्ते इजरा के भेजना दफा २२३  
तरीका इत्तिकाल मंजूर है उसी जिले में वाकैहो जिसमें कि अदालत फिकरह ६  
सादिर कुनिन्दः डिगरी है तो यह अदालत डिगरी को विला वसातत  
अदालत अन्वलुल जिक्रमें भेज देगी लेकिन जिस हालमें कि वह अदा-  
लत जिसके पास डिगरी वगरज इजरा भेजीजाय गैर जिले में हो तो  
अदालत सादिर कुनिन्दः डिगरी को उस जिलेकी अदालत जिला के  
पास भेजेगी जिस जिले में डिगरी का इजरा होनेवाला हो—

इफा २ = ८

६-जो अदालत कि डिगरी को इजराके लिये भेजे उसे लाजिम है कि कार्रवाई अगर अदालत अपनी डिगरीना इजरा दूसरी अदालतसे करना चाहे

कागजात मुफस्सिले जैल भी मुसिल करै—

(अलिफ) डिगरी की नक़ल—

( वे ) सार्टीफिकेट इस मजमूनका कि अदालत सादिर कुनिन्दः डिगरी के इलाक़े के अन्दर सीगा इजरासे डिगरी का ईफा नहीं हुआ है या अगर डिगरी का जुजन् इजरा हुआ हो तो यह लिखा जायगा कि किस क़दर ईफा हुआ और डिगरी के किस क़दर जुजों का ईफा बाक़ी है—और—

( जीम ) नक़ल किसी हुक्म की वास्ते जारी होने डिगरी के सादिर हुआ हो और अगर ऐसा हुक्म सादिर न हुआ हो तो सार्टीफिकेट इस मजमून का भेजे—

७-अदालत जिममें डिगरी इजराके लिये इसतरह भेजीजाय नक़ल अदालत याबिन्दा न और सार्टीफिकेट मज़कूरको विला सबूत मज़ीद सेह वरक़ डिगरी विला सबूत डिगरी या हुक्म इजराके या उनकी नक़लके नतीजा क उन्हीं नतीजा परालिगी रालेगी इल्ला उस सूरत में कि अदालत किसी खास वजूहसे जिन्हें जजको अपने हाथसे लिखना चाहिये ऐसा सबूत तलब करै-

## दरख्वास्त इजराय डिगरी

१०—जब डिगरीदार अपनी डिगरी जारी कराना चाहै तो अदालत दफा २३०  
दरख्वास्त इजरा सादिर कुनिन्दः डिगरी में दरख्वास्त देगा या उस फिकरह १  
ओहदेदारके पास ( अगर कोईहो ) जो उस कामपर मुकर्ररहो या अगर  
डिगरी हस्ब अहकाम मुन्दजै सदर किसी और अदालत में भेजीगईहो तो  
दरख्वास्त उस अदालत में या उसके ओहदेदार मुनासिबको दीजायगी—

११—( १ ) अगर डिगरी सिर्फ वावत दिलाने जर नक्दके हो तो जा-दफा २५६  
दरख्वास्त जवानी | यज्ञहै कि अदालत धरवक्त सादिर करने डिगरी के  
डिगरीदारकी दरख्वास्त जवानीपर कबल तैयारी वासुन्टके डिगरीके फौरन  
जारी किये जानेका हुक्म वजरिये गिरफ्तारी मदयून डिगरीके सादिर करै  
अगर वह अदालतके अहाते के अन्दरहो—

( २ ) वइस्तस्नाय सूरत हाय खास मुतजिकरे कायदा तहती ( १ ) दफा २३५  
दरख्वास्त तहरीरी | हर दरख्वास्त इजराय डिगरी तहरीरी होगी और उस  
पर दस्तखत और तसदीककी इवारत तरफ से दरख्वास्त कुनिन्दः के या  
किसी और शख्सकी तरफ से लिखी जायगी जिसकी निस्वत अदालत  
को सबूत काविल इतमीनान गुजरै कि वह हालात मुकदमासे वाक्फि है  
और उसमें तफसील मरातिब मुफस्सिलै जैल बतौर नक्शु दर्ज होगी  
याने—

( अलिफ ) नम्बर मुकदमा—

( बे ) नाम फरीकैन—

( जीम ) तारीख डिगरी—

( दाल ) आया बनाराजी डिगरीके अपील हुवाहै—

( हे ) आया कोई अदाई या किसी दीगर तरहका तस्फिया शय  
मुतनाजिआकी वावत दरमियान फरीकैन वाद सदूर डिगरी  
के अमल में आया और अगर अमल में आया तो क्या—

( दाब ) आया उससे पहिले डिगरीके इजराके लिये कोई दरख्वास्त  
गुजरी और अगर गुजरी तो किस मजमूनकी और दरख्वा-  
स्त हाय मजकूरकी तारीख और उनका नतीजा—

( जे ) तादाद जर मयेसूदके ( अगर कुदहो ) जो डिगरी की रूने  
पाप्तनीहो या और दादरसी जो डिगरीके रूने हईहो मय

तफसील किसी डिगरी काविल मुजर्राईके जो कबल वा  
बाद तारीख उस डिगरीके सादिर हुई हो कि जिसको जारी  
कराना मंजूर हो—

( ६ ) तादाद जर खर्चा अगर कुछ दिलाया गया हो—

( ७ ) नाम उस शख्स का जिसके ऊपर डिगरी जारी कराना मंजूर हो—और

( ८ ) यह कि किसतरह से अदालतकी अध्यानत मतलूब है—याने

( १ ) वज्ररिये दिलाये जाने उस खास मालके जिसकी डिगरी हुई हो—

( २ ) वज्ररिये कुर्की व नीलाम या कुर्की विला नीलाम किसी जायदादके—या

( ३ ) वज्ररिये गिरफ्तारी और कैद जेलखानामें किसी शख्सके—या

( ४ ) वज्ररिये मुक़रर करने किसीवरके—या

( ५ ) और तरहपर जैसा कि वनजर नौअवयत दादरसी अताशुदह के जरूरी हो—

( ६ ) जब अदालत में दरख्वास्त कायदा तहत ( २ ) के रुसे गुजरै वह मजाज है कि दरख्वास्त कुनिन्द को डिगरी की एक नक़ल मुसहिका पेश करनेका हुक्म दे—

बका २३६

१२—जब दरख्वास्त वास्ते कुर्की किसी माल मन्कूला अजां मदयून दरख्वास्त निखन कुर्की डिगरी के गुजरै और वह उसके कब्जे में न हो तो माल मन्कूला जो मदयून डिगरी के कब्जे में न हो डिगरीदार को लाज़िम है कि दरख्वास्त के साथ एक फ़र्द तालीका उस माल की जो कुर्क कराना हो मस-आर उसके ऐसे बयान के जो बवजूह माकूल सही हो मुंसलिक करै—

बका २३७

१३—जब दरख्वास्त वास्ते कुर्की माल गैर मन्कूला अजां मदयून दरख्वास्त करी मान डिगरी के गुजरै उसके जेलमें अगर जेल की तस-वीर मन्कूला में तब रीट होगी—  
अगर दी गवाहन हो

( अन्तिक ) बयान जायदाद मजकूर का जियमे उसके करार बाकी शिनायत होमके और अगर जायदाद मजकूर की रद्द या

उसकी अराजी के नम्बर किसी कागज बन्दोबस्त या नक्शा पैमायश में मुन्दर्ज हों तो उन हद्द या नम्बर हाथ अराजी की सराहत-और

( बे ) सराहत हिस्सा या इस्तहकाक मदयून डिगरी की जायदाद मजकूर में जहांतक कि सायल को ताहद् यक्तीन मालूम हो और जहांतक सायल तहकीक करसकाहो—

१४-अगर दरख्वास्त वास्ते कुर्क करने किसी ऐसी अराजी के गुजरै जो दफा २३८

<p>अदालत वाज सूरतों में दफ्तर फलकटरी के रजिस्टर का इन्तिखाब मुसद्दिका पेश करने का हुक्म देसक्ती है</p>	<p>दफ्तर फलकटरी में दर्ज रजिस्टर हो तो अदालत सायलको हुक्म देसक्ती है कि दफ्तर मजकूर के रजिस्टर का इन्तिखाब मुसद्दिका बतफसील इसके कि कौन २ अशखास रजिस्टर में अराजी या उसकी मालगुजारी के मालिक या उसमें किसी हक्कीयत काबिल इन्तिक्तालके काबिज या उस अराजी की मालगुजारी अदा करने के जिम्मेदार मुन्दर्ज हैं और बतफसील हसिस मालकान मुन्दर्जा रजिस्टर के पेश करै—</p>
--	---

१५-( १ ) अगर डिगरी एक से ज्यादा अशखास के हकमें विल दफा २३९

<p>दरख्वास्त इजरा अज तरफ डिगरीदार मुस्त-रिक</p>	<p>इस्तराक सादिर हुई हो तो उनमेंसे कोई एक या ज्यादा अशखास सबके फायदे के लिये कुल डिगरी के इजरा की दरख्वास्त करसक्ते हैं इला उस सूरत में कि डिगरीमें उसके खिलाफ कोई शर्त हो या जिस हाल में कि उनमें से कोई मरगया हो तो बाक़ी मादगान और कायम मुकामान जायज मुतवफ्फ़ीके फायदे के लिये दरख्वास्त करसक्ते हैं—</p>
---	--

( २ ) अगर अदालत को वरुख वजह काफी मालूम हो कि इस कायदे के मुताबिक दरख्वास्त के गुजरने पर इजराय डिगरी मंजूर कीजाय तो वह ऐसा हुक्म सादिर करैगी जो वास्ते हिफ्ज हक्क उन अशखास के कि उस दरख्वास्त में शरीक न हुयेहों जरूरी हों—

१६-अगर इन्तकाल किसी डिगरीका या अगर डिगरी दो या ज्यादा दफा २३९

<p>दरख्वास्त इजराय डिगरी अजतन्फ मुत्त-किलअलेह</p>	<p>अशखास के हक में विल इस्तराक सादिर हुई हो इन्तकाल इस्तहकाक किसी डिगरीदार का निस्वत डिगरी मजकूर के वजरिये इन्तकाल तहरीरी या व-</p>
---	---



वजह असर कानूनके अमल में आये तो मुन्तकिलअलेह को जायज होगा कि उसके इजरा की दरखास्त अदालत सादिरकुनिन्दः डिगरी में करे और डिगरी का इजरा उसी तौरपर और बकैद उन्हीं शरायत के अमल में आयेगा कि गोया दरखास्त डिगरीदार मजकूर की तरफ से गुजरी थी-

मगर शर्त यह है कि जब डिगरी या इस्नहकाक मुतजिकरै सदर बजरिये इन्तकाल के मुन्तकिल हुवाहो तो दरखास्त मजकूर की इत्तिहा इन्तकाल करनेवाले और मदयून डिगरी को दीजायगी और जबतक कि अदालत उनके उजरात को ( अगर कोई हों ) न सुनले तबतक डिगरी जारी न कीजायगी-

नीज शर्त यह है कि अगर डिगरी वास्ते दिलाने जर नज्द के दो या ज़्यादा अशखास के ऊपर सादिर हुई हो और वह उनमें से एक शख्स के नाम मुन्तकिल की गई हो तो वह डिगरी उन बाकी अशखास पर जारी न कीजायगी—

इका २४५

१७-( १ ) हस्व कायदा ११ कायदे तहत ( २ ) वक्त गुजरने दरख्वास्त इजराय डिगरी के अदालत को यह दरयाफ्त करना चाहिये कि आया तामील उन अहकाम क़ायद ११ लगायत १४ की जो मुकद्दमे से मुतअज़िज़ हैं हुई हैं या नहीं और अगर उनकी तामील न हुई हो तो अदालत को इत्तिहार है कि दरखास्त नामंजूर करे या उसी वक्त ख्वाह अन्दर किसी मीआद मुक़रर अदालत के उस मुद्दस की तसहीह होने की इजाजत दे—

( २ ) अगर दरखास्त हस्व शरायत कायदा तहत ( १ ) तसहीह पाये तो उसका कानून के मुताबिक तहरीर होकर उमी ताख पर गुजरना समझा जायगा जब कि पहिले गुजरी थी-

( ३ ) हर तसहीह पर जो उम कायदे के वमूजिय कीजाय जन के दस्तखत या मुह्लिसर दस्तखत सिब्त होंगे—

( ४ ) जब दरखास्त मंजूर कीजाय तो अदालत को लासिम है कि रजिस्टर मुताबिक में एक यादरत दरखास्त की बये तारीख के जब कि दरखास्त गुजरी थी दर्ज करे और दर्ज शरायत

मुन्दर्जे मावाद दरखास्त के मजमूनके मुताबिक डिगरी के जारी होने का हुक्मदे—

पर धर्न यह है कि अगर डिगरी वावत जर नक्कदकेहो तो उसी कदर मालियतकी जायदाद कुर्क की जायगी जो करीब करीब उसी तादादके बराबरहो जो डिगरी की रूते दिलाई गईहो—

१८—( १ ) अगर दरखास्तें अदालत में वास्ते इजरा करने ऐसी दफा २४३ काबिल मुजर्राई डिगरी डिगरियों के गुजरें जो अलग अलग मुकदमों में वावत का इजरा अदा करने दो रकमोंके मावैन उन्हीं फरीकैनके सादिर हुईहों और जिनका इजरा एकही वक्तमें अदालत मजकूर करसक्तीहो तो—  
( अलिफ ) अगर दोनों रकम बराबरहों तो दोनों, डिगरियों, पर ईफा उनका दर्ज कियाजायगा—और

( वे ) अगर दोनों रकम बराबर न हों तो इजरा सिर्फ उस डिगरी-दारकी तरफ से अमल में आयेगा जिसका जर डिगरी कसीरहो और सिर्फ उस कदर जरकी वावत जो बाद मुजरा देने जर कलीलकी डिगरीके बाकी रहै—और जर कसीरकी डिगरीपर ईफा जर कलीलका दर्ज होगा और भी जर कलीलकी डिगरीपर ईफा मुन्दर्ज होगा—

( २ ) यह कायदा उस सूरत से भी मुतअल्लिक समझा जायगा जिस में कि कोई फरीक उन डिगरियों में से एक डिगरीका मुन्तकिल अलेह हो और नीज वावत कर्जाजात डिगरीशुदह के जो असिल मुन्तकिल करनेवाले से पानाहो उसी तरह मुतअल्लिक होगी जिसतरह कि खुद मुन्तकिल अलेह के जिम्मे के कर्जा डिगरीशुदह से मुतअल्लिकहै—

( ३ ) यह कायदा वजुज सूरत हाय मुफसिले जैलके और सूरतों से मुतअल्लिक नहीं समझा जायगा—

( अलिफ ) जब कि डिगरीदार एक मुकदमेका उन मुकदमों में से जिन में डिगरियां सादिर हुईहों मद्यून डिगरी दूसरे मुकदमेका हो और हर फरीक एकही हैसियत दोनों मुकदमों में रखताहो—और

( वे ) जब कि जरयाफ्तनी डिगरियोंका मोअय्यनहो—

- ( ४ ) डिगरीदार किसी ऐसी डिगरी को जो चंद अशस्त्रासके ऊपर मुश्तरकन् और मुन्फरदन् सादिर हुई हो वावत उस डिगरी के काबिल मुजराई करार देसक्ता है जो वह एक या ज्यादा अशस्त्रासे मजकूरके उसके ऊपर मुन्फरदन् सादिर हुई हो—

### तमसीलात

- ( अलिफ ) जैदके पास डिगरी वनाम उमरु एक हजार रुपये की है और उमरुके पास एक डिगरी वनाम जैदके वास्ते अदाए एक हजार रुपयाके इस शर्त से है कि अगर जैद एक जमाना आयन्दा में फलां माल न हवाला करै तो वह रुपया दिया जाय उमरु हस्व कायदा हाजी अपनी डिगरी को काबिल मुजराई नहीं करार देसक्ता है—
- ( बे ) जैद और उमरु शराकती मुद्दियान में एक डिगरी हजार रुपये की बकरपर हासिलकी और बकरने एक डिगरी हजार रुपयेकी उमरुपर हासिलकी बकर हस्व कायदा हाजा अपनी डिगरी काबिल मुजराई नहीं करार देसक्ता है—
- ( जीम ) जैदने एक डिगरी उमरुपर हजार रुपयेकी पाई और बकरने जो कि उमरुका अमानतदार है जैदपर एक डिगरी हजार रुपये की उमरुकी तरफ से हासिल की—उमरु हस्व कायदा बकरकी डिगरी को काबिल मुजराई नहीं करार देसक्ता है—

काबिल मुजराई दुआवी  
का इजरा जो एकही  
डिगरी के वमूजिव हो

गुजरे जिसके वमूजिव दो फरीक में से हर एक दूसरे  
से जरनवद पाने का मुस्तहक हो तो—

( अलिफ ) अगर दोनों रकम बराबर हों तो डिगरी पर ईफा दोनों का  
दर्ज किया जायगा—और

( बे ) अगर दोनों रकम बराबर न हों तो इजरा सिर्फ उस फरीक  
की डिगरी कमल में आयेगा जो जर कसीर का मुस्तहक  
हो और सिर्फ उस कदर जरकी वावत जो बाद मुजरा  
देने जर कलील के बाकी रहे और डिगरी पर ईफा जर  
कलील का दर्ज होगा—

२०—अहकाम मुन्दजै कायदा १८ व १९ उन डिगरियात से मुतअ-  
डिगरियात व दुआवी वाहम दीगरी नालि-  
शात रहेन हैं

ल्लिक होंगे जो वास्ते नीलाय के निफाज रहेन या  
बारके हों—

२१—अदालत मजाज है कि अगर मुनासिव समझे मदयून की जात  
एकही वक्त डिगरी का इजरा करना

और उसकी जायदाद दोनों पर एकही वक्त डिगरी  
के इजरा से इन्कार करे—

दफा २३  
फिकरह २५

२२—( १ ) अगर दरखास्त वास्ते इजरा के—

दफा २४=

इत्तिलाअनामा वावत  
दिखाने वजह निस्वत  
इजराके बाज सूरतोंमें

( अलिफ ) तारीख डिगरी से अर्सा जियादह एक साल से गुजरजाने  
पर गुजरे—या

( बे ) वमुकाबिले कार्यम मुक्ताम जायज फरीक डिगरी के गुजरे-  
तो अदालत जारी कुनिदा डिगरी को लाजिम है कि उस शख्स के  
नाम जिसपर इजरा कराने की दरखास्त हो एक इत्तिलाअनामा बिदी  
हुक्म जारी करे कि तारीख मुकरर पर इस बातकी वजह पेश करे कि  
उसपर डिगरी का इजरा क्यों न किया जाये—

अगर शर्त यह है कि सूरत हाय मुफस्सिल जैलमें किसी ऐसे इत्तिलाअ  
नामा की जरूरत न होगी जब तारीख डिगरी और दरखास्त इजराय डिगरी  
के माबैन गो कि अर्सा जियादह एक साल से गुजर गया हो लेकिन उस

दफा २४=

हुकम अखीर की तारीख से जो खिलाफ मुंरादेहो उस फरीक के जिस पर इजरा कराने की दरखास्त है किसी पहिली दरखास्त इजराय डिगरी मजकूर पर सादिर हुआहो एक साल के अन्दर दरखास्त गुजरे या जब कि दरखास्त अगर्चि वमुक्ताविले कायम मुक्ताम जायज मदयून डिगरी के गुजरे लेकिन उसी शख्स पर उससे पेशतर की दरखास्त इजरा पर डिगरी के जारी होनेका हुकम अदालत ने दिया हो-

( २ ) कायदा तहत मजकूरवाला के किसी मजमून से अदालत वगैर जारी करने इत्तिलाअनामा मुतजकिरह कायदा तहत मजकूर के हुक्मनामा इजराय डिगरी जारी करने से ममनूष नहीं सम्झी जायेगी अगर वजह तहरीरी वदानिश्त उसके ऐसा इत्तिलाअनामा जारी करने से तबजूह नामुनासिव बाँके हो या गरज इन्साफ फौत होजाये-

दया २५६

२३-( १ ) अगर वह शख्स जिसके नाम इत्तिलाअनामा हस्व का वारंवाई बाद जारीहोने इत्तिलाअनामा के यदा मुल्हका वालाके जारी कियाजाये हाजिर नआये या वजह हस्व इत्तिलाअनामा अदालत वारते जारी न किये जाने डिगरी के पेश न करे तो अदालत हुकम इजराय डिगरी वा सादिर करेगी-

( २ ) अगर निस्वत इजराय डिगरी के कुछ ऐतराज पेशकरे तो अदालत उस ऐतराज पर गौर करके वह हुक्म सादिर करेगी जो उसके नजदीक मुनासिव हो-

## हुक्मनामा इजराय डिगरी

दया २५७

२४-( १ ) बाद तकमील मरातिव इन्विटार्ड के ( अगर कुदरों ) में हुक्मनामा अगर अजरख कवाअद मरफमावाला के मतलूब हो अदालतको लाजिम होगा कि हुक्मनामा अगर इजराय डिगरी जारी करे इजा उस मुक्त में कि उसके नजदीक कोई वजह उसके खिलाफ हो-

दया २५८

दया २५९

( २ ) इजराय डिगरी के हर हुक्मनामा पर हुक्मनामा के सादिर होनेकी तारीख और दम्नखत जज या और दरदेदार के जम को अदालत उस वापके निये मुल्हक करे मन्त होगे और

मुहर अदालत सन्त होकर हुक्मनामा मजकूर मुनासिव उहदे-

दारको इजरा के लिये हवाले किया जायेगा—

( ३ ) हर हुक्मनामा मजकूर में वह खास तारीख लिख दीजायेगी

जिसमें या जिससे पहिले उसका इजरा होना चाहिये—

२५—( १ ) उहदेदार जिसको हुक्मनामा तामील के लिये सिपुर्द दफा २४३

इन्दराज कैफियत  
हुक्मनामापर

हुआ हो उसकी पुरतपर लिखेगा कि उसकी तामील और मजमून  
जुज्व अखीर  
दफा २५१  
किस तारीख को और क्योंकर हुई और अगर तामील

उस रोज के बाद हुई हो जो तामील का आखिर दिन मुक़रर किया

गया था तो तबकुफ की वजह लिखी जायेगी और अगर तामील न हुई हो

तो तामील न होनेकी वजह लिखी जायेगी और उहदेदार मजकूर ऐसी

इबारत जुहरी लिखकर हुक्मनामा को अदालत में वापस करेगा—

( २ ) अगर कैफियत जुहरी इस मजमून की हो कि उहदेदार मज दफा ३४३

कूर हुक्मनामा की तामील करने के नाकाबिल है तो अदालत

उसकी वजह माजुरी की वावत उसका इजहार करलेगी और

अगर मुनासिव समझे तो उसकी माजुरी की निस्वत गवाहों

को तलब करके उनके इजहार ले और नतीजा कलमबन्द करे—

### इल्तवाय इजराय डिगरी

२६—( १ ) उस अदालत को जिसमें डिगरी इजरा के लिये सुरसिल दफा २४६

कब अदालत इजरा  
मुल्तवी करसक्ती है

कीजाये लाजिम है कि अगर वजह काफी जाहिर की

जाये डिगरी के इजरा को एक भीआद माकूल के

लिये इसे गरिज से मुल्तवी रखे कि मदयून डिगरी उस अदालत में

जिसने डिगरी सादिर की हो या किसी और अदालत में जो इस्तिथार

समाअत अपील निस्वत डिगरी मजकूर या उसके इजरा की रखती हो

वास्ते हुक्म इल्तवाय इजराय डिगरी के दरख्वास्त करें या वास्ते किसी

और हुक्म मुतअल्लिका डिगरी या इजराय डिगरी के जो अदालत मुराफै-

उला मजकूर या अदालत अपील उस हाल में सादिर करनेकी मजाज

होती जब कि डिगरी उसी अदालत से जारी कीजाती या जब कि दर-

ख्वास्त इजराय की उसी अदालत में गुजरती—

( २ ) अगर जायदेद या जात मदयून डिगरी की इजराय डिगरी

में हिरासत में ली गई हो तो वह अदालत जिसने इजरा किया हो उस

हुक्म के सादिर करने की मजाज होगी कि तादरियाफ्त होने नतीजा दर-  
ख्वास्त मजकूर के जायदाद मजकूर वापस दीजाये या जात मदयून की  
रिहा कीजाये—

दफा २४०

( २३ ) कल्ल इसके कि हुक्म इलवाय इजरा को या हुक्म वास्ते वा-  
मदयून डिगरी से ज- पस देने जायदाद या रिहाकरने जात मदयून के सादिर  
मानत तलब करने या किया जाये अदालत मजाज होगी कि मदयून डिगरी  
उसको पाबन्द-शमयत से उस कटर जमानत तलब करे या उसको ऐसी म  
करनेका इस्तिनयार रायत का पाबन्द कर जो अदालत को मुनासिब  
मालूम हों—

दफा २४१

( २७ ) मदयून डिगरी की जायदाद या जातकी रिहाई का हुक्म  
गिरफ्तारी मुकदर म- हस्व जायदा २६५ मानअ उसका न होगा कि वा  
मदयून डिगरी रिहाई जायदाद या जात मदयून की फिर बदलत इजराय  
याफ्तह की डिगरी के जो इजरा के लिये भेजीगई हो मादयून  
कीजाये—

दफा २४२

( २८ ) हर हुक्म उस अदालत का जिसने डिगरी सादिर की हो  
पाबन्दो हुक्म अदालत या उस अदालत अपील का जिसका ऊपर मजकूर  
सादिर कनिन्दा डिगरी हुआहै दरवाजे इजराय डिगरी मजकूर के उस अदालत  
या अदालत अपील की पर वाजिबुल तामील होगा जिसमें डिगरी इजरा के  
उम अदालत पर जम लिये-मुरसिल कीगई हो—

दफा २४३

२९—अगर किसी अदालत में कोई नालिश उम शख्सकी तरफ से  
जिसपर उसी अदालतकी डिगरी हुई हो डिगरीदारके  
नाम नालिश मोर्ने नाम दायर हो तो अदालतको इस्तिनयार है कि अगर  
डिगरीदार और मदयून मुनासिब मगभे नालिश मुतदायराके फैसल होनेतक  
डिगरी मजकूरका उजरा बराबन्दी शमयत जमानत  
तारीख दीगरके मुक्तवी रहये—

डिगरी दीवानी जेलमें कैद किया जाय या उसकी जायदाद कुर्क और नीलाम की जाय या दोनों तरीकों से —

३१-( १ ) अगर डिगरी किसी खास शै मन्कूला या किसी खास दफा ४५५

डिगरी बाबत किसी शै शै मन्कूलाके हिस्सा पानेकी बाबत हो तो उसका ईफाय मन्कूलाके इस तौरपर होगा कि शै मन्कूला या हिस्सा मजकूरपर कब्जा किया जायेगा अगर मुमकिन हो और उस फरीकके सिपुर्द किया जायेगा कि जिसके हकमें डिगरी हुई हो या उस शाख्सको दिया जायेगा जिसको डिगरीदारने अपनी तरफसे उसके लेनेके वास्ते मुक़रर किया हो या मदयून डिगरी दीवानी जेलमें कैद किया जायेगा या जायदाद उसकी कुर्क की जायेगी या दोनों तरीकों से —

( २ ) जब कोई कुर्की जो कायदा तहती ( ३१ ) के बमूजिव हुई हो

छः महीने तक कायम रही हो, अगर मदयून डिगरीने उस वक्त तक डिगरी की तामील न की हो और डिगरीदारने वास्ते

नीलाम कराने जायदाद मकरूका के सवाल दिया हो तो जा-

यज है कि वह जायदाद नीलाम की जाय और अदालत को

इस्तिथार है कि जर सम्मन नीलाम से डिगरीदारको इस कदर

मुबलिंग दिलाये जो बतौर बदल किसी शै मन्कूलाके अजरूय

डिगरी मुक़रर हुआ हो और और सूरतों में उस कदर मुआविजा

दिलाये जो अदालतको मुनासिव मालूम हो और बाकी रुपया

( अगर कुछ हो ) मदयून को उसकी दस्तखास्तपर हवाले करे —

( ३ ) अगर मदयून डिगरीने डिगरी की तामील कर दी हो और इज-

राय डिगरी मजकूरका कुलेख अदा कर दिया हो जो उसके जिम्मे

देना बाजिव था या अगर वक्त इन्कजाय छः महीने के तारीख

कुर्कीसे कोई दस्तखास्त वास्ते नीलाम कराने जायदाद के न गु-

जरी हो या गुजर करना मंजूर हुई हो तो कुर्की खतम हो जावेगी —

३३-( १ ) अगर वह फरीक जिसके नाम डिगरी वास्ते तामील दफा २४०

डिगरी वास्ते तामील

खास या दिलारि जाने

हक इजदवाजके या

हुक्म इस्तिनाईके

खास किसी मुआहिदहके या वास्ते दिलाये जाने हु-

कूके इजदवाजके या वास्ते हुक्म इस्तिनाईके सादिर

हुई हो डिगरीकी तामील करनेका मौका पा चुका हो और

अम्न उसको तामील करने से बाज रहो तो जा-



यजहै कि उसपर डिगरी की तामील इस तौरसे हो कि वह दीवानी में कैद किया जाय या उसकी जायदाद कुर्की की जाय या दोनों तरीकों में

( २ ) अगर वह फरीक जिसके नाम डिगरी वास्ते तामील खास हुक्म इम्तिनाई के सादिर हुई हो जमाअत सनदयाप्रता तो डिगरी की तामील बजरिये कुर्की जायदाद जमाअत सनदयाप्रता मजकूर के कराई जासक्ती है या बजजाजत अलत उसके हायरेक्टरान या दीगर आला अप्रसरान जेलखाना दीवानीमें कैद करनेसे या कुर्की और कैद दोनोंमें

( ३ ) जब कोई कुर्की इस्व कायदा रहती ( १ ) या कायदा तह ( २ ) एक बरसतक कायम रही हो अगर मदयून डिगरी डिगरीकी तामील न की हो और डिगरीदारने जायदाद मकर के नीलाम होनेकी दरख्वास्त दी हो तो जायज है कि वह जायदाद नीलाम की जाय और अदालत को इस्तिथार है कि उस समते नीलाम से उस कदर मुअत्रिजा जो अदालत को मुनसिव मालूम हो डिगरीदार को दिलाये और जर फाजि ( अगर कुर्की हो , मदयून डिगरी को उसकी दरख्वास्त पर दे दे—

( ४ ) अगर मदयून डिगरी ने डिगरी की तामील करदी हो और इजरा डिगरी मजकूर का कुन खर्च अदा करदिया हो तो उसके जिम्मे देना बाजिव था या अगर वक्ते इन्कजाय ए वरस के तारीख कुर्की से कोई दरख्वास्त वास्ते नीलाम कराने जायदाद के न गुजरी हो या गुजर करना मंजूर हुआ हो तो कुर्की खतम होजायेगी—

( ५ ) अगर डिगरी वास्ते तामील खास किसी मुआहिदहके या बाग हुक्म इम्तिनाई के सादिर हुई हो और उसकी तामील न हो तो अदालत को इस्तिथार है कि बयबज या मलाबह हुक्म या बाज हुक्मनामजान मुतजबिरह वाला के हुक्म दे कि बा फेन जिमका किया जाना मतलू हो हचुनुडरानान डिगरीदार या और कोई मालूम मुत्तरह अदालत मदयून डिगरी के राने से करे और जायज है कि फेन मन्जूर हिये जाने पर

खर्चा आयद हो वह उस तरीका पर तहकीक किया जाये जिसका अदालत हुक्मदे और इस तरहपर बसूल किया जाय कि गोया डिगरी में दाखिल है—

## तमसील

जैदने जो एक गरीब आदमी है एक मकान बनाया जिसके सबब से अमरु की खानदानी इमारत काबिल रहनेके न रही जैद ने बावस्फ कैद और कुर्की जायदाद के उस डिगरी की तामील न की जो अमरु ने जैद पर उसका मकान गिरा देनेकी निम्नत हासिल की अदालत के नज़दीक जैद की जायदाद की फरोख्त से अमरु की इमारत की कमी मालियत का पूरा मुआविजा नहीं होसक्ता पस अमरु अदालत में सवाल देसक्ता है कि जैद का मकान गिरा दिया जाय और जैद से बसीगा इजराय डिगरी खर्चा मकान गिराने का पासक्ता है—

३३—( १ ) बावस्फ किसी मजदूर कायदा ३२ के अदालत बरवक्त मुकामिलाकरी	
इस्तिनयार अदालत	सादिर करने डिगरी वास्ते दिलाये जाने हुक्क इज्ज.
निम्नत इजराय डिगरी	दिवाज के या बाद उसके किसी वक्त मजाज हुक्म
के जो वास्ते दिलाये	देनेकी होगी कि डिगरी का इजरा इसतरह न हो कि
जाने हुक्क इज्जदिवा-	मदयून जेलखाना में कैद किया जाय—
ज के हो—	

४७, ४८ वेंक्ट  
रिया बाब ६  
दफा २ लगा  
गत ४

( २ ) अगर अदालत ने कायदा तहती ( १ ) के बमोजिव हुक्म सादिर किया हो और डिगरीदार जौजा हो तो अदालत हुक्म देनेकी मजाज है कि अन्दर मुदत मुकर्ररह डिगरी न होनेकी मूरतमें मदयून डिगरी, डिगरीदार को वक्त मुअय्यना पर एक मुनासिब रकम दिया करे और अगर मुनासिब समझे नीज़ यह हुक्म दे कि मदयून डिगरी हस्व इतमीनान अदालत डिगरीदार को ऐसी रकम मुअय्यना के अदा की जमानत करदे—

( ३ ) अदालत को इस्तिनयार है कि वक्त अदाकी बदलकर या रकम घटा बढ़ाकर उस हुक्म की बखत फवक्कत बदलती या उसमें तर्पीम करती रहे जो कायदा तहती ( २ ) के बमोजिव अदाय रकम मुअय्यन की जावत सादिर हुवा हो या यह

भी इल्लियारहै कि हुक्म मजकूरको जो निस्वत अदायकुल या जुज्व रक्तम मजकूर के हो जिसकी अदायगी का हस्व मजकूर वाला हुक्म हुआ है कि चन्दरोज के लिये मुलतबी रखे और फिर कुलन् या जुजन् उसकी तजदीद करे जैसा कि वह मुनासिब समझे—

- ( ४ ) जिम रक्तमके अदा करनेका हुक्म इस कायदे के बमूजिव दिया जावे वह इसतरह काबिल वसूल होगी कि गोया वह बमूजिव डिगरी जरनफ्तके काबिल अदाहै—

॥ २६१

३४—( १ ) अगर डिगरी वास्ते तकमील किसी दस्तावेज या वास्ते डिगरी वास्ते तकमील तहरीर इवारत फरोख्त और पुश्त किसी दस्तावेज दस्तावेजान या तहरीर काबिल वैदशिशरायके हो और मदयून डिगरी की तादर मजाज होगा कि डिगरीके शरायत मुताबिक मुसविदा वदस्तावेज या फरोख्तकी इवारतका तय्यार करके

अदालतके हवाले करे—

- ( २ ) उस वक्त अदालत मसविदा मजकूरकी तामील मदयून डिगरीपर करायेगी और उसके साथ एक इत्तिलानामा मुशअर इस अमरके होगा कि अगर मदयूनको कुछ उजरहो तो अपने उजरात उस मुदन मुन्दर्जे इत्तिलानामाके अन्दर पेश करे जो अदालत उस गरजके लिये मुकर्रर करे—

- ( ३ ) अगर मदयून डिगरी मसविदा मजकूरपर ऐतराज रखताहो तो लाजिम है कि उसके उजरात तहरीरी मीमाद मुत्तराके अन्दर पेशहों और अदालत उस मसविदाकी मंजूरी या नवटीलकी निस्वत जो हुक्म मुनासिब समझे सादिर करेगी—

॥ २६२

- ( ४ ) डिगरीदारको यह भी इल्लियारहै कि मसविदाकी नकल मय उन तन्दीलानके ( अगर कोई हों ) अदालतके इनमसे कीगई हों ताज्ज इस्ताम्बापिनुल जीमतपर अगर इस्ताम्बा कानून मनाजिया नकली रूपे दस्तकारहो लिखकर अदालतमें पेशकरे और जज या जज अदेदा जिमको उस कामपर मुकर्रर किया गयाहो नकल पेशकरके की तकमील करेगा—

( ५ ) जायजहै कि किसी दस्तावेजकी तकमील या किसी दस्तावेज दफा २६२ काविल वैवशिशराकी इवारत फरोख्तकी तहरीर हस्व कायदा हाजा इस नमूना से कीजाये यानी—“ ( जीम, दाल ) जज अदालत मुकाम—( या जैसी सूरत हो ) तरफ से ( अलिफ, वे ) के वमुक्तदमा ( दाल, याव ) बनाम ( अलिफ, वे ) ” और उसका वही असर होगा कि गोया उसी फरीकने जिसको दस्तावेज की तकमील या इवारत फरोख्तकी तहरीरका हुक्म हुआ था दस्तावेजकी तकमीलकी या दस्तावेज काविल वैवशिशरा की जुहरपर फरोख्तकी इवारत लिखी—

( ६ ) अदालत या वह उहदेदार जिसको अदालत ने इस कामपर मुक्तरर कियाहो दस्तावेज मजकूरकी रजिस्टरी करायेगा अगर उसकी रजिस्टरी कानूनी मजारिया वक्त की रूसे जरूरीहो या अगर डिगरीदार रजिस्टरी करानेकी दरख्वास्त करे और अदालत जो हुक्म मुनासिब समझे निस्वत अदाय इत्तराजात रजिस्टरीके सादिर करसक्ती है—

३५—( १ ) अगर डिगरी वास्ते दिलाने जायदाद गैर मन्कूलाकेहो दफा २६३  
 डिगरी निस्वत जायदाद तो उसपर उस फरीकको कब्जा दिलाया जायेगा जिस  
 गैरमन्कूला के हकमें डिगरी हुईहो या जिस शख्सको वह अपनी  
 तरफ से कब्जा लेनेके वास्ते मुक्तरर करे उसको कब्जा दिया जायेगा और  
 अगर कोई शख्स जिसपर डिगरीकी पाबन्दी लाजिमहै जायदादको खाली  
 करने से इन्कारकरे तो बर्त जखूर वह निकाल दियाजायेगा—

( २ ) अगर डिगरी वास्ते दिलाने मुश्तरक कब्जा जायदाद गैर मन्कूलाकेहो तो कब्जा इसतरह दिलाया जायेगा कि हुक्मनामा मौसूमा ववारंटकी एक नकल उस जायदादके किसी नजरगाह आमपर चस्पों कीजायेगी और मुकाम मुनासिबपर मजमून डिगरीका खुलासा बजर्व दुहल या किसी दूसरे मुरविज्जा तरीकापर मुश्तहर करा दियाजायेगा—

( ३ ) अगर कब्जा किसी इमारत या अहाता का दिलाना मकसूद हो और काविज जायदाद जो डिगरी की रू से कब्जा देने पर मजबूरहो विला रोकटोक अन्दर जाने न देताहो तो अदा-

लत मजाज है कि वाद देने इच्छिला और माकूल सहूलियत किसी औरतको जो गुताविक रिवाज मुल्क के बाहर न निकलती हो कि वह वहां से चली जाये मारफत अपने अहलकारों के कोई कुकन खोले या सिटकिनी खोले या तोड़ डाले या कोई दरवाजा तोड़ डाले या कोई और ऐसा फेल करे जो डिगरीदार को कब्जा दिलाने के वास्ते जरूरी हो—

न २६४

नोट—अगर डिगरी वास्ते दिलाने किसी ऐसी जायदाद और मन्कूला के डिगरी चालने दिलाने जायदाद और मन्कूला के जो वक्तों आता-मी हो हो जो वक्तों आता-मी या दीगर शरूत मुस्तहक दखल के हो और डिगरी की खुसे उसपर वाजिब न हो कि वह दखल छोड़ दे तो अदालत को लाजिम होगा कि जायदाद मजकूर के किसी मंजर आपपर हुक्मनामा मौसूफा वारंट की एक नकल आवेजां कराके दखल दिलाये और वजरिये मुनादी वजर्व दुहूल वमौका मुनासिब या और तौरतर हस्व रिवाज के खुलासा मजमून डिगरी का निस्वत जायदाद मजकूर के दखील की आगाही के लिये मुश्तहर करादे—

गिरफ्तारी और कैद जेलखाना दीवानी में

चारट गिरफ्तारी मद-  
यून डिगरी वहिदायत  
इसके कि वह हाजिर  
लायाजाय

उहदेदार को जो उसकी तामील के लिये मुकर्रर हो यह  
हिदायत होगी कि मदयून डिगरी को अदालत के रु-  
बरू जिस कदर जल्द कि सहूलियत होसके हाजिर  
करे इला उस हालमें कि रुपया जिसके अदा करने

का उसको हुक्म दिया गया था मयसूद और खर्चा के अगर कुछ उस  
पर आयद हुआ हो गिरफ्तारी से पहिले अदा होजाय—

३६—( १ ) अगर डिगरीदार उस कदर मुबलित्त अदालतमें जमा न  
जरखुराक \_\_\_\_\_ करे जो बलिहाज शरह मुकर्ररा वाला वास्ते खुराक  
मदयून डिगरी के वक्त गिरफ्तारी से तारोज हाजिर कियेजाने बहुतर  
अदालत के बदानिस्त जज काफी हो और तावक्ते कि दाखिल न करे कोई  
मदयून डिगरी सीगा इजराय डिगरी से गिरफ्तार न किया जायेगा—

( २ ) अगर मदयून डिगरी सीगा इजराय डिगरी से जेलखाना  
दीवानी में भेजाजाय अदालत उसकी खुराक के लिये उस  
कदर जर माहाना मुकर्रर करेगी जिसका वह शरह मजकूर की  
रु से मुस्तहक हो या जहां कहीं ऐसी शरह मुकर्रर न हो तो  
अदालत जिस कदर उसके दर्जे के लिहाज से दिताना  
काफी समझे—

( ३ ) खुराक माहवारी जो अदालत से मुकर्रर कीजाय वतौर पेशगी हर  
महीने की पहिली तारीखसे पेशतर माहवमाह उस फरीकको दा-  
खिल करनी लाजिम है जिसके दरखोस्त पर मदयून डिगरी  
गिरफ्तार हुआ हो या जेलखाना दीवानी में कैद किया गया हो—

( ४ ) जर खुराक पहिली मर्तबा माहरवां के उस कदर अय्याम के  
वावत जो मदयून डिगरी के जेलखाना दीवानी के भेजे जानके वक्त  
से वाक्कीरह अदालत के अहलकार मुनासिब को अदा करना  
होगा और आयेदा रुपया खुराक की ( अगर कुछ वाजिव हो )  
अफसर मुहतमिम जेलखाना को अदा किया जायेगा—

( ५ ) रुपया जो डिगरीदार ने मदयून डिगरी की खुराक के लिये दफा ३४०  
वावत उन अय्याम के जिनमें कि वह जेलखाना दीवानी में रहे  
दिया हो मुकदमा का खर्चा मुतसब्बिर होगा—

अगर शर्न यह है कि मदयून डिगरी किसी ऐसे रुपयाके लिये जेल-

२५५

४२-अगर डिगरी में हुक्म तहकीकात निस्वत जर लगान ( या कि-  
 कुर्की दगमूरन डिगरी जल्लगान या जर व-  
 मिलान या मुआमिला दीगरी के जिनकी तादाद बाद में मुतहकिक्की हो )  
 राया ) या जर वासिलात या किसी और मुआमिला के हो तो जायदाद मदयून डिगरी की कबल अज्जाओं कि वह तादाद जर जो उसके जिम्मेदादनी हो मुतहकिक्की कीजाये उसी तरह कुर्की कीजासक्ती है जिस तरह कि दर सूगत मापूली डिगरी अदाय जरनकद के कीजाती है-

२६६

४३-अगर शै कुर्की तलब ऐसी जायदाद मन्कूला हो जो पैदावार जिरामन न हो और जिसपर मदयून डिगरी काबिज हो तो उसकी कुर्की वजरिये वाकई कब्जा करलेने के होगी और अहलकार कुर्की उस जायदाद को अपनी हिरासत में या अपने किसी मातहत की हिरासत में रखेगा और उसकी हिफाजत करार वाकई का जिम्मेदार होगा-

पर शर्त यह है कि जब शै मकरुका उस किस्म की हो जो जल्द और अजमुद खराब होजाती है या जिसकी हिफाजत का खर्च उसकी मालियतसे जियादा होजाये तो अहलकार कुर्की को इस्तिफा होगा कि फौजन् उसको फरोख्त करडाले-

जरीद

४४-अगर जायदाद कुर्की तलब पैदावार जिरामन हो तो उसकी पैदावार जिस कुर्की वजरिये आवेजा करने एक नकल वारंट कुर्की के होगी-

( अलिक ) अगर पैदावार मजदूर फसल इस्तादत हो तो उस भागजी पर जहां वह फसल उगी हुई हो-

( वे ) या अगर पैदावार मजदूर कटगई हो या जमा कीगई हो मलियानपर जहां गद्दा वगैरः या चारा जमा कियागया हो और एक और नकल उस मकान के दरवाजा बेरनी या उसके किसी और मंजर आम पर जहां मदयून डिगरी माफूजन रहता हो या दर्जाकत अदालत उस मकान के दरवाजे बेरनी या उसके किसी मंजर आम पर जहां वह नानेदार रहता हो या मुनदमत के लिये दस्तावेज काम करता हो या जहां हमरा अली में रहता या मुनदमत

अतके लिये वजात खास काम करता मालूमहो—और बाद उसके पैदावारपर अदालतका कब्जा समझा जायेगा—

४५—( १ ) अगर जिराअती पैदावार कुर्क कीजाय तो अदालत को यहकाम दरबारे पैदा-  
वार जिराअत मकरका लाजिम होगा कि उसकी हिकाजतके लिये ऐसा इन्ति-  
जामकरे जिसको अदालत काकी समझे और अदालत से इन्तिजाम मजकूर कराने के लिये हर दरखास्त कुर्की फसल इस्तादह में वह वक्त दर्ज करना चाहिये कि फसल मजकूरके काटने या जमा हाने के लायक होनी अगलव है—

( २ ) बकैद इन शरायतके जो अदालत इस गरज से हुक्म कुर्की या किसी हुक्म मावादकी रूसे लगाये मदयून डिगरी पैदावारकी निगरानी करसक्ता है और उसको काटकर जमा करसक्ता है और कोई और काम करसक्ताहै जो उसकी पुरखगी या हिकाजतके लिये जरूरहो और अगर मदयून डिगरी जुम्ला या बाज अफआल मजकूर न करे तो डिगरीदारको इस्लियार होगा कि बइजाजत अदालत और बकैद उन्हीं शरायतके जो जुम्ला या बाज अफआल मजकूर खुदकरे या मारफत किसी शख्स मुकर्ररा अपने के कराये और जो खर्चा डिगरीदारका पड़ेगा वह मदयून डिगरी से उसी तरह से वसूल होसकेगा कि गोया वह डिगरी में दाखिल या जुज्व डिगरी है—

( ३ ) जो पैदावार जिराअत वतौर फसल इस्तादहके कुर्क कीजाये उसकी निस्वत यह नहीं समझा जायगा कि कुर्की से छूटगई या उसको दुवारा कुर्क करने की जरूरतहै महज इस वजह से कि वह जमीनसे अलग करदीजाये—

( ४ ) अगर हुक्म कुर्की करने फसल इस्तादहका बहुत दिन कबल इसके कि फसल मजकूर काटने या जमा करने के लायक हो सादिर कियाजाय तो अदालतको इस्लियार होगा कि हुक्म मजकूरका इजरा एक मुदततक जिसको अदालत मुनासिब समझे मुलतवी रखे नीज उसको इस्लियारहै कि हुक्म मजकूर विदी मजमूनसादिर करेकिताइजराय हुक्म कुर्कीके यह काम न हटाई न जाय—



( ५ ) जो फसल इस्तादह इस किस्मकीहो कि जमा न होसकतीहो वह बीस दिनसे कब्ज उस वक्तके जब कि वह कटने या जमा होनेके लायकहो इस कायदे के बमूजिव कुर्की नहीं होसकेगी-

२२ =

४६-( १ ) दरसूरत-

कुर्की कर्जा और हिस्सा  
और दोगर जायदादकी  
जो मदयून डिगरीके क-  
ब्जे में न हो

( अलिफ ) ऐसे कर्जाके जिसकी यावत इतमीनातके लिये कोई दस्तावेज काविल वैवशिशरा न लिखीगईहो-

( बे ) या किसी जमाअत सनदयाफ्रताके सरमायाके हिस्से के-

( जीम ) या किसी और जायदाद मन्कूला के जो मदयून डिगरीके कब्जा में न हो वजुज ऐसी जायदादके जो किसी अदालतमें अमानतन् जमा या अदालतकी हिफाजतमें हो-कुर्की वजरिये हुक्म तहरीरी मशयूर मुमानिअत उन अमूरके होगी-

( १ ) कर्जाकी सूरतमें कर्जख्वाहको यह मुमानियत होगी कि तासदूर हुक्ममानी अदालतके वह कर्जा बमूल न करे और कर्जदारको यह कि वह तासदूर हुक्म मजफूर कर्जा थदा न करे-

( २ ) दरसूरत हिस्साके जिनके नामसे हिस्सा दर्ज रजिस्ट्रहो उसको यह मुमानियत होगी कि उसको मुन्तकिल और उसका मनाफा बमूल न करे—

( ३ ) कर्जदारको जिसको कायदा तहतीकी ( १ ) के फिकरा ( १ ) के वसूजिव मुमानियत हुईहो इस्तिथारहै कि जर कर्जा जिम्मगी अपना अदालत में जमा करदे और उसके जमा करने से वह उसी कदर बरीउज़िमा होजायेगा कि गोया उसने शरूस् मुस्तहक वसूल कर्जाको अदा कियाथा—

४७—अगर जायदाद कुर्की तलव हिस्सा या इस्तेहकाक मदयून डिगरी जदीद कुर्की हिस्सा माल म- उस जायदाद मन्कूलाका हो जिसके मुश्तरक मालिक न्कूला मदयून डिगरी और शरूस् दीगरहों तो उसकी कुर्की वजरिये इत्तिनानामाके होगी जो मदयून डिगरीके पास भेजा जायगा कि हिस्सा या इस्तेहकाकको मुन्तकिल या उसको किसी नोअके मतालदाकी ज़ेरवार न करे—

४८—( १ ) अगर जायदाद कुर्की तलव तनख्वाह या अलाउंस अ- जदीद कुर्की तनख्वाह या अ- फ़सर सर्कारी या मुलाजिम रेलवे कम्पनी या मुलाजिम लाउंस अफसर सर्कारी हाकिम मौक्ताकाहो तो अदालतको आम इससे कि मद- मुलाजिम रेलवे कपनी यून डिगरी या अफसर तकसीमकुनिंदा तनख्वाह या मुलाजिम हाकिम मौक्ता अलाउंस मजकूर अदालतके हुदूद अरजीके अन्दरहो या न हो इस्तिथार होगा कि तादाद वक़ैद शरायत दफा ६०—एकही तन- ख्वाह या अलाउंस से या माहाना अक़सातके जरिये से यानी जैसा कि अदालत हुक्मदे वजअ करनेका हुक्मदे और हुक्मकी इत्तिना उस उह- देदारके पास पहुँचनेपर जिसको गवर्नमेंटगजटआफ़इण्डिया गजट सर्कारी मुक्तामी में जैसा कि मौक्ताहो वजरिये इश्तिहारके इस गरज से मुक्तररकरे वह अफसर या शरूस् दीगर जिससे तनख्वाह या अलाउंस मजकूर की तकसीम मुतअल्लिकहो वह तादाद जर जो अजरूय हुक्म याफ़्तनी हों या अक़सात माहाना जैसी सूरतहो वजअ करके अदालतमें मुरसिल करेगा—

( २ ) अगर हिस्सा कुर्की तलव तनख्वाह या अलाउंस मजकूर का वसूजिव हुक्म कुर्की साविक और गैर तामील शुदहके पहिलेही वजअ करके अदालत में मुरसिल होगयाहो तो अफसर मुक्तर- रह गवर्नमेंट फिलफौर हुक्म मात्रादको मय पूरी कैफियत म- रातिव कुर्की मौजूदहके अदालत जारी कुनिन्दा हुक्म मजकूर में आपन करेगा—

( ३ ) हर हुक्म कायदा हाज़ाका इत्ला उस सूरतमें कि वमजिब गुरायत कायदा तन्हीं ( २ ) वापस किया जाये व गैर मजीद उच्छिलाअ या दीगर हुक्म के गवर्नमेंट या रेलवे कम्पनी या हाकिम मौका पर जैसी सूरतहो वाजिदुल् तामील होगा जबकि मदगून डिगरी उन हद्द आराज़ी के ऊन्दरहो जहां मजमूसा हाजा बरबजत नाफिजहो और जबकि हद्द मजकूर ने बाहरहो अगर आला हजरत मलिक मुञ्जुजम की माल-गुजारी हिन्द में या सरमाया रेलवेकम्पनी से जो ब्रिटिश इंडिया के किनी हिस्से में कारोबार करनी हो या सरमाया हाकिम मौका से जो ब्रिटिश इंडिया में हो तनख्वाह या अलाउंस पाताहो और गवर्नमेंट या रेलवे कम्पनी या हाकिम मौका यानी जैसी सूरतहो उस रकम का जिम्मेदार होगा जो ब-लितानवर्जी इन कायदा के दीजाये—

न लिखा है, दफ्ता ४६—( १ ) वजुज उनके कि हस्व कायदा हाजा दीगर निहज  
 १ न २५ वि- हज मजमूसा, पर हुक्महो जायदाद शराकत कुर्त और नीलाम न  
 ३ लिखा है, होरी दर्सागै उजराय ऐसी किसी डिगरी के जो गैर उस डिगरी के हो  
 ४ न २२ जो फरम या फरमके शरका के ऊपर बहमियत उनकी शिरकत के  
 नादिरहो—

अगर शरीक मजकूर वहक डिगरीदार इस्तेहकाक मजकूर को किसी नोअके मतालिवा का जेरवार करता या जैसा कि हालात मुक्तजी हों—

( ३ ) दूसरे शरीक या शुरका को इस्तिनयार होगा कि किसी वक्त इस्तेहकाक जेरवार मतालिवा का इन्फिकाक करालें या नीलाम की सूरत में उसे खरीद लें—

( ४ ) हर दरख्वास्त बावत हुक्म हस्व कायदा तहती ( २ ) की तामील मदयून डिगरी और उसके शुरका या उनमें से ऐसे लोगोंपर कीजायेगी ब्रिटिश इंडिया में हो—

( ५ ) हरदरख्वास्तकी तामील जो शरीक मदयून डिगरी कायदा तहती—

( ३ ) के वमजिव गुजराने डिगरीदार और मदयून डिगरी और दीगर शुरकाय में से ऐसे लोगों पर होसी जो दरख्वास्त में शामिल न हुये हों और ब्रिटिश इंडिया में मौजूद हों—

( ६ ) तामील जिमनी कायदा तहती ( ४ ) या जिमनी कायदा तहती ( ५ ) के निस्वत समझा जायेगा कि जुमला शुरकाय पर हुई और जुमला अहकाम की तामील जो ऐसी दरख्वास्तों पर सादिर कियेजायें और इसी तरह कीजायेंगी—

५०— ( १ ) जबकि डिगरी वमुकाविले दूकान शिराकती के सादिर इजरायडिगरी वमुका-  
विले दूकान शिराकती हुई हो तो उसका इजरा होसकताहै—

( अलिफ ) वमुकाविले किसी जायदाद शिराकत के—

( वे ) वमुकाविले उस शख्स के जो हस्व कायदा ६ या कायदा ७-आर्डर ३० के अपने नामसे हाजिर हुआ है या जिसने फीडिंग में शरीक होना तसलीम करलियाहै या जो शरीक तजवीज होचुकाहै—

( जीम ) वमुकाविले उस शख्स के जिसपर वजात खुद वहसियत शरीक के सम्मन की तामील हुई है और जो हाजिर नहीं हुआ है—

नवर ६ सन्  
१८७२ ई०

मगर शर्त यह है कि ज़िपनी कायदा हाजि में कोई अमर अहकाम दफा  
२४७—कानून मुआहिदा हिन्दू सन् १८७२ ई० को महदूद या दीगर  
निहजपर मुतासिर न करेगा—

( २ ) जब कि डिगरीदार यह दावा करे कि वह मुस्तहक इजरा करने  
डिगरी का वमुक्ताविले किसी शख्स के सिवाय शख्स मुतज-  
किरै कायदा तहती ( १ ) फिकराजात ( वे ) व ( जीम ) के  
वहसित शरीक फरम के है तो वह अदालत सादिरकुनिन्दा  
डिगरी की दरख्वास्त वगरज हुसूल इजाजत देसक्ता है और  
जिस सूरत में कि ज़िम्मेदारी की निस्वत निजाअ न हो तो  
अदालत इजाजत देनेकी मजाज होगी या जिस सूरत में कि  
ज़िम्मेदारी की निस्वत निजाअ हां तो मजाज होगी कि हुक्म  
दे कि शख्स मजकूर की ज़िम्मेदारी की इमीतरह तहकीकात  
व तजवीज कीजाये जिस तरह कि नालिश में अमर तनकीह  
तलब की तहकीकात व तजवीज कीजाती है—

( ३ ) जिस सूरतमें किसी शख्सकी ज़िम्मेदारीकी तहकीकात व तज-  
वीज हस्व कायदा तहती ( २ ) हुईहो तो हुक्म ममदूरह का  
वही असर होगा और दरबारे अपील वगैरह के उन्हीं शरायत  
का तावे होगा कि गोया वह डिगरी है—

( ४ ) वटस्तसनाय जायदाद शिराफतीके डिगरी जो फरमके उपरहो  
किमी शरीक फरमको वरी या ज़िम्मेदार न करेगी न दीगर  
निहजपर मुतासिर करेगी इला उम सूरत में जब कि उसपर  
सम्मत वगरज हाजिरी व जवाबदिहीकी तामील होगईहो—

५१—अगर शै कुर्ती तलब कोई दस्नावेज कायिल वैरदिगहो जो अ-  
दालत में दाखिल न हुईहो और न किसी अवलकार  
मजकूर की दिकाजत में हो तो उसकी कर्ती उसपर  
कब्जा बाँटने के जगिये में होगी और दस्नावेज मजमूर अदालतमें  
हाजिर कीजायगी और तावे हुक्म मज्हीद अदालत कब्जा में रहेगी—

५२—अगर मान कुर्ती तलब अदालत या उद्देदार मजमूरकी दि-

कुर्की जायदाद की जो अदालत या अहलकार या उद्देदार मजकूरके पास इत्तिलाअनामा इस दर-  
स्तरकारीहिफाजतमेंहो रूखास्तके साथ भेजा जायगा कि माल मजकूर और  
 उसका सूद या हिस्सा मुनाफा जो वाजिबुल् अदा हो तावे हुक्म मजीद  
 अदालत सादिर कुनिन्दा इत्तिलाअनामाके रहेगा—

मगर शर्त यह है कि अगर माल मजकूर किसी अदालतकी हिफाजत  
 में हो तो निज़ाम इस्तेहकाक मिलिकयत या वसूल मुकद्दम की जो मावैन  
 डिगरीदार और किसी ऐसे शख्स गैरके पैदाहो जो मदयून डिगरी नहीं  
 है और जो वज़रिये किसी इन्तकाल या कुर्कीके या और तरीक़ से माल  
 मजकूर में हक़ रखने का दावीदार हो अदालत मजकूरसे तै कीजायेगी—

५३—अगर शै कुर्की तलव ऐसी डिगरी हो जो वास्ते अदाय जर नक्कद दफा २७३  
कुर्की डिगरी | या वास्ते नीलाम बनिफाज रहन या मुवाखिजा के हो—

( अलिफ ) अगर डिगरी मुसदिरह उसी अदालत की हो तो उसकी  
 कुर्की उसी अदालत के हुक्म से कीजायेगी—और

( बे ) अगर डिगरी कुर्की तलव मुसदिरह किसी दूसरी अदालत  
 की हो तो उसकी कुर्की इस तरह होगी कि इत्तिलाअनामा  
 उस अदालत का जिसने डिगरी इजरा तलव सादिर की  
 हो इस दरख्वास्त के साथ उस दूसरी अदालत में मुरसिल  
 किया जायेगा कि वह अपनी डिगरी का इजरा मुल्तवी रखे  
 इस शर्त से और उस वक्तक कि—

( १ ) अदालत सादिर कुनिन्दा डिगरी इजरा तलव उस इत्तिलाअ-  
 नामाको फिस्ख करे—या

( २ ) डिगरी इजरा तलव का डिगरीदार या उसका मदयून डिगरी  
 - अदालत वसूल कुनिन्दा इत्तिलाअनामा मजकूरको दरख्वास्त  
 दे कि वह अदालत अपनी डिगरी को जारी करे—

( २ ) अगर अदालत कायदा तहती ( १ ) के फिकरा ( अलिफ ) के  
 वमूजिव हुक्म सादिर करे या वमूजिव फिकरा तहती ( २ )  
 फिकरा ( बे ) कायदा तहती मजकूर के दरख्वास्त ले तो उस  
 को लाज़िम होगा कि कर्जख्वाह कुर्ककुनिन्दा डिगरी या उसके  
 मदयून की दरख्वास्त पर डिगरी मकसूता का इजरा मुरु

करके जर मुहसिल डिगरी इजरा तलवकी बेबाकीमें लगाये-

- ( १ ) जिस डिगरी का इजरा वजरिये कुर्की उस दूसरी किसम की डिगरी के जो कायदा तहती ( १ ) में मजकूर हैं मंजूर हो उसकी डिगरीदार की निस्वत समझा जायेगा कि डिगरी मकरूका के डिगरीदार का कायममुकाम है और डिगरी मकरूका मजकूर का इजरा उस तरीका में करने का मुस्तदक होगा जो डिगरी मकरूका मजकूर के डिगरीदार के लिये जायज हो-
- ( ४ ) अगर माल कुर्की तलव वइलत इजराय डिगरी ऐसी डिगरी हो जो किसम मुतजकिह तहती ( १ ) की डिगरी न हो तो उसकी कुर्की इस तरह होगी कि अदालत सादिरहुनिन्दा डिगरी इजरा तलव इत्तलानामा डिगरी कुर्की तलव के डिगरीदार के नाम इस इम्तनाअ से भेजेगी कि वह उस डिगरी को हुन्तकिल या किसी नोअ के मनालिवा का जेरदार न बरे और जिस हालमें कि यह डिगरी किसी और अदालत की सादिर कीहुई हो तो उस दूसरी अदालत के पास भी इत्तलानामा इस मजपून से भेजेगी कि वह डिगरी कुर्की तलव का इजरा न करे तावक्ते कि यह इत्तलानामा बहुतम अदालत मुसिलहुनिन्दा के किसम न किया जाय-
- ( ५ ) जो डिगरी कि इन कायदा के वमूजिव कुर्की हो उसके कादित को लाजिम है कि अदालत इजराय कुनिन्दा डिगरी मकूर को वह इत्तलाय और मदद दे जो वजह माकूल तलम की जाय-

५४-(१) अगर जायदाद जायदाद गैर मन्कूला हो तो उसकी इफा २५  
कुर्की जायदाद गैर मन्कूला कुर्की इस तरह होगी कि हुक्म के जरिये से मद्रयून  
डिगरी को इम्तिनाअ कीजायेगी कि वह जायदाद मजकूर  
को किसी तौर से मुन्तकिल या किसी नोअ से ज़रवार मताल्लिवा न करे  
और जुमला शख्स उस इन्तकाल या मताल्लिवा से फायदा न उठावे—

(२) वह हुक्म किसी जगह जायदाद मजकूर के ऊपर या उसके  
मुत्तसिल वजर्ब दुहल या किसी और तरीका मुरविवा से मुश्तहर  
किया जायेगा और उसी हुक्म की एक एक नकल जायदाद  
कचहरी के मंजर आमपर आवेजां कीजायगी और जब कि जाय-  
दाद आराज़ी मालगुजारी सरकारहो तो उस जिला के कलक्टर  
की कचहरी में भी चर्चा होगी जिसमें वह आराज़ी बाकै हो—

५५-अगर—

बागुज़ारत कुर्की बाद  
ईफाय डिगरी

इफा २५

(अलिफ) तादाद डिगरी शुद्ध मय खर्चा और जुमला मताल्लिवा जात  
और मसारिफके जो किसी जायदादकी कुर्कीमें आयद हुये  
हो अदालतमें दाखिल करदीजाये—या

(बे) डिगरीका ईफा अदालतकी मारफत और तरह होजाये—या  
उसकी तसदीक अदालत में कीजाये—या

(जीम) डिगरी मुस्तरद या मंसूख कीजाये—

तो बागुज़ारत कुर्कीकी समझी जायेगी और दरसूरत जायदाद गैर  
मन्कूलाके बागुज़ारत अगर मद्रयून डिगरी चाहे उसके सर्फसे मुश्तहर  
कीजायेगी और एक नकल इश्तिहारकी वमूजिव तरीका मुकररह जायदा  
अखीर मुतजकिरह वालाके चर्चा कीजायेगी—

५६-अगर जायदाद मकरूका सिका रायजुलवक्त या करसीनोटहो तो इफा २७

हुक्म बावत इसके कि अदालतको इस्तिथारहै कि किसी वक्त अद्याम कयाम  
सिका या करसी नोट कुर्कीमें यह हिदायतकरे कि वह सिका या नोट या कोई  
फरीक मुस्तरहक डिगरी जुज्व उसका जो डिगरीके ईफाके लिये काफ़ीहो उस  
फरीकको अदा कियाजाये जो डिगरी की रूपे उसके  
पानेका मुश्तहकहो—



जमीन

५७-अगर कोई जायदाद वसूलत इजराय डिगरी कुर्क हुई हो मगर इस्तिनाम हुआ वजह कूर डिगरीदारके अदालत दरखास्त इजराय की निश्चय कोई मज्बूत कार्रवाई न करसके तो अदालतको लाजिम होगा कि दरखास्त नामंजूरकरे या किसी तारीख आयन्दा तक वजह काफ़ी कार्रवाई मुलतवी रखे-और दरखास्त मजकूरकी नामंजूरीपर कुर्की सा-  
क्तिन होजायेगी-

## दुआवी और उजरात की तहकीकात

५८- ( १ ) अगर कोई जायदाद वसूलत इजराय डिगरी कुर्की तहकीकात दुआवी व उजरात निश्चय कुर्की जायदाद मजकूरकी कीजाय और कोई दावा निश्चय उस जायदाद के या उजर निश्चय कुर्की के इस बिना कर दियाजाये कि वह जायदाद कुर्की के लायक नहीं है तो अदालत को लाजिम है कि दावा या उजर की तहकीकात करे और इजहार शरह दावीदार या उजरदार के और नीज जुमला दावा में वही इस्तिनार अमल में लाये कि गोया वह फरीक मुकदमा था-

लेकिन अगर अदालत के नजदीक ऐसे दावा या उजर के पेश करने में कसदन् या विला जरूरत नबहुफ हुआ हो तो उसकी तहकीकात न कीजायेगी-

( २ ) अगर जायदाद जिसमे दावा या उजर मुतअल्लिक हो मुश्त-  
मनायती नाम हर वनीलाम होचुकीहो तो लायक है कि अदालत जिसने नीलाम का हुक्म दियाहो तादौरान तहकीकात दावा या उजर नीलाम मुलतवी रखे-

उसकी तरफ से अमानतन् किसी और शख्स के कब्जे में न थी या किसी काश्तकार या और शख्स के दखल में न थी जो मदयून डिगरी को लगान देता हो या यह कि वह जायदाद गो कुर्की के वक्त मदयून डिगरी के कब्जे में रही हो मगर वह अपने लिये या बतौर अपनी मिलियत के उसपर काबिज न था बल्कि किसी और शख्स के लिये बतौर अमानतदार दूसरे शख्स के या जुजन् अपने लिये और जुजन् दूसरे शख्सकी तरफ से कब्जा रखता था तो अदालतको लाजिम होगा कि जायदाद मजकूरके कुलन् या जुजन् जिस कदर मुनासिव मालूम हो कुर्की से वागुजाश्त होनेका हुक्म सादिर करे—

६१—अगर अदालतका इतमीनान होजाये कि मदयून डिगरी जाय- दफा २८१  
दावाकी नामज्दरी | दाद मकरुकापर कुर्कीके वक्त बतौर मालिकके काबिज  
था न कि किसी दूसरे शख्सकी तरफ से या कि कोई और शख्स उसपर  
मदयून डिगरी की तरफ से अमानतन् काबिज था या कि वह किसी का-  
श्तकार या और शख्सके दखल में थी जो मदयून डिगरीको लगान देता  
है तो अदालतको लाजिम है कि उस दावाको नामजूरकरे—

६२—अगर अदालतका इतमीनान होजाये कि जायदाद मकरुका किसी दफा २८२  
बहिफ्त हक देनदार | ऐसे शख्सके पास रहन या जेर मतालिया है जो उसपर  
कुर्की बहाल रहना | कब्जा नहीं रखता है और अदालत कुर्की कायम रखना  
मुनासिव समझे तो अदालत मजाज होगी कि बहिफ्त रहन या मतालिया  
कुर्की कायम रखे—

६३—अगर दावा या उजरदारी दायर कीजाय तो जिस फरीकके खि- दफा २८३  
हकिमत उन दावाकी | लाफ हुक्म सादिर कियाजाय उसे इस्तिथार है कि  
जो जायदाद मकरुका | नालिश नम्बरी वास्ते साबित कराने उस हकके जो  
में इस्तेहकाक कायम क- | उसे जायदाद मुतनाजा में पहुँचता है रजुअ करे मगर  
रने के वावतहों— | सिवाय पावन्दी नतीजा ऐसी नालिशके ( अगर कोई  
हो ) वह हुक्म कतई होगा—

नीलाम अमूमन् ॥

इ इंतयार अंतदार हुक्म निम्न इसके कि जायदाद मजकूरका नीलाम किया जाये और जर समन शर्खम मुस्तहकको दिया जाये

मजाज होगी कि जायदाद जो उसके हुक्मसे कुर्र हुई हो और काविल नीलाम हो या हुज्ज जायदाद मजकूर जो डिगरीके ईफाके लिये जरूरी मालूम हो नीलाम किया जाये और जरसमन नीलाम मजकूरका या उसका हुज्ज काफ़ी उस फ़रीकको दिया जाये जो डिगरी की

रुसे उसके पानेका मुस्तहक हो—

न २८६

६५—सिवाय इसके कि दीगर निहजपर हुक्म हो हर नीलाम वइलत नीलाम किमके जोये इजराय डिगरी मारफत किसी अहलकार अदालत या से और क्योकर हुआ और शर्ख के जिसको अदालत इस कारख़ास के फ़रेगा— लिये मुक़रर करे अमल में आयेगा और नीलामनाम

हस्य तरीक़ा मुअयनः हुआ करेगा—

न २८७

६६— ( १ ) अगर वइलत इजराय डिगरी किसी जायदाद के नीलाम इतिहार नीलामनाम होनेका हुक्म दिया जाये तो अदालत को लाज़िम है कि नीलाम मजसूदहका इतिहार अदालत की जवान में मुस्तहक कराये—

( २ ) इतिहार मजकूर डिगरीदार और मदयून डिगरी को नोटिस दिये जाने के बाद तैयार किया जायेगा और उसमें नीलामकी तारीख और मुक़ाम दर्ज होगा और नीज मरातिब ज़ैल मुफ़्तस्सिल ज़ैल इग़ुल्मतदूर सेहत और सिदाक़त के साथ लिगे जायेंगे—

( ३ ) हर ऐसी दरखास्त के साथ जो हस्व कायदा हाजा वास्ते नीलाम के गुजरे एक वयान का मुन्सलिक होना लाजिम है जिसपर दस्तखत और जिसकी तसदीक उसी तरह होगी जैसे कि प्लीडिंगपर दस्तखत और उसके तसदीक के लिये इस मजमूआ में पेशतर हुक्म है और वयान मजकूर में मरातिव जो हस्वकायदा तहती ( २ ) इश्तिहार में दर्ज होने चाहिये जहांतक सायल को मालूम है या जहांतक सायलको तहकीक होसक्ते हैं दर्ज होंगे—

( ४ ) वगैरज तहकीक करने उन मरातिव के जो इश्तिहार में दफा २८८ लिखेजायेंगे अदालत को जायज है कि जिस शख्स को तलब फिकरा अखीर करना जरूरी समझे उसे तलब करे और उन मरातिव में से किसी की वास्त उस से इजहारले और जो दस्तावेज उनके मुतमल्लिक उसके कब्जे या इस्लियार में हो वह उस से हाजिर कराये—

६७— ( १ ) हर इश्तिहार हतुन्वसअ मुताबिक तरीकै मुअय्यनः दफा २८६ मुश्तहर करनेवातरीका कायदा ५४ कायदे तहती ( २ ) मुश्तिव व मुश्तहर किया जायेगा—

( २ ) अगर अदालत हिदायत करे तो ऐसा इश्तिहार मुकाम के सरकारी गजट या मुकाम के किसी अखबार में या दोनों में मुश्तहर किया जायेगा—और खर्चा उसे मुश्तहरीका भिन्नुमला खर्चा नीलाम के मुतसब्बिर होगा—

( ३ ) अगर अलहिदा अलहिदा नीलाम की गरज से जायदाद लाटवन्दी में तक्रसीम कीजाये तो यह जरूर नहीं है कि हर लाटके वास्ते एक अलहिदा इश्तिहार दियाजाये इला उस सूरत में कि अदालतकी राय में किसी और तौरपर नीलामकी मुनासब इत्तिलाअ न होसके—

६८—बजुज बसूरत जायदाद मुतजकिरै डवारन शर्ती कायदा ५३ के दफा २६० वात्तेनीलाम कोई नीलाम महकूमै आर्डर हाजा निलारजामन्दी तहरीरी मदयून डिगरी के उस वक्त तक न होना चाहिये कि जिस नारीस

को नकल इशितहारकी जज आमिर नीलाम की अदालत में आवेजा की गई हो उससे दर सूरत जायदाद और मन्कूलाके अर्से अकल दर्जा ३० योम का और दर सूरत जायदाद मन्कूलाके अकल दर्जा अर्सा १५ रोज का न गुजर जाये—

का २६१

६६—अदालत मजाज है कि अगर मुनासिव समझे तो इस आर्डर के इलतवा और मौकूफों गुताविक नीलाम को किसी और तारीख और सायत नीलाम— तक मुलतवी करदे और आमिल नीलाम अगर मुनासिव समझे इलतवाकी वजूह कलमबन्द करके नीलाम मुलतवी करे—

मगर शर्त यह है कि जब नीलाम कचहरी में या कचहरीके अहाते के अन्दर हो तो वगैर इजाजत अदालतके इलतवा नहीं होगा—

( २ ) अगर नीलाम हस्व कायदा तहती ( १ ) सात रोजसे जियादह अर्सेतक मुलतवी किया जाये तो एक इशितहार जदीद मुताविक कायदा ६७ मुस्तहर किया जायेगा इला उस सूरत में कि मद्यून दिगरी उससे दर गुजर करनेपर राजी हो—

( ३ ) अगर लाटकी बोली सतम होने से पहिले कुल राया मतालिया और सर्चा ( वशूल सर्चा नीलाम ) आमिल नीलामके खबल दाजिर किया जाये या सबूत इस बातका हस्व इतमीनान उहदेदार मजकूर दिया जाये कि वह मतालिया मय सार्चा राय मजकूर उस अदालत में दाखिल हो चुका है जिसने नीलामका हुकम दिया था तो लाजिपट कि नीलाम मौकूफ किया जाये—

का २६३  
का २६४

७०—कायद ६६ लगायत ६६ कोई इवारत उन सूरतों से मुतअविक नाज नीलाम उन स्थान न होगी जिनमें दिगरीका इजरा कलक्टरके पास मुन्तदरने मुताजा है— किल होगा हो—

मदयून डिगरी की दरख्वास्त पर शख्स कासिरसे उहदेदार या शख्स दीगर आभिल नीलाम उन अहकाम के बमोजेब बसूल करेगा जो वास्ते इजराय डिगरी अदायजर नक़्द के मुकरर हैं—

७२— ( १ ) वह डिगरीदार जिमकी डिगरी के ईफा के लिये दफा २६४

डिगरीदार बिलाहुसूल  
इजाजत नीलाम मे  
बोली नहीं बोल सक्ता  
और न खरीद सक्ताहै

जायदाद नीलाम कीजाये मजाज नहीं है कि बिला हुसूल इजाजत सरीह अदालत जायदाद नीलामी के लिये बोली बोले या उसको खरीद करे—

( २ ) अगर डिगरीदार इजाजत मजकूर हासिल करके जायदाद डिगरीदारकी खरीदारी खरीद करे तो जायजहै कि वह मतालिवा जो डिगरी जर डिगरी की अदाई की खुसे वाजिबुल अद हो और जर समन नीलाम व समझी जायेगी मुक्ताविले एक दूसरे के बरिआयत अहकाम दफा ७३ मुजरा होजाये और अदालत इजरा कुनिदा डिगरी कुल या जुज्व ईफा डिगरी का उसके मुताबिक उसपर लिखदे—

( ३ ) अगर डिगरीदार खुद या मारफत किसी और शख्स के बिला हुसूल ऐसी इजाजत के जायदाद खरीद करे तो अदालत मजाजहै कि अगर मुनासिब समझे बरतवक्त दरख्वास्त मदयून या किसी और शख्स के जिमेके हुक्क पर नीलामका असर पड़ाहो हुक्म वास्ते इनफिसाख नीलाम सादिर करे और खर्चा ऐसी दरख्वास्त और हुक्म और कमी कीमत की जो नीलाम सानीके बायस बकूअ में आये और कुल इखराजात मुतअल्लिकै नीलाम सानी डिगरीदारसे अदा कराये जायेंगे—

७३— कोई उहदेदार या दूसरा शख्स जो किसी नीलाम के दफा २६२

उहदेदार नीलाम मे न  
बोली बोल सक्ते हैं न  
जायदाद खरीद सक्तेहैं

मुतअल्लिक कोई खिदमत अंजाम देताहो उसे लाजिमहै कि हीलतन् या सराहतन् जायदाद के लिये नीलाममें बोली न बोले या ऐसी जायदाद में कोई इस्तद्कक

हासिल न करे और न हासिल करनेका अकदाम करे—

## जायदाद मन्कूलाका नीलाम

जर्नेद

७४- ( १ ) अगर जायदाद नीलाम होनेवाली अज किसम पैदावार नीलाम पैदावार जि- जिराअत हो तो नीलाम—  
राखनी

(अलिक) दर सूरत फसल इस्तादह उस जमीन पर या करीब उसके किंग जायेगा जहां फसल उगीहो—या

( वे ) अगर फसल काटलीगई या जमा करलीगईहो तो खलियान में या उमके करीब जहां दाने वगैरः के लिये जमाकी गईहो और दरसूरत चारा उस-जगह जहां उसका अम्बार किया गयाहो—

मगर शर्त यह है कि अगर अदालतकी नायमें जियादह मुनफ़मत पर फरोख्त होनेकी उम्मेदहो तो मजाजहै कि नीलाम ऐसे मौकापर किये जाने की हिदायत करे जो गुजरगाह पामहो—

( २ ) अगर बरवक्त नीलाम—

(अलिक) फसलकी क्रीमत आमिल नीलामके अंदाजा में काफ़ी न लगे—और

( वे ) मालिक पैदावार या मिन्तानिव उमके कोई शर्त मजाज दरख्वास्त करे कि तायीम थायंदी या बाज़ार के दूसरे रोज़तक अगर जाय नीलाम पर बाज़ार लगताहो नीलाम मुल्तवी कियाजाये--

( २ ) अगर फरल इस किसमकी हो कि जमा नहीं कीजात्ती हो तो कटने और जमाकियेजाने से पेशतर नीलाम होसकी है और लाजिम है कि ऐसी फरल के खरीदार को जमीनपर जाने और जुमला फेल ज़रूरी मुतअल्लिक निगरानी और काटने और जमा करने के अमल में लाने का इस्तिथार दियाजाये—

७६—अगर जायदाद नीलाम होनेवाली अज किसम दस्तावेज काविल दफा २६६  
स्तावेजात काविल वै वैशिशरा हो या हिस्सा किसी जमाअत सनदयाफता  
वशिशरा और हिस्सा का हो तो अदालत मजाज होगी कि वजाय सादिर  
जमाअत सनदयाफता— करने हुक्म नीलाम आम के दस्तावेज या हिस्सा  
मजकूरहवाला को मारफत दलाल के फरोख्त करने की इजाजत दे—

७७—( १ ) जब कि जायदाद मनकूला बजरिये नीलाम आम के दफा २६७  
नीलाम आम— फरोख्त की जाये तो कीमत हरलाट की वक्त नीलाम  
या जिस कदर जल्द बादनीलामके अलहकार या शख्स दीगर आयिल  
नीलाम हुक्म दे दाखिल करनी होगी और दरसूरत न दाखिल करने के  
वह शै फौरन् दुवारा नीलाम की जायेगी—

( २ ) बाद अदाय जरसमन के अलहकार या शख्स दीगर आयिल  
नीलाम एक रसीद उसकी वावत देगा और नीलाम कतई  
होजायेगा—

( ३ ) अगर नीलाम होनेवाली जायदाद मनकूला हिस्से माल मग- गदीद  
लूका मदयून डिगरी और जमाअत सनदयाफता हो और दो  
या कई अशखास जिनमें से एक मालिक मुश्तरक उस जाय-  
दाद का हो जायदाद मजकूर या उसके किसी लाटके लिये  
एकही तादाद की बोली बोलें तो वह बोली मालिक मुश्तरक  
की बोली समझी जायेगी—

७८—जायदाद मनकूला का नीलाम उसकी मुश्तहरी या तामील में दफा २६८  
वेजावतगी से नीलाम वेजावतगी होने के सबब से नाजायज न होजायेगा लेकिन  
जायदाद मनकूला ना अगर किसी शख्स को ऐसी वेजावतगी से जो किसी  
जायज न होगा लेकिन और शख्सकी जानिव से बाकै हुई हो जरर पहुंचे तो  
न शख्स जररतीदह उसको इस्तिथार है कि वह बास्ते बखूलयायी हुआ-  
नालिश करसक्ता है— बिका या ( अगर वह शख्स खरीदार हो ) वावत बिकने उस खास  
२५



जायदाद के और दर्शन उसके न मिलने के वावत मुआविजा के उस के नाम नालिश दायर करे—

२६६

७९—अगर जायदाद नीलाम शुद्ध जायदाद मन्कूला हो और कच्चा निपुर्तगी जायदाद मन्कूला हो तो चाकई उसका अमल में आया हो तो ऐसी जायदाद नदी—

सरीदार के दयाला करनी होगी—

३००

( २ ) जय जायदाद नीलामनुद्ध अज क्लिप्त जायदाद मन्कूला के हो जिसपर सिवाय मध्यून डिगरी के किसी और शख्स का कब्जा हो तो सरीदार को जायदाद मजकूर इस तौर से दिलाई जायेगी कि शख्स कादिज जायदाद मजकूर को इत्तिलाज दीजाये कि जायदाद पर किसी शख्स को सिवाय सरीदार नीलाम के दस्त न दे—

वेज काविल वैशिशरा या हिरसाके मतलूब हो तो जायजहै कि जज या वह उहदेदार जिसको वह इस गरज से मुक़रर करे ऐसी दस्तावेज की तकमील करे या ऐसी इवारत इन्तिकाली लिखदे जो जरूरी हो और ऐसी तकमील या इवारत इन्तिकाली का वही असर होगा जैसा कि तकमील या इवारत इन्तिकाली मिनजानिव फरीक का है—

( २ ) नमूना इवारत इन्तिकाली या तकमील का हस्व मुन्दर्जेजैल होगा—यानी जैद मारफत खालिद अदालत फलां का जज ( या जैसी सूरत हो ) मुकदमा बकर बनाम जैद—

( ३ ) जबतक कि दस्तावेज या हिस्सा मजकूर का इन्तिकाल न हो अदालत को इख्तियार होगा कि किसी शख्स को वास्ते बसूल सूद या हिस्सा मुनाफा के जो बायत उसके याफ्तनी हो और उसकी रसीद पर दस्तखत का देने के लिये बजरिये हुक्म के मुक़रर करे और इसतरह की रसीद दस्तखती कुल धमूर की निस्वत मिस्तल दरतखती खुद उसी फरीक के जायज और नातिक होगी—

८१—दरसूरत किसी जायदाद मन्कूला के जिसका जिक्र ऊपर नहीं दका ३०३ हुक्म हवालगी दरसूरत किया गया अदालत को जायजहै कि मुशतरी को या जायदाद दीगर — जिसे वह बतलाये उस जायदाद के मिलने का हुक्म दे और उसी के मुताबिक वह जायदाद मिलैगी—

## नीलाम जायदाद गैरमन्कूला

८२—नीलाम जायदाद गैरमन्कूला का बदलत इजराय डिगरी वजुज दका ३०४ कौन अदालते नीलाम अदालत मतालिवजात स्फीफा के हर अदालत के का हुक्म देसक्ती है— हुक्म होसक्ताहै—

८३—( १ ) जब हुक्म वास्ते नीलाम जायदाद गैरमन्कूला के सा— दका ३०५ एलतवाय नीलाम जायदाद गैरमन्कूला ताकि मदयून डिगरी पर डिगरीशुद्ध का इन्तिजाम करसके— दिरहो अगर मदयून डिगरी अदालत को मुतमयन करसके कि बजह इस अपर के बावर करनेकी है कि डिगरी का मतालिव बजरिये रहन या मुस्ताजरी या बैखानगी जायदाद मजमूर या उसके किसी हुज्जद के या मदयून डिगरी की किमी और जायदाद गैरमन्कूला

ला के दमून होसक्ताहै तो अदालत मजाजहै कि वरतवक गुजरने दर-  
इयास्त मदयून डिगरी की उस जायदाद के नीलाम जो नीलामके हुक्म  
में मुन्दर्ज हो ऐसी शरायतपर और उस अर्सेतक जो अदालत को मुना-  
सिव मानूमहो मुस्तजी रखे ताकि मदयून डिगरी रुया की सबील  
करसके—

( २ ) ऐसी सूरत में मदयून डिगरी को एक सार्टीफिकेट अदालत  
से मिलेगा जिसमें उसको इस्तिनयार दिया जायेगा कि वह  
वावस्फ किसी और हुक्म मुन्दर्जे दफा ६४ के एक मीआद  
मुअय्यन के अन्दर जो सार्टीफिकेट में दर्ज होगी रहन या  
मुस्ताजरी या वैमुजबिजा अमलमें लाये—

मगर शर्त यह है कि जो रुया ऐसी रहन या मुस्ताजरी या वै की  
वावत दाखिलु अदाहो वह मदयून डिगरी को न मिलेगा बल्कि अदा-  
लतमें दाखिल किया जायेगा इस्तिस्नाय उस रकम के जिसकी मुन-  
रई का डिगरीदार अन्नख्य कायदा ७२ मुस्तहकहो—

और यहभी शर्त है कि कोई रहन या मुस्ताजरी या वै जो दरय कायदा  
हाजा अमल में आये नातिक्र न होगा ता यज्ञते कि अदालत से उसकी  
मंजूरी न हो—

( ३ ) कायदा हाजाका कोई मजपून उन जायदाद के नीलाम से  
मुनमल्लिक न होगा जिसे ऐसी डिगरीके इजरा में नीलाम  
करनेका हुक्म दियाजाय कि जो जायदाद मजकूरके रहन या  
मनालिवा के मोमर गर्दानने के लिये हो—

जर समन का अजरुय कायदा ७२ के हो तो अदालत को इस्तिथार है कि इस कायदे की शरायत को नजरअंदाज करे

८५-खरीदार नीलाम को लाजिम है कि रोज नीलाम जायदाद से दफा ३०७

मीआद बिनावर अदाय | पन्दरहवें दिन कबल बरखास्त अदालत कुल जर  
काबिल जर समन के- समन बाजिबुल् अदा अदालत में दाखिल करे-

मगर शर्त यह है कि उस तादाद के शुमार करने में जो हस्ब मजकूरह वाला अदालत में दाखिल होनेवाली हो खरीदार नीलाम किसी मुजरई से फायदा उठा सकेगा जिसका वह अजरुय कायदा ७२ मुस्तहक हो-

८६-अगर रुपया मीआद मुतजकिरह कायदा अखीर मुतजकिरह दफा ३०८ कारवाई दरसूरत अदम | वालाके अन्दर दाखिल न किया जाय तो जर अमा-  
अदाय जर समन- नत वाद अदाकरने खर्चा नीलाम के सर्कार में जब्त होगा अगर अदालत ऐसा करना मुनासिब समझे और वह जायदाद दुवारा नीलाम कीजायेगी और खरीदार कासिरका इस्तेहकाक निस्वत जायदाद या किसी जुज्व जर समन नीलाम मावाद के बाकी न रहेगा-

८७-जबकि जर समन उस मीआद के अंदर जो उसके अदा के दफा ३०९ इश्तिहार दर सूरत | लिये मुकर्रर है अदा नहो तो लाजिम है कि हर नीलाम  
नीलाम मुकर्र- मुकर्रर मगर जायदाद गैर मन्कूलाका वाद इजराय इश्तिहार जदीद के जो उसी तरीके और व तर्करर उसी मीआद के हो कि दफआत मासवक में नीलाम के लिये मुकर्रर है अमल में आये-

८८-अगर वह जायदाद जो नीलाम कीजाये हिस्सा किसी जायदाद दफा ३१० हिस्सेदारकी बोली को | गैर मन्कूला या गैर मुनकसमा काहो और दो या  
तरजीह होगी- कई अशखास जिनमें से एक हिस्सेदार उस जायदाद काहो जायदाद मजकूर या उसके किसी लाट के लिये एकही तादादकी बोली बोलें तो वह बोली हिस्सेदारकी बोली संभली जायेगी-

८९- ( १ ) अगर जायदाद गैर मन्कूला किसी डिगरी के इजरा में दफा ३१० रुपया दाखिल करने | नीलाम कीगई हो तो कोई शख्स जो उस जायदाद ( अलिफ )  
परदरखास्त इनफिसा का मालिकहो या अजरुय किसी हक के जो नीलाम  
र नीलाम- मजकूर के कबल हासिल किया गया हो उसमें कुछ इस्तेहकाक रखताहो इनफिसाय नीलाम की दरखास्त देसक्ता है वशतें कि वह अदालत में रकम मुन्दजें जैल दाखिल करदे-

(अलिक) एक ऐसी रकम जो पांच सय्या फीमदी जर समन के बराबर हो—जरीदार को अदा करने के लिये और—

( वे ) वह रकम जो इन्तिहार नीलाम में मजदूर हो और जिसकी बसूलयावी के लिये हुकम नीलाम सादिर हुआ हो वह भिन्दाई उस रकम के जो इन्तिहार मजदूर की तारीफ से डिगरीदार को बसूल हुई हो—डिगरीदार को अदा करने के लिये—

( २ ) अगर कोई शख्स कायदे ६० की रूले अपनी जायदाद और मजदूरा का नीलाम फिस्त किये जाने की दरखवास्त दे तो वह उस कायदे की रूले कोई दरखवास्त देने या उसके मुत-अलिक पैरवी करनेका गुरतहत न होगा ता वहने कि ऐसी दरखवास्त वापस न ले—

( ३ ) अगर मदयून तर्वा और सद्का जिम्मेदार हो जो इन्तिहार नीलाम के तहत में याता हो तो वह उन जिम्मेदारी से इन कायदे की रूले दरी नहीं होगा—

दरख्वास्त खरीदार  
निस्वत इस्तरदाद नी-  
लाम वरविनाय न रखने  
हक काबिल नीलाम  
मदयून के—

अदालत में दरख्वास्त इस्तरदाद नीलाम की इस बु-  
नियाद पर गुजराने कि मदयून जायदाद नीलाम शुद्ध  
में कोई हक काबिल नीलाम नहीं रखता था—

६२-(१) अगर अजरूय कायदा ८६ या कायदा ६० या कायदा दफा ३१२  
कब नीलामनातिक या ६१ कोई दरख्वास्त गुजरानी न जाये या अगर ऐसी व ३१४  
मसूखहोगा— दरख्वास्त गुजारना मंजूर हो तो अदालत हुक्म मंजूरी

नीलाम सादिर करेगी और वादजां नीलाम नातिक होजायेगा—

(२) अगर ऐसी दरख्वास्त गुजरानी गई हो और वह मंजूर होजाये  
और किसी दरख्वास्त तहत कायदा ८६ की सूरत में अगर  
नह रकम जो कायदा मजकूर की रू से अदालत में दाखिल  
करना चाहे तारीख नीलामसे ३० दिनके अन्दर दाखिल  
करदी जाये तो अदालत हुक्म मंजूरी नीलाम सादिर करेगी—

मगर शर्त यह है कि कोई हुक्म सादिर न होगा तावत्ते कि दरख्वास्त  
की इत्तिलाअ जुमला ऐसे अशस्त्रास को न दीजाये कि जिनके हुक्क  
पर उसका असर पड़े—

(३) कोई नालिश वास्ते मंजूरी किसी हुक्म मुमदिरह तहत कायदा  
हाजा के उस शस्त्र की तरफ से रजुअ न होसकेगी जिस के  
खिलाफ हुक्म मजकूर सादिर हुआ हो—

६३—अगर नीलाम किसी जायदाद मन्कूला का कायदा ६२ के दफा ३१५  
जग समनकी वापसी वमूजिव मुस्तरद कियाजाय तो खरीदार हुस्तहक होगा  
बाज सूरतों में— कि अजरूय हुक्म अपना जर समन नीलाम मय सूद  
या बिला सूद जैसा अदालत हिदायत करे उस शस्त्र से वापस पाये  
जिसे जर समन मजकूर अदा कर दिया गया हो—

६४—अगर नीलाम जायदाद गैर मन्कूला कानातिक होजाये तो अ- दफा ३१६  
खरीदार को सार्टी- दालत को लाजिम है कि कितअ सार्टीफिकट मुशयर  
फिफ्ट मिलेगा— सराहत जायदाद नीलाम शुद्ध और नाम उस शस्त्र  
के जो वक्त नीलाम उसका सरीदार करार पाया था अदा करे और  
सार्टीफिकट मजकूर में वह तारीख दर्ज होगी कि जिस तारीख को  
नीलाम नातिक हुआ हो—

दफ्ता ३१८

६५—अगर नीलाम शुद्ध जायदाद गैर मजकूला मदयून डिगरी या हवालगी जायदाद जो | मिन् जानिव उसके किसी और शख्स के कब्जे में या वक्तजे मदयून हो— | वक्तजे शख्स दीगर के हो जो बजरिये ऐसे अशक्त के उस जायदाद की निस्वत दावीदार हो कि बाद कुर्की जायदाद मजकूरके मदयून डिगरी से हासिल हुआ हो और क़ायदा ६४ के बमूजिन उस जायदाद की बावत सार्टीफिकेट दिया गया हो तो अदालत तरीदार की दरख्वास्त पर यह हुक्म देगी कि तरीदार मजकूरको या और शख्स को जिसको कि उसने अपनी तरफ से कब्जा लेनेके लिये मुक़र्रर किया हो जायदाद मजकूर पर कब्जा दिलाया जाय और अगर जरूरत हो तो जो शख्स दखल देने से इंकार करे वह उसमें से निकाल दिया जाये—

दफ्ता ३१९

६६—अगर जायदाद नीलाम शुद्ध आत्तागी या किसी और शख्स हवालगी जायदाद जो | के दखल में हो जिसको उसके दगल का इन्तेहकात वक्तजे आनामीदा— | शामिल हो और उस जायदाद की बावत सार्टीफिकेट दखल क़ायदा ६४ दिया गया हो तो अदालत तरीदार की दरख्वास्त पर वह जायदाद उसको इस तरह से दिलाने का हुक्म देगी कि नक़ल सार्टीफिकेट नीलाम को जायदाद मजकूरके किसी मंजरनाम पर आवेजां करायेगी और बजर्व दुइल या बजरिये दीगर तरीका मुरविजा के मुनासिव मुक़ाममें बास्ते निलाम क़ाविज जायदादके यह मशहूर करायेगी कि उसमें दक्कीयत मदयून डिगरीकी तरीदार नीलामके हाथ मुन्किल की गई है—

( २ ) अदालत मुआमिला मजकूरकी तहकीकातके लिये एक दिन मुक़रर करेगी और उस शख्सको जिसके खिलाफ दरख्वास्त दी गई हो हाज़िर होने और उसका जवाब देने के लिये तलब करेगी—

६८—अगर अदालतको इतमीनानहो कि मदयून डिगरी या कोई और दफा ३२६  
तअर्रज या मजाहिमत शख्स वइगवा उसके मुअतरिज या मुजाहिम बिला व ३३०  
मिन्जानिव मदयून डि- वजह जायज हुआ हो तो अदालत हिदायत करेगी कि  
गरी— सायलको जायदादका कब्ज़ा दिलाया जाये और अगर  
मदयून डिगरी या दीगर शख्स उसके इगवा से जायदादका कब्ज़ा मिलने  
में हर्ज या मुजाहिमत अवतक कर रहा है तो अदालत मजाज है कि इस्व  
इस्तदुआय सायलके मदयून डिगरी या दीगर शख्सको जो उसके इगवा  
से ऐसा कर रहा है वास्ते उस कदर मीआदके जो बीस दिनतक होसक्ती  
है जेलखाना दीवानी में कैद रखनेका हुक्मदे—

६९—अगर अदालतको इतमीनानहो कि तअर्रज या मजाहिमत मिन् दफा ३३१  
तअर्रज या मजाहिमत जानिव किसी और शख्स अलावा मदयून डिगरी के व ३३५  
मिन्जानिव दावीदार सरजद हुई और वह बनेकनीयती यह दावा करताहो  
नेक नीयत— कि वह अपनी तरफ से मिन्जानिव किसी और शख्स  
अलावह मदयून डिगरीके जायदाद मजकूर पर क़ाबिज है तो अदालत द-  
रख्वास्तको खारिज करनेका हुक्मदेगी—

१००—( १ ) अगर किसी शख्स अलावह मदयून डिगरी को जाय-  
वेदखली मिन्जानिव दाय गैर मन्कूला से ऐसा शख्स वेदखल करदे जो  
डिगरीदार या खरीदार— क़ाबिज डिगरी देखल वावत जायदाद मजकूर के हो  
या अगर जायदाद मजकूर इजराय डिगरी में नीलाम होगई हो और  
जायदाद मजकूर का खरीदार वेदखल करदे तो वह अदालत में ऐसी  
वेदखली का इस्तगासा वज़रिये दरख्वास्त करसक्ता है—

( २ ) अदालत इस मुआमिले की तहकीकात के लिये एक तारीख  
मुक़रर करेगी और जिस फ़रीक के खिलाफ दरख्वास्त गुजरी  
है उसको वास्ते हाज़िर होने व जवाबदिही दरख्वास्त के  
तलब करेगी—



हा ३३२  
३३५

१०१-अगर अदालत को इतमीनान हो कि सायल जायदाद पर दावीदारनेहनीयत को अपनी तरफ से या भिन्जानिव किसी और शख्स अलावह मदयून डिगरी के काबिज था तो वह हिदायत करेगी कि सायल को जायदाद पर कब्जा दिलवायाजाय—

हा ३३३

१०२-कोई अगर मुन्दर्जे कवायद ८६ व १०१ उस तअरूज या कवायद मुन्तकिल अ- मज्राहिमत से मुतअल्लिक न होगा जो दर असनाय सेह दौरा नालिशते इजराय डिगरी वायत दखल जायदाद गैर मन्कला मन्अलिक नही है— में ऐसे शख्सने की हो जिसके नाम मदयून डिगरी ने याद रजुअ होने उस नालिश के जिसमें डिगरी सादिर हुई है जायदाद मजकूर मुन्तकिल करदी हो और न ऐसे शख्स की वेदखली से मुतअल्लिक होगा—

सन १९०८ ई० ] मजमूआ जाब्ता दीवानी ।

२-अगर मुकदमा में एकसे जियादह मुर्दई या मुद्आअलेह हों- और दफा ३६२ जाब्ता जब कि मुद्इयान या मुद्आअलेह में से कोई मरजाये और इस्तेहकाक नालिश कायम रहे-

मिन्जुमला उनके कोई मरजाये और इस्तेहकाक नालिश सिर्फ मुर्दई या मुद्इयान जिन्दाके लिये या सिर्फ मुद्आअलेह या मुद्आअलेहुग जिन्दा के नाम पर कायम रहे तो अदालत को लाजिम होगा कि उस मुकदमा की एक इवारत मुकदमा की मिसल में लिखवाये और मुकदमा की कार्रवाई मुर्दई या मुद्इयान जिन्दाकी तरफसे या वमुकाविले मुद्आअलेह या मुद्आअलेहुग जिन्दा के वदस्तूर कायम रहेगी—

३-(१) अगर दो या जियादह मुर्दई हों और कोई उन में से फौत दफा ३६३ व ३६५ व ई६६ जाब्ता जब कि चन्द मुद्इयान में से कोई मुर्दई या मुर्दई वाहिद फौत होजाये — हो और इस्तेहकाक नालिश सिर्फ मुर्दई या मुद्इयान जिन्दा के लिये कायम न रहे या अगर मुर्दई वाहिद जिन्दा फौतहों और इस्तेहकाक नालिश कायम रहे तो इस बारे में दरखास्त गुजरने पर अदालत को लाजिम होगा कि मुर्दई मुतवफ्फा के कायम मुकाम जायज को (अगर कोई हो) फरीक मुकदमा करार दे और मुकदमा की कार्रवाई शुरू करे—

(२) अगर अन्दर मीआद मुअय्यना कानूनी कोई दरखास्त हस्बे साकित होना मुकदमे का अगर कोई दरखास्त मुर्दई मुतवफ्फा के कायम मुकाम की तरफसे न गुजरे — कायदा तहती (१) न गुजरे तो जहांतक मुर्दई मुतवफ्फा का तअल्लुक था मुकदमा साकित होजायेगा और अदालत को इस्तिवार होगा कि मुद्आअलेह को उसकी दरखास्त पर वह खर्चा जो जवाबदिही मुकदमा में उस पर आयद हुआहो दिलाये और वह खर्चा मुर्दई मुतवफ्फा मजकूर की जायदाद मतरुका से वसूल किया जायेगा—

४-(१) अगर मुकदमा में दो या जियादह मुद्आअलेह हों उनमें दफा ३६३ व ३६५ व ई६६ से एक फौत होजाये और इस्तेहकाक नालिश तनहा वमुकाविले मुद्आअलेह या मुद्आअलेहुग जिन्दा के कायम न रहे और नीज उस हालमें कि मुकदमा में जो एकही मुद्आअलेह हो या एकही मुद्आअलेह जिन्दा रहा हुआ मुद्आअलेह फौतहोजाये- लिश का कायम रहे तो इस बारे में दरखास्त गुजरने पर अदालत को

लाजिम होगा कि मुद्दआअलेह मुतवफफा के कायम मुकाम जायज को फरीक मुकदमा करार दे और मुकदमा की कार्रवाई शुरू करे—

( २ ) जो शख्स उसतौर पर फरीक बनाया जाये कि वह किसी तरह की उजरदारी मुनासिब हाल अपनी हैसियत उस कायम मुकामी मुद्दआअलेह मुतवफफाके पेश करतत्ताहै—

( ३ ) अगर अन्दर मुदत मुअयनः कानूनीके दरख्वास्त हस्य कायदा तहत ( १ ) न गुजरे तो मुकदमा वमुकाविले मुद्दआअलेह मुतवफफाके साकित होजायेगा—

न ३६७

५-अगर कोई सवाल इस बारे में पैदाहो कि कोई शख्स कायम मुजाय्ता जब कि इस अ- काम जायज मुद्दई मुतवफफा या मुद्दआअलेह मुतवफफा मरकी निरयत निताश काहै या नहीं तो अदालतको लाजिम होगा कि सवाल हो कि मुद्दई मुतवफफा का कायम मुकाम जा- मजकूरको तै करदे— यत दीनहै—

नदीद

६-बावस्फ किमी अगर मुद्दजें अहकाम मजकूर वाला आम इसमे अगर बाद इम्तिनाम कि दिनायदावा कायम रहे या न रहे कोई मुकदमा व समाप्त हुअमा कोई सवव वफात किमी फरीकके जो दमियान इम्तिनाम फरीक होत होजाये तो समाप्त और असदार फैसला बाकैहो साकित न होगा मुकदमा नाकित नहीं मगर इस सूरतमें बावस्फ वफात मजकूरके फैसला सु- होगा— नाया जायेगा और फैसला मजकूर वही हुअम और अ- सर रखेगा कि गोया वह वफात बाकै होने से कज्ज मुनायागया था—

न ३६८

७-( १ ) बचामम शादी करने मुदइया या मुद्दआअलेहके मुकदमा साकित न होगा बल्कि बावद्द शादीके मुकदमा की और दमियान शादी कार्रवाई नामदूर फैसला जारी रहेगी और जब कि दिगरी मुकदमा साकित होत होत— मुद्दआअलेहके उपरहो तो उसका इनग सिर्फ उर्याके उपर कियाजायेगा—

( २ ) अगर ऐसी लगने कि कानूनी रूपे शादी अपनी गोनाके दमनका तिस्रोशायो तो बहनातल अदालत दिगरीतो गौर पर भी जारी रक्ता जायज होगा और अगर फैसला जारीके

हकमें सादिरहो तो वशर्ते कि शौहर कानूनके वमूजिव शैडिगरी-  
शुदहके पानेका मुस्तहकहो वह डिगरी वइजाजत अदालत शौ-  
हरकी दरख्वास्त गुजरनेपर जारी होसक्ती है-

८-( १ ) जिस मुद्देके मुकदमाको उसका असायनी यानी तफवीज-दफा ३७०

किस सूरत में मुद्देका दीवाला निकलना हा-  
रिज मुकदमा होगा-

दार या रिसीवर यानी मुहतमिम वगरज फायदा उसके कर्जखाहों के कायम रखसक्ताहो उसका दीवाला नि-  
कलना उस मुकदमाको साकित न करेगा-इला उस हालत में कि तफवीजदार या मुहतमिम मुकदमाको जारी रखने या जमा-  
नत खर्चा अन्दर उस मीआदके जिसका अदालत हुक्मदे दाखिल करने से इन्कारकरे ( सिवाय उसके कि अदालत किसी खास वजहसे उसके खिलाफ हुक्मदे )-

( २ ) अगर तफवीजदार या मुहतमिम उस मुकदमाको जारी रखने जास्ता जबकि तफवीज दार मुकदमाको जारी रखने या जमानत देने से कासिररहे— और अन्दर मीआद मुअय्यनः हुक्मके अदखाल जमा-  
नतमें तगाफुल या इन्कारकरे तो मुद्दाअलेह मजाज है कि वगरज डिसमिस होने मुकदमाके मुद्देके दीवाला निकलनेकी विनायपर दरख्वास्तदे और अदालत को जायज होगा कि मुकदमा डिसमिस करके मुद्दाअलेहको इस कदर खर्चा दिलाये जो मुकदमाकी जवाबदिही में उसपर आयद हुआहो और खर्चा मजकूरको बतौर कर्जा जिम्मगी जायदाद मुद्दे सावित करना होगा-

९-( १ ) जब कोई मुकदमा इस आर्डरके वमूजिव साकित होजाये मुकदमाके साकित या डिसमिस कियेजाने का विनायदावा पर रुजूअ न होसकेगी-

धसर-

( २ ) मुद्दे या जो शख्स मुद्दे मुतवफफाका कायम मुक्ताम जायज होनेका दावा करताहो या असायनी या रिसीवर मुद्दे दीवा-  
लियाकी सूरतमें मजाज होगा कि वास्ते सदूर हुक्म मंसूखी सकूत या डिसमिसी मुकदमाके दरख्वास्तदे-और अगर सा-  
वित कियाजाये कि वह किसी वजह काफीके सबब से मुकदमा को जारी न रखसका तो अदालत हुक्म सकूत मुकदमा या हुक्म डिसमिसी को मंसूखकरे ऐसी शरायतपर जो उसको खर्चाकी निश्चत या दीगर तौरपर मुनासिव मानूमहों-

दफा ३७२ न०  
१५ अलिक  
सन् १८७७ ई०

( १ ) अहकाम दफा ५ कानून मीआद समाप्त हिन्द सन् १८७७ ई०  
दरखास्त हाय कायदा तहती ( २ ) से मुवअल्लिक होंगे—

दफा ३७२

१०—( १ ) और सूरतों में जो मुकदमाके दौरानमें किसी हकके मुन्-  
जान्ना जब कि किसी किल या पैदा या विरासतन् हासिल होनेकीदो जायज  
हकना इन्तिकाल कन्त है कि अदालतकी इजाजतसे मुकदमा मजकूर उस श-  
सुनाने हुक्म कतई के रूसकी तरफ से या उसके मुकाबिले में जिसको एक  
किया जाये— मजकूर पहुँचाहो या विरासतन् हासिल हुआहो जारी  
रखा जाये—

( २ ) किसी डिगरीका दरअसनाय अपील कुर्क किया जाना एक  
हक समझा जायेगा जिसकी रूते वह शरूअ जो डिगरी मजकूर  
कुर्क कराये कायदा तहती ( १ ) से फायदा उठानेका मुम्त-  
हक होसक्ताहै—

दफा ५८२  
हिस्ता अखीर

११—जहां इस आर्डरका तमल्लुक अपील सेहो तो जहांतक मुगकिन  
इस आर्डरका तमल्लुक हो लफज “मुद्ई” में अलीलांट और लफज “मुद्आ  
क अपील से— अलेह” में रखाट्ट और लफज “नालिश” में अपील  
दाखिल समझे जायेंगे—

जदीद

१२—कायदा ३ व ४ व ८ कार्रवाई इजरायदिगरी या हुक्म से मु-  
इस आर्डरका तमल्लुक तमल्लिक न होंगे—  
कार्रवाई इजरायदिगरी  
से—

( वे ) इस बात के दीगर वजूह काफी हैं कि मुद्दई को इजाजत एक जदीद नालिश दायर करनेकी बावत शै दावा मुकदमा या जुज्व दावा मजकूरके दीजाये तो अदालत मजाज है कि वकैद ऐसी शरायत के जो मुनासिब मालूमहों मुद्दई को मुकदमा मजकूरमें वाजदावा देनेकी या जुज्व दावा मजकूर से वाज आने की इजाजत वा इस्तिथार एक जदीद नालिश दायर करने के बावत शै दावा मुकदमा मजकूर या जुज्वदावा मजकूर के दे—

( १ ) अगर मुद्दई विलाहुसूल इजाजत मुतजाकिरै कायदा तहत

( २ ) मुकदमा से दस्तवरदार हो या जुज्वदावा से वाज आये तो वह उस खर्चा का जिम्मेदार होगा जो अदालत दिलाये और उसको बावत शै दावा मजकूर या जुज्व दावा मजकूर के जदीद नालिश करनेका इस्तिथार नहीं रहैगा—

( ४ ) इस कायदाकी किसी इवारत से अदालत को यह इजाजत देनेका इस्तिथार नहीं है कि चन्द मुद्दइयों में से एक विला मजी दूसरों के वाजदावादे—

( २ ) हर जदीद नालिश में जो व इजाजत कायदा अखीर मुलद्का दफा ३७४ नालिशात साविक का वाला के दायरहो मुद्दई पाबंद क्तवानीन तमादी ऐय्याम कानून तमादी अय्याम का उसी तरह होगा कि गोया नालिश अव्वल दायर में गैर मुअस्सर होना - न हुई थी—

( ३ ) अगर वइतमीनान अदालत यह साबित करदिया जाय कि दफा ३७५ तस्फिया वाहमी नालिश का— तस्फिया किसी मुकदमें का किसी तौर के जायज मसालहत या तस्फिया वाहमी से कुल्लन् या जुज्वान् हो गया है या मुद्दआअलैह ने मुद्दई को निस्वत कुल या जुज्वशै मुतनाजा मुकदमा से राजी करदिया है तो अदालत को लाजिम है कि इसतरहकी मसालहत या तस्फिया वाहमी या राजीनामा के तहरीर करने का हुक्मदे और उसके मुताबिक जहांतक कि उस मुकदमा से इलाकाहो डिगरी सादिरकरे—

( ४ )—इस आर्डर की किसी इवारत को तअल्लुक इजराय डिगरी दफा ३७५ की कार्रवाइयों से नहीं होगा—  
कार्रवाई इजराय डिगरी तौर मुअस्सर रहेगी—

## आर्डर २४

## अदालत में रुपया दाखिल करना ॥

दफा ३७६

१-जिसनालिश में कि दावा कर्जा या हर्जा का हो मुद्दामलेह मु-  
ईफायदाना में मुद्दामलेह रुपया बतौर अ-  
मानत दाखिल कर स-  
कता है—

कदमा की किसी नौबतपर मजाज है कि अदालत में  
उसकदर रुपया अमानत दाखिल करे जो पूरे दावा के  
ईफायके लिये उसकी दानिश्तमें काफी मुतसव्विर हो—

दफा ३७७

( २ )-लाजिम है कि मुद्दामलेह उस अमानत की इत्तिलाअ अ-  
दालत की मारफत मुद्ई को दे और जर अमानत  
दाखिल करने की—

मुद्ई की दरख्वास्तपर मुद्ई को दिया जाये इला उस  
सूरत में कि अदालत और तरहपर हिदायत करे—

दफा ३७८

३-जो रुपया कि मुद्ई ने अमानत रखवा हो उसका सूद मुद्ई को  
मुद्जर अमानत पर

इत्तिलाअ मजकूर के पहुंचने की तारीख से न दिला-  
या जायेगा रुवाह जर अमानत बकदर कुलदावा हो या  
उससे कम—

दफा ३७९

४-( १ )-अगर मुद्ई उसजर अमानत को सिर्फ बतौर ईफाय जु-  
कारताई अगर मुद्ई  
जर अमानत या बर्-  
फाय हुजदावा के  
अवताररे—

हुजदावा कबूल करले तो यह मजाज है कि बाजी की  
बाबत नालिश में पैरवी करे और अगर अदालत यह  
तजवीज करे कि रुपया दाखिल किया हुआ मुद्दामलेह  
का बर्इफाय कुलदावा मुद्ई के है तो मुद्ई को उमक-  
दर खर्चा नालिशका जो बाद दाखिल होने जर अमानत के पड़ा हो और  
गर्जी कदम अदालत अमानत का जमकदर कि बचकड जियादती म-  
तालिवा मुद्ई के लाजिम थाया हो अदा करना होना—

( २ )-अगर मुद्ई जर अमानत को बर्इफाय अपने कुलदावा के  
अर्जतमें अपने पदों पर भंजुर करने तो उमको लाजिम होगा कि बयान इस  
मजमून का अदालत में सुनाने और यह बयान शा-  
दिन मिमिन दिया जायेगा और अदालत को ला-  
जिम है कि उमके मुताबिक फैसला सादिर करे और बचकडती उस अम-  
के गर्जी हर फरीज का हिमर थायद होना लाजिम अदालत इस अम-

गौर करेगी कि किस फरीक पर निजाअ अदालत का इल्जाम जियादह आयद होताहै—

## तमसीलात ॥

( अलिफ ) जैद पर उमरु के सौ रुपया आते हैं उमरु ने जैद पर उस रुपया की नालिशकी और पहिले कुछ तक्राजा नहीं किया और कोई वजह इस अमर के यकीन करने की भी न थी कि तक्राजा से जो देरहोगी वह किसी निहजसे उसके इकत में मुजिर पड़ेगी और अर्जीदावा गुजरने पर जैद ने अदालत में रुपया दाखिल किया और उमरु ने अपने कुल दावा के ईफाय में उसको मंजूर करलिया तो अदालतको लाजिमहै कि उसको खर्चा न दिलाये इसवास्ते कि निजाअ अदालत उसकी तरफ से कयासन वेबुनियाद थी—

( वे ) उमरुने जैदपर बहालत मुतजकिरह तमसील ( अलिफ ) नालिश की और जब अर्जीदावा गुजरा जैदने दावा की जवाबदिही की बादजां जैदने अदालत में रुपया अमानत दाखिल किया और उमरु ने बईफाय अपने कुलदावा के उसको मंजूर करलिया तो इस सूरत में अदालत को लाजिम है कि उमरु को खर्चा मुकदमे का भी दिलाये क्योंकि जैदके अमल से साबित है कि निजाअ अदालत जरूरी थी—

( जीम ) जैदपर उमरु के सौ रुपया आते हैं और चाहता है कि बगैर रुजूअ नालिश रुपया अदा करवे उमरु डेढ़सौ रुपया का दावा रखता है और उस रुपया की नालिश उसने जैदपर की जब अर्जीदावा गुजरा तो सौ रुपया उसने अदालत में दाखिल करके वाक्ती पचास रुपयाकी निस्वत जवाबदिही की बादजां उमरु ने सौ रुपया या बईफाय अपने कुल दावा के मंजूर करलिये अदालत को लाजिम है कि उसे जैदका खर्चा अदा करने का हुक्म दे—





वास्ते सदूर हुक्म मशअर मन्सूखी हुक्म डिसमिसी के दरख्वास्त देसक्ताहै और अगर हस्व इतमीनान अदालत यह साबित करदियाजाये कि मुद्दै किसी काफी वजह से मीआद मुकर्ररके अन्दर जमानत न दाखिल करसका तो अदालत बलिहाज ऐसी शरायत दरवाब जमानत या खर्चः वगैरः के कि जो उसको गुनासिव मालूमहों हुक्म डिसमिसी मन्सूख करदेगी और कार्रवाई मुकद्दमः करने के वास्ते एक दिन मुकर्रर करेगी—

( ३ ) हुक्म डिसमिसी मन्सूख नहीं किया जायेगा तावक्ते कि दरख्वास्तकी एक इत्तिला मुद्दआमलेहको न पहुँचाई जाये—

## आर्डर २६

### कमीशन

### कमीशन वास्ते लेने इजहार गवाहों के

१—हर अदालतको हर नालिश में इस्तिथारहै कि वास्ते लेने इजहार दफा ३८३  
 किन सूरतों में अदालत उन अशखासके जो अदालतके इलाकः इस्तिथारकी  
 कमीशन वास्ते लेने इज हद्द अरजीके अन्दर रहतेहों मगर उस मजमूअः के  
 हार गवाहानके जारी अहकाम के बमूजिव अदालत में हाजिर होने से माफ़  
 करसक्ती है हैं या जो किसी बीमारी या जईफीकी वजह से हाजिर  
 नहीं होसक्ते हैं कमीशन सादिरकरै कि बमूजिव वन्द सवालातके या और  
 तौरपर उनका इजहार लियाजाये—

२—जायजहै कि अदालत ऐसा हुक्म अपनी मर्जी से या वरतवक गु- दफा ३८४  
 हुक्म तिव्वत इजराय जरने दरख्वास्तके जिसकी ताईद तहरीरी वयान हलफ़ी  
 कमीशन से या बतौर दीगर होतीहो भिन्जानिव किसी फरीक  
 मुकद्दमः के या अज तरफ उस गवाहके जिसकी शहादत मतलूबहै सा-  
 दिरकरै—

३—अगर कमीशन वास्ते इजहार ऐसे शख्स के हो जो अन्दर हद्द दफा ३८५  
 अगर गवाह अदालत अरजी इलाकः अदालत जारी कुनिन्दः कमीशन के  
 के इलाक में रहताहो- के रहताहो तो जायजहै कि कमीशन किसी ऐसे शख्स

के नाम सादिर किया जाये जिसे अदालत उसकी तामील के लायक समझे—

दफा ३८६

४-( १ ) हर अदालत को हर नालिश से इख्तियार है कि कमीशन किन लोगों के वास्ते वास्ते लेने इजहार अशरत्तास मुफस्सिलः जैलके कमीशन जारी हो- सादिर करै-  
सक्ती है

( अलिफ ) कोई शख्स जो अदालत के इलाकः की हद्द अरजी से बाहर रहता हो—

( बे ) कोई शख्स जो उस तारीख से पहिले हद्द अरजी मजकूर से बाहर जानेवाला हो जो उसके वास्ते अदालत में इजहार लिये जाने के लिये मुकर्रर हुई हो—

( जीम ) कोई सर्कारी ओहदेदार मुल्की या जंगी जिसका अदालत में हाजिर होना जजकी दानिस्त में मजबूब हर्ज कार-सर्कार हो—

( २ ) जायज है कि ऐसा कमीशन किसी ऐसी अदालत में भेजा जाये जो अदालत हाईकोर्ट न हो जिसके इलाकः हुक्मत की हद्द अरजी के अन्दर वह शख्स रहता हो या किसी वकील या शख्स दीगर के नाम भेजा जाये जिसको अदालत जारी कुनिन्दः कमीशन मुकर्रर करै—

( ३ ) जब अदालत इस कायदः के बमूजिब कोई कमीशन जारी करै तो यह हिदायत की जायेगी कि आया कमीशन उसी अदालत में वापस किया जायेगा या किसी अदालत मातहतमें—

दफा ३८७

५-जब किसी अदालत में दरख्वास्त वास्ते जारी करने कमीशन के कमीशन या नेक्यूट वगैरह लिये जाने इजहार किसी ऐसे शख्स के दी जाये जो बिनापर लेने इजहार ब्रिटिश इण्डिया से बाहर किसी जगहका रहनेवाला हो गताह जो इतिहास और उस अदालत को इतमीनान हो कि उसकी शहा-दियाई वादरगवाहो दन जरूरी है तो उसे जायज है कि ऐसा कमीशन या

एक लेटर आफ रट्यूट जारी करै—

दफा ३८८

६-हर अदालत को जिसमें कमीशन दगरन नहमीर इजहार किसी

जिस अदालत में कमीशन जाये उसको चाहिये कि कमीशनके मुताबिक गवाहका इजहारले

शरूखके पहुँचै लाजिमहँ कि कमीशनके मुताबिक उसका इजहारले या किसी औरसे लिवाये-

७-जब कमीशनकी तामील हस्र जावते होजायें तो वह मये उस शहादतका ३८६ वापसी कमीशन मये दतके जो उसके बमूजिव लीगईहो अदालत जारी कुवयान गवाह निन्दः कमीशनमें वापिस कियाजायगा मगर जिस हाल में कि हुक्म मशअर इजराय कमीशन में और तरहकी हिदायतहो तो मुताबिक उसके कमीशन वापिस कियाजायगा और कमीशन और कैफियत उसकी तामीलकी और शहादत जो कमीशनके बमूजिव लीगईहो वरिआयत अहकाम कायदः मुलहकुल जैल शामिल मिसिल मुकदमा रहैगी—

८-शहादत जो वजरिये कमीशन लीगईहो वह उस मुकदमः में बतौर दफा ३९० किम सूरतमें गवाह का शहादत बिला रजामन्दी उस फरीकके जिसके खिलाफ वयान सबूत में लिया वह दीगईहो पढ़ी न जायगी-इल्ला-जासक्ता है

( अलिफ ) जब कि वह शरूख जिसने शहादतदीहो अदालतके इलाकः से बाहर रहताहो या मरगयाहो या बसबव बीमारी या जईफीके असाहततन् इजहार देनेके वास्ते हाजिर नहीं होसक्ता हो या अदालत में असाहततन् हाजिर होने से माफहो या सरकारी ओहददार मुल्की या जंगीहो जिसका अदालत में हाजिर होना अदालत की दानिस्त में मूजिव हर्जकार सकारहो-या-

( धे ) जब कि अदालत अपनी रायके मुवाफिक मरातिव मुन्दर्जः फिक्करः ( अलिफ ) में से किसीके सबूतके लेने से दरगुजर करै और मुकदमः में किसी शरूखकी शहादतको बतौर शहादत पढ़ेजानेकी इजाजतदे वावस्फ सबूत इस बातके कि यरवक्त उसके पढ़ेजानेके वह वजह जिसके लिहाजमे शहादत वजरिये कमीशन लीगई थी वाक्ती नहीं रहै-

## कमीशन वगैरज तहकीकात मौका

ग ३६२

६-अगर किसी मुकद्दमः में अदालत वास्ते इन्तशाक असलियत कमीशन वगैरज तह-  
कीकान मौका किसी अत्र मायः उल्निजाअया वास्ते दर्याफन मान्ति-  
यत बाजारी किसी मालके या मिक्दार बामिलान या  
हर्जा या सानानः खालिस मुनाफः के तहकीकात मौका जरूर या मुना  
सिय समझै तो अदालत को इस्तिनयार होगा कि किसी शख्सके नाम  
जिसको वह लायक समझै कमीशन जारीकरै और उसको यह हुक्मदे  
कि तहकीकात मजकूर करके अपनी कैफियत उसकी वास्त अदालत में  
गुजरानै—

पर शर्त यह है कि जिस हालमें लोकल गवर्नमेन्ट से इस बात में  
कवाअद मुरत्तिब हुये हों कि कमीशन किस २ शख्स के नाम जारी  
करना चाहिये तो अदालत को उन कवाअदका पाबन्द रहना लाजिम  
होगा—

ग ३६३

१०-अदालत कमीशन बाद मुन्नायना मौकाके जो जरूरी मुतसव्वर  
जाब्ता अहलकमीशन हो और कलमबन्द करने शहादतके जो उसकी मार्फत  
लीजाय उस शहादत को मये अपनी कैफियत तहरीरी के जिसपर वह  
अपने दस्तखत भी सिक्त् करै अदालतमें भेजदेगा—

( २ ) कैफियत अदालत कमीशन की और जो शहादत कि उसनेली  
स्पष्ट बहसशानमुन- हो ( लेकिन न वह शहादत जिसके साथ ऐसी कैफि-  
यत न हो ) मुकद्दमः की शहादतदोगी और शामिल  
मिसिल रहेगी लेकिन अदालत या मुतखासमीन  
मुकद्दमः में से कोई फरीक बडवाजन अदालत मजाज  
होगा कि खुद अदालत कमीशन से दनिस्वत किमी  
मरातिवके जिनकी तहकीकात के वास्ते बड मामूर हुआहो या जिनका  
तजकिरः उसकी कैफियत में हो या निस्वत उसकी कैफियत या तर्ज  
तहकीकान के सरे इजनाम इरितफनार करै—

( ३ ) अगर कमीशन की कार्रवाई किमी बजह से अदालत के  
हम्ब दिलज्जाह न हुईतो तो अदालत को इस्तिनयार है कि  
जो मजीद तहकीकान मुनाविद समझै उसकी निम्नत न्यम  
नादिर करै—

## कमीशन वास्ते जांचहिसाबातके

११- हर मुकदमा में जिसमें जांच या तस्फिया हिसाबात जरूर हो दफा ३६४

कमीशन बचरज जाच अदालत को इस्तिथार होगा कि जिस शख्सको या तस्फिया हिसाबात मुनासिब समझै उसके नाम कमीशन इस हिदायत से सादिर करै कि वह जांच या तस्फिया मजकूर करदे—

१२- ( १ ) अदालत को लाजिम होगा कि अहल कमीशन के दफा ३६५

अदालत बनाम कमी-  
शन हिदायत जरूरी  
सादिर करेगी

पास उस कदर कागजात मिसिल और हिदायत जो जरूरीहों भेजदे और हिदायत में बसराहत हुक्म हो-  
गा कि अहल कमीशन सिर्फ अपनी रुबकारात जो दावत तहकीकात के तहरीर हों अदालत में भेजेगा या अपनी रायभी निस्वत उस अम्र के जिसकी जांचका उसको हुक्म है तहरीर करेगा—

( २ ) अहल कमीशन के रुबकारात और कैफियत ( अगर कोईहों )

रुबकारात व कैफियत  
बमजिलै शहादत होगी  
अदालत मज्जीद तहकी-  
कात हुक्म देमक्तीहै

बमजिलै शहादतके मुकदमः में लेलीजायगी इला  
उस सूरत में कि अदालत के नजदीक कोई वजह  
उनकी निस्वत वे इतमीनानी की पाईजाये ऐसी सूरत  
में अदालत उस तहकीकात मज्जीद का हुक्म देगी जो

मुनासिबहो—

## कमीशन बटवारह

१३- अगर कोई डिगरी इन्तिदाई निस्वत बटवारह के सादिर हुई दफा ३६६

कमीशन बटवारह जा-  
यदाद गैरमनकूला

हो तो किसी सूरत में जिसका जिक्र दफा ५४ में  
नहीं है अदालत मजाज़है कि कमीशन बनाम ऐसे  
शख्सके जिसको मुनासिबजानै उन दकूक के मुवाफिक तक्रसीम या  
अलाहिदा करदेने के लिये जो डिगरी मजकूर की रु से करार दिये  
गये हों सादिर करै—

१४- ( १ ) लाजिमहै कि अहल कमीशन याद तहकीकात जरूरी दफा ३६६

जान्ना अहलकमीशन

के जायदाद को उतने हिस्सों में जिनको हिदायत उस  
हुक्म में हो जिसके बमूजिव कमीशन जारी किया गयाहो तक्रमीम करदे  
और उन हिस्सों को उन अशख्साम के वास्ते मुजरर करै— और अगर

किरह २५३

उस हुक्म में ऐसी इजाजत हो तो हिस्सिस्की मालियत के मसावी करने के लिये जो रुपया देना बाजिव हो उसकी तजवीज भी करदे—

( २ ) बाद अजां अहल कमीशन एक कैफियत मुरत्तिवकरके उसपर दस्तरखत करै या अहली कमीशन ( जिस हालमें कि कमीशन एकसे ज्यादा अशवासके नाम जारी हुआ हो और उनका इत्तिफाक राय न हो सके ) तो कैफियतहाय जुदागाना मुरत्तिवकरै और उनपर दस्तरखत करै और उस कैफियत में हर शख्सका हिस्सा मुकर्रर करदे और ( अगर उस हुक्ममें हिदायत हो तो ) हर हिस्सः की शिनाख्त पैमाइश और हद्दसे कायम करदे और वह कैफियत या कैफियात कमीशनके साथ मुन्सलिक करके अदालत में भेज दी जायेंगी और अदालतको लाजिम है कि उन उजरातको जो फरीकैन निस्वत कैफियत या कैफियातके करे समाप्त करके कैफियत या कैफियात मजकूर बहाल रखे या बदल दे या मुस्तरद करदे—

( ३ ) अगर अदालत कैफियत या कैफियात मजकूरको बहाल रखे या उनमें कुछ तगैयुर तबदुल करै तो उसको लाजिम है कि उसी बहाल रखी हुई या बदली हुई कैफियतके मुताबिक डिगरी सादिर करै—लेकिन जिस हालमें कि अदालत कैफियत या कैफियात मजकूरको मुस्तरद करदे तो उसको लाजिम है कि इत्बाद एक जदीद कमीशन जारी करै वरना जो हुक्म मुनासिव समझे सादिर करै—

## अहकाम आम

पृष्ठा ३६७

१५—जब कोई कमीशन बमूजिव इस आर्डरके जारी हो तो अदालत कमीशनका खर्चा क्या मजाज होगी कि उससे कच्चा जिसकदर रुपया वास्ते खर्चमें दायिल होगा इत्तराजात कमीशनके मुनासिव समझे उस कदर के बाहिरे दायिल करने के लिये अन्दर गीमाद मुनविस्सः म-  
दालतके उस फरीकको जिसकी दरखास्तके मुताबिक या जिसके फायदः के वास्ते कमीशन जारी हो हुक्मदे—

१६-हर अहल कमीशन जो इस आर्डरके बमूजिव मुक़रर हुआ हो दफा २०८  
इस्तिथारान कमिशन- अगर उसको हुक्म तक्ररकी रूसे और निहज की  
रान हिदायत न हो तो मजाज होगा कि-

( अलिफ ) इजहार खुद फ़रीक़ैन और किसी गवाहका जिसको वह या  
उनमें से कोई पेशकरै और किसी और शख्सका ले जिसे  
अहल कमीशन मजकूर उस मुआमिलामें जो उसको सिपुर्द  
हुआ हो शहादत देनेके लिये तलब करना मुनासिब समझे

( बे ) दस्तावेजात और दीगर अशियाय जो अम्र तहकीकात तलब  
से मुतअल्लिकहों उनको तलब करके मुआयना करै-

( जीम ) किसी वक़्त मुनासिब में उस अराज़ी या इमारतके अन्दर  
जिसका जिक्र उस हुक्ममें हो दाखिल हो-

१७-( १ ) अहकाम मजमूआ हाजा दरबाब तलब करने और हा- दफा २६६

अहकामानिस्वत हाजिरी और इजहार गवाहान रूपरु कमिशनरके जिर होने और लेने इजहारान गवाहानके और निस्वत  
खर्च गवाहों और उन तावानातके जो गवाहों पर हो-  
सकते हैं उन अशख्वास से भी मुतअल्लिक होंगे जिनको  
इस आर्डरके बमूजिव शहादत देने या दस्तावेज पेश करनेका हुक्म दिया  
गया हो आम इससे कि वह कमीशन जिसकी तामीलमें उनको ऐसा हुक्म हो  
ऐसी अदालत से जारी हुआ हो जो ब्रिटिश इण्डियाकी हदूदके अन्दर बाक़ै  
है या किसी और अदालत से जो हदूद मजकूरके बाहर बाक़ै हो और इस  
क़यदः की अग़राज़के लिये कमिशनर अदालत दीवानी समझा जायेगा-

( २ ) कमिशनरको इस्तिथार है कि किसी अदालतमें ( जो हाईकोर्ट  
न हो ) जिसके इल्हाकः में कोई गवाह रहता हो इस मजमूनकी  
दरख्वास्तदे कि हुक्मनामः जो कमिशनर की रायमें जरूरी हो  
बनाम गवाह मजकूर जारी किया जाय-और उस अदालत को  
इस्तिथार है कि जो हुक्मनामः माकूल व मुनासिब समझे अ-  
पनी सवाबदीद से सादिरकरै-

१८-( १ ) जब कमीशन इस आर्डरके मुताबिक जारी किया जाये दफा ४००

फ़रीक़ैन को कमिशनर अदालत हिदायत करेगी कि फ़रीक़ैन मुक़द्दमः ख़रू  
के सामने हाजिर होना अहल कमीशनके अमालतन या वज़रिये पज़न्ट या  
बाहिरे बुकलाके हाजिरहों-



( २ ) अगर जुम्ला या कोई फरीक कमिश्नरके खबर हाजिर न हो तो उसको इस्तिथार है कि उसकी गैरहाजिरीमें कार्रवाईकरे-

### आर्डर २७

नालिशात अज्ज जानिव या वनाम सकार या ओहदेदारान सकार बहोसियत ओहदेदार

जदीद

१- किसी नालिश में जो अज्ज तरफ या वनाम सेक्रेटरी आफ इस्टेट नालिशत अज्ज तरफ वहादुर हिन्द इजलास कौन्सिल हो अजीदावा या वनाम सकार या वनाम सकार या न तहरीरीपर उस शख्सके दस्तखत होंगे जिसको गवर्नमेन्ट इस बारः खासमें हुक्म आम या खासके जरिये से मुकर्रर करदे और तसदीक उस शख्सकी होगी जिसको गवर्नमेन्ट हस्व मजकूर मुकर्ररकरे और जो बाकिआत मुकदमे मे बाकिफहो-

दफा ४१७

२- जो अशखास कि एक्स ओफीशिव या और निहज से मजाज प्रशखात जो अज्ज पैरवी के मिन्जानिव गवर्नमेन्ट निस्वत किसी कार्रवाई जानिव गवर्नमेन्ट पैरवी अदालत के हों वह ऐसे एजन्ट मकबूल मुत्सव्वर होंगे करेंगे भजाजहोंगे जो हस्व अहकाम मजमूआ हाजा मिन्जानिव गवर्नमेन्ट हाजिर होकर पैरवी कर सकते हैं और दरखवास्त गुजरान सक्ते हैं-

दफा ४१८

३- जो नालिशान कि मिन्जानिव या वनाम सेक्रेटरी आफ इस्टेट अजीदावा नालिशान वहादुर हिन्द इजलास कौन्सिल के हों उनमें अजीदावा मजतरफ या वनाम के अन्दर वजाय लिखने नाम और पता और मुकाम सकार सक्कनत मुर्दे या मुद्वाजलेह के इन अल्फाज का दाखिल करना काफ़ी होगा-

दफा ४१९

४- वकील सकार हर अदालत में या कोई और शख्स जिसको लो- एव मिन्जानिव ग- कल गवर्नमेन्ट इस बारः में किसी अदालतके लिये दस्तखत करने के लिये मुकर्ररकरे करते इसलूज्जमनामजान मौसूमः सेक्रेटरी होगा आफ इस्टेट वहादुर हिन्द वदजलास कौन्सिलके ओ किसी अदालत मजतरफ से तादिरगो सकारके गवर्नमे एजन्ट होगा -

५-अदालत बरवक्त तक्रर-तारीख अदखाल जवाब अर्जीदावाके दफा ४२०  
 तक्रर तारीख वारते हाजिरी अज जानिव सकार सिन्जानिव सेक्रेटरी आफ इस्टेट बहादुर हिन्द इजलास दफा ४२०  
 कौन्सिल मुहलत जो वास्ते करने खत किताबत ज-  
 रूरी साथ गवर्नमेन्ट के बतवस्तुत सरिश्ते हाय मुना-  
 सिब और सदूर हिदायातके वनाम वकील सकार विनावर हाजिरी व  
 जवाबदिही मुकदमा अज जानिव सेक्रेटरी आफ इस्टेट बहादुर इजलास  
 कौन्सिल या अज जानिव सकारके माकूल हो जायज रखेगी और इफित-  
 जाय राय अपने उस मुहलतको बढ़ासक्ती है—

६-जिस मुकदमा में वकील सकारके साथ कोई और शख्स सिन्जा-दफा ४२१  
 निव सेक्रेटरी आफ इस्टेट बहादुर हिन्द इजलास कौ-  
 न्सिल ऐसा न हो जो मुकदमाके 'मिरातिव' नफसुल्  
 अमेरीका जवाब देसके उसमें अदालतको ऐसे शख्स  
 की हाजिरीका हुक्म देना भी जायज है—

७-(१) अगर मुद्दाअलेह ओहदेदार सकार हो और उसको इन्दुल् दफा ४२३  
 तौसीअ मुहत ताफि ओ वमूल सम्मनके अर्जीदावाकी जवाब दाखिल करने से  
 हदेदार सकार गवर्नमे- पहल गवर्नमेन्ट से इस्तसबाव करना मुनासिब मौलूम  
 न्दसे इस्तसबाव करसके हो तो वह अदालत से इस्तदुआ करसक्ता है कि मी-  
 आद मुअय्यना सम्मन इस कदूर बढ़ा दीजाये जो इस्तसबाव करने और  
 बतवस्तुत सरिश्ते हाय मुनासिब उसकी वाबत हुक्मके जखूत होनेके लिये  
 जरूरी हो—

(२) अदालतको लाजिम है कि ऐसी दरख्तास्तपर मीआद मजकूर  
 को जिसकदर उसको जरूरी मालूम हो बसअतदे—

८-(१) अगर सकार जवाबदिही नालिशकी जो किसी ओहदेदार दफा ४२६  
 जाफा उन नालिशोंमें सकारीपर हो अपने लिम्मे कबूल करे तो वकील सकार  
 जो वनाम ओहदेदार जव कि उसको इजाजत हाजिरी व जवाबदिही अर्जी-  
 सकारीहों दावाकी दीजाय अदालत में दरख्तास्त मुजरा नेगा और  
 उस दरख्तास्तपर अदालतको लाजिम होगा कि एक याददाश्त उस  
 इजाजतकी रजिस्टर मुकदमात दीवानीमें दर्ज कराये—

(२) अगर लायदा तल्ली-(१०) की रूपे वकील सकार उस ना-  
 रीसपर जो इच्छिताया में वारने हाजिरी मुद्दाअलेह व ज-

बाबदिही अर्जीदावाके मुकदमरहो या उससे पहिले दरखास्त न गुजराने तो मुकदमाकी तरतीब मिसल उन मुकदमोंके होगी जिनमें सर्कार अहदुल्फरीकैन न हो—

मगर न मुहमाअलेहकी जात लायक गिरफ्तारीके न उसकी जायदाद काबिल फुर्कीके होगी इस्ला बहालत जारी होने डिगरीके—

## आर्डर २८

नालिशात अज तरफ और बनाम मुलाजिमान फौज

दफा ४६५

( १ ) अगर कोई अप्रसर या सिपाही जो फिलहकीकत सीगै फौज में मुलाजिम सर्कारहो किसी मुकदमाका फरीकहो और मुकदमाकी पैरवी या जवाबदिही असालतन् करने के लिये रुखसत न पासक्ताहो तो वह मजाज होगा कि किसी शख्सको मुकदमाकी पैरवी या जवाबदिही करने के लिये अपनी तरफ से मुल्तार मुकदमारे—

( २ ) तर्कर शख्स मजकूरका तहरीरी होगा और अप्रसर या सिपाही मजकूर उसपर अपने दस्तखत करेगा ( अलिफ ) खबर अपने कमानअप्रसर के या अगर दस्तखत करनेवाला खुद कमानअप्रसरहो तो खबर उस अप्रसर के जो ऐन उसका मातहतहो या ( बे ) अगर अप्रसर या सिपाही मजकूर फौजके सीगै इस्टाफका मुलाजिमहो तो खबर सरदफ्तर या किसी अप्रसर वालादस्त उस दफ्तरके जिसमें वह मुलाजिमहो ऐसा कमान अप्रसर या और अप्रसर उस मुल्तारनामापर अपने दस्तखत करेगा और वह मुल्तारनामा अदालत में दाखिल किया जायेगा—

( ३ ) जब वह मुल्तारनामा अदालतमें दाखिल होजाये तो कमान अप्रसर वगैरहके दस्तखत काफी सन्त इस अमर के होंगे कि मुल्तारनामा हसजाय्ता तहरीर पायाहै और यह कि वह अप्रसर या सिपाही जिसकी तरफ से वह मुल्तारनामा लियागया

मुकदमाकी पैरवी या जवाबदिही असालतन् करने के लिये  
खुद हासिल न करसक्ता था—

**तशरीह**—इस आर्डर में लफ्ज़ “कमान अफसर” से वह अफसर  
‘मुसदहै’ जो किसी वक्त पर किसी ऐसी रेजीमेन्ट या पल्टन  
या जुब्ब पल्टन या डिपोका कमानियरहो जिससे अफसर  
या सिपाही मजकूर इलाका रखता हो—

२—जिस शख्स को कोई अफसर या सिपाही वास्ते करने पैरवी या दफा ४६६

अफसरहफ्तिवार याफता  
असालतन् काम कर  
सक्ताहै या वकील  
मुकरर करसक्ता है

जवाबदिही मुकदमा के मुख्तार करै। उसे इस्तिवार  
होगा कि उसी तरह मुकदमा में असालतन् पैरवी या  
जवाबदिही करै जैसा कि अफसर या सिपाही दर-  
हालत खुद हाज़िर होने के करता या वास्ते पैरवी या  
जवाबदिही मुकदमा के तरफ से उस अफसर या सिपाही के किसी व-  
कील को मुकरर करै—

३—हुक्मनामजात जिनकी तामील किसी शख्स पर जिसको अफसर दफा ४६६

जो तामील शख्स इ-  
स्तिवार याफता या  
उसके वकील परहो  
वह मुख्तार होगी

या सिपाही की तरफ से हस्व कायदः १ मुख्तारनामा  
हासिल हो या किसी वकील पर जिसे अफसर या  
सिपाही के मुख्तार ने मुकरर कियाहो कीजाये उसी  
तरह मुख्तार होंगे कि गोया वे जात खास फरीक मु-  
कदमा पर तामील किये गये थे—

## आर्डर २६

**नालिशात अजतरफ और बनाम जमाअत हाय  
सनदयाफता—**

( १ ) उन नालिशत में जो अज तरफ या बनाम जमाअत सनद दफा  
दस्तअत और तसदीक याफता हों जायज़ है कि सेक्रेटरी या डाइरेक्टर या  
सीडिंग और कोई अफसर आला जमाअत मजकूर का जो  
निश्चत वाकिआत मुकदमा के अदाय शहादत करसके तरफ से जमाअत  
मजकूर के सीडिंग पर दस्तखत और तसदीक करै—

दफा ४३६

( २ ) वक़ैद अहकाम कानून निस्वत तामील हुक्मनामा के अगर तामील जमाअत सनद मुकदमः वनाम किसी जमाअत सनदयाफ़ता के हो याफ़ता पर उसमें सम्मन की तामील इस तरह होसकीहै कि—

(अलिक) जमाअत सनदयाफ़ता के सेक्रेटरी या किसी डाइरेक्टर या और किसी ओहदेदार आलामको हवालेकिया जाये—या

( वे ) जमाअत सनदयाफ़ता के दफ़तर रजिस्टरी शुदः में पहुँचा दियाजाये या वहां बसवील डाक भेज दियाजाये या अगर कोई दफ़तर रजिस्टरीशुदः नहो तो जमाअत सनदयाफ़ता मजकूर के मुकाम कारोवार पर—

दफा ४३६

( ३ ) अदालत को इस्तिथारहै कि मुकदमा की किसी नौबत पर हुक्म निस्वत अदालतन उस जमाअत सनदयाफ़ता के किसी सेक्रेटरी या किसी हाजिरी अपसर जमाअत सनद याफ़ता डाइरेक्टर या और आला ओहदेदार को जो अमूरान्त नफ़स मुकदमाका जवाब देसकताहो अदालतन हाजिर होनेका हुक्मदे—

## आर्टिक्ल ३०

नालिशात अज़ तरफ़ या वनाम कारखानाजात  
और उनअशख़्सके जो अपने नामके सिवा  
किसी और नामसे कारोवार करतेहों

१— ( १ ) कोई दो या ज़्यादा अशख़स जो वहसियतशुकी दावेदार शुर्क़ाय करखान के नाम से नालिशात कर रहे हों या जिम्मेदारहों और ब्रिटिश इण्डिया में कारोवार करते हों उस कारखाना के नाम से ( अगर कोई हो ) कि जिसके वह बरख़्तन पैदा होने बिनाय मुत्तासमत के शुर्क़ाय थे नालिश कर सकने हैं या उनपर नालिश कीजामकीहै— और ऐसी मुरत में कोई फ़रीक मुकदमा अदालत में दर्जवारत देसकता है कि नाम और पता उन लोगोंका जो बरख़्तन पैदा होने बिनाय मुत्तासमत के उन कारखाना के शरीक थे तगदीकशुदः दम्य तगीकः मुकदमः अदालत उमरो दिलाजाये—

( २ ) अगर अश्लोख व हैसियत शुर्काय अपने कारखाना के नाम से कायदा तहती ( १ ) की रू से नालिश करै या उसी हैसियत से उनपर नालिश कीजाये तो दूर भूरत प्लीडिंग या दीगर कागजके जिसपर मजदूरा हाजीकी रू से दस्तखत या इवारत तसदीक का लिखा जाना या मुसद्दिक होना अज तरफ मुद्ई या मुद्आअलेह के जरूरी है इस कदर काफी होगा कि उस प्लीडिंग या दीगर कागज पर अश्लोख मजदूर में से कोई एक दस्तखत या इवारत तसदीक सिब्त करै या उसको मुसद्दिक करै—

२- ( १० ) अगर कोई नालिश अज तरफ शुर्काय कारखाना के उनके शुर्काय के नाम कारखाना के नाम से दायर कीजाये तो मुद्इआन या जाहिर करना उनके वकील को लाजिम है कि अगर कोई मुद्आअलेह दरख्वास्त तहरीरी करै या उसकी तरफ से दरख्वास्त कीजाये तो जुम्ला शुर्काय कारखाना के नाम और मुर्कामा सकूनत कि जिनकी तरफ से नालिश खूब हुई हो बिलतबकुल तहरीर के जरिये से चलावै—

( २ ) अगर मुद्इआन या उनका वकील मजमून दरख्वास्त मुतजकिरह कायदा तहती ( १ ) की तामील नकरै तो दरख्वास्त गुजरने पर मुकद्दमा में जुम्ला कारवाई मुताबिक शरायत मुकरर अज तरफ अदालत के मुलतवी होसकी है—

( ३ ) अगर शुर्काय के नाम मुताबिक कायदा तहती ( १ ) के जाहिर कर दिये जायें तो मुकद्दमा उसी तरह चलेगा और जुम्ला अमूर में वही नतायज लाजिम आयेंगे कि गोया शुर्काय मजदूर के नाम अजीदावा में व हैसियत मुद्ई दर्ज थे—

मगर यह शर्त है कि वावस्फ इसके जुम्ला कारवाई कारखाना के नाम से जारी रहेगी—

( ३ ) अगर लोगों पर वतौर शुर्काय कारखाना उनके कारखाना के तामील सम्मन नाम से नालिश दायर की जाये तो सम्मन की तामील इस तरह होगी—याने

(अलिफ) त्वाह एक या ज्यादा शुर्काय पर—या

( वे ) उस सदर मुक़ाम वाकै ब्रिटिश इण्डिया में कि जहां कार-  
वार किया जाताहो किसी शख्स पर जो वर वक्त तामील  
सम्पन उस जगह कारोवार शराकत का इस्तिहार रखता  
हो या उसका मुन्तज़िम हो—

यानी जैसा कि अदालत हुक्मदे और ऐसी तामील कारखाना पर  
तामील मुअस्सर समझीजायेगी कि जिसके नाम नालिश कीजाये ख्वाह  
कुल या वाज़ शुर्क़ाय ब्रिटिश इण्डिया के बाहर रहतेहों या न रहतेहों—

मगर शर्त यह है कि दरसूरत कारखाना के जो मुद्दई के इल्म में कबल  
दायरहोने नालिश के टूटचुकाहो सम्पन हरशख्सपर तामील कराना  
चाहिये कि जो ब्रिटिश इण्डिया में रहताहो और जिसको ज़िम्मेदार  
बनाना मंज़ूर हो—

जर्दद नं० ६ सन १८७२ ई०  
४—( १ ) वावस्फ अहकाम दफा ४५ ऐक्ट मआहिदः हिन्द सन  
हक नालिश बाद व- १८७२ ई० के अगर दो या ज़्यादा अशखास का-  
फ़ात शरीक के खानाके नाम से अहकाम सेवककी रूसे नालिश  
करें या उनपर नालिश कीजाये तो उनमें से कोई शख्स इरजाअ नालिश  
से पहले या दौरान मुक़दमा में मरेजाये तो यह ज़रूर न होगा कि मुत-  
वफ़की का कायम मुक़ाम कानूनी फरीक मुक़दमा बनायाजाये—

( २ ) कायदा तहती ( १ ) का कोई मजमन किसी हक मुफस्मिल  
ज़ैल को जो मुतवफ़की के कायममुक़ाम कानूनी को हासिल है महदूद नहीं  
करेगा और न उसपर निहज से मुअस्सर होगा—

( अलिफ ) हकगुज़रानने दरख़ास्त का अंगूरज बनाये जाने फरीक  
मुक़दमा के—या—

( वे ) निस्वतदायर करने किसी दावा के बनाम शख्स या अ-  
शखास वाकी मांदा के—

५—अगर कोई सम्पन किसी कारखाना के नामजोरी हो और हम  
हमना इत मजमन तरीफ़ा मुकरर कायदा १ तामीलपाये तो हरशख्सको  
पहले तामील सम्पन जिसपर सम्पन की तामील हो एक इत्तिला नहीगी  
निर्देशित मे हई वक्त तामील सम्पन दीजायेगी इस मजमन मे कि  
सम्पन की तामील उसपर दिन हैमियत से हुई यानी आपा बहमियत

शरीक या वहैसियत ऐसे शख्सके कि जिसके इस्तिथार या इन्तिजाम में वह कारखाना हो या दोनों हैसियतों से—

और अगर ऐसी कोई इत्तिला न दीजाये तो समझा जायेगा कि सम्मन की तामील उसपर वहैसियत शरीक के हुई—

६—अगर लोगों के नाम वहैसियत शरीक कारखाना के कारखाना के शुर्कायकी हाजिरी नाम से नालिश की जाये तो हरशख्स अपने अपने नाम से हाजिर होगा मगर इसके बादकी कुल कार्रवाई कारखाना के नाम से जारी रहेगी—

७—अगर सम्मन हस्व तरीकै मुकर्रर कायदा है किसी ऐसे शख्सपर शुर्कायके सिवा किसी और शख्सकी हाजिरी न होगी तामील कियाजाये जिसके इस्तिथार या इन्तिजाम में कारोबार शराकती हो तो उसकी हाजिरी की जरूरत नहीं है तावत्ते कि वह खुदशरीक कारखाना न हो जिसपर नालिश की गई है—

८—कोई शख्स जिसपर कोई हुक्मनामा बतौर शरीक के हरबतरीका हाजिरी उत्तरदारी के साथ मुकर्ररह कायदा है तामील कियाजाये अदालत में उजर के साथ हाजिरहोकर शरीक होने से इन्कार करसक्ताहै—

मगर यह हाजिरी मानअ इसकी न होगी कि मुद्दै और तरहपर कारखाना पर हुक्मनामा की तामील न कराये और अगर कोई शरीक हाजिर नहो तो अदम हाजिरी में बनाम कारखाना डिगरी हासिल न करे—

९—यह आर्डर उन नालिशात से भी मुतअल्लिक होगा जो दर्मियान नालिशात माबैन शुर्काय के किसी कारखाना और उसके एक या ज़्यादा शुर्कायके हों नीज उन नालिशात से जो दर्मिय न ऐसे कारखानों के हों जिनके एक या ज़्यादा शुर्काय दोनों कारखानों में मुश्तरक हों—

मगर ऐसी नालिशों में कोई कार्रवाई इजराय डिगरी न होसकेगी सिवाय इसके कि अदालत से इजाज़त हासिलकीजाये और जब दर्ख्वास्त हसूल इजाज़त वास्ते इजराय डिगरी के गुजरै तो जुम्ला तस्फिया हिंसावहोगा और तहक्कीकात कीजायेगी और हिदायतें सादिरहोंगी जैसा कि करीन इन्साफ होगा—

१०—जो शख्स अपने नाम के बिना किसी और नाम या लक़ब से



नालिश बनाम ऐसे  
शख्स के जो अपने  
नाम के सिवा किसी  
और नाम से कारोबार  
करताहो

कारोबार करताहो उसपर उसी नाम या लक़ब से ना  
लिशहोसकेगी गोया कि वह एक कारखाना का नाम  
है और जिसद्वारा कि नोइअत मुकदमा मुक़ज़ी  
जुमला कवाअद इस आर्डर के ऐसी नालिश से मुत  
अल्लिक होंगे =

### आर्डर ३३

नालिशात मिनूजानिब और बनाम अमनाय  
और औसियाय और मोहतमिमानतर्का के

दफा ४३७

( १ ) जुमला मुकदमात में जो ऐसी जायदाद से मुतअल्लिकहों जो  
कायम मुकामी अश-  
खास मुस्तहक इन्तफा-  
अ मुकदमा जायदादमें  
जो अमनाय वगैर की  
सिपुदंगी में हो -

किसी अमीन या वसी या मुहतमिम तर्का की सिपुद-  
गी में हों जबकि भगड़ा उसजायदाद का गावैन उन  
अशखास के जो जायदाद मजकूर में इस्तहकाक हसूल  
इन्तकाल रखते हों और किसीशख्स तालिस के हो  
तो ऐसा अमीन या वसी मुहतमिम तर्का ऐसे अशखास गर्जदार का  
कायम मुकाम समझाजायेगा और अललअसूय उन अशखासको फरीक  
मुकदमा करना जरूर न होगा लेकिन अगर अदालत मुनासिव जाने तो  
हुक्मदेस्तकी है कि वह सब या उनमें से कोई फरीकक्रिया जाये -

४३८

२-जिसहाल में कि कई अमनाय या औसियाय या मुहतमिमानतर्का  
इस्तमाउ अमीन और हों अगर कोई नालिश उनमें से एक या कई के नाम  
नसी मोहमिममारी

रुजूअ कीजाये तो वह सब फरीक मुकदमा कियेजायेंगे-  
मगर शर्त यह है कि जिन औसियाय ने कि अपने मवसी के वसी-  
यतनमा को साविग न कियाहो और जो अमनाय और औसियाय और  
मुहतमिमानतर्का वृटिश इण्डियाके बाहरहों उनको फरीक करनाजरूरनहींहै-

३-अगर अदालत और निहज का हुक्म न दे तो शौहर किसी औ-  
सियाय को रत मनकूदः अमीना मुहतमिमा तर्का या वसीया का  
फरीक वहेमियत शौहर उस मुकदमा का न कियाजा-  
येगा जो उस औरत की तरफ से या उसके नामहो-

## आर्टर ३२

नालिशात भिन्जानिब और बनाम अंशस्त्रास

नावालिग और फालिरुल्अकल के

१-जो नालिश कि किसी नावालिगकी तरफ से हो वह नावालिगके दफा ४४०

नावालिगकी तरफ से  
नालिश मार्फत उसके  
रफीकके होगीनामसे किसी शख्सकी मार्फत जोकि उस नालिश में  
रफीक नावालिगका कहा जायेगा रुजूअ होगी—

२-( १ ) अगर कोई नालिश विला तवस्सुत रफीकके कोई नावालिग दफा ४४२

अगर नालिश विला  
तवस्सुत रफीकके दा-  
यर कीजाये तो अर्जी  
दावा फेहरिस्त से खारिज  
किया जायेगाखुद या मार्फत किसी औरके दायरकरै तो जायज है  
कि मुद्आअलेह इस अम्रकी दरख्वास्तकरै कि अर्जी  
दावा फेहरिस्तसे खारिज कियाजाये और उसका खर्चा  
वकील या और शख्स जिसने कि नालिशको पेश कि-

याहो अदाकरै—

( २ ) शख्स पेशकुनिन्दः नालिशको ऐसी दरख्वास्तकी इत्तिला

दीजायगी और अदालत उसके उजरात सुनकर ( अगर कुछ  
हो ) जो हुक्म उस मामिले में मुनासिब समझै सादिर करैगी—

३-( १ ) जिस हालमें कि मुद्आअलेह नावालिगहो अदालत को दफा ४४३

नावालिग मुद्आअलेह  
के लिये वली दौरान  
मुकदमा अदालत की  
तरफ से मुकर्रर होगा-लाजिमहै कि अगर उसकी नावालिगी वाकईका इतमी-  
नानहो तो किसी शख्स मुनासिबको उस नावालिगके  
वास्ते वली दौरान मुकदमा मुकर्ररकरै—

( २ ) हुक्म वास्ते तकर्रर वली दौरान मुकदमाके उस सवालपर जो दफा ४४६

नावालिगके नामसे या उसकी तरफ से या मुद्ईकी तरफ से  
गुजरै होसکتाहै—( ३ ) उस सवालकी ताईदमें वजरिये तहरीरी बयानहलफी के इस  
वातकी तसदीक कीजायेगी कि वली मुजव्विजाको मामिलान  
मुतनाजिआफिया नालिश मजकूर में कुछ दक मुजालिफ तल  
नावालिगके नहीं है और वह शख्स मुकर्रर होनेके लायकहै—

( ४ ) दरख्वास्त तहत कायदाहाजा पर कोई हुक्म सादिर न होगा

सिवाय इसके कि इत्तिला नावालिग और उसके किसी बली को जिसको हाकिम मजाजने मुकर्रर किया या करार दिया हो दीजाये या अगर कोई ऐसा बली न हो तो इत्तिला नावालिग के बाप या दीगर बली हकीकीको दीजाये या अगर बाप या कोई और बली हकीकी भी न हो तो इत्तिला उस शख्स को दीजाये कि जिसकी खवरगीरी और हिफाजत में नावालिग हो और नीज बाद समाप्त उन उजरातके जो किसी ऐसे शख्स की तरफ से पेश कियेजायें जिसको इस कायदा तहतीकी रुसे इत्तिला दीगई हो—

४४५

४-( १ ) जो शख्स कि सहीहउलमक़ल और वालिग हो जायज है कि वह बतौर रफ़ीक या बली दौरान मुकदमा किसी नावालिगके कारपरदाज हो—  
 कौन शख्स बतौर रफ़ीक कारवाई करेगा या बली दौरान मुकदमा मुकर्रर होगा

यशर्ते कि उसका हक़ गुवालिफ हक़ उस नावालिगके न हो और यह कि रफ़ीक होनेकी सूरतमें वह उस मुकदमामें मुद्माअलेह न हो और बली दौरान मुकदमा होनेकी सूरत में मुद्ई न हो—

४४०

४३

( २ ) अगर किसी नावालिगका कोई ऐसा बली मौजूद हो जिसे किसी हाकिम मजाजने मुकर्रर किया या करार दिया हो तो सिवाय बली मजकूरके कोई शख्स बतौर रफ़ीक नावालिग कारवाई न करसकेगा और न उसका बली दौरान मुकदमा मुकर्रर होगा इल्ला उस हालमें कि अदालत वजुहात क़लमबन्द शुदा यह मुनासिब समझें कि किसी दूसरे शख्सको बतौर रफ़ीक कारवाई करनेकी इजाजत देना या ससफ़ा बली दौरान मुकदमा मुकर्रर करना यानी जैसा मौका हो नावालिगके हक़में मुफीद होगा—

( ३ ) कोई शख्स अपनी मर्जीके खिलाफ बली दौरान मुकदमा मुकर्रर न किया जायेगा—

( ४ ) जब कोई शख्स बतौर बली दौरान मुकदमा आपन करने के लिये और बली होनेपर राजी न हो तो अदालतको

इस्लियारहै कि अपने किसी ओहदेदारको बली मुकर्ररकरै और यह हिदायतकरै कि जिसकदर रुपया उस ओहदेदारका खिद-मात वहैसियत बलीकी बजाआवरी में सर्फ होनेवालाहो उसकी अदाई बज्जिम्मे जुम्लः फरीकैनके होगी या फरीकैन मुकदमा में से एक या ज्यादा फरीकों के जिम्मे या कि उसकी अदाई किस सरमाया से होगी कि जो अदालतमें दाखिलहो और जिसमें नावालिग गरज रखताहो-और नीज हिदायात मुत-अल्लिक अदाई ऐसे खर्चाके कि जो मुक्कितजाय इन्साफ और हालत मुकदमा केहो सादिर करसक्ती है-

५-( १ ) हर दरख्वास्त वइस्तनाय दरख्वास्त मुतज्जिकिरह कायदा दफा ४४१ तहती ( २ ) कायदा १० के जो अदालतमें किसी ना-  
 तयम मुकामी नावा- वालिग की तरफ से गुजरै लाजिमहै कि वह उसके  
 को वज्जरिये रफीक या वालिग की तरफ से गुजरै लाजिमहै कि वह उसके  
 ली दौरान मुकदमा रफीक या उसके बली दौरान मुकदमा की तरफसेहो-

( २ ) जो हुक्म कि किसी नालिश में या किसी दरख्वास्तपर जो दफा ४४४  
 अदालतके हुजूर गुजरीहो दियाजाये और उसमें किसी नावा-  
 लिगको किसी तौरका सरोकारहो या किसी तौरपर उसको  
 उससे असर पहुंचताहो और उसमें उस नावालिगकी तरफसे  
 कोई-उसका रफीक या बली दौरान मुकदमा यानी जैसी सू-  
 रतहो कायम मुकाम उसका न हो तो जायज है कि वह हुक्म  
 फिस्ल करदियाजाये और अगर वकील उस फरीकका जिसने  
 हुक्म हासिलकिया नावालिगीका हाल जानता था या अक्लन  
 करीने से जानसक्ता था तो खर्चा उसी वकीलके जिम्मे रक्खा  
 जायेगा-

६-( १ ) कोई रफीक या बली दौरान मुकदमा बिला इजाजत अटा- दफा ४६१  
 माली जायदाद डिगरी लत कोई रुपया या दीगर जायदाद मन्कूलः किसी  
 गुद वहक नावालिगकी नावालिगकी तरफसे वसूल न करेगा-  
 मेन्जानिब रफीक या  
 ली दौरान मुकदमाके

( अलिफ ) इवाह बतरीक मसालहत कव्ल सदूर डिगरी या हुक्मके धा-  
 ( वे ) अजरूप किसी डिगरी या हुक्मके जो वहक नावालिगके  
 सादिरहुआहो-

( २ ) अगर हाकिम मजाजने रफीक या वली दौरान मुकदमा को नावालिग मजकूरकी जायदादका वली मुकर्रर न किया या करार न दिया हो याकि वह इसतरह मुकर्रर हुआ या करार दिया गया हो मगर किसी नाकाबिलियतकी वजहसे जो अदालत को मालूम हो वह रुखा या दीगर जायदाद मनकूला वसूल न करसकता हो तो अदालतको लाजिम है कि अगर उसको जायदाद मजकूर वसूल करनेकी इजाजत दे उससे ऐसी जमानत ले और उसको ऐसी हिदायतें करें जो अदालत को जायदाद मजकूरको तलफ होने से काफ़ी तौरसे बचाने के लिये और उसके मुनासिब इस्तेमाल के वास्ते जरूरी मालूम हों—

दफ़ा ४६२

७—( १ ) कोई रफीक या वली दौरान मुकदमा मजाज न होगा कि मुआहिदा या सुलह-नाम अज तरफ़ रफीक या वली दौरान मुकदमा विला इजाजत अदालतके जो साफ़तौर पर कार्रवाई लिखी जायगी नावालिगकी तरफ़ से कोई मुआहिदा या सुलहनामा दरबाव उस नालिगके करें जिसमें कि वह वहैसियत रफीक या वलीके कारपरदाज हो—

( २ ) जो मुआहिदा या सुलहनामा कि विदून ऐसी इजाजत अदालतके किया गया हो कि जो हस्व मजकूर कार्रवाई में लिखी जाये वह नावालिगके सिवाय और जितने फरीकहों सबके मुकाबिले में किस्ब होनेके काबिल होगा—

दफ़ा ४४७

८—( १ ) अगर अदालत और निहज का हुकम न दे तो नावालिग रफीककी दस्तखतारी । रफीक दौरे इसके कि पेशतर से अपनी कायम मुताफ़ी के वास्ते किसी शख्स लायकको पैदा करें और जो खर्चा कि शेरुकाओं उसकी जमानत दाखिल करदे दस्तखतदार नहीं होसकता—

( २ ) लाजिम है कि जो दरख्वास्त व गर्ज तकरूर नये रफीक के गुजरें उसके साथ तहरीरी बयान हलफ़ी इन मजमून का कि शख्स मुजब्विजा लायक है और नोज यह कि वह एक मुयामिन हक नावालिगके नहीं रखता है मुन्मालिक हो—

दफ़ा ८४६

९—( १ ) अगर हक नावालिगके रफीकका मुन्मालिक हक नावालिगकी मीरगी के हो या वह किसी ऐसे मुदया मलेह में जिनका मुन्मालिक हक नावालिग के हो इस कदर रायता रखता हो जिनमें मुदना

कि वह बतौर मुनासिब हिफाजत हकीयत उस नावालिगकी न करेगा या वह अपने कार लाजिमी को अदा न करे या दर असनाय दौरान मुकदमा के बृटिश इण्डियाकी सकूनत तर्क करदे या कोई और वजह फाफीहो तो जायज है कि उस नावालिग या मुद्दआमलेहकी जानिवसे दरख्वास्त उसकी मौकूफीकी कीजाये और अदालत मजाज है कि अगर वजहपेश शुदः को काफी समझे तो उस दरख्वास्त के मुताबिक उस रफीक के मौकूफ किये जानेका हुक्म दे और खर्चा की निस्वत कोई और हुक्म सादिर करे जो उसके नजदीक मुनासिव हो—

( २ ) अगर रफीक ऐसा बली न हो जिसको किसी हाकिम मजाजने मुक़रर किया या करार दिया हो और दरख्वास्त बलीमजकूरकी तरफ से गुजरे और उसकी यह ख्वाहिश हो कि वह खुद वजाय रफीक के मुक़रर किया जावे तो अदालत रफीक साबिक को मौकूफ करेगी इल्ला उसे हालमें कि अदालत व बज़ूहात कलमबन्द शुदः मुनासिब समझे कि उस बलीको उस नावालिगकी रफीक ने बनाना चाहिये और अदालत को लाजिम होगा कि बाद अर्जा दरख्वास्तकुनिन्दः को रफीक साबिक के एवज मुक़रर करे ऐसी शरायतपर जो दरबाब खर्चा आयद-शुदः मुकदमाके उसके नजदीक मुनासिव हो—

१०— ( १ ) जबकि रफीक नावालिगका दस्तवरदार हो या मौकूफ दफा ४४

इल्लुषाय कार्रवाईअगर रफीक मौकूफ बग़ैरह कियाजाये किया जाये या फौत हो तो कार्रवाई मजीद मुल्तवी रहेगी तावक़ते कि उसके वजाय तर्करर दूसरे रफीक का हो—

( २ ) अगर नावालिगका वकील एक मीथाद मुनासिव के अन्दर दफा ४४ रफीक जदीद के मुक़रर कराने की तदवीर न करे तो हर शख्स जो नावालिग से या शै मुतनाजिआ से गर्ज रखता हो अदालत से दरख्वास्त करसکتा है कि कोई रफीक मुक़रर करदिया जाये और अदालत जिसको मुनासिव तसव्वर करे मुक़रर करदे—

११— ( १ ) अगर बली दौरान मुकदमा दस्तवरदार होना चाहे या दफा ४५

वलीदौरान मुकदमा  
की दस्तवदारी या मौ-  
कूफी या वफात

अपने जिम्मेकी खिदमत को न अंजाम दे या और कोई  
वजह काफ़ी नज़र आये तो अदालत मजाज़ है कि उसे  
दस्तवदार होनेकी इजाज़त दे या उसे मौकूफ कर दे और  
दरबाव खर्चा के जो हुक्म मुनासिब समझें सादिर करें—

( २ ) अगर वली दौरान मुकदमा वअय्याम दौरान मुकदमा दस्त-  
वदार हो या फौत हो जाये या अदालत के हुक्मसे मौकूफ  
किया जाये तो अदालत को लाज़िम है कि नया वली उसकी  
जगह मुक़रर कर दे—

१२- ( १ ) जब मुद्ई नावालिग या वह नावालिग जो कि फरीक  
तरीका जो मुद्ई या  
दरख्वास्त कुनिन्दा  
वालिग होनेपर इख्त-  
यार करेगा

मुकदमा न हो और जिसकी तरफसे कोई दरख्वास्त  
दायर हो, वह वलूग को पहुंचे तो उसको चाहिये कि  
अपनी राय इस बाब में कायम करे कि वह मुकदमा या  
दरख्वास्त की पैरवी में खुद मसरूफ होगा या नहीं—

( २ ) अगर वह पैरवी मुकदमा या दरख्वास्त में मसरूफ होना पसन्द  
करे तो उसे लाज़िम है कि हुक्म मौकूफी उस रफीक का और  
इजाज़त अपने नाम से पैरवी करने की हासिल करे—

( ३ ) बाद अज़ा उस नालिश या दरख्वास्त के उनवान में इसलाह  
की जायगी और वह इस तरह पढ़ा जायेगा—

(अलिफ वे) साविक नावालिग मारफत ( जीम दाल ) अपने रफीक  
के मगर वालिग हाल—

( ४ ) अगर वह नालिश या दरख्वास्त से दस्तवदार होना पसन्द  
करे तो उसको लाज़िम है कि अगर मुद्ई वजात वाहिद या  
सायल वजात वाहिद हो तो जो खर्चा मुद्आमलेह या फरीक  
मुखालिफ का हुआ हो या जो कुछ कि उसके रफीक ने बढ़ा  
किया हो दाखिल करके उस नालिश या दरख्वास्त के रागि  
किये जानेके लिये हुक्म हासिल करे—

( ५ ) हर दरख्वास्त दम्य कायदा हाज़ा यकतरफी गुज़रमती है त-  
किन विद्न उतिलादिही रफीक के कोई ऐसा हुक्म सादिर न हो-  
गा कि जिसकी रु मे रफीक मौकूफ कर दिया जाये और नावा-  
लिग मुद्ई को अपने नाम से पैरवी करने की इजाज़त दी जाये—

दफा ४५६

दफा ४५०

दफा ४५१

दफा ४५२

दफा ४५३

१३- ( १ ) अगर नावालिग शराकती मुद्दै हद्द बलूग को पहुंचकर दफा ४५४

अगर कोई शरीक मुद्दै  
बाद सिन बलूग को  
पहुंचने के मुकदमा से  
दस्तबदार होना चाहै

नालिश से दस्तबदार होना चाहै तो उसको लाजिम है कि जुमरै मुद्दियान से अपना नाम खारिज कराने की इस्तदुआ करै और अदालत को लाजिम है कि अगर उसको फरीक मुकदमा करना जरूरी न समझै तो मुकदमा में से उसको ऐसी शरायत पर दरबाव दिलाने खर्चा या दरबाव दीगर अमूर के जो अदालत की दानिस्त में मुनासिबहो निकालदे-

( २ ) दरख्वास्त गुजरने के इत्तिलानामा की तामील रफीक और किसी शराकती मुद्दैपर और नीज मुद्दाअलेह पर की जायेगी—

( ३ ) खर्चा तमाम फरीकैन दरख्वास्त मजकूरका और तमाम कार्रवाइयों का या किसी कार्रवाइयोंका जो कबल उसके उस नालिश में हुई हों उन अशखास को अदा करना होगा जिनको कि अदालत हुक्मदे—

( ४ ) अगर सायल मुकदमेका फरीक जरूरीहो तो अदालत हिदायत करसक्ती है कि वह मुद्दाअलेह गर्दाना जाये—

१४- ( १ ) अगर कोई नावालिग हद्दबलूग को पहुंचकर अगर दफा ५५४

नालिश जो बवजह  
माकूल नहो या ना-  
मुनासिबहो

वह मुद्दै वजात बाहिदहो तो यह दरख्वास्त देसक्ताहै कि नालिश जो उसके नामसे उसके रफीक ने रुजूअ की थी खारिज करदीजाये इस बिना पर कि वह बवजह

माकूल नथी या नासुनासिवथी—

( २ ) इस दरख्वास्त के गुजरने के इत्तिलानामा की तामील वनाम तमाम फरीकों के जिनको तअल्लुकहो कीजायेगी और जायजहै कि जब अदालत को उस नालिश के नामाकूल या नामुनासिव होनेपर इतमीनानहो तो उसकी दरख्वास्त को मंजूर करे और हुक्मदे कि रफीक खर्चा तमाम फरीकोंका निस्वत उस दरख्वास्त के और उस पैरवी का जो उस मुकदमा में की गईहो अटाकर या कोई और हुक्म सादिरकरै जो उसके नजरीक मुनासिबहो—



दफा ४६०

व ४६३

१५—अहकाम कवाअद ? लेगायत ? ४ जिसद्वदतक कि वह मुतअल्लिक तअल्लुक कवाअद का होसक्तेहों उन अशखास से मुतअल्लिकहोंगे कि जिनको अशखास फातिरुल् अकल से फातिरुल्अकल करारदियाहो और नीज उन अशखास से जो गो फातिरुल्अकल न ठहराये गयेहों लेकिन जिनको अदालत ने वाद तहकीकात के बवजह फातिरुल्अकली या खलल दिमाग वहाँसियत मुद्ई या मुद्आअलेह अपने हुक्क की रिफा-जतकरने के नाकाबिल पायाहो—

दफा ४६४

१६—इस आर्डर का कोई मजमून किसी वाली खुदमुख्तार या रईस इस्तसना वालियान खुद हुक्मरान से मुतअल्लिक नहीं है जो अपनी सलतनत खुव्तार औरउस्ताकी या रियासत के नाम से नालिशकरै या जिसपर उसी मरत में नाम से नालिश की जाये या जिसपर हरबुल् हुक्म नवाबगवर्नर जनरल बहादुर इजलास कौन्सिल या किसी लोकल गवर्नमेन्ट के किसी एजन्ट के नाम से या किसी और नाम से नालिश कीजाये न उसके ऐसे मानी लगाये जायेंगे कि वह किसी ऐसे कानून मुल्तसुल् मुकाम नाफिजुल्वक्त के अहकाम पर जो उन नालिशत से मुतअल्लिकहैं जो मिन्जानिब या बनाम अशखास नाबालिग या मजनून या दीगर अशखास फातिरुल्अकल दायरकी जायें किसी तरहमवस्सरहो या उनके खिलाफहो—

## आर्डर ३३

### नालिशात मुफलिसी

दफा ४६४

१—बपावन्दी अहकाम मुन्दजें जैलके मुफलिस की तरफ से हर ना-नालिशात बमोते मुल्त लिशहोसक्ती है—  
निन्ती रज्जुहोनकी है।

तशरीह—वह शख्स मुफलिम कहलायेगा जिसको इमकदर उस्त-तामत न हो कि वह मुकदमाके अर्जीदावा की फीम को कानून में मुर्कर है अदा करसकै या जिय-दालत में कि ऐसी फीम मुम्पयन नहो सिवाय अपने पानी पोशीदनी जरूरी और दो मुवदाविया मुकदमा के फिमी और ना-

यदाद मालियती एकसौ रुपया का इस्तेफाफा न रखता हो—

२—हर दरखास्त इस्तजाजत नालिश मुफलिसाना में वह मरातिब दफा ४०२ मजमून दरखास्त | मुन्दर्ज करने होंगे जो अशायज दावा में दर्ज होने चाहिये और एक फेहरिस्त हर जायदाद मन्कूला या गैर मन्कूला ममलूका सायल की बतफसील मालियत तखमीनी दरखास्त के साथ मुन्सलिक करना होगी और दरखास्त के जैल में दस्तखत और इवारत तस्दीक उसी तरह लिखी जायेगी जिस तरह फ्रीडिंग के जैल में दस्तखत और इवारत तस्दीक लिखने का हुक्म हो चुका है—

३—गो इन क्वाअद में कोई हुक्म हो दरखास्त मजकूर को सायल दफा ४०४ दरपेशी दरखास्त | असालतन् अदालत में पेश करेगा वजुज उस सूरत के कि वह अदालत में हाजिर होने से माफ हो उस सूरत में दरखास्त मर्फत ऐसे एजन्ट के पेश हो सकती है जो हस्ब जाब्ता मजाज हो और जवाब हरसवाल जखरी का जो दरखास्त से मुतअल्लिक हो देसक्ता हो और जो उसी तरह इजहार लिये जाने का मुस्तौजिब होगा जिस तरह वह शख्स जिसका वह मुख्तार हो अदालत में असालतन् हाजिर होने की सूरत में इजहार देने के लायक होता—

४—( १ ) अगर दरखास्त तरीका मुनासिब पर मुरत्तिब और हस्ब जाब्ता दफा ४०६ सायल का इजहार | पेश की जाये तो अदालत इजहार सायल या उसके एजन्ट का जब उसको मर्फत एजन्ट के हाजिर होने की इजाजत हो सायल के इस्तहकाक दावा और जायदाद की निस्वत अगर मुनासिब समझै कलम्बन्द करेगी—

( २ ) अगर सायल की दरखास्त मर्फत एजन्ट के गुजरै तो अगर दरखास्त बजरिये दालत को इस्तिथार है कि अगर मुनासिब समझै एजन्ट गुजरै तो अदालत हुक्म दे कि सायल का इजहार बजरिये कमीशन के खत सायल का इजहार उस तौर पर लिया जाये जैसा कि इजहार गवाह गैर बजरिये कमीशन लेस- हाजिर का लिया जा सकता है—

५—अदालत को लाजिम है कि दरखास्त इस्तजाजत नालिश मुफलि- दफा ४०७ दरखास्त की नामंजूरी | साना नामंजूर करे—

( अलिफ ) अगर वह उस तरीका पर मुरत्तिब और पेश न की जाये जो दफा ४०७ क्वायद २ और ३ में मुकर्रर है—

( वे ) अगर सायल मुफलिस्त न हो—या

( जीम ) अगर सायलने दरख्वास्त गुजरानने से पहले दो महीनेके अन्दर फ़रेद न्या इस नियतसे कि वह इस जाविल होजाये कि दरख्वास्त इस्तजाजत नालिश मुफलिसाना गुजरान सकै कोई जायदाद मुन्तकिल करदीहो—या

( दाल ) अगर उसके वयानात से विनाय मुख़ासिमत पाईन जातीहो—या

( हे ) अगर उसने निश्चत शैमुद्दविहा नालिश मुजव्विजाके कोई ऐसा इक्लार कियाहो जिसकी रूसे किसी और शख्सको शै मजकूरमें हकीयत हासिल होगईहो—

का ४० =

६—अगर अदालतके नज़दीक कोई वजह नार्भज़ूरी सवालकी मित्हु-इतिना तारीख़को जो वस्ते लेने शहादत के निश्चत मुफलिसो ना-पुत्रके मुक़रर कालके मिला वज़ूह मुन्दर्ज़ा जायदा ५ के न पाईजाये तो उसको लाजिमहै कि एक तारीख़ ( जिसकी इत्तिला कम से कम दस रोज पहले फ़रीक़सानी और वकील सर्कार को देनी होगी ) वास्ते लेने शहादतके जो सायल व सबूत अपनी मुफ़लिसीके गुजरानसके और वास्ते समाप्त शहादतके जो बतरदीद मुफ़लिसीके पेश कीजाये मुक़ररकरै—

का ४१ =

७—( १ ) उस तारीख़पर जो इस निजसे मुक़रर कीजाये या उसके कारवाँ बतलनामत बाद जिसकदर जल्द बसदूलत मुमकिनहो अदालतको लाजिमहै कि गवाहान फ़रीलैनका इजहारले ( अगर कोईहो ) और अगर चाहे सायल या उसके एजन्टका इजहारले और उनकी शहादतका ख़नासा बतौर याददास्तके लिखना होगा—

( २ ) बादत इस अम्रके कि आया महज अजरख़ दरख्वास्त और उस शहादतके ( अगर कुछहो ) जोकि अदालत में हरख मह-कुमा जायदा छाजा लीगईहो सायलका पाबन्द होना किसी सुमानिश्चतका अमनूमान मुमर्रह जायदा ५ में पाया जातई या नहीं जो दलील फ़रीलैन पेश कियाचाहै उमे भी अदालतको समाप्त करना लाजिमहै—

( ३ ) बाद अजा अदालत सायलको मुफ़निमी में नालिश करनेकी इमाजत देगी या न देगी—

८-अगर दरखास्त मंजूर कीजाये तो उसपर नम्बर डाला जायेगा दफा ४१०

कार्रवाई अगर दरखा- और वह दाखिल रजिस्टर कीजायेगी और बमजिलै  
स्त मंजूर कीजाये अर्जीदावा मुकदमाके मुतसव्वर होगी और मुकदमाकी  
कार्रवाई वजमीउल्बजूह मिस्ल मुकदमा मुतदायरः हस्व मामूलके कीजा-  
येगी वइस्तस्नाय इस बातके कि मुद्दै बावत किसी दरखास्त या वका-  
लतनामा या दीगर कार्रवाई मुतअल्लिकै मुकदमाके मुस्तौजिव अदाय किसी  
रसूम अदालतका न होगा सिवाय उन रसूमके जो वास्ते इजराय हुक्म  
नामजातके वाजिबुल् अदाहों—

९-अदालतको इस्तिथारहै कि मुद्आअलेह या वकील सर्कार की दफा ४१०  
फिग्त मुफलिसी | दरखास्तपर जिसकी इत्तिला तहरीरी कमसे कम एक  
हफ्ता पहले मुद्दैको दीगईहो मुद्दैको मुफलिसी फिस्व होनेका हुक्मदे-  
( अलिफ ) अगर वह दर असनाय मुकदमा कमूरवार ईजारसानी या  
तरीक ना मुनासिवकाहो-या

( बे ) अगर यह जाहिरहो कि उसकी माली हालत ऐसी है कि  
उसकी नालिश मुफलिसानाका कायम रहना मुनासिव  
नहीं है—या

( जीम ) अगर उसने दरवाब शै मुतनाजिआ मुकदमाके कोई ऐसा  
इक्तरार कियाहो जिसके एतवार से किसी और शख्सने  
उसी शै मजकूरमें कोई हक हासिल कियाहो —

१०-अगर मुद्दै मुकदमा में कामयाब हो तो अदालत को वाजिम दफा ८११  
अर्वा अगर मुफलित है कि तादाद रसूम अदालत की जो वहालत न  
कामयाब हो मिलने इजाजत इरजाअ नालिश मुफलिसाना मुद्दै के  
जिम्मे वाजिबुल् अदा होती महसूब करै और बावत उस तादाद के शैमुत-  
दाविया मुकदमा पर मतालिया मुकदमहोगा और गवर्नमेन्ट को इस्ति-  
थार होगा कि तादाद मजकूर उस शख्स से जिसको डिगरी की रू से  
अदा करने का हुक्म दियागया हो वसूल भी करले-

११-अगर मुद्दै मुकदमा में कामयाब न हो या उसकी मुफलिसी दफा ८१२  
कार्रवाई अगर मुफ- फिस्व होजाये या अगर मुकदमा उटालियाजाये या  
लिम कामयाब न हो मुकदमा डिस्मिस होजाये—

( अलिफ ) इस वजह से कि सम्मन वास्ते हाजिरी और जवाबदिदी

मुद्दामाअलेह के तामील न पाया हो ववजह इसके कि मुद्दई ने उसकी तामीलकी रसूम अदालत या मइसूल डाक वाजिवुल् अदा ( अगर कुछ हो ) अदा न किया हो—

( वे ) इस वजह से कि मुद्दई उस वक्त जब मुकदमा समाप्त के लिये पुकारा जाये हाजिर न हो—

तो अदालत को लाजिम है कि मुद्दई या किसी और शाख्त को जो मुकदमा में मुद्दई का शरीक हुआ हो यह हुक्मदे कि वह उस कदर रसूम अदालत अदा करे जो दरमूरत न मिलने इजाजत इरजाअ नालिश मुफलि-साना के मुद्दई को अदा करनी वाजिव होती—

जदीद

१२-गवर्नमेन्ट को हक हासिल है कि अदालत से किसी वक्त गवर्नमेन्ट वास्ते अदाय दरख्वास्त करे कि वास्ते अदाय रसूम अदालत के क्रायदा १० या ११ की रू से हुक्म सादिर किया जाये—

जदीद

१३-जुमला अमूर जो हस्वकवाअद १० व ११ व १२ मावैन गवर्नमेन्ट गवर्नमेन्ट फरीक मु- व किसी फरीक मुकदमा के पैदाहों लाजिम है कि वह कदमा समझी जा- हस्व मन्शाय दफा ४७ अमूर मावैन फरीक मुकदमा सता है समझे जायें—

जदीद

१४-अगर कोई हुक्म अजरूय क्रायदा १० या ११ या १२ सादिर किया नकल डिगरी की सा- जाये तो लाजिम है कि अदालत फौरन् एक नकल हव कलक्टर के पास डिगरी की साहव कलक्टर के पास मुरसिल कराये- भेजी जाय

दफा ४१३

१५-अगर सायल की दरख्वास्त मुतजम्मिन इस्तजाजत इरजाअ नालिश मुफलिती पर हुक्म नामंजूरी का सादिर हो तो अगर दरख्वास्त इस्त- उसकी हर दरख्वास्त मावाद जो उसी किस्म की हो जिमाना नामंजूर की निस्वत उसी हक नालिश के मजमूअ न होगी—मगर जाये तो उस तिम की दरख्वास्त मावाद कि हस्व तरीका मामूली नामजूर होगी निस्वत हक मजकूर के नालिश दापर करै—पर गर्न यह है कि अगर कुछ खर्चा उमकी दरख्वास्त इजाजत नालिश मुफलिती के खिलाफ पैरवी करने में सरकार या फकरीरुमानी पर आवद हुआ हो तो नह पहले अदा करदे—

१६-खर्चा उस दरखास्तका जिसमें नालिश मुफलिसाना दायर करने दफा ४१५  
खर्चा \_\_\_\_\_ की इजाजत मांगी जाये और खर्चा तहकीकात मुफलिसी  
का खर्चा मुकदमा में दाखिल है—

## आर्डर ३४

### नालिश बावत रेहन जायदाद गैरमन्कूला

१६-दमलहूजी शरायत मुन्दर्जा मजमूआहाजा के जरूरी है कि जुम्ला नम्बर ४ सन  
फरीक नालिश बावत अशख्वास जिनको कफालत रेहन या हक इन्फिकाक १८८२ ई०  
वैवात व नीलाम व रेहन से तमल्लुकहो हर नालिश में फरीक कियेजायें  
इन्फिकाक रेहनके जो रेहनके बावत रुजूअ कीजाये—

तथरीह-मुर्तहिन मावाद को इस्तिथार होगा कि मुर्तहिन मुकदमा दफा ८५  
को बगैर करने फरीक नालिश के वैवात या नीलाम की  
बावत नालिश रुजूअ करै और जरूर नहीं कि मुर्तहिन मुक  
दम नालिश इन्फिकाक रेहन मावाद में फरीक कियाजाये—

२-जिस नालिशमें वैवात का दावा हो अगर मुद्ई कामयाब होजाये ऐजन  
दफा ८६  
डिगरी इस्तिदाई ना- तो अदालत डिगरी सादिर करैगी—  
लिश वैवात में

( अलिफ ) और हुक्म देगी कि उस तारीखतक जो जैलमें मजकूर है  
मुद्ई को रेहन की रु से बावत असल व सूद और खर्चा  
मुकदमा के ( अगर कुछहो ) उसको दिखाया गयाहो जिस  
कदर पाना है उसका हिसाब लियाजाये—या—

( बे ) जो रकम हस्व मजकूरै वाला, तारीख डिगरीतक वाजिबुल्  
अदाहो उसको जाहिर करेगी और हिदायत करैगी—

( जीम ) कि अगर मुद्आअलेह रकम मजकूर याप्तनी मुद्ई को  
उस रोजपर जोकि अदालतसे मुर्करस हो और जो तारीख  
जाहिर करने रकम वाजिबुल्अदा मजकूरै वाला से छः  
महीने के अन्दर हो अदालत में जमा करदे तो मुद्ई को  
लाजिम है कि जुम्ला दस्तावेजात मुतअल्लिकः जायदाद  
मरहूना जो उसके कब्जा या इस्तिथारमें हों मुद्आअलेह  
को या उस शख्स को जो उसकी तरफ से मुर्कर हो

हवाले करै और अगर ऐसी जरूरत हो तो जायदाद मर-  
हूना को वरी उस रेहन और उन तमाम मवाजखाजात  
से जो मुद्ई ने या किसी और शख्सने जो उसकी तरफ  
से दावेदारहो उस पर कायम कियेहों या अगर मुद्ई और  
लोगों के जरिये से दावेदारहो तो वरी उन मतालियाजात  
से जो उन लोगों ने उस पर कायम किये हों मुद्-  
आअलेह के नाम द्वारा मुन्तकिल करदे और नीज अगर  
जरूरत हो मुद्आअलेह को जायदाद पर कायम  
करादे—इला—

( दाल ) अगर मुवज़िह मज़कूर रोज़ मुक़ररः अदालत पर या इस  
के कबल अदा न कियाजाये तो मुद्आअलेह जायदाद  
मजकूर के तमाम हक़ फ़क़ुल् रेहन से मुमतिनाअ हो  
जायेगा—

३-( ? ) अगर जर याफ़तनी मजकूर ख़ल्सदर करार याफ़त मय सर्चा  
डिगरी अज़ीर ना- मावाद जिसका जिक्र कायदा १० में हुआ है मुद्आअ-  
लेह रोज़ मुक़ररः पर या उसके कबल अदालत में जमा  
करदे तो अदालत डिगरी सादिर करेगी—

( अलिफ ) और हुक्म देगी कि मुद्ई दस्तावेजात को हवाले करदे  
जिनका हवाला करना उसपर वमूजिव शायत डिगरी  
इन्तिदाई के फर्ज है और अगर ऐसी जरूरत हो तो—

( बे ) हुक्म देगी कि मुद्ई हस्व हिदायत मुन्दर्जे डिगरी मजकूर  
जायदाद मरहूना को दुवारह मुन्तकिल करदे और नीज  
( अगर जरूरी हो )—

( जीम ) हुक्म देगी कि मुद्ई मुद्आअलेह को जायदाद पर का-  
यम करारदे—

( २ ) अगर जर याफ़तनी मजकूर हस्व मजकूर वाला यदा न किया  
जाये तो मुद्ईकी दरख्वास्त पर अदालत एक डिगरी अज़ीर  
मशमूर उसके सादिर करेगी कि मुद्आअलेह और वह तमाम  
लोग जो मुद्आअलेह के जरिये से या उसकी गानदती में  
दावेदार हैं जायदाद मरहूना के तमाम हक़ फ़क़ुल् रेहन से

मुमतिनाअ हो जायेगे और नीज ( अगर जरूरत हो ) यह हुक्म देगी कि मुद्आअलेह मुद्ई को जायदाद पर क़ाबिज करादे—

पर शर्त यह है कि इन्दुल् इजहार बजह काफी और बपावन्दी उन मीयादके बटा देने का शरायत के ( अगर कुछ हो ) जो अदालत मुनासिब इस्तिथार समझे अदालत मजाज होगी कि वक्तून् फवक्तून् अदा मजकूर की तारीख मुक़रर को मुलतवी करती रहे—

( ३ ) जब डिगरी क़ायदा तइती ( २ ) के मुताबिक सादिरहो तो बेवाक़ी कर्ज़ा । यह समझा जायेगा कि वह कर्ज़ा जिसके लिये जायदाद मरहून हुई थी बेवाक़ हो गया—

४-( १ ) अगर नालिश वास्ते नीलामकेहो और मुद्ई कामयाब हो- डिगरी इन्विदाई नालिश नीलाम में जाये तो अदालतको लाजिम है कि डिगरी मुतज़म्मिन उस हुक्मके सादिरकरै जो क़ायदा २ के फ़िक्क़रात ( अलिफ ) और ( बे ) और ( जीम ) में मुन्दर्ज है और उसमें यह भी हुक्मदे कि दरसूरत न अदा होने जरयाफ़तनी हस्ब मुन्दर्जा क़ायदा मजकूर भिनजानिय मुद्आअलेहके जायदाद मरहूना या उसका जुज व वक्तदर काफी नीलाम किया जाये और जरसम्मन नीलाम ( बाटवज़ा करने इख़राजात नीलामके जरसम्मन मजकूर से ) अदालतमें जमा किया जाये और अदा उस रक़म में जो याफ़तनी मुद्ई करार पाईहो गये सूद दो खर्चा माबादके सर्फ़ किया जाय और जो बाकीरहै ( अगर कुछ हो ) वह मुद्आअलेहको या और लोगों को दिया जाये जो उसके पाने के मुस्तहक़हों—

( २ ) अगर नालिश वास्ते वैवातकेहो और मुद्ई कामयाबहो और इस्तिथार निम्न सादिर करने डिगरी मुतज़म्मिन नीलामके नालिश वैवातमें उसमें रेहन किस्म वैविल्वफ़ा से न हो तो अदालतको इस्तिथार है कि वरक्त दरख्वास्त मुद्ई या किसी और शख्सके जिसको जरूरतन या हक़ इन्फ़िक्ताक़ रेहन से तअल्लुकहो उसी किस्मकी डिगरी ( बजाय डिगरी वैवातके ) वइन्दराज उन शरायतके जो मुनासिब मालूमहों सादिरकरै जिसमें यह शर्त भी शामिल होसकती है कि शख्स मजकूर एक तादाद माकूल जो अदालत मुक़रर करदे और जो वास्ते अदाय इख़राजात नीलाम और मसारिफ़ तामील शरायत डिगरीके काफीहो अदालतमें दाख़िन्नकरै—



पर ४ सन्  
= २ ई०  
नं० ८६

५-( १ ) रोज़ मुकररः पर या उसके कबल अगर मुद्दामालेह जा  
डिगरी अखीर नालिश याफ्तनी- मजकूरुलमदर करारयाफ्तः मय सर्वा मा-  
नीलाम मे बाद जो कायदा १० में मजकूर है अदालत में जमा  
करदे तो अदालत डिगरी सादिर करेगी-

( अलिफ ) और हुक्मदेगी कि मुद्ई दस्तावेजातको हवाले करदे जिन  
का हवाला करना उसपर बमोजिव शरायत डिगरी इति-  
दाईके फर्ज है और ( अगर ऐसी जरूरत हो )-

( बे ) हुक्मदेगी कि मुद्ई हस्य हिदायत मुन्दर्जे डिगरी मजकूर  
जायदाद मरहूनाको दुबारा मुन्तकिल करदे और नीज  
( अगर जरूरी हो )-

( जीम ) हुक्मदेगी कि मुद्ई मुद्दामालेहको जायदादपर काबिज  
करादे-

( २ ) अगर जर बामोजिव हस्य मजकूर वाला अदा न कियाजाये तो  
मुद्ईके इस बातकी दरख्वास्त गुजरानेपर अदालत एक डि-  
गरी इस मजमूनकी सादिर करेगी कि जायदाद मरहूना या  
जुद्ध उसकी बकदर काफी नीलाम कियाजाये और उसके जर  
सम्पनकी निश्चयत वैसाही अमल कियाजाये जैसा कि कायदा  
४ में मजकूर है-

६-जब ऐसे नीलामकी खालिस जर सम्पन उस तादादकी अदाके  
ममूल बाकी तरयान्तनी लिये काफी न हो जो मुद्ईको बाजियुल अदाहो तो जिम  
रेहगना कंदर बाकीरहै अगर वह बाकी मुद्दामालेह से और  
तरहार सिवाय जायदाद नीलाम जुद्ध के कानूनन बसूल होसकतीहो तो  
जायज है कि अदालत उस जर बाकी बावत डिगरी सादिरकरे-

७-इनफिक्ताक रेह्नकी नालिश में अगर मुद्ई कामयाबहो तो अदालत  
डिगरी इतिदाई इफि डिगरी सादिर करेगी-  
मजमूनकी नालिश-

( अलिफ ) और हुक्मदेगी कि हिमाय उस मुवलिगता जो बावत अ-  
सल जररेह्न न सूद व सर्वा मुकदमा ( अगर जुद्ध ) उस  
को दिलाया गयाहो उस रोजनक जिसका जिय धामन्द  
आताहै याफ्तनी मुद्दामालेहहो सुरजित दियाजाये-या

( वे ) जो रकम तारीख डिगरीतक हस्ब मजकूरै वाला वाजिबुल् अदाहो उसको जाहिर करैगी और हिदायत करेगी—

( जीम ) कि अगर मुद्दै रकम वाजिबुल् अदा मजकूरै वालाको उस तारीखपर जो अदालत से मुकर्ररहो और जो तारीख जाहिर करने रकम वाजिबुल् अदा मजकूरै वालासे छः महीने के अन्दरहो अदालत में जमा करदे तो मुद्दाअल्लेह को लाजिम होगा कि जुम्ला दस्तावेजात मुतअल्लिकै जायदाद मरहूना जो उसके कब्जा या इस्तिथारमेंहो मुद्दै को या उस शख्सको जो उसकी तरफ से मुकर्ररहो हवालेकरै और अगर ऐसी जरूरतहो तो जायदाद मरहूनाको बरी उस रेहन और उन तमाम मवालिजाजात से जो मुद्दाअल्लेह या किसी और शख्सने जो उसकी तरफदार से दावेदारहो उस पर कायम कियेहो या अगर मुद्दाअल्लेह और लोगोंके जरिये से दावेदारहो तो बरी उन मतालिजाजात से जो उन लोगों ने उसपर कायम कियेहो मुद्दैके नाम द्वारा मुन्तकिल करदे और अगर जरूरतहो मुद्दै को जायदाद मरहूनापर काबिज करादे—लेकिन

( दाल ) अगर मुबल्लिग मजकूर रोज मुकर्रर अदालतपर या उसके कब्ज अदा न कियाजाये तो मुद्दै जायदाद मजकूरके तमाम हकूक फकुल् रेहनसे मुमतिनाअ होजायेगा ( इला उस सूरतमें कि रेहनसादा या अजकिस्म भोगबन्धकके रहाहो ) या यह कि जायदाद मरहूनाका नीलाम कियाजाये ( वजुज उस सूरतके कि रेहन अजकिस्म वैविलवफा हो )

८-( ? ) अगर मुद्दै तारीख मुकर्रर पर या उसके कब्ज जर या नगर ४ मव डिगरी अखिर नालिश फतनी मजकूर करारयाफता मय खर्चा मावाद जिसका इन्फिकाक रेहनमें जिक्र कायदा १० मेंहो अदालत में जमा करदे तो अदालत डिगरी सादिर करेगी—

( अल्लिक ) और हुक्मदेगी कि मुद्दाअल्लेह दस्तावेजातको हवाले करदे जिनका हवाला करना उसपर बग़जिव शरायन डिगरी इन्तिदाईके फर्जहै और ( अगर ऐसी जरूरतहो )

( वे ) हुक्मदेगी कि मुद्दाअलेह हस्व हिदायत मुन्दर्जा डिगरी मजकूर जायदाद मईनाको दुबारा मुन्तकिल करदे और नीज ( अगर जरूरतहो )

( जीम ) हुक्मदेगी कि मुद्दको जायदादपर काबिज करादे—

( २ ) अगर अदाय मजकूर हस्व मजकूर वाला न कियाजाये और रेहनसादा या भोगबन्धक न हो तो अदालतको लाजिम है कि मुद्दाअलेहके इस बारे में दरख्वास्त गुजरानेपर एक डिगरी सादिरकरै कि मुद्द और तमाम अशवास जो उसके जरिये से या उसकी मातहत में दावेदारहों कि तमाम हकूक इन्फिफाक रेहनसे मुमतिनअ होजायेंगे और नीज ( अगर जरूरतहो ) यह हुक्मदे कि मुद्द मुद्दाअलेहको जायदादपर काबिज करादे—

( ३ ) जब वमूजिव कायदा तहत ( २ ) के डिगरी सादिरहो तो यह समझा जायेगा कि वह कर्जा जिसके लिये जायदाद मईनहु थी बेबाक होगया—

( ४ ) अगर अदाय मजकूर हस्व मजकूर वाला न कियाजाये और रेहन अज किस्म बैविलयफा न हो तो मुद्दाअलेहके इस बारे में दरख्वास्त गुजरानेपर अदालतको लाजिम है कि डिगरी सादिरकरै कि जायदाद मईना या उसका जुड़व काफी नीलाम करदियाजाये और जरसम्मान नीलाम ( दाद दजम करने के खराजातनीलाम के जरसम्मान से ) अदालत में दाखिल किया जाये और उस तादादकी बेबाकी में लगायेजाये जो मुद्दाअलेहकी याफ्तनी निकले और जो जर बाकीरहो ( अगर कुछहो ) वह मुद्दको या दीगर अशवासको जो उनके पानेके मुम्तकान देदियाजाये—

पर शर्त यहहै कि अदालत मजाज है कि इन्टुलडकार यजह मजकूर अशवासकातर बान और बपाइन्दी उन शरायतके ( अगर कुछहो ) जो मुन्तकिल करतीहो गिव मान्महो वक्तन फव्वदन उस दारीयको गुमारी करतीहो जो अदाके लिये मुकूरर हुईहो—

१- बावस्क किर्मा मजपून मुन्दर्जे कताअद मजपूने वाला से उदर

डिगरी अगर कुछ या-  
फतनी न निकले या  
रेहन से जायद रकम  
अदा होगई हो

हिसाब मुतजकिरः कायदा ७ मुरत्तिव क्रियेजाने पर  
मालूमहो कि मुद्आअलेह को कुछ पाना नहीं है या  
उसको जायद रकम दीगई तो अदालत को लाजिम  
होगा कि डिगरी इस हुक्म के साथ सादिर करे कि  
( अगर जरूरत हो ) मुद्आअलेह जायदाद को दुवारा मुन्तकिल करदे  
और मुद्ई को वह मुवलिग अदा करदे जो उसकी याफतनी निकले और  
( अगर जरूरत हो ) मुद्ई जायदाद मरहूना पर कारिज करा दिया  
जायेगा—

१०—वरवक्त तस्फिया अखीर-उस तादादके जो दरसूरत अमल में नम्बर ८ एन  
खर्चा मुर्तहन मावाद डिगरी आये बैवात या नीलाम या इन्फिकाक रेहन मुर्तहनको १८८२ ई०  
और होनी चाहिये अदालत को लाजिम है कि अगर दफा २४  
मुर्तहन से कोई ऐसा फेल न हुआहो जिसके बायस उसको, खर्चा से  
महरूम रखना लाजिम आये जर रेहन के साथ उस कदर खर्चा मुक्तदमा  
शामिलकरै जो वतरीक वाजिव तारीख डिगरी बैवात या नीलाम इन्फि-  
काक रेहन से अदाय वाकई की तारीख तक मुर्तहन के जिम्मे आयद  
हुआ हो—

११—अगर जायदाद मुतवातिर मुर्तहनों के हाथ मुतवातिर कर्जों जर्दी  
इस्तइकाक मुर्तहन बावत रेहन कीजाये तो किसी दरमियानी मुर्तहन  
दरमियानी निस्वत को इस्तिथार होगा कि नालिश बावत फकुन्नेरेहन हकूक  
फाकूल् रेहन और मुर्तहनान मुक्तदम और बैवात हकूक उन अशखास के  
बैवात रनुअ करे जिनके हकूक खुद उसके और राहिन के  
हकूक के मावाद के हों—

१२—अगर कोई जायदाद जिसके नीलाम के लिये इस आर्डर के नम्बर ८ म  
नीलाम जायदाद व मुताविकहुक्म दियाजायजेर मवाखिजारहै म'कवल के १८८२ ई०  
हिफज रेहन माकवल हो तो अदालत को इस्तिथार है कि मुर्तहन माकवल दफा २६  
की मंजूरी से जायदाद के बिला मवाखिजा रेहन नीलाम होनेका हुक्म  
दे और मुर्तहन माकवल को दरसम्पन नीलाम में बंदी तक दिलाये जो  
उसको जायदाद नीलाम शुदः में हासिल था—

१३—जर सम्पन अदालत में जमा होकर हम्य मुफगिनलै कल गफ' २२  
मसर्फ जर नीलाम कियाजायेगा:-

अव्वलन्—उन तमाम इखराजात के अदा करने में जो नीलाम से मुतअल्लिक या किसी नीलाम मकसूदा की कार्रवाई में वतार जायज आयद हुयेहैं—

सानियन्—उस रुपया के अदा करने में जो रेहन माकबल की वावत मुर्तहन माकबल को वाजिबुल् वसूलहो और नीज उस खर्चाके जो ब-तरीक जायज उसके मुतअल्लिक आयद हुआहो—

सालिसन्—उस जर रेहन के कुल सूदके अदा करने में जिसके वसूल के लिये नीलाम का हुक्म हुआहो और उस मुकदमा के खर्चा की वेवाक़ी में जिसमें डिगरी मशअर हिदायत नीलाम तादिर हुईथी—

राजअन्—रेहन मजकूर की वावत जिस कदर जर असल वाजिबुल् वसूल हो उसके अदा करने में—और

विन् आखिर—जर वाक़ीमांदा ( अगर कुद्वहो ) उस शख्स को दिया जायेगा जो जायदाद नीलामिशुद्ध में अपना इस्तदकाक रखना साबित करै—

या अगर ऐमे अशखाम एक से ज्यादाहों तो वह वाक़ी उन लोगों को बलिहाज उन के हक़ मुस्तलफ़ के या बाद लेने उनकी रसीद मुश्तर्क के दीजायेगी—

अगर ४ सन्  
१८८२ ई०

( २ ) कोई इन्वारन कायदा हाजा या कायदा १२ की मुख्तल उन इन्तियारात की न समझी जायेगी जो अजरुय दफा १७ ऐक्ट इन्तिकाल जायदाद सन् १८८२ ई० अताहुये हैं—

१४—( १ ) जिस सूरत में मुर्तहन बर्दकाय उस दावाके जो रेहन में जायदाद मगदना के पैदा होताहो डिगरी अदाय जर नक़द हासिल करै नीलाम कराने के मुर्तहन मुस्तदक नीलाम कराने जायदाद मगदना का वास्त नाश नीलाम जल्दी है न होगा वजुज इसके कि रेहन मजकूर के निफाज में नालिश नीलाम दायर करै और मुर्तहन को इन्तियार है कि वावस्फ किसी अन्न मुन्द में आडिरे ( २ ) कायदा ( २ ) के नालिश मजकूर दायर करै—

( २ ) कोई अन्न मुन्द में कायदा तहनी ( २ ) उन इलाके जान में मुतअल्लिक न होगा जिनमें ऐक्ट कानून इन्तिकाल जायदाद सन् १८८२ ई० की तामीन नहीं हुईहै—

१५-तमाम शरायत जो इस आर्डर में निस्वत नीलाम या फकुल् नम्बर ४  
मराफिजाजात रहेन जायदाद मरहूना के दर्ज हैं जहातक मुमकिन हो १८८२ ई  
उस जायदादसे मुतमल्लिक होंगे जिसपर हस्व मन्शाय दफा १०० ऐक्ट  
इन्तिकाल जायदाद सन् १८८२ ई० कोई वारहो-

## आर्डर ३५

### इन्टर पिलीडर यानी नालिश वमुराद तस्फिया वैनुल् मुतनाज्जईन

१-अमीनकी ऐसी हर नालिश में जो वमुराद तस्फिया वैनुल् मुतना दफा ४७१  
अर्जीदावा नालिश व जईनहो जरूर है कि अर्जीदावा में सिवाय टीगर बया-  
मुराद तस्फिया वैनुल् नातके जोकि अरायेज दावाके वास्ते जरूरी हैं यह मरा-  
मुतनाज्जईन में तिव भी दर्ज कियेजायें -

( अलिफ ) यह कि मुद्दईको कुछ गांज शै मुतदावियामें वजुज मता-  
लिवा या खर्चाके नहीं है -

( वे ) दआवी जो मुद्दआअलेहु जुदागाना रखतेहों और

( जीम ) यह कि दरमियान मुद्दई और किसी मुद्दआअलेहके साजिश  
नहीं है -

२-जब कि शै मुतदाविया अदालत में अदा कियेजाने या अदालत दफा ४७२  
शै मुतदावियाका अ- की तहवील में रक्ते जाने के काविलहो तो जायज है  
दालतकी तहवील में कि हुक्मदे कि मुद्दई कबल अजां कि उसको नालिश  
रक्खाजाना में किसी हुक्मके मिलनेका इस्तेहकाक हासिलहो शै  
मजकूरको अदालत में अदा करदे या तहवेल में रखदे-

३-अगर किसी नालिश तस्फिया वैनुल् मुतनाज्जईनमें मिन्जुम्ला मु- दफा ४७३  
कारवाई अगर मुद्दआ- इम्माअलेहुम्के किसीने वावत शै मुतनाज्जिआ मुकद्दमा  
अलेह मुद्दईपर नालिश के मुद्दईपर फिल्वाकै कोई नालिशकीहो तो जिस अ-  
दालत में कि वह नालिश वनाम मुद्दई टायरहो उसे  
लाजिमहै कि जब उसको इन बातकी इत्तिला मिन्जानिव उस अदालत  
के दीजाय जिममें नालिश तस्फिया वैनुल्मुतनाज्जईन टायरहो कारवाई

मुकदमाकी वसुकाविले मुद्दई मजकूर मौकूफ रखै और उस मुकदमा मौ-  
कूफ शुदः में जो खर्चा उस मुद्दईका हुआ हो उसके वास्ते उसी मुकदमा  
मौकूफ शुदः में तदवीर कराये लेकिन जिस हालमें और ज़िमद्वन्द्व कि  
खर्चा

उस मुकदमा में खर्चाकी तदवीर न की गई हो तो वह  
खर्चा नालिश तस्फिया बैनुल मुतनाज्जिनके खर्चा जानिय मुद्दई मजकूर में  
वद लिया जाये—

प्रा ४७३

४-( १ ) बरवज़त समाअत अव्वलके अदालतको जायज है कि—  
करवाई व समाअत  
अव्वल

( अलिफ ) यह करार दे कि मुद्दई मुदआअलेहूके तमाम मवायिजा  
से निस्वत शै मुतदावियासे बरी है—

और उस खर्चा दिलवाये और मुकदमासे उसको मुबकदोश करे—या

( ये ) जिस हालमें कि वसुक्तिजाय इन्साफ या सहूलत जरूर हो  
तमाम अश्वास फरीक मुकदमाको ता असीर फैसला मुक-  
दमाके कायम रखै—

( २ ) अगर अदालत यह तजवीज़ करे कि बएतबार अकवाल फरी-  
कैन या और शहादतके ऐसा करना मुमकिन हो तो शै मुतदा-  
विया के इस्तहकाकका तस्फिया करदे—

( ३ ) अगर बएतबार अकवाल फरीकैन अदालत हस्ब मजकूर फै-  
सला न कर सके तो वह मजाज है कि यह हिदायत करे—

( अलिफ ) कि अन्न या अन्न तनकीह तलब मायैन फरीकैन गुरत्तिर  
होकर फैसल किये जायें—और

( ये ) यह कि कोई शख्स दावेदार बयवज या बशएल मुद्दई या-  
मल्लके मुद्दई बनाया जाय और अदालतको लाजिप है कि  
माहली तरीकापर मुकदमाकी तजवीज़में मसरूफो—

## तमसीलात

( अलिफ ) जैदने एक सन्दूक जेवरातका अपने एजन्ट उमरुके पास रक्खा वकरने बयानकिया कि जेवरात बतौर बेजा मुभसे जैदने लेलिये हैं और उमरुसे उनके दिला पानेका दावा किया उमरु वगुकाविले जैद और वकरके नालिश तस्फिया बैनुल् मुतनाजईन रुजूअ नहीं करसकताहै—

( बे ) जैदने एक सन्दूक जेवरातका अपने एजन्ट उमरुके पास रक्खा व दअजा उसने वकरको लिखा कि जौ कर्जा कि उरासे वकरको पानाथा उसकी जमानतमें जेवरात मजकूर मक्तफूलरहै जैदने बादअजा बयानकिया कि वकर का कर्जा अदा होगया और वकरका बयान इसके खिलाफहै अब दोनों उमरुसे जेवरातके लेनेका दावा करते हैं जायज है कि उमरु नालिश तस्फिया बैनुल् मुतनाजईन जैद और वकरके नाम रुजूअकरै—

६-अगर नालिश बतौर मुनासिब रुजूअ कीजायै तो अदालत वास्ते दफा ४७

मुद्देके खर्चाका मवा-  
जिजा

खर्चा मुद्दे असलके यह तदवीर करेगी कि उसका शे  
मुतदाबियापर मवाखिजा कायम करेगी या कोई और  
तदवीर मवस्सर करदेगी —

## आर्डर ३६

### सूरत ख़ास

१-( १ ) जिन अशख़ास को किसी अम्र वाकिआ या कानूनी के दफा ४७

इस्तिथार निस्वत पेश  
करने कोई अम्र बतौर  
मुकदमा वास्ते राय  
अदालत के

इन्किसालमें गरज रखने का दावाहो वह मजाज होंगे  
कि वाहम इकरारनामा तहरीरी करके उसमें अम्र म-  
जकूर को बतौर एक मुकदमा के वास्ते राय अदालत  
के लिखें और यह शर्त करै कि जब तजवीज अदालत

निस्वत उस अम्र के सादिर हो तो—

( अलिफ ) वह नाटाट जज जो वाहम परीकैन मुकर्ग को या दिये



अदालत तजवीज करदे उनमें एक फरीक दूसरे फरीक को अदाकरेगा—या

( वे ) एक फरीक दूसरे फरीक को कुछ जायदाद मन्कूला या और मन्कूला मुसरहे इकरारनामा हवाले करेगा—या

( जीम ) भिन् हुमला फरीकैन के एक या कई अश्त्वास किसी खास अत्र मुक्तसिले इकरारनामा की तामील करेगे या उसके करने से वाज रहेंगे—

( २ ) हर मुक्तदमा जो दगूजिव इस कवायद ५ के कलमबन्द किया जाये चंद दफ्तात पर मुनकसिम होगा जिनपर नम्बर मुसलसल् लिखत किया जायेगा और उसमें मुल्लसिर कैफियत ऐसे बाकियात और तजरीह ऐसी दस्तावेज की लिखी जायेगी जो बास्ते इस अत्र के जरूरी हों कि अदालत उस बहस को जो उन से पैदा होती है तै करसके—

११ ५ =

२—अगर इकरारनामा बायत हवालगी किसी जायदाद के हो या अगर मालियत शै बायत करने या वाज रखने के किसी फेल खास से मन्कूलगी की दर्ज हो तो इस इकरारनामा में मालियत तरामीनी उस जायदाद की जिसके हवाले करने का इकगार है या जिससे वह फेल मुन्दर्जे इकरारनामा मुतअल्लिक हो दर्ज की जायेगी—

११ ५ = १

३—( १ ) इकरारनामा बर्न कि वह मुताविक कवायद मुन्दर्जे सदर इकरारनामा मालियत के मुरत्तिब हुन्दाहो किमी ऐसी अदालत में दाखिल होसक्ता है जिसको इस्त्रियार समाअन उसी तादाद या मालियत की शै मुदाविदा के मुक्तदमा का हासिल हो जो तादाद या मालियत शै मुन्दर्जे इकरार-

४-वाद अदखाल इकरारनामा के नवीसिद्दान इकरारनामा तहत दफा ५४ फरीकैन तहत इक्ति-  
 यार अदालतहोंगे | इस्तिथार अदालत के होंगे और उनपर पावन्दी वया-  
 नात मुन्दजै इकरारनामा की लाजिम होगी-

५-( १ ) ऐसा मुकदमा समाप्त के वास्ते मुस्लि मुकदमा मामूली दफा ५४  
 समाप्त और इक्ति-  
 साल मुकदमा | दाखिल होगा और इस मजमूआ के अहकाम जहां तक  
 वे मुतअल्लिक होसकें मुकदमा मजकूर से मुतअ-  
 ल्लिक होंगे—

( २ ) अगर वाद जवानवन्दी फरीकैन या वाद लेने शहादत मुना-  
 सिबके अदालतको इतमीनानहो कि—

( अलिफ ) इकरारनामा मजकूरकी तकमील उन्होंने हस्व जाव्ताकी है-  
 और

( बे ) यह कि अजराह नेकनीयती गरज उन फरीकैनकी निजाअ  
 मुन्दजै इकरारनामासे मुतअल्लिकहै—और

( जीम ) यह कि निजाअ काबिल तजवीजके है—

तो अदालत ऐसे अम्रमें उसी तरह फैसला सादिर करेगी जैसे मा-  
 मूली मुकदमों में करती है और जो फैसला हस्व मजकूरवाला सादिरहो  
 उसके मुताबिक डिगरी सादिर होगी—

## आर्डर ३७

जाव्ता सरसरी निस्वत दस्तावेजात काबिल

खरीद व फरोख्त

१-आर्डर हाजा सिर्फ अदालत हाय मुफस्सिल जैलसे मुतअल्लिकहै:—  
 तअल्लुक आर्डर हाजा।

( अलिफ ) अदालत हाय हाईकोर्ट मुकाम फोर्ट बलियम और मदगम  
 और वन्वई—

( बे ) अदालत चीफकोर्ट व दरबला—

( जीम ) अदालत जुडीशन कमिशनर सिन्ध-और

( दाल ) दीगर अदालतों से जिनसे दफा ५३२ लगायत ५३७  
 मजमूआ जाव्ता दीवानी सन् १८८२ ई० मुतअल्लिक की  
 गई है—

४ मन  
२ ई०  
३६

२-( १ ) जुम्ला नालिशात वरविनाय विल्थाफ एक्स चेंज या हु-

इजाजत नालिशात सर-  
सरी वरविनाय विल-  
थाफ एक्स चेंज वगैरह

एडी या परामेसरी नोट जिनमें मुद्दे इस आर्डरके वम्-  
जिव कार्ड होना चाहता है इसतरह दायर कीजास-  
की है कि अर्जीदावा नमूना मुकर्रराके मुताबिक दाखिल  
कियाजाये मगर सम्मन उस नमूनाके मुताबिक होना चाहिये जो इण्डि-  
क्स ( वे ) के नम्बर ४ में मुन्दर्ज है या किसी और नमूनाके मुताबिक  
जो वक्तव् फक्कतन् तजवीज कियाजाये-

( २ ) जिस मुकदमा में अर्जीदावा और सम्मन मुताबिक नमूनाजात  
मुतजिकरै वालाकेहों मुद्दाअलेहको हाजिर होने या जवाब-  
दिही करनेका इस्तहकाक न होगा तावकने कि वह इजाजत  
हाजिरी और जवाबदिही की हस्व मुतजिकरै आयन्दा किसी  
जजसे हासिल न करे और अगर मुद्दाअलेह ऐसी इजाजत  
हासिल न करे या इजाजत लेकर उसके वम्जिव हाजिर और  
जवाबदिह न हो तो यह समझा जायगा कि उसने वयानात  
अर्जीदावा तसलीम करलिये और मुद्दे मुस्तकत होगा कि  
घाबत उस कदर मुवलिगके जो तादाद मुन्दर्ज सम्मन से  
ज्यादा न हो मथेसूद व शरह मुसरटे ( अगर कुद्दहो ) लगा-  
यत तारीख डिगरी और नीज उस कदर जर तर्चाके जो मुक-  
रर करदियाजाये-डिगरी हासिलकरै वहुज उस दूरनके कि  
मुद्दे उस तादाद मुकर्ररा से ज्यादाका टावेदारहो इस सूरत  
में जर खर्चा दतौर मामूनी मुतअवयन कियाजायगा और जा  
यजह कि ऐसी डिगरी फारन जारी कराईजाये-

( २ ) जायज है कि इजाजत मजकूर बिलापावन्दी शरायतके दीजाये या वपावन्दी शरायत निस्वत अदखाल जरके अदालत में य निस्वत अदखाल जमानत और तरतीब बतहरीर वाकियात तन- कीह तलबके या निस्वत दीगर अमूरके जो अदालतको मुना- सिब मालूमहों—

४—अदालतको इस्लियार है कि बाद सदूर डिगरीके डिगरीको सूरत दफा ५३४

इस्लियार निस्वत मुस्तर्द हायखास में मुस्तर्द करदे और अगर जरूरतहो उसके करने डिगरीके इजराको मुलतबी रखवे या खारिजकरे—और अगर अ- दालतकी दानिस्तमें ऐसा करना माकूलहो तो मुद्आअलेहको इजाजत पास्ते अहजार वमजिव हुक्म सम्मन और करने जवाबदिही मुकद्दमाके व पावन्दी ऐसी शरायतके अताकरे जो अदालतको मुनासिब मालूमहों—

५—हर कार्रवाई मःफूमै आर्डर हाजामें अदालतको ऐसा हुक्म सादिर दफा ५३५

इस्लियार निस्वत हुक्म करना जायज होगा कि बिल्याफ एक्स चेंज या हुण्डी छादिर करने के कि बि- या नोट जिसपर मुकद्दमा मुबनीहो फौरन् अदालतके लिआफ एक्स चेंज वगैरह अदालतके किसी अ- किसी अहलकारकी तहवीलमें रखवाजाये और नीज यह हुक्म सादिर करना जायज है कि जयतक मुद्ई मु- हलकारकी तहवील में कत्ता जाय कद्दमाके खर्चाकी बायत जमानत दाखिल न करै मुक- द्दमाकी तमाम कार्रवाई मुलतबी रखलीजाये—

६—काबिज हर बिल्याफ एक्स चेंज या परामेसरी नोटका जिसके दफा ५३६

वसूलयाबी उस खर्चा सकारने या अदा करने से इन्कार हुआहो बायते दिला- की जो किसी बिल्याफ पाने उन इस्तराजातके जो उसके न सकारे जाने या न एक्स चेंज या परामेसरी अदा कियेजाने को लिखा देने में या और तौरपर वच- नोटके मुतअलिक इस जह न सकारने या न अदा करनेके आयद हुयेहों उसी पत्र भी तहरीरमें आयद सवील से वसूल करसकेगा जिस सवील से तादाद हुआहो कि वह सकारा दिल् या नोट मजकूरकी आर्डर हाजाके मुतअलिक वह नहीं गया या अदा नहीं कियगया वसूल करसक्ताहै—

७—यद्स्तनाय उन शरायतके जो आर्डर हाजामें मुन्दर्ज हैं उन नालि दफा ५३७ कार्रवाई नालिशात | शात में जो इन आर्डरके मुताबिक रजुअ कीजायें वही कार्रवाई होगी जो उन नालिशात में होती है जोकि मामूली तरीकेपर टा- यर होताहै—

## आर्डर ३८

## गिरफ्तारी और कुर्की कबल फैसला

## गिरफ्तारी कबल फैसला

दफा ४७७

१-अगर मुकदमा की किसी नौबत में दर्शते कि वह मुकदमा अजब वह मृत जिसमें मुदआअलेह से हाजिरी की जमानत तलब हो जाती है

किसम मुकदमात मुतजकिरे फिकरह ( अलिफ ) लगायत ( दाल ) दफा १६ के न हो-अदालत को अज-खुय तहरीरी बयान हलफी या बतौर दीगर इस बात का इतमीनान होजाय कि-( अलिफ ) मुदआअलेह वइरादा मुद्ई को देर लगाने के या किसी हुक्मनामा अदालत की तामीलसे गुरेज करने के लिये या बग़ाज होने मजाहिमत या तबकुफ के किसी दिगरी के इजरा में जो आयन्दा उस पर सादिर हो-

( १ ) रुपोश होगया है या अदालत के इलाके की हद्द अरजी से चलागया है-या

( २ ) यह कि रुपोश होनेको या अदालत के इलाके की हद्द अरजी से चलेजाने को है-या

( ३ ) यह कि उसने अपने मालको या उसके किसी लुब्ब को मुन्न-किल करदिया है या अदालत के इलाके की हद्द अरजी से निकाल दिया है-या

( वे ) यह कि मुदआअलेह वृटिया इण्टिया में ऐसे जालान में चलेजानेको है जिस से बवजह मालूम यह गुमान म कुल होताहै कि मुद्ई को उस दिगरी के इजराय में जोकि मुदआअलेह पर उस मुकदमा में सादिर कीजाय मजाहिमत होगी या उसमें तबकुफ पड़ेगा या मजादिमत हो या तबकुफ पड़े—

तो अदालत मजाज होगी कि एक बारन्त उस मजाइन में सादिर करे कि मुदआअलेह गिरफ्तार होकर अदालत में हाजिर लायाजाये ताकि वह बजह इस बातकी जाहिर करे कि इसमें हाजिर आदिमीनगी न लाजाये—

मगर शर्त यह है कि मुद्आअलेह गिरफ्तार न किया जायेगा अगर ओहदेदार तामील कुनिन्दा वारन्ट को कोई रक्तम मुसर्रहे वारन्ट जो मुद्ई के दावेकी बेवाफी के लिये काफी हो अदा करदे-और रक्तम मजकूर अदालत में अमानतन् जमा रहेगी जबतक कि नालिश फ़ैसल न होजाये या अदालत कोई हुकम मजीद सादिर न करै-

२-( १ ) अगर मुद्आअलेह वजह काफी पेश न करसके तो अदा-दफा ४७६ जमानत \_\_\_\_\_ । तब को लाजिम होगा कि उसे इस अन्नका हुकम दे कि वह अदालत में जर नक्द या और जायदाद उस दावा के ईफाय के लायक जो उस पर किया गया है दाखिल करै या जाभिनी इस बात की दे कि वह किसी वक्त अय्याम दौरान मुक्तदमा में तारीखे ईफाय डिगरी के उसपर उस मुक्तदमा में सादिरहो इन्दुल् तलब हाजिर होगा या उस रक्तम की निस्वत जो मुद्आअलेह ने अजरूय इबारत शर्तिया कायदा अखीर मुलहका बाला अदा की हो ऐसा हुकम सादिर करै जो उसके नजदीक मुनासिबहो-

( २ ) मुद्आअलेह का हर हाजिर जामिन जिम्मेदार इस बातका होगा कि दरसूरत अदम हाजिरी उसके उस कदर रुपया दाखिल करै जिस कदर मुक्तदमा में मुद्आअलेह को अदा करने का हुकमहो-

३-( १ ) मुद्आअलेह के हाजिर जामिन को इत्तियार होगा कि दफा ४८० कार्रवाई जब हाजिर जामिन अपनी वरीडल् जिम्मगी के लिये दरख्वास्त दे जिस वक्त चाहे उस अदालत में जिसमें उसका जमानतनामा दाखिल हुआहो अपने वरीडल् जिम्मा होने की दरख्वास्त दे-

( २ ) जब ऐसी दरख्वास्त गुजरै तो अदालत को लाजिम होगा कि मुद्आअलेह के इहजार के लिये सम्मन या अगर मुनासिब समझै पहिलेही से वारन्ट गिरफ्तारी सादिर करै-

( ३ ) जब मुद्आअलेह सम्मन या वारन्ट के दमूजिव या अज खुद हाजिरहो अदालत यह हुकम सादिर करेगी कि जामिन जमानतसे वरीडल् जिम्मा कियाजाये और मुद्आअलेह से जमानत जदीद तलबहो-

का ८८

४-जो हुक्म वगूजिव कायदा २ या ३ के सादिर हों अगर उस की वजाआवरी में मुद्आअलेह कासिर रहै तो अदालत बजाज होगी कि मुद्आअलेह को ता इन्किसाल मुकद्दमा या अगर डिगरी खिलाफ मुद्आअलेह सदूर पाये तो इजराय डिगरी तक जेलखाना दीवानी में भेजदे—

मगर शर्त यह है कि इस कायदा के वगूजिव कोई शख्स किसी हाल में छः महीने से ज्यादा अर्से के लिये कैद न किया जायेगा और न छः हफ्ता से ज्यादा अर्से के लिये उस हाल में कि तादाद या मालियत शे मुतदाविया की पचास रुपया से ज्यादा न हो—

नीज शर्त यह है कि कोई शख्स इस कायदा के वगूजिव बाद इसके कि वह हुक्म की तामील करदे कैदमें रक्खा जायगा—

### कुर्की कबल फ़ैसला

इफा ४=२

५ ८=४

५-( ? ) अगर मुकद्दमा की किसी नौबत में अदालत को तहरीरी कित मूरत में मुद्आअलेह से जमाअन वारने पेश करने जायदाद के तलब हो गली है वयान हलपी से या बतौर टीगर इसबात का इतफीनान होजाय कि मुद्आअलेह दर्ज दालने या तयकुफ की नीयत से किसी डिगरी के इजराय में जो उस पर सादिर हो—

(अलिफ) अपनी कुल जायदाद या उसके किसी जुड़वको अनादिदा करने को है—या

( २ ) दरख्वास्त में तफसील जायदाद कुर्की तलब और कीमत तख-  
मीनी जायदाद मजमूरकी दर्ज कीजायेगी इत्ता उस सूरत में  
कि अदालत उसके खिलाफ हिदायत करे—

( ३ ) नीज अदालत उस हुक्ममें कुर्की शर्तिया कुल या जुज्व जाय-  
दाद मुसररहे दरख्वास्तकी हिदायत करसक्ती है—

६-( १ ) अगर मुद्आअलेह अन्दर भीयाद मुअय्यना अदालतके दफा ४५५

<p>कुर्की अगर वजह न दिहाई जाये या जमानत न दाखिल कीजाये</p>	<p>वजह न दाखिल करने जमानतकी जाहिर न करसके या जमानत मतलूबा दाखिल करने से कासिररहे तो अदालतको इख्तियार इसदर इस् हुक्मका हासिल है कि जायदाद मुसररहे दरख्वास्त या किसी कदर मिनजुरला उसके जो वास्ते ईफाय डिगरीके जो मुकदमा में सादिरहो काफी मुतसव्वरहो कुर्क कीजाये—</p>
--	---

( २ ) अगर मुद्आअलेह ऐसी वजह जाहिरकरै या जमानत मतलूबा  
दाखिलकरै और जायदाद मुसररहे दरख्वास्त या किसी कदर  
मिनजुरला उसके कुर्क हुईहो तो अदालतको लाजिम है कि  
हुक्म वरखास्तगी कुर्की या कोई और हुक्म जो उसके नज-  
दीक मुनासिदहो सादिरकरै—

७-बहुज इस सूरतके कि साफ तौरपर बनिहज दीगर हुक्महो कुर्की दफा ४५६  
तरीका कुर्क करने का उस तरह होगी जिसतरह बइलत इजराय डिगरीके जा-  
यदादकी कुर्कीके लिये हुक्म है—

<p>तहकीकातदावा निस्वत उस जायदादके जो क बल सदूर फैसला कुर्क हुईहो</p>	<p>कुर्कहो पेशहो तो तहकीकात ऐसे दावाकी वजूजिव उस कायदाके जो कबल अर्जा इस मजमूआमें बाबत तहकी- कात दआवी मुतअल्लिका जायदाद मकरूका बइलत इजराय डिगरी जरनक़दके मुकरररहे अमलमें आयेगी—</p>
--	---

८-जब हुक्म कुर्कीका कबल सदूर फैसला सादिरहो अदालतको ला दफा ४५७  
वरखास्तगी कुर्की जब जिमहै कि जब जमानत मतलूबा गये जमानत रचवा  
जमानत दाखिल की- कुर्की मिनजानिव मुद्आअलेह दाखिलहो या मुकदमा  
जाये या मुकदमा ता डिसमिस कियाजाये कुर्की वरखास्त करे—  
रिजहो

१०-कुर्की कबल फैसला उन हुक्मपर मजमूर न होगी जो कुर्कीने दफा ४५८



कुर्मी लख पैसता य-  
शजान जैर फाँकन  
मुहमाके हक की  
मिलि न होगी और न  
डिगरीदारको दरखान  
नीलाम देने मे बाज  
रखेगी

पहले उन अशवासकेहों जो फरीक मुक्तमा नहीं हैं  
और न मानच इस बातकी होगी कि कोई शख्स जिस  
को डिगरी वनाम मुदआअलेह हासिल हुई हो वल्लत  
इजरा उस डिगरीके उस जायदाद मकरकाको नीलाम  
करानेकी दरखास्तकरै—

अ. ३६०

११—जब जायदाद इस आर्डरके अहकामके वमूजिव जैर कुर्तीहो और  
जो जायदाद कल के- सिन्वाद डिगरी मुहईके हकमें सादिर कीजाये तो दर-  
खा कलें हुईहों फिर- खास्त इजराय डिगरी मजकूर में उस जायदाद को  
दुवारा कुर्त करनेकी इस्तदुआ करना जरूर न होगा—

अ. ३६१

१२—इस आर्डरके किसी मजमून से यह समझना चाहिये कि मुहई  
पैदावार जरायत कल उस पैदावार जरायतकी कुर्तीके लिये दरखास्त दे  
सकता है कि जो किनी शख्स जरायत पेशाके कजमें  
हो या कि अदालतको यह इस्तथार है कि पैदावार  
मजकूरकी कुर्ती या उसको हाजिर करनेका हकदे—

## आर्डर ३९

अहकाम इस्तिनाई चंदरोजह और अहकाम दरमियानी

अहकाम इस्तिनाई चंदरोजह

के लिये अपनी जायदाद हटा देने या इन्तिकाल करनेकी धमकी देता है या नीयत रखता है—

तो अदालत मजाज है कि हुकम इम्तिनाई चंदरोजह वास्ते बाज रहने मुद्आअलेहके उस फेतसे सादिरकरी या जायदादकी बरवादी या नुकसान या इन्तिकाल या नीलाम या हटा देने या अलाहिदगीके इस्तदाद और मौकूफ करने के लिये तावके कि मुकदमा फैसल न हो या कोई हुकम मजीद सादिर न हो जो हुकम मुनासिब समझै सादिरकरै—

२-( १ ) जिस मुकदमा में कि मुद्आअलेहको इरतिकाब अहद शि- दफा ४६३

हुकम इम्तिनाई निस्वत कनी या और मुजरत से बाज रखने की इस्तदुआहो दरबारै इरतिकाब या आम इससे कि उसमें दावा किसी कदर मआविजा जारी रखने इरतिकाब का हो या न हो उसमें जायज होगा कि मुद्ई किसी अहद शिकनी

यक़्त वाद शुरू होने नालिशके और फैसलाके क़बल या बाद अदालत में दरख्वास्त गुज़रानै कि हुकम-इम्तिनाई चंदरोजह मशअर इस मजमूनके सादिरहो कि मुद्आअलेह इरतिकाब अहद शिकनी या उस जररमे जिसका इस्तगासा है या इरतिकाब किसी अहद शिकनी या जरर उसी किस्म से जो उस मआहिदा से पैदाहो या उसी जायदाद या हकसे मुतअल्लिकहो बाज रक्खाजाये—

( २ ) अदालत इस बातकी मजाजहोगी कि हुकम इम्तिनाई मजकूर ऐसी शरायतके साथ सादिरकरै जो उसको इस बावमें कि हुकम इम्तिनाई किस मीयादतक होना चाहिये और हिसाब मुरत्तिब रक्खाजाये या जमानत दाखिल करलीजाये या दो बाव दीगर अमूर मुनासिब मुतसव्वरहों—

( ३ ) दरसूरत अदूल हुकमी या खिलाफवर्जी शरायत मजकूरके अदालत सादिरकुनिन्दा हुकम इम्तिनाई यह हुकम देसक्ती है कि शरअस कसूरवार अदूलहुकमी या खिलाफवर्जी मजकूरकी जायदाद कुर्क कीजाये और नीज यह हुकम देसक्ती है कि वह दीवानी जेलखाना में उस मीयादतक कैद कियाजाये जं छः महीने से ज्यादा न हो इला जव कि उस असे में अदालत उसकी रिहाईना हुकमदे—

( ४ ) कोई कुर्की जो इस कायदाकी बमोजिबहो एक सालमे ज्यादा

यव फरीक मुकद्मा  
पराजी मुद्दाबदाय  
नालिश पर कब्जा  
पावता है

मुकद्मा में मुतनाजिआफिया हो अगर वह शख्स जो  
अराजी या हकीयत मजकूर पर क़ादिल हो मालगु-  
जारी सर्कार अदा न करे या हकीयत के मालिक को  
लग न व.जिव न दे यानी जैसी हूरत हो और उस दरा-  
जी या हकीयत के नीलाम का उस सद्व से हुक्म होजाये तो जायज़ है कि  
कोई और फरीक मुकद्मा जो अराजी या हकीयत मजकूर में कुछ इस्त-  
हकाक रखने का दावेदार हो जर मालगुजारी या जर लगान जिस कदर  
नीलाम से पहले वाजिबुल अदा हो अदाकरके ( बख़्तल या बिला  
अदत्ताल ज़मानत यानी जैसा कि अदालत तजवीज़ करे ) फौरन प्र-  
राजी या हकीयत मजकूर पर कब्ज़ा दिलायाये—

और अदालत को इस्तिथार है कि अपनी डिगरी में तादाद क़दा  
शुद्धः मजकूर वाक्तीदार के जिम्मे डालें मयेसूद वमुजिव उस शरह के जो  
अदालत को मुनातिव मालूम हो या तस्फिया हिसाब के वक्त जिसके  
तस्फिये का हुक्म डिगरी में जो मुकद्मा में सादिर हो दर्ज हुआ हो रकम  
अदाशुद्धः हस्व मजकूर वाक्तीको मये उम कदर सूद के जो अदालत को  
दिलाना थंनू हो हिसाब में गुजरा दे—

( अलिफ ) कोई मोहतमिम किसी जायदादके लिये ख्वाह कबल या चाद डिगरी मुकर्ररकरै—

( बे ) किसी शख्सको कब्जा या हिरासत जायदाद मजकूर से बरतरफ करदे—

( जीम ) और जायदाद मजकूर को वास्ते कर्जा या हिरासत या इन्तिजामके मोहतमिम मजकूरके सिपुर्दकरै—और

( दाल ) उस मोहतमिमको वह तमाम इस्तिथारात दरवाब रुजुअ और जवाबदिही नालिशत और बगरज्दस्तयात्री और इन्तिजाम और हिरासत और कयाम और तरकी जायदाद और तहसील जर किराया या लगान और मुनाफा जायदाद और उसके सर्फ करने और किसी काममें लगाने के और दरवाब तहगीर दस्तावेजातके जो खुद मालिक को शामिलहों या उनमेंसे वह इस्तिथारात जो अदालतके नज्दीक मुनासिब मालूमहों अताकरै—

( २ ) इस जायदादी किसी इत्दारत से अदालतको यह इजाजत नहीं है जिस शख्सको कोई फरीक मुकद्दमा बिल्फेल जायदाद से अलाहिदा करनेका हक नहीं रखताहै उसे जायदादके कब्जे या हिरासत से अलाहिदा करदे—

२—अदालत आम् या लास हुक्मके जरिये से वह तादाद जर मुकर्रर दफा ५०३ हक्कुल खिदमत करसक्ती है जो मोहतमिमको बतौर हक्कुल खिदमत दीजायेगी—

३—हर मोहतमिमको जो इस तौरपर मुकर्रर कियाजाये लाजिमहै कि—दफा ५०३ खिदमत ]

( अलिफ ) ऐसी जमानत ( अगर कोईहो ) दाखिलकरे जो अदालत इस गरजके लिये मुनासिब समझै कि जायदादकी वावत उसको जो कुछ बसूलहो उसका हिसाब हस्व जाब्तादे—

( बे ) अपना हिसाब ऐसे औक्तातपर और मुवाफिक ऐसे नदूनों के मुरत्तिब करके दाखिलकरै जिस तरह अदालत हिदायत करै—

( जीम ) जो बाकी हिसाबकी रूसे वजिम्मे उसके वरामदहो हस्व  
हिदायत अदालत हवाले करदे—

( ढाल ) अगर कुछ नुक्सान जायदादको उसके कमूर विल्अमद या  
गफलत अशदसे पहुंचै उसका जिम्मेदारहै—

जदीद ४—

तामील जिम्मेदारी मो-  
हतमिम

अगर मोहतमिम

( अलिफ ) औकान्त मजकूरपर और नमूनाजात मजकूरके मुताबिक हस्व  
हिदायत अदालत अपना हिसाब पेश न करे—

( बे ) तादाद जर जो उसके जिम्मेहो हरयुल्हुक्म अदालत  
जमा न करै—या

( जीम ) कमूर विल्अमद या गफलत अशदसे जायदादको नुक्सान  
पहुंचाये—

तो अदालत उसकी जायदाद की कुर्की का हुक्म देसक्ती है और  
जायदाद मजकूर को नीलाम करसक्ती है और पुद्दासिल नीलाम से ता-  
दाद जिम्मेगी मोहतमिम या कोई और नुक्सान पूरा करसक्ती है जो उसके  
सबब से आयद हुआहो और अगर कुछ बाकी बचेगा वह मोहतमिम  
को देदेगी—

रका ५०४

५—अगर जायदाद मजकूर अगजी मालगुजार सर्कार या ऐसी छ-  
वब मालगुजार राजी हो जिसकी मालगुजारी मुन्तकिल कीगई हो या  
मोहतमिम मर्गर हो वयवज मन्नादिजा के छोड दीगई हो और अदालत  
सादा है \_\_\_\_\_ के नजदीक सादव कलवटर के इहतियाम में रहने से  
उन अशराम दा फायदा मुतवक्कर हो गिनको उसने ताल्लुकहो अदाल-  
तत मजाज होगी कि बरजामन्दी सादव कलवटर उसो जायदाद  
मजकूर का मोहतमिम मुर्गर करे—

मजमूना अपील-याद-  
दाश्त अपील के साथ  
क्या क्या दाखिल होगा

कियोजाये जिसपर अपीलांट या उसके वकील के  
दस्तखत सिब्त हों और अदालत या ओहदादार मुक-  
र्ररा अदालत के खूबखू गुजराना जाये और याददाश्त  
मजकूरके साथ नक़ल डिगरी जिसकी नाराजी से अपील हो और ( अगर  
अदालत अपील उससे दरगुज़र न करे ) तो नक़ल तजवीज़ की जिस-  
पर वह मुबनी हो दाखिल करनी होगी—

( २ ) उस याददाश्त में वजूहात नाराजी उस डिगरी की जिसकी  
मजमून याददाश्त | निस्वत अपील हो इवारत मुस्त्वसिर और दफावार  
बिला तहरीर किसी हुज्जत या हिकायत के लिखी जायेंगी और वजूहात  
मजकूर पर नस्वर सिलसिलावार सिब्त होगा—

२-अपीलांट को लाज़िम है कि सिवाय वइजाजत अदालत कोई ऐसी दफा ५४२  
वजूहात जो अपील | वजह नाराज़ीकी बयान न करे न किसी ऐसी वजह की  
में पेश कीजासकी है | ताईद में उसका बयान सभाअत किया जायेगा जो  
याददाश्त अपील में दर्ज न कीगई हो-मगर अदालत अपील अपील के  
फैसल करने में उन्हीं वजूह नाराजी की पाबन्द न होगी जो याददाश्त  
अपील में दर्ज कीजायें या जो इस कायदा की रू से अदालत की इजा-  
जत से पेशकीजायें—

नीज शर्त यह है कि अदालत अपील अपनी तजवीज़ किसी दूसरी  
वजह पर न कायम करेगी इल्ला उस हालमें कि उस फरीकको जिसके  
खिलाफ में फैसलाहो मौक्का काफी मुकदमाकी निस्वत उस वजहपर  
जनाव देनेका मिलचुकाहो—

३-( १ ) अगर याददाश्त अपील उस तौरपर जोकि कन्वल् अर्जी व-दफा ५४३  
याददाश्त अपील की | यान कियागयाहै मुरत्तिव न हो तो जायजहै कि वह ना  
नामजूरी या तरमीम | मंज़ूर कीजाये या अपीलांटको इसबास्ते वापस कीजाये  
कि उसकी तरमीम मीयाद मुअय्यना अदालतके अन्दरहो या उसीजगह  
और उसी वक्त उसकी तरमीम कीजाये—

( २ ) जब कि अदालत किसी याददाश्तको ना मंज़ूरकरै तो उसको  
वजूह नामंज़ूर की क़लमबन्द करनी होंगी—

( ३ ) जब कोई याददाश्त अपील तरमीम कीजाये तो जज या वह

ओहदादार जिसको जज उस कामके लिये मुकर्ररकरे इवारत तरमीमीपर अपने दस्तखत या मुस्वतसिर दस्तखत सिव्तकरैगा—

दफा ५४४

४— अगर किसी मुकदमा में एक से ज्यादा मुद्दै या मुद्दाअलेहों और डिगरी जिसका कि अपीलहो ऐसी वजहपर मुवनीहो जो तमाम मुद्इयान या तमाम मुद्दाअलेहुम् पर यकसां मवस्सरहो तो कोई शख्स मिनजुम्ला मुद्इयान या मुद्दाअलेहुम् के कुल डिगरी की निस्वत अपील करसक्ताहै और वरतवक्त उसके अदालत अपील मजाज होगी कि डिगरीको कुल मुद्इयान या मुद्दाअलेहुम् के हकमें यानी जैसी कि सूरतहो मन्सूर या मुवदलकरे—

### कार्रवाई व इजराय डिगरीका इलतुवा

५— ( १ ) कार्रवाई डिगरी या हुक्मकी जिसकी नाराजी से अपील दायर हुआहो अपीलकी वजहसे मुलतवी नहीं कीजायेगी वजुज उस कदरके जिसकी बाबत अदालत हुक्म दे और न इजरा किसी डिगरीका सिर्फ उस वजह से कि उसकी नाराजी से अपील दायरहुआ मुलतवी कियाजायेगा मगर अदालत अपील मजाज होगी कि दरमूग पाये जाने वजह काफ़ीके हुक्म मुलतवी करने इजराय डिगरी मजकूरका सादिरकरै—

- ( वे ) दरखास्त विलादिरङ्ग ना मुनासिवके गुजरी है—और  
( जीम ) सायलने वास्ते तामील करार बाकई उस डिगरी या हुक्म  
के जो विल्आखिर उसके जिम्मे बाजिबुल् तामील होसक्ता  
है जमानत दाखिल करदी है—

( ४ ) बावस्फ मजमून कायदा तहती ( ३ ) अदालत मजाज होगी  
कि दौरान समाजत दरखास्तमें हुक्म यकतर्फा वास्ते इलातुवा  
इजरा सादिरकरै—

६—( १ ) अगर कोई हुक्म वास्ते इजरा ऐसी डिगरीके सादिरहो रफा ५४  
जमानत वास्ते इजराय | जिसकी नाराजी से अपील दायरहो और अपीलान्ड  
डिगरी जेर अपीलके | वजह काफी जाहिरकरै तो अदालत सादिर कुनिन्दा  
डिगरी को लाजिम होगा कि बमुराद इतमीनान बापसी उस जायदादके  
जो सीगा इजराय डिगरी में लेलीजाये या लेलीगईहो या इतमीनान अ-  
दाय मालियत जायदाद मजकूरके और नीज वास्ते तामील करार बाकई  
डिगरी या हुक्म अदालत अपीलके जमानतले या अदालत अपील मजाज  
होगी कि वैसीही वजह से अदालत सादिर कुनिन्दा डिगरीको जमानत  
लेनेकी हिदायतकरै—

( २ ) जिस हालमें कि बइल्लत इजराय डिगरी हुक्म नीलाम जाय-  
दाद गैर मन्कूलाका होचुकाहो और बनाराजी उस डिगरीके  
अपील दायरहो तो ताफैसला अपील मदयून डिगरीकी दर-  
खास्त अदालत सादिर कुनिन्दा हुक्ममें गुजरनेपर नीलाम  
उन शरायतपर मुलतवी रहेगा जो दरबाव अदखाल जमानत  
या दीगर तौरपर अदालत सादिर कुनिन्दा डिगरीकी दानि-  
स्तमें मुनासिवहों—

७—ऐसी कोई जमानत जिसका जिक्र कवायद ५ व ६ में मुन्दर्ज है  
जमानत सर्कार या धो | जनाब सेक्रेटरी आफ इस्टेट बहादुर हिन्द इजलास कौं-  
हदेदार सर्कार से बाज | सिलसे या जब गवर्नमेन्टने जवाबदिही मुकदमा की  
सूरतों में तलब न की | अपने जिम्मेलीहो किसी ओहदेदार सर्कारसे जिमपर  
जायेगी | नालिश दरबिनाय किसी फेलके दायरहो जो उसकी  
खिदमत मन्सवीके अंजाम देने में बाकै होना जाहिर कियागयाहो तलब न  
कीजायेगी—



ओहदादार जिसको जज उस कामके लिये मुकर्ररकरे इजारा तरमीमीपर अपने दस्तखत या मुस्तसिर दस्तखत सिक्तकरेगा—

दका ५४४

४— अगर किसी मुकदमा में एक से ज्यादा मुद्दई या मुद्दाअलेहों नॉं शख्स भिन्जुम्ला और डिगरी जिसका कि अपीलहो ऐसी वजहपर मुवनीहो जो तमाम मुद्दयान या तमाम मुद्दाअलेहुम् पर यकसां मवस्तरहो तो कोई शख्स भिन्जुम्ला मुद्दयान या मुद्दाअलेहुम् के कुल डिगरी की निस्वत अपील करसक्ताहै और वरतवक्त उसके अदालत अपील मजाज होगी कि डिगरीको कुल मुद्दयान या मुद्दाअलेहुम् के हकमें यानी जैसी कि सूरतहो मन्सूख या मुवदलकरे—

### कार्रवाई व इजराय डिगरीका इलतुया

५— ( १ ) कार्रवाई डिगरी या हुक्मकी जिमकी नाराजी से अपील दायर हुआहो अपीलकी वजहसे मुलतवी नहीं कीजायेगी वजुज उस कदरके जिसकी वावन मदालत हुक्म दे और न इजरा किसी डिगरीका सिर्फ उन वजह मे कि उसकी नाराजी मे अपील दायरहुआ मुलतवी कियाजायेगा मगर अदालत अपील मजाज होगी कि दरसूरत पाये जाने वजह काफीके हुक्म मुलतवी करने इजराय डिगरी मजदूरका सादिक्करे—

- ( वे ) दरखास्त विलादिरङ्ग ना मुनासिबके गुजरी है—और  
( जीम ) सायलने वास्ते तामील करार वाकई उस डिगरी या हुकम के जो बिल्आखिर उसके जिम्मे वाजिबुल् तामील होसक्ता है जमानत दाखिल करदी है—

( ४ ) वावस्फ मजमून कायदा तहती ( ३ ) अदालत मजाज होगी कि दौरान समाअत दरखास्तमें हुकम यकतर्फा वास्ते इलतुदा इजरा सादिरकरै—

६—( १ ) अगर कोई हुकम वास्ते इजरा ऐसी डिगरीके सादिरहो दफा ५४६

जमानत वास्ते इजराय | जिसकी नाराजी से अपील दायरहो और अपीलान्ट  
डिगरी जेर अपीलके | वजह काफी जाहिरकरै तो अदालत सादिर कुनिन्दा  
डिगरी को लाजिम होगा कि वमुराद इतमीनान वापसी उस जायदादके  
जो सीगा इजराय डिगरी में लेलीजाये या लेलीगईहो या इतमीनान अ-  
दाय मालियत जायदाद मजकूरके और नीज वास्ते तामील करार वाकई  
डिगरी या हुकम अदालत अपीलके जमानतले या अदालत अपील मजाज  
होगी कि वैसीही वजह से अदालत सादिर कुनिन्दा डिगरीको जमानत  
लेनेकी हिदायतकरै—

( २ ) जिस हालमें कि बइल्लत इजराय डिगरी हुकम नीलाम-जाय-  
दाद गैर मन्कूलाका होचुकाहो और बनाराजी उस डिगरीके  
अपील दायरहो तो ताफैसला अपील मदयून डिगरीकी दर-  
खास्त अदालत सादिर कुनिन्दा हुकममें गुजरनेपर नीलाम  
उन शरायतपर मुलतवी रहेगा जो दरबाव अदखाल जमानत  
या दीगर तौरपर अदालत सादिर कुनिन्दा डिगरीकी दानि-  
स्तमें मुनासिबहों—

७—ऐसी कोई जमानत जिसका जिक्र क़ायद ५ व ६ में मुन्दर्ज है

जमानत सर्कार या ओ | जनाब सेक्रेटरी आफ इस्टेट वहादुर हिन्द इजलास कौं-  
हदेदार सर्कार से वाज | सिलसे या जब गवर्नमेन्टने जवाबदिही मुकदमा की  
सूरतों में तलब न की | अपने जिम्मेलीहों किसी ओहदेदार सर्कारसे जिमपर  
जायेगी | नालिश बरबिनाय किसी फेलके दायरहो जो उसकी  
खिदमत मन्सरीके अंजाम देने में वाकई होना जाहिर कियागयाहो तब न  
कीजायेगी—

जदीद

८—इस्लियारात मुन्दर्जा कवायद ५ व ६ लायक निफाज्रहें अगर अपील  
इज्जत डिगरीजो जर्त वनाराजी डिगरीके नहीं मगर बनाराजी उस हुक्मके  
वाईजे हुक्मके प्रपीलमें दायर हो या दायर हो चुका हो जो डिगरी मजकूरके इज-  
इस्लियारातका निफाज राय में सादिर किया गया हो—

### कार्रवाई वरसंजूरी अपील

दफा ५४८

६—( १ ) अगर याददाश्त अपील दाखिल होकर मंजूर होजाये तो  
याददाश्त अपीलना अदालत अपील या ओहदेदार मजाज उस अदालत  
दर्ज रजिस्टर होना का तारीख दाखिला उसकी जोहरपर सिवत करेगा  
और अपील मजकूरको किताब रजिस्टर में जो इस अम्रके वास्ते मुश्तिव  
रहेगी दाखिल करेगा—

( २ ) किताब मजकूर रजिस्टर अपील कहलायेगी—

रजिस्टर अपील

उस अदालत में जिसकी डिगरी से अपील किया गया है और वगैर जारी करने इत्तिलानामा वनाम रस्पांडन्ट या उसके वकीलके अपील खारिज करदे—

( २ ) अगर तारीख मुकर्रर या किसी और तारीखार जिसपर समा-अत मुल्तवी की गई हो अपीलान्त उस वक्त जब कि अपील समाअतके वास्ते पुकारा जाये हाजिर न हो तो अदालत को इत्तियार है कि अपीलके खारिज करनेका हुक्म दे—

( ३ ) इस कायदाके वमूजिब अपील खारिज-कियेजाने की इत्तिला उस अदालतको भेजी जायेगी जिसकी डिगरी की नाराजीसे अपील हुआ हो—

१२— ( १ ) अदालत अपील वजुज उस सूरत के कि हस्व कायदा दफा ५५१ तारीख वास्ते समाअत अपील के ११—अपील खारिज किया जाय वास्ते समाअत अपील के एक तारीख मुकर्रर करेगी—

( २ ) वह तारीख बलिहाज काररोजमर्ः अदालत और मसकन रस्पांडन्ट और उस मुद्दतके जो वास्ते इजरा इत्तिलानामा अपीलके जरूर हो मुकर्रर होगी ताकि रस्पांडन्ट-को वतारीख मुअय्यना हाजिर होने और अपीलकी जवाबदिही करने के लिये मुहलत काफी मिले—

१३— ( १ ) अगर रसीद हस्व कायदा ११ खारिज न हो तब अदालत दफा ५५० अदालत अपील उस अपील को लाजिम है कि उस अदालत को इत्तिला अदालत को इत्तिला अपीलकी करे जिसकी डिगरीकी नाराजी से अपील देगी जिसकी डिगरी से अपील हुआ हो—

( २ ) अगर अपील किसी ऐसी अदालत की डिगरी की नाराजी इस्ताल करना कागजात से हो जिसके कागजात अदालत अपील में न रहते हों तब अदालत अपीलमें तो उस अदालत को जिसमें कि इत्तिला मजकूर भेजी गई हो लाजिम है कि जहां तक जल्द मुमकिन हो कुल कागजात जरूरी मुकदमा या ऐसे कागजात जिनकी निस्वत अदालत अपीलसे तलवी खास हुई हो अदालत अपील में मुरसिल करे—

( ३ ) फरीकैन में से कोई फरीक दरख्वास्त तहरीरी उन अदालत

नकूल कागजात की जो  
उस अदालत में हो  
जिसकी डिगरी से अ-  
पील हुआ हो

में जिसकी डिगरी की नाराजी से अपील हुआ हो व-  
इन्दराज तसरीह उन कागजात मौजूदा अदालत मज-  
कूर के जिनकी वह नकूल कराना चाहता है पेश कर सका  
है और नकूल उन कागजात की वशत सायल मुरतिर

होकर उसको दीजायेंगी—

दफा ५५३

१४-(१) इत्तिलानामा तारीख मुकर्ररा हस्व कायदा १२ कचही  
ऐलान थीर तामील  
इत्तिलानामा तथम्युन  
रोज की वास्ते समाअत  
अपील के

अदालत अपील में आवेजां किया जायगा और उसी  
मजमून का इत्तिलानामा अदालत अपील से उस  
अदालत में मुरमिल होगा जिसकी डिगरी की नाराजी  
से अपील हुआ हो और इत्तिलानामा मजकूर रस्पां-

दण्ड या उस के वकील मुतअल्लिका अदालत अपील पर वतरीक मुन्द-  
जा मजमूआ हाजा जो दरवाय तामील सम्मन ऊपर मुदआअलेह मश-  
अर इहजार और जवाबदिही उसकेही जारी होगा और कुन कनापद  
जो सम्मन मजकूर और कार्रवाई मुतअल्लिका तामील सम्मन से मुतअ-  
ल्लिक हैं इत्तिलानामा मजकूर की तामील से मुतअल्लिक होंगे—

(२) वजाय इसके कि इत्तिलानामा उन अदालत में मुरमिल है  
अदालत अपील मुद  
इत्तिलानामा जानी  
परगली है जिसकी डिगरी की नाराजी से अपील हुआ हो अदा-  
लत अपील मजाज है कि इत्तिलानामा मुद रस्पांदण्ड  
या उसके वकील पर वमृगिव अदहाग मुतजिव रदाना  
के जारी कराये—

दफा ५५४

१५-इत्तिलानामा वनाम रस्पांदण्ड मशअर उस बात के होगा कि अगर  
मजमून इत्तिलानामा वह वतारीख मुअय्यना नमाअत अपील के अदालत  
अपील में हाजिर न होगा तो अपील यकनफी सुना जायगा—

कार्रवाई वक्त समाअत

माअत करेगी और इस सूरतमें अपीलान्त तरदीदके जवाब देने का मुस्तहक होगा—

१७—( १ ) अगर तारीख मुकर्ररा मजकूरपर या किसी दूसरी तारीखपर दफा ५५६ खारिज कियाजाना अपीलका अदम पैरवीमें रीखपर जिसतक मुकदमाकी समाअत मुलतवी रक्खी गईहो अपीलान्त जब कि अपील समाअतके वास्ते पुकाराजाये हाजिर न हो तो अदालतको इस्तिथारहै कि अपीलके खारिज करनेका हुक्मदे—

( २ ) अगर अपीलान्त हाजिरहो और रस्पांडन्ट हाजिर न हो तो अपीलकी समाअत तक अपीलकी समाअत तकतर्फा होगी—

१८—अगर तारीख मुकर्ररा मजकूरपर या किसी दूसरी तारीखपर दफा ५५७ खारिज कियाजाना अपीलका अगर इत्तिला-नामाकी तामील इस वजह से न हुई हो कि अपीलान्तने खर्चा नहीं दाखिलकिया जिसतक मुकदमाकी समाअत मुलतवी रक्खी गईहो यह दरियाफ्तहो कि इत्तिलानामाकी तामील बनाम रस्पांडन्ट इस वजह से नहीं हुई कि अपीलान्तने मीयाद मुअय्यना अदालतके अन्दर तामील इत्तिलानामा का खर्चा मतलूबा दाखिल नहीं किया तो अदालत को यह हुक्म देना जायजहै कि अपील खारिजहो—

मगर शर्त यह है कि बावजूद इसके कि इत्तिलानामा रस्पांडन्टपर तामील न हुआहो ऐसा हुक्म उस सूरत में सादिर न होगा कि समाअत अपीलके रोज मुअय्यनपर रस्पांडन्ट उस वक़्त हाजिरहो जब कि अपील समाअतके लिये पुकाराजाये—

१९—अगर क़ायदा ११ क़ायदा तहती ( २ ) या क़ायदा १७ या १८ दफा ५५८ अदालतसानी उत्त अपीलका जो अदम पैरवी में खारिज हुआहो के वमूजिव अपील डिसमिसहो अपीलान्त मजाज होगा कि वास्ते अदखालसानी अपीलके अदालत अपीलमें दरख्वास्त गुजराने और अगर साबितहो कि जब अपील वास्ते समाअत के पेश हुआ था उसवक़्त वह हाजिर होने या जो खर्चा कि हस्व मरकूमा वाला मतलूब था कि उसके दाखिल करने से व वजह क़ाफ़ी माज़ूर था तो जायज है कि अदालत मजकूर अदखाल सानी अपील का ऐसी शरायत पर दरवाब खर्चा के या दीगर तौरपर जो अदालत मुनामिव जानै मंज़ूर करै—

दफा ५४६

२०—अगर अपील की समाजत के वक्त अदालतको ठरियाफ्तने-  
 इलियार इतनुवाय त कि कोई शाख्स जो उस अदालत में फरीक मुकदमा  
 मायनना और यह हुक्म था जिसकी डिगरी की नाराजीसे अपील हुआ है ने-  
 देनेका जि जो अशना किन उस अपील में फरीक नहीं किया गया है व  
 स नतीजा अपील से अपील के नतीजामें कुछ गरज रखता है तो अदा-  
 गरज रखतेहों रस्मा- लत मजाज होगी कि अपीलकी समाजत एकनारंग  
हन्ने बनये जाये आयन्दा पर मुतलबी रखै जो अदालत की रायसे मुकूरर होगी और  
 शाख्स मजकूर के रस्पांडन्ट किये जाने का हुक्मदे—

उज्जरदारी किस नमूने  
पर होगी और उस से  
कौन अहकाम मुतअल्लिक  
होगे

अहकाम कायदा १ जहांतक कि वह याददाश्त अपील  
के नमूना और मजमून से मुतअल्लिक हैं उस उज्जर से  
भी मुतअल्लिक होंगे—

( ३ ) अगर रस्पांडण्ट उज्जरदारी के साथ एक तहरीरी इकरार उस  
फरीक का जिसके ऊपर उज्जरदारी का असर पड़ता हो या  
उसके वकील वा मशअर इसके कि उज्जरदारी मजकूरकी एक  
नक़ल उसको पहुंचगई न दाखिल करै तो अदालत अपील  
एक नक़ल मजकूर बाद अदखाल उज्जरदारी के जिसकदर  
जल्द मुमकिनहो अपीलाण्ट या उसके वकील पर रस्पांडण्टके  
खर्च से तामील करायेगी—

( ४ ) अगर किसी सूरतमें जिसमें किसी रस्पांडण्ट ने इस कायदा  
के बमूजिव एक इत्तिला उज्जरदारी की दाखिल कीहो मगर  
अपील उठा लिया गयाहो या अदम पैरवी में खारिज होगया  
हो तो उज्जरदारी मजकूर मसमूअ और फैसल होसक्ती है  
फरीकसानी को ऐसी इत्तिला देने के बाद जो अदालत के  
नज़दीक मुनासिवहो—

( ५ ) अहकाम मजमूआहाजा जो अपील वसीगा मुफलिसी से मुत-  
अल्लिक हैं जहांतक कि मुतअल्लिक होसकें उज्जरदारी तहत  
कायदा हाजा से भी मुतअल्लिक होंगे—

२३—अगर उस अदालतने जिसकी डिगरी की नाराज़ी से अपील दका ५३२

अज तरफ अदालत  
अपील मुकदमा का दु-  
बारा तजवीज के लिये  
वापस भेजा जाना

दायर हुआहो नालिशको किसी अम्र इन्तिदाईपर फै-  
सल कियाहो और डिगरी अपील में मंसूखहो तो अदा-  
लत अपील मजाजहै कि अगर मुनासिव समझै मुक-  
दमाकी वापसीका हुक्मसादिरकरै नीज यह कि कौन

कौन अमूर तनकीह तलवकी तजवीज मुकदमा वापसशुद्ध में कीजायगी  
और उसको लाजिसेहै कि एक नक़ल अपनी तजवीज और हुक्मकी उस  
अदालत में कि जिसकी डिगरीकी नाराज़ी से अपील हुआहो उस हिदायत  
के साथ मुरसिलकरै कि वह मुकदमाको बाज बनम्बर साविक रजिस्टर  
नालिशात दीवानी में कायमकरै और उसके तस्फियाकी कार्रवाई में ममरू-  
फहो—और अगर कोई शहदत दरयस्नाय तहकीकान इन्तिदाई कल गवन्द



की इहो तो वह बरिआयत मुस्तस्नियान जायजके शहादत दरअमनाय तजवीज बाद वापसी समझी जायेगी—

दफा ५३४

२४—जब कि शहादत मौजूदा मिसिल इस बातके वास्ते काफीहो कि अगर शहादत मौजूदा अदालत अपील फैसला सादिर करसके तो अदालत अपील बाद अजसरनौ करार देने अमूर तनकीहीके अगर जरूरीहों मुकदमाकी निस्वत तजवीज नातिक सादिर करसक्ती है गो फैसल उस अदालतका जिसकी डिगरी की नाराजी से अपील हुआहो विल्कुल किसी और बुनियादपर बजुज उमके जिसपर कि अदालत अपीलने फैसला कियाहो मुवनीहो—

दफा ५३६

२५—अगर उस अदालतने जिसकी डिगरी की नाराजी से अपील हुआहो किसी ऐसे अम्रको तनकीह तलब करार न दियाहो या तस्फिया उसका न कियाहो या तजवीज किमी ऐसे अम्र बाकिमाकी न की हो जो अदालत अपीलके नजदीक वास्ते इम्तार फैसला मुनासिब नि. स्वत ख्यदाद मुकदमाके जरूरीहो तो अदालत अपील मजाजहै कि अगर जरूरतहो अमूर तनकीह तलब मुग. तिव करके उनको उस अदालतमें तजवीजके लिये मु. गमितकर जिसकी डिगरी की नाराजी से अपील हुआहो और ऐसी सूत में उम अदालतको शहादत जायद मतलूवा लेनेकी हिदायत करेगी—

और अदालत मजसूआको अमूर तनकीह तलबकी तजवीजमें मसम्क होगी और उनकी निस्वत अपनी तजवीज मये बजुह और शहादत मज. पूरके अदालत अपीलमें इम्माल करेगी—

फैसला अपील करने के लिये मुकर्ररहो अदालत अपील को लाजिम है कि अपीलकी तजवीजके लिये कार्रवाईकरै—

२७-( १ ) फरीकैन अपील मजाज न होंगे कि अदालत अपील में दफा ५६०  
अदालत अपील में शहादत जदीद ख्वाह अवानी हो ख्वाह दस्तावेजी पेश  
शहादत मजीद पेश करें लेकिन—  
करना

( अलिफ ) अगर उस अदालत ने जिसकी डिगरी की नाराजी से अपील हुआहो ऐसी शहादत लेने से इन्कार कियाहो जो लेनी चाहिये थी—या

( बे ) अगर अदालत अपील वास्ते सादिर करने फैसला या किसी और वजह मवजहसे पेश होना किसी दस्तावेज का या लियाजाना इजहार किसी गवाह का जरूरी समझै—

तो अदालत अपील मजाज होगी कि ऐसी शहादत या दस्तावेज लियेजाने या गवाह के इजहार लियेजाने की इजाजत दे—

( २ ) जब शहादत मजीद को अदालत अपील मंजूर करै तो वजह मंजूरी की अदालत कलमबंद करेगी—

२८—जब शहादत जायद लेने की इजाजत हो तो अदालत अपीलको दफा ५६१  
शहादत मजीद लेने इख्तियार है कि वह खुद शहादत मंजूर के या उस  
का तरीका अदालत को जिसकी डिगरी का अपील हुआहो या  
किसी और अदालत मातहत को हुक्म दे कि वह उस शहादत को ले  
और जब लीजाये तो अदालत अपील में भेजदे—

२९—अगर हुक्म या इजाजत वास्ते लियेजाने शहादत जदीद के दफा ५७०  
अमूरकी तशखीस और दीजाये तो अदालत अपील तशखीस उन अमूर की  
उनका कलमबंद किया करेगी जिनपर शहादत महदूद की जायेगी और उन  
जाना अमूर मुखरिसा को अदालत अपनी कार्रवाई में कलम-  
बंद करैगी—

## ज़िक्र तजवीज अपील

३०—अदालत अपीलको लाजिम है वाद ममाअन उजरात फरीकैन दफा ५७१

तजवीज किस वक्त  
और किस मुकाम पर  
सुनाई जायगी

या उनके बुकलाय के और मुल्ताहिजा किसी हुज्ज  
कारवाई के जोकि वसीगा अपील या उस अदालत  
में हुई हो जिसकी डिगरी का अपील किया गया और  
जिसका मुल्ताहिजा जरूरी मुदसब्बर हो अपनी तजवीज-सर इजलास  
उत्ती वक्त या किसी तारीख मावाद में जिसकी इत्तिला फरीकैन या उन  
के बुकलाय को दी जायेगी सुनाये—

दफा ५७४

३१—अदालत अपील की तजवीज तहरीरी होगी और उसमें अमूर  
तजवीज का मजमून  
और उस पर तारीख  
और दस्तखत लिख होना

जैल मुन्दर्ज होना चाहिये—

( अलिफ ) अमूर तजवीज तलय—

( वे ) तजवीज निस्वत अमूर तजवीज तलय के—

( जीम ) वजूदात तजवीज-और

( दाल ) जिस हाल में कि डिगरी अदालत मातहत की अपील में  
मंसूख या तरमीम की जाय तो वह दादरसी जिसका कि  
अपीलांट मुस्तहक है—

और जिस वक्त कि तजवीज सुनाई जाये उसपर तारीख और दस्त-  
खत जज या जनों के जो उसमें मुत्तफिकुलराय हों लिख होंगे—

दफा ५७५

३२—जायज है कि तजवीज वास्ते बहाली या तब्दीली या तन्सीख  
प्रदराम तजवीज ] उस डिगरी के हो जिमका अपील किया गया हो या  
जिस हाल में कि फरीकैन अपील इस अम्रपर इत्तिफाक करें कि डिगरी  
अपील की किस तौरपर होना चाहिये या क्या हुक्म वसीगा अपील  
सादिर होना चाहिये तो अदालत अपील उसीके मुताबिक डिगरी या  
हुक्म सादिर करेगी—

जदीद

३३—अदालत अपीलको लाजिम होगा कि कोई डिगरी या हुक्म  
मजमून अदालत सादिर करें जो सादिर होना चाहिये या और मजीद  
मजमून डिगरी या हुक्म सादिर करें जो बलिदान हालत मुक-  
द्मा जरूरी हो और अदालत मजाज होगी कि यह इत्तिफाक अमन में  
लाये गो अपील निम्न हुज्ज डिगरी की निम्नगदों और जायज है कि यह  
इत्तिफाक दहक हुस्ना या बाज रम्पांडन्ट या फरीक के नाफिज किया जाये

गो रस्पांडन्ट या फरीक मजकूरने कोई अपील या उजरदारी दाखिल न की हो—

## तमसील

जैदने जरनक़दका दावाकिया जो उसको उमरू या बकरसे पाना है और नालिश उन दोनोंके नाम दायरकरके उमरूपर डिगरी हासिलकी उमरूने जैद और बकरको रस्पांडन्ट करार देकर अपील रूजूअकिया अदालत अपीलने डिगरी वहक उमरू सादिरकी पस अदालतको इख्तियार है कि बकरपर भी डिगरी सादिरकरे—

३४—जब अपीलकी समाअत एकसे ज्यादा जजोंके जलसामें हो तो दफा ५७६

जो जज तजवीज़ से इत्तिफाक न करे वह अपनी तजवीज़ या हुक्म अलाहिदा लिखेगा	वह जज जो अदालतकी तजवीज़पर इत्तिफाक न करे तजवीज़ या हुक्म जो बदानिस्त उसके अपीलमें सादिर होता चाहिये कलमबन्द करेगा और मजाज होगा कि उसकी बजूह लिखे—
---	---

## डिगरी बसीगा अपील

३५—( १ ) अदालत अपील की डिगरी में तारीख सुनाये जाने दफा ५७६

तारीख और मजमून डिगरी	तजवीज़ की लिखी जायेगी—
----------------------	------------------------

( २ ) डिगरी में नम्बर अपील का और नाम व निशान वगैरह अपीलान्ट और रस्पांडन्ट का मुन्दर्ज़ होगा और उसमें जिक्र दादरसी या दीगर तजवीज़ का जो सीगा अपील से हुई हो वसराहत लिखा जायगा—

( ३ ) नीज डिगरी में तजक़िरा तादाद खर्चा अपील और यह कि किस किस फरीक के जिम्मे और किस जायदाद से और किस हिसाब से खर्चा अपील और खर्चा नालिश का आयद होना चाहिये दर्ज होगा—

( ४ ) डिगरी पर जज या साहवान जज सादिर कुनिन्दा डिगरी के दस्तखत सिब्त होंगे और तारीख मरकूम होगी—

मगर शर्त यह है कि अगर एक से ज्यादा जज हों और उनमें

जल्द नहीं है कि जो  
जज तजवीज से इ-  
स्तिफाऊरें वह डि-  
गरी पर दस्तखत करें

इस्तिफाऊ राय हो तो उस जज को जो तजवीज  
अदालत से इस्तिफाऊ रखता हो डिगरी पर दस्तखत  
करना जरूर न होगा—

दफा ५=०

३६—तजवीज और डिगरी अपील की नकूल मुसद्दिका फरीकैनकी  
फरीकैन को तजवीज  
और डिगरीकी नकूल  
मिल सकेंगी

तरफ से अदालत अपील में दर्खास्त गुजरने पर उनके  
सर्फ से उनको दीजायेंगी—

दफा ५=१

३७—नकूल तजवीज और डिगरीकी बाद तसदीक अदालत अपील  
डिगरी अपील की न-  
कूल मुसद्दिका उस अ-  
दालत में भेजीजायगी  
जिसकी डिगरीकी ना-  
राजाने अपील हुआ हो

या उस ओहदेदार के जिसको अदालत अपील इन  
काम के लिये मुक़रर करे उस अदालत में मुरमित  
होंगे जिसने डिगरी अपील शुद्ध सादिरकी हो और  
असिल कामजात मुक़दमें के साथ शामिलकी जायेंगी  
और फ़ैसला अदालत अपील का मुक़दमात दीवानीके

रजिस्टरमें दर्ज किया जायेगा—

## आर्डर ४२

### अपील बनाराजी डिगरियात अपील

१—कवायद आर्डर ५१ जहांतक मुमकिन हो उन अपीलों से मुतअ-  
साफता लिंक होंगे जो बनाराजी डिगरियात अपील दायर हों—

## आर्डर ४३

### अपील बनाराजी अहकाम

दफा ५==

१—अपील बनाराजी अहकाम जैल मजलस दफा १०४ नकूल  
अपील बनाराजी होगा—यानी—

(अनिफ) हुक्म बमुजिय कायदा १०—आर्डर ७ मजलस बापमी म  
सीदाया बनाराजी फरीकैनके रुक अदालत मजलसे

- ( वे ) हुक्म वमूजिव कायदा १०—आर्डर ८ मशअर सादिर करने तजवीज खिलाफ किसी फरीक के—
- ( जीम ) हुक्म वमूजिव कायदा ६—आर्डर ६ मशअर नामंजूरी दरख्वास्त ( मुकद्दमात लायक अपील ) निस्वत सदूर हुक्म मंसूखी दिसमिसी नालिश—
- ( दाल ) हुक्म वमूजिव कायदा १३—आर्डर ६—मशअर नामंजूरी दरख्वास्त ( वमुकद्दमात लायक अपील ) निस्वत सदूर हुक्म मंसूखी डिगरी यकतर्फा—
- ( हे ) हुक्म वमूजिव कायदा ४—आर्डर १०—मशअर सादिर करने तजवीज खिलाफ किसी फरीक के—
- ( वाव ) हुक्म वमूजिव कायदा २१—आर्डर ११—
- ( जे ) हुक्म मुतअल्लिका कायदा १०—आर्डर १६ निस्वत कुर्की जायदाद—
- ( -हे ) हुक्म वमूजिव कायदा २०—आर्डर-१६ मशअर सादिर करने तजवीज खिलाफ किसी फरीक के—
- ( तो ) हुक्म हुस्व कायदा ३४—आर्डर-२१ मुतअल्लिका - एतराज निस्वत लिखने मसविदा दस्तावेज या इवारत फरोख्त के—
- ( ये ) हुक्म वमूजिव कायदा ७२ या कायदा ६२—आर्डर २१—मशअर मंसूख करने या न-मंसूख करने नीलाम—
- ( काफ ) हुक्म वमूजिव कायदा ६—आर्डर २२ मशअर इन्कार मंसूखी सकूत या दिसमिसी मुकद्दमा—
- ( लाम ) हुक्म वमूजिव कायदा १०—आर्डर २२ मशअर मंजूरी या ना मंजूरी इजाजत—
- ( मीम ) हुक्म वमूजिव कायदा ३—आर्डर २३ मशअर तहरीर या इन्कार तहरीर इकरारनामा या मसालहत वाहमी या ईफा—
- ( नू ) हुक्म वमूजिव कायदा २—आर्डर २५ मशअर ना मंजूरी दरख्वास्त ( वमुकद्दमा लायक अपील ) निस्वत सदूर हुक्म मंसूखी दिसमिसी मुकद्दमा—
- ( सीन ) हुक्म वमूजिव कायदा ३ या कायदा ८—आर्डर ३४ मशअर इन्कार तौसीअ मुदत अदाय जर गेहन—

- ( ऐन ) हुक्म मुतअल्लिका नालिशान अमीन वमुराद तस्फिया है  
नुल् मुतनाज्जईन हस्व कायदा ३ या ४ या ६—आर्डर ३५
- ( फे ) हुक्म वमूजिव कायदा २—३ या ६ आर्डर ३८—
- ( स्वाद ) हुक्म वमूजिव कायदा १—२ या ४ या १०—  
आर्डर ३९—
- ( काफ ) हुक्म वमूजिव कायदा १ या ४—आर्डर ४०—
- ( रे ) हुक्म मशअर इनकार हस्व कायदा १९—आर्डर ४१ निस्वत  
अदखालसानी या हस्व कायदा २१—आर्डर मजकूर निस्वत  
अजसर नौ समाअत अपीलके—
- ( शीन ) हुक्म वमूजिव कायदा २३—आर्डर ४१ मशअर वापस  
भेजने मुकदमाके जिस सूरतमें कि अपील डिगरी अदालत  
अपीलकी नाराज़ीसे होताहो—
- ( ते ) हुक्म मसदरै अदालत गैर अदालत हाईकोर्ट मशअर इनकार  
अताय सार्टीफिकेट हस्व कायदा ६—आर्डर ४५—
- ( से ) हुक्म वमूजिव कायदा ४—आर्डर ४७ मशअर मंजूरी दर-  
खवास्त तजवीजसानी—

दफा ५६०

२—कवायद आर्डर ४१ जहांतक मुमकिनहो उन अपीलों से मुतअ-  
क़ावई                      लिंक होंगे जो अहकामकी नाराज़ी सेहों—

## आर्डर ४४

### अपील मुफलिसाना

दफा ५६२

१—जो शरुस मुस्तहक रुजुअ अपीलकाहो और रसूम मुअतय्यना याद-  
कैत यपात मुफलिसाना—                      दारत अपील न अटा करसक्ताहो तो जायजहै कि वह  
                     दरखवास्त मये क़िता याददारत अपीलके गुज़राने और  
उसको अपील मुफलिसानाकी उजाजत जुम्ला अमूरमें वशमूल गुजराने  
दरखवास्त मजकूरके यपावन्दी अहकाम मुतअल्लिका नालिशान मुफलिसी  
जहांतक कि वह अहकाम उममे मुतअल्लिकदों दीजायें—

पर शर्त यह है कि अदालत दरखास्त को नामंजूर करेगी इला उस-  
कारवाई अगर दर-  
खास्त वास्ते अद-  
खाल अपीलके गुजरे

सूरत में जब कि अदालत को बरतवक्त मुलाहिजा दर-  
खास्त और तजवीज और डिगरीके जिसकी नाराजी  
से अपील हो यह ख्याल करने की बजह नजर आये  
कि डिगरी खिलाफ कानून या खिलाफ किसी रवाजके है जो कानून  
का हुक्म रखता है या और निहज पर गलत या खिलाफ इन्साफ है—

२-जायज है कि तहकीकात मुफलिसी सायल की अदालत अपील दफा ५१३  
तहकीकात मुफलिसी | सुदकरे या बहुकम अदालत अपील वह अदालत करे  
जिसकी तजवीज की नाराजी से अपील हो—

पर शर्त यह है कि अगर सायल को उस अदालतमें जिसकी डिगरी  
की नाराजी से अपील हो नालिश या अपील मुफलिसाना की इजाजत  
हुई थी तो उसकी मुफलिसी की वावत फिर तहकीकात करने की जरूरत न  
होगी इला उस सूरत में कि अदालत अपील को कोई बजह तहकीकात  
की हिदायत करने की नजर आये—

## आर्डर ४५

### अपील बहजूरआला हजरत मलिकमुअज़्जम इजलास कौंसल

१—इस आर्डर में लफ्ज़ “ डिगरी ” में हुक्म कतई भी दाखिल दफा ५१४  
तारीफ डिगरी | है इला उस हाल में कि यह मफहूम उसके किसी  
मजमून या सियाक्त इवारत के खिलाफ पाया जाये—

२-जो शख्स व हजूरआला हजरत मलिक मुअज़्जम इजलास कौंसल दफा ५१५  
दरखास्त उती अ-  
दालत में की जाये  
जिसकी डिगरी की  
नाराजी से अपील  
करना हो

अपील करना चाहे उसे लाजिम है कि जिस अदालत  
की डिगरी की शिकायत हो उस अदालत में सवाल  
गुजराने—

३-(१) हर सवाल में मौजिवात अपील और यह दरखास्त दर्ज दफा ५१६



मार्टीफिकेट देवारह | होनी चाहिये कि सार्टीफिकेट इस मजमून का मरहमत  
मालियत या काबिल | हो कि मुकदमा बलिहाज तादाद या मालियत और  
अपील होने के | नौद्यत के शरायत मुन्दर्जे दफा ११० को पूरी करता  
है या और निहज से लायक उसके है कि अपील उसका वहजूरआला  
हजरत मलिक मुअज्जम इजलास कौंसलहो—

( २ ) जब ऐसा सवाल पहुंचे तो अदालत को लाजिम है कि हिदा-  
यत करे कि फरीक सानी पर इचिलानामा की तामील की  
जाये कि वह फरीक सार्टीफिकेट के न मरहत होने की अगर  
कोई वजह रखताहो पेशकरे—

जदीद

४—वह मुकदमात जिनमें अमूर तस्फिया तलब दरअसल एकही रहेहों  
मुकदमात का शामिल | और उनका फैसला एकही तजवीज से हुआहो अगरज  
कियाजाना | तअय्युन मालियत शामिल दिये जासक्ते हैं लेकिन वह  
मुकदमात जिनका फैसला एक तजवीज से नहीं हुआहै वह नहीं शामिल  
किये जासक्ते हैं गो उनमें अमूर तस्फिया तलब दर असल एकही रहेहों—

जदीद

५—अगर निज़ाअ फीमा नैन फरीकैन निस्वत तादाद या मालियत शै-  
निज़ाअ का अदालत | मुदावहाय नालिश अदालत मराफियाओला के या  
मराफिया ओला में | निस्वत तादाद या मालियत शै मुदावहा वायनअपील  
भेजाजाना | वहजूरआला हजरत मलिक मुअज्जम इजलास कौंसल  
के पैदाहो तो अदालत जिसमें दरख्बारत हस्ब कायदा २ वास्ते मरहमत  
होने सार्टीफिकेट के गुज़रै मजाज है कि अगर मुनासिब समझें तो ऐसी  
निज़ाअ को अगरज कैफियत अदालत मराफियाओला में भेजे—अदालत  
मराफिया ओला आसिरुल् जिक्र तादाद या मालियत मजकूरका तस्फिया  
करके अपनी कैफियतमय शहादत के उस अदालतमें वापस भेजेगी जहां  
से इस्तिसवाव हुआहो—

दफा ६०१

६—अगर ऐसे सार्टीफिकेट के देनेसे इन्कार कियाजाये तो वह सवाल  
मार्टीफिकेट न मिलने | समाजि होगा—  
का अगर

दफा ६०२

७—( १ ) हर मजमून पनाहोने सार्टीफिकेट के मायने दो लाजिम है

सर्टीफिकेट मिलने  
पर जमानत और  
रूपया दाखिल करना

कि डिगरी शिकायती की तारीख से छः महीने के अ-  
न्दर या सर्टीफिकेट के अता होने की तारीख से छः  
हफ्ते के अन्दर यानी इन दोनों में से जो तारीख

पीछे गुजरै-

( अलिफ ) खर्चा रस्पांडन्ट की जमानत दाखिल करै-और

( बे ) उस कदर रुपया दाखिल करै जोकि बजुज कागजात  
मुफसिलत जैल के मुकद्दमा की कुल गिसिल के तर्जुमा और  
नकल और तरतीब फेहरिस्त और वहजूर आला हजरत  
मलिक मुअज्जम इजलास कौंसल एक सही नकल के  
भेजने के सर्फ के वास्ते जरूरी हो-

( १ ) जाब्ता के कागजात जिनके खारिज करने की हिदायत अजरूय  
किसी हुक्म नाफिजा वक्त मसदिरह आला हजरत मलिक  
मुअज्जम इजलास कौंसल के हुई हो-

( २ ) कागजात जिनके खारिज करने के लिये फरीकैन इतिफाक करै-

( ३ ) हिसाबात या हिसाबात के हिस्से जिनको वह ओहदेदार  
जिसे अदालत ने इस बाब में इख्तियार दिया हो गैर जरूरी  
तसब्बर करे और जिनके शामिल करने के लिये अह्वाली  
मुकद्दमा ने बिल खसूल दरखास्त न की हो-और

( ४ ) वह दीगर कागजात जिनके खारिज करने का अदालत हाई-  
कोर्ट हुक्म दे-

( २ ) अगर सायल मिसिल की नकल बजुज कागजात मुतजिकरै  
घाला के हिन्दुस्तान में छपवाना पसन्द करै तो उसको  
लाजिम है कि उसी मौयाद के अन्दर जो कायदा हाजा के  
कायदा तर्ती ( १ ) में मरकूम है उस नकल के ब्यापने के सर्फ  
के लिये जिस कदर रुपया कि बतलूव हो दाखिल करे-

८-अगर जमानत गजकूर और दाखिला रुपयाका हस्व इतमीनान दफा ६०३

अपीलका मंजूर होना  
और उसके मुतसलिक  
करवाई

अदालत तफसील पाबुके तो अदालतको लाजिम है कि-

( अलिफ ) अपीलका मंजूर होना जाहिर करै-

( १० वे ) उसकी इत्तिला रसगंडन्टको पहुंचाये—

( जीम ) वहजूर आला हजरत मलिक मुअज्जम इजलास कौंसल  
एक नक़ल सही मिसिल मजकूरकी वजुज कागजात मुत-  
जिकरैवाला वमुहर अदालत बन्दकरके इरसालकरै—और

( दाल ) मुकद्माके किसी कागजातकी एक या कई नक़ल मुसदिला  
किसी फरीकको जो उसकी दरख्वास्तकरै और इस्त्राजात  
मुनासिव जो उसकी तय्यारी में आयद हुयेहों अदाकरै  
हवाले करदे—

दफा ६०४

६—अपीलकी मंजूरी से पहले किसी वक़्त अदालत को जायज है  
मजरी जमानत की कि अगर वजह जाहिर कीजाये तो उस जमानतकी  
मसूखी मंजूरी मंसूख करदे और इस बाबमें हिदायात रजीद  
सादिर करै—

दफा ६०५

१०—अगर किसी वक्त वाद मंजूरी अपीलके लेकिन मिसिलकी नक़ल  
इस्तिथार निस्त हुक्म सिवाय कागजात मजकूरके वहजूर आला हजरत मलिक  
मुअज्जम इजलास कौंसल इरसाल करने से पहले ज-  
मानत गैर मुक्तफी मालूमहो—  
वाक़्त मजौद जमानत या मजौद रुपया दा  
खिल करने के

या मिसिलको सिवाय कागजात मजकूरैवालाके तर्जुमा करने या नक़ल  
करने या छापने या उसकी फेहरिस्त मुरत्तिव करने या उसकी नक़ल इर-  
साल करने के लिये ज़्यादा रुपया मतलूबहो—

तो अदालतको बनाम अपीलांट यह हुक्म सादिर करना जायजहै कि  
वह उस मीयादके अन्दर जोकि अदालत मुक़ररकरै दूसरी जमानत काफ़ी  
गुज़राने या उसी क़दर मीयादके अन्दर जर मतलूब दाखिलकरै—

दफा ६०६

११—अगर अपीलांट उस हुक्मकी तामील में कसूरकरै तो वरिचाई  
हामके न तामील करने मौक़फ कीजायेगी—  
ना अगर

और अगर इसके कि इस बाबमें हुक्म आला हजरत मलिक मुअज्जम  
इजलास कौंसल का सादिरहो अपीलकी वरिचाई आगे न चलेगी—

और इन जसमें में डजग उस डिग्रीका जिनका अपील कियागया है  
गुलती न रहेगा—

१२-अगर मिसिलकी नक़ल बेजुज कागज़ात मुतजिकरै वाला बहज़ूर दफा ६०७ फाजिल रुपया की आला हज़रत मलिक मुअज़्ज़म इजलास कौंसल सु-वापमी रसिल होचुके और उस रुपया में से जोकि अपीलान्टने हस्व कायदा ७ दाखिल कियाहो कुछ रुपया फाजिलरहै तो वह उसको वापस पासक्ताहै-

१३-( १ ) वायजूदे कि किमी अपीलकी मंज़ूरीका सार्टीफिकेट अताहो दफा ६०८ दौरान अपील में अदा-इजरा उस डिगरीका जिसका अपीलहो बगैर किसी लतके इस्तिनयारात शर्तके अमल में आयेगा इल्ला उस हालमें कि अदालत और निहजकी हिदायतकरै-

( २ ) अदालत अगर मुनासिब समझै तो किसी बजह खाससे जो किसी ऐसे फरीककी तरफ से जाहिर कीजाये जो मुकदमा से गरज़ रखताहो या जो और निहजसे अदालतको मालूमहो उसे जायजहै कि-

( अलिफ ) किसी जायदाद मन्कूला मुतनाजअफिया या उसके किसी जुड़व को जब्त रखवै-या

( बे ) रस्पांडन्ट से ऐसी जमानत लेकर जो कि अदालत के नज़दीक वास्ते तामील करार बाकई उस हुक्मके मुनासिब हो जोकि आला हज़रत मलिक मुअज़्ज़म इजलास कौंसल के हज़ूरसे बसीगै अपील सादिरहो उस डिगरीके इजराका इजाजतदे जिसका अपीलहो-या

( जीम ) अपीलान्ट से ऐसी जमानत लेकर जोकि अदालतके नज़दीक वास्ते तामील करार बाकई उस डिगरीके मुनासिबहो जिसका अपीलहो या वास्ते तामील उस हुक्मके जोकि आला हज़रत मलिक मुअज़्ज़म इजलास कौंसल व सीगै अपील सादिरकरै उस डिगरी का इजरा मुल्तवी रखवै जिसका अपीलहो-या

( दाल ) जो फरीक कि अदालतकी मदद चाहे उसको निश्चय शै मुतनाजअ अपीलके ऐसी शरायतका पाबन्दकरै या निश्चय शै मजकूर ऐसी और हिदायत दर्याब तर्करै गिमीदर या निहज दीगरके सादिरकरै जो उसके नज़दीक मुनासिबहो-

( वे ) उसकी इत्तिला रस्यांडन्टको पहुंचाये—

( जीम ) वहजूर आला हजरत मलिक मुअज्जम इजलास कौंसल  
एक नक़ल सदी मिसिल मजकूरकी वजुज कागजात मुत-  
जिकरैवाला वमुहर अदालत बन्दकरके इरसालकरै—और

( दाल ) मुकदमाके किसी कागजातकी एक या कई नक़ल मुसदिका  
किसी फरीकको जो उसकी दरख्वास्तकरै और इरराजात  
मुनासिब जो उसकी तय्यारी में चायद हुयेहों अदाकरै  
हवाले करदे—

दफा ६०४

६—अपीलकी मंजूरी से पहले किसी वक़्त अदालत को जायज है  
मजूरी जमानत की कि अगर वजह जाहिर कीजाये तो उस जमानतकी  
मसूखी मंजूरी मंसूख करदे और इस दावमें हिदायात मज़ीद  
सादिर करै—

दफा ६०५

१०—अगर किसी वक़्त दाद मंजूरी अपीलके लेकिन मिसिलकी नक़ल  
इरितयार नित्तत हुक्म सिवाय कागजात मजकूरके वहजूर आला हजरत मलिक  
वाक़त मज़ीद जमानत मुअज्जम इजलास कौंसल इरमाल करने से पहले ज-  
या मज़ीद रुपया दा मानत गैर मुकतफ़ी मालूमहो —  
खिल करने के

या मिसिलको सिवाय कागजात मजकूरैवालाके तर्जुमा करने या नक़ल  
करने या छापने या उसकी फेहरिस्त मुरत्तिब करने या उसकी नक़ल इर-  
साल करने के लिये ज़्यादा रुपया मतलूवहो—

तो अदालतको वनाम अपीलांत यह हुक्म सादिर करना जायज है कि  
वह उस मीयादके अन्दर जोकि अदालत मुक़ररकरै दूमरी जमानत काफ़ी  
गुज़राने या उसी क़दर मीयादके अन्दर जर मतलूव दाखिलकरै—

११—अगर अपीलांत उस हुक्मकी तामील में कसूरकरै तो कार्रवाई

१२-अगर मिसिलकी नक़ल बेजुज कागज़ात मुतजिकरै वाला वहजूर दफा ६० फाजिल रुपया की वापसी आला हजरत मलिक मुअज़्ज़म इजलास कौंसल मु रसिल होचुके और उस रुपया में से जोकि अपीलान्टने हस्ब कायदा ७ दाखिल कियाहो कुछ रुपया फाजिलरहै तो वह उसको वापस पासक्ताहै-

१३-( १ ) वायजूदे कि किमी अपीलकी मंजूरीका सार्टीफिकेट अताहो दफा ६० दौरान अपील में अदा- इजरा उस डिगरीका जिसका अपीलहो बगैर किसी लतके इस्तिथारात शर्तके अमल में आयेगा इल्ला उस हालमें कि अदालत और निहजकी हिदायतकरै-

( २ ) अदालत अगर मुनासिब समझै तो किसी बजह खाससे जो किसी ऐसे फरीककी तरफ से जाहिर कीजाये जो मुकदमा से गरज रखताहो या जो और निहजसे अदालतको मालूमहो उसे जायजहै कि-

( अलिफ ) किसी जायदाद मन्कूला मुतनाजअफिया या उसके किसी जुड़व को जन्त रक्खै-या

( बे ) रस्पांडन्ट से ऐसी जमानत लेकर जो कि अदालत के नजदीक वास्ते तामील करार बाकई उस हुक्मके मुनासिब हो जोकि आला हजरत मलिक/मुअज़्ज़म इजलास कौंसल के हज़ूरसे बसीगै अपील सादिरहो उस डिगरीके इजरार्का इजाजतदे जिसका अपीलहो-या

( जीम ) अपीलान्ट से ऐसी जमानत लेकर जोकि अदालतके नजदीक वास्ते तामील करार बाकई उस डिगरीके मुनासिबहो जिसका अपीलहो या वास्ते तामील उस हुक्मके जोकि आला हजरत मलिक मुअज़्ज़म इजलास कौंसल व सीगै अपील सादिरकरै उस डिगरी का इजरा मुल्तवी रक्खै जिसका अपीलहो-या

( डाल ) जो फरीक कि अदालतकी मदद चाहे उसको निश्चयत शै मुतनाजअ अपीलके ऐसी शरायतका पाबन्दकरै या निश्चयत शै मज़कूर ऐसी और हिदायत दरवाब तकूरर किसी दर या निहज दीगरके सादिरकरै जो उसके नजदीक मुनासिबहो-

दफा ६०१

१४-(१) अगर दर असनाय दौरान अपील किसी वक़्त वह जमा-  
जमानत अगर गैरकाफी हो तो बर्दा जामल्ही है नत जो किसी फरीकने दाखिलकी हो गैर मुक्तफी मा-  
लूमहो तो अदालतको जायज़ है कि दूसरे फरीककी दर-  
ख्वास्तपर जमानत मजीद तलबकरै—

(२) दरसूरत न दाखिल होने जमानत मजीदके जोकि अदालत  
तलबकरै—

(अलिफ) अगर असिल जमानत अपीलान्ट ने दाखिल की हो तो  
अदालत को इस्तिyार है कि रस्पांडन्ट की दरख्वास्त  
पर डिगरी अपीलशुद्द के इजराका हुक्म उसी तरह सा-  
दिर करै कि गोया अपीलान्ट ने कोई जमानत दाखिल  
नहीं की थी—

(बे) अगर असिल जमानत रस्पांडन्ट ने दाखिल की हो तो  
अदालत को लाजिप है कि जहांतक मुयक़िन हो डिगरी  
का इजराय मजीद हुलतकी रक्खै और फरीफेन को फिर  
उसी हालत पर लेआये जो उन जमानत गैर मुक्तफी के  
देने के वक़्त उन दोनों की भी या निस्वन शै मुननाजअ-  
फिया अपील के ऐसी हिदायत सादिर करै जो उसकी  
दानिरत में मुनासिब हो—

दफा ६१०

१४-(१) जो शरह किसी हुक्म हुक्मदरह आला हजरत मलिक  
कारवाई मुनअलिह मुअज़्ज़ल इक़लास कौमलका इजरा कराना चाहे उसे  
लाजिप है कि सवालमय तहल मुमदिक उम डिगरी  
या हुक्म के जोकि मपील में सादिर हुआ हो और  
जिमका इजरा कर्गला मतलब हो उमी अदालत में  
मुजराने जिमके हुक्म की न रानी से अपील बज़ूर  
आला हजरत मलिक मुअज़्ज़ल पेदा कियागये हो—

और ( फरीतैन से से किसी की दरख्वास्त पर ) ऐसी हिदायतें सादिर करै जो कि उसके इजरा के वास्ते जरूरी हों और जिस अदालत से कि वह हुक्म इस तौर पर भेजा जाये वह उसका इजरा उसी के मुताबिक उस तरीक़ से और वमूजिव उन शरायत के करै जो कि उसकी इन्तिदाई डिगरियों के इजरा से मुतअल्लिक हैं—

- ( ३ ) जब किसी ऐसे हुक्मकी रूसे कोई जर नक़द जिसके दिलाने के लिये उसमें सिक्का गुरबिजा इज़लिस्तान लिखा गया हो हिन्दुस्तान में वाजिबुल्अदा हो तो जर नक़द मजकूर का हिसाब वमूजिव उस निर्ल मुस्तअमला वक्त के किया जायेगा जो साहब सेक्रेट्री आफस्टेट हिन्द इजलास कौंसल ने वइत्ति-फ़ाक़ रायसाहवान लार्ड कमिश्नर खजाना शाही वंगरज तस्फिया मामिलात खजाना माथैन गवर्नमेन्ट इज़लिस्तान और गवर्नमेन्ट हिन्द के बरीजें सदूर हुक्म मजकूर मुक़रर कर रक्खा हो—

१६—जो अदालत कि हुक्म मसदरह आला हज़रत मलिकमुअज़्ज़म दफ़ा ६११ इजराके हुक्मका अपील | इजलास कौंसल का इजरा करै उसका हुक्म दरवाब उस इजरा के लायक़ अपील उसी तौर पर और वपावन्दी उन्हीं क़वा-अद के होगा जैसे कि उसी अदालत की डिगरियों के इजरा की बावत उस अदालत के अदक़ाम हैं—

## आर्डर ४६

### इस्तिस्वाव

१—अगर क़व्ल या वरवक्त समाअत किसी मुक़दमा या अपीलके कि दफ़ा ६१७ इस्तिस्वाव बहत का- जिसमें डिगरीका अपील न होसके या दरअस्नाय इजरा वनी वहज़र हार्बोर्ट | किसी ऐसी डिगरीके कोई वहस क़ानूनी या ऐसे रवाज की जो क़ानूनका हुक्म रखताहो पैदाहो और अदालत मुजबिज मुक़दमा या अपील को या इजराकुनिन्दा डिगरी को शुबहा मान्लहो तो



अदालत मजाज होगी कि खुद अपनी मर्जी से या वक्तू दरख्वास्त अहदुल्-फरीकैन के वाकियात मुकदमा की कैफियत और वह अम्र जिसकी वायत शुबहाहो तजवीज करके मय अपनी रायके जो उस अम्रकी वायतहो इन्फिसाल के लिये अदालत हाईकोर्ट में इस्तिस्वावन् मुरसिल करै-

दफा ६१८

२-वावूद इस्तिस्वाव मजकूराके अदालत को इस्तिथार होगा कि अदालत डिगरी तादिर करमकी है फैसला हाईकोर्ट की पाबन्दी की शर्तपर फरिवाई मुकदमा की मुलतवी करै या जारी रखै और जो कुछ फैसला अदालत हाईकोर्ट का निस्वत उस अम्र के जिसकी वायत इस्तिस्वाव किया गयाहो करार पाये उसकी पाबन्दी की शर्त पर डिगरी या हुक्म सादिर करै लेकिन जिस मुकदमा में ऐसा इस्तिस्वाव हुआहो उसमें ता वमूल नकल तजवीज अदालत हाईकोर्ट के जो इस्तिस्वावपर सादिरहो कोई डिगरी या हुक्म जारी नहीं किया जायेगा-

दफा ६१९

३-हाईकोर्ट को लाजिमहै कि उन उजरात की समाप्त करके जो तजवीज हाईकोर्ट मु- फरीकैन हाजिर होकर पेश करना चाहैं तजवीज उस रमिल कीजायेगी और अम्र की करै जिसकी निस्वत इस्तिस्वाव किया गया उसी के मुताबिक मुक- हो और अपनी तजवीज की नकल बदरतखत साद्व दमा फैसल होगा रजिस्टरार के उस अदालत में मुरसिल फर्माये जिसने इस्तिस्वाव कियाहो और उस अदालत को लाजिम होगा इन्दुल् वमूल नकल मजकूरा हाईकोर्ट के तजवीज के मुताबिक मुकदमा को फैसलकै-

दफा ६२०

४-जो कुछ खर्चा ववजह इस्तिस्वाव वगरज तजवीज अदान खर्चा ववजह इस्ति- हाईकोर्टके पड़ाहो वह मुकदमा के खर्चा का जुज्व मा साजव हाईकोर्ट का जायगा-

दफा ६२१

५-जब कोई मुकदमा क्रायडा ( ? ) के वमजिव हाईकोर्ट में बढ़स्ति गिनियन तर्फीत डि- सवावन् भेजाजाये तो हाईकोर्ट को इस्तिथार है डि- गरी मन्दरे जगजा मुकदमा को तरमीम के लिये नापस भेजे और डिगरी तर्फीत हाईकोर्ट या हुक्म की तर्फीत या तरमीम या तरदीद करने जो अदालत इस्तिस्वावमुबिन्दा ने उस मुकदमा में सादिर कियाहो जियमें इस्तिस्वाव की जखन पटिगई और जो कुछ हुक्म मुताबिक न भक्ते सादिर करै -

६-अगर किसी वक्त कबल तजवीज अदालत को जिसमें कोई ना-दफा ६४६ इख्तियार इस्तिस्वाव हाईकोर्ट निस्वत इख्तियार अदालत मतालिवा जात खफीफा लिश रुजूअ कीगई हो यह शुबहाहो कि आया नालिश ( अलिफ ) मजकूर लायक समाअत अदालत मतालिवाजात खफीफाहै या नहीं तो अदालत मजाजहोगी कि अदालत हाईकोर्ट में मिसिल मये कैफियत वजूह शुबहा दरदाव नौदयत नालिश मजकूर के मुरसिलकरै-

( २ ) मिसिल और कैफियत पहुंचने पर अदालत हाईकोर्ट हुक्म सादिर करसक्ती है कि यातो अदालत नालिश की कार्रवाई अमल में लाये या अर्जीदावा को वापस करै कि वह किसी दूसरी अदालत में दाखिल किया जाये जो जरिये हुक्म हाईकोर्ट उस नालिश की समाअत करने की मजाज ठहराई जाये-

७-( १ ) अगर अदालत जिलअको मालूम हो कि उसके मातहतकी दफा ६४६ इख्तियार अदालत जिलअ निस्वत मुरसिल करने वास्ते नजरसानी उस कार्रवाई के जिसमें गलती दरदाव इख्तियार समाअत मतालिवात खफीफाके हुईहो अदालत वजह गलत समझने इस अम्र के कि फलां नालिश लायक समाअत अदालत मतालिवात खफीफा है या नहीं उस इख्तियार को अमल नहीं लाई है जो कानूनन उसको हासिल है या उस इख्तियार को अमल में लाई है जो उसको हासिल नहीं है तो अदालत जिलअ मजाज होगी और अगर कोई फरीक दरद्वारतदे तो उसको लाजिम होगा कि अदालत हाईकोर्ट में मिसिल मजकूर मय कैफियत वजूह इस अम्रके समझने के कि अदालत मातहतकी राय निस्वत नौदयत नालिशके गलतहै मुरसिलकरै-

( २ ) मिसिल और कैफियत पहुंचनेपर अदालत हाईकोर्ट मजकूर मजाज होगी कि जो हुक्म मुनासिव समझै सादिरकरै-

( ३ ) निस्वत कार्रवाई मावाद डिगरीके उस मुकद्दामें जो अजरुय कायदा हाजा अदालत हाईकोर्ट में मुरसिल कियागयाहो अदालत हाईकोर्टको इख्तियार होगा कि वनजर हालात मुकद्दमा जो हुक्म करीन् इन्साफ और मुनासिव समझै सादिरकरै-

( ४ ) अदालत मातहत अदालत जिलअको लाजिम होगा कि उन्

हुक्मकी तापीलकरै जो अदालत ज़िलअ वावत किसी मिसिल  
या इत्तिलाके वास्ते इगाराज कायदा हाजाके सादिरकरै—

## आर्टिकल ४७

### तजवीजसानी

दफा ६२३

१-( १ ) जो शख्स अपनी हुकमतली समझै—

दरखास्त तजवीज  
सानी

( अलिफ ) किसी डिगरी या हुक्म से जिसका अपील जायज है मगर  
उसका अपील हिनोज दायर न हुआ हो—या

( बे ) किसी डिगरी या हुक्म से जिसका अपील जायज नहीं  
है—या

( जीम ) किसी फैसला से जो अदालत मनालिवा सक्तीफाके इस्ति-  
सावपर सादिर हुआ हो—

और जो कुछ वजह दर्याफ्त होने किसी अम्र या शहादत जदीद  
और अहमके जो वावजूदह सई करारवाकईके ववक्त सादिरहोने उस डिगरी  
या हुक्मके उसको मालूम न थी याकि वह उसको पेश न करसक्ता था या  
वजह किसी गलती या सहोके जो बिल वदाहत मिसिल से साबित  
होना हो या किसी और वजह काफीसे तजवीजसानी उस डिगरी या हुक्म  
की चाहतारो जो उसके खिलाफ मुराद सादिर हुआ हो तो उसको इम्ति-  
वारहै कि उस अदालतमें जिसने डिगरी या हुक्म सादिर किया हो तज-  
वीजसानीकी दरखास्तकरै—

( २ ) जो फरीक कि किसी डिगरी या हुक्मकी नाराजी से अपील  
न करै वह वावजूद दायर होने अपील मिनजानिव किमी और  
फरीकके तजवीजसानी की दरखास्त करसक्ता है बजुज उस  
सरतके उजर मुन्दजें अपील नायल और अपीलांत दोनों में  
यनसां मुतमदिको या जव कि वह सम्पादित हो और मदालत

अपील में उस मुकदमाको जिसमें कि दरखास्त तजवीजसानी की करता है पेश करसक्ताहो—

२—दरखास्त तजवीजसानी किसी ऐसी डिगरी या हुक्मके जो किसी दफा ६२  
दरखास्त तजवीज | अदालत गैर अदालत हाईकोर्ट से सादिर हुआहो किसी  
सानी कितके पास दी | विनापर गैर उसके जो वजह दरियाफ्त होने ऐसे  
जायेगी | अथवा या शहादत जदीद या अहमकेहो जो कायदा १  
में मजकूरहै या बरबिना किसी गलती अलफाज या हिन्दुसेके जो वादि-  
उल् नजरमें डिगरी से वाजेहहो सिर्फ वहजूर उस जजके कीजायेगी कि  
जिसने वह डिगरी या हुक्म सादिर कियाहो कि जिसकी तजवीजसानी  
कीगई लेकिन अगर उस जज ने कि जिसने डिगरी या हुक्म सादिर  
कियाहो अजरूय फिकरह ( अलिफ ) कायदा तहती ( २ ) कायदा  
( ४ ) इत्तिलानामा जारीहोने का हुक्म दियाहो तो ऐसी दरखास्त का  
तस्फिया उसका जानशीन ओहदा करसकेगा—

३—अहकाम जो दरवाब तरीका अपील करने के हैं वह तब्दील दफा ६२  
तरीका दरखास्त हाय | अलफाज तब्दील तलब दरखास्त हाय तजवीजसानी से  
तजवीजसानी | भी मुतअल्लिक होंगे—

४—( १ ) अगर अदालत को दरियाफ्त होकि तजवीजसानी की कोई दफा ६२  
किस सूरतमें दरखास्त | वजह काफी नहीं है तो वह दरखास्तको ना मंजूर करेगी—  
ना मंजूर होगी

( २ ) अगर अदालत की राय में तजवीजसानी की दरखास्त मंजूरी  
किस सूरतमें दरखा- | के लायक हो तो वह तजवीजसानी मंजूर करेगी—  
स्त मंजूर होगी

मगर शर्त यह है कि—

( अलिफ ) ऐसी दरखास्त मंजूर न होगी बगैर इसके कि पेशतर  
फरीकसानी को इत्तिला दीजाये ताकि वह हाजिर होकर  
बताईद उस डिगरी या हुक्मके जिसकी तजवीजसानी की  
दरखास्त गुजरी हो उजरात पेश करसके—और

( वे ) ऐसी दरखास्त बरबिनाय और दरियाफ्त होने अथवा  
शहादत जदीद के जिसकी निम्न सायन दयान करे कि

सायल को दरवक्त सदूर डिगरी या हुक्म मजकूर के उस  
का इल्म न था या जिसको वह पेश नहीं करसक्ता था विदून  
इसके मंजूरन की जायेगी कि बयान मजकूर का सबूत कबी हो-

दना ६२७

५-अगर वह जज या कई जज या उनमें से कोई एक जज जिसने  
दरख्वास्त तजवीज  
गली बहुर उक्त अ-  
दस्त के जिल्मे दो  
या ज्यादा जज हो  
कि वह डिगरी या हुक्म सादिर किया हो जिसकी तज-  
वीजसानी की दरख्वास्त की जाय वरवक्त गुजरने  
दरख्वास्त तजवीजसानी के अदालत में कारफरमां हो  
और बसबब गैरहाजिरी या और किसी बजह के सबाल  
के गुजरने से छः महीने बादतक इस बात से ममनूअ न हो कि डिगरी  
या हुक्म पर जिसकी निस्वत दरख्वास्त हो गौर करे तो उस जज या  
उन जजों को या उनमें से किसी जज को इस्तिथार होगा कि दरख्वास्त  
की समाप्त करे और अदालत के किसी दूसरे जज या जजों को इस्ति-  
थार न होगा कि उसकी समाप्त करें-

दना ६२८

६-( १ ) अगर दरख्वास्त तजवीजसानी की समाप्त एकसे ज्यादा  
जज करें और दोनों जानिय रायमसावी हो तो वह दर-  
ख्वास्त मजूर की जायेगी

२-अगर दरखास्त तजवीजसानी बबजह अदम इहजार सायल के के ना मंजूर हुई हो तो सायल को इस्तिथार है कि इस मजमून की दरखास्त दे कि दरखास्त ना मंजूरशुदः को बाज बनम्बर साविक कायम करने का हुक्म हो और अगर हस्य इतमीनान अदालत साबित हो कि जिस वक्त दरखास्त मजकूर वास्ते समाअत के पुकारीगई थी सायल किसी बजह काफी के वायस हाजिर होनेसे उतअजुर था तो अदालत यह हुक्म सादिर करेगी कि दरखास्त मजकूर बपादन्दी ऐमी कयूद दरवाब खर्चा के या दीगर तौरपर जो मुनासिब मालूम हों बाज बनम्बर साविक कायम कीजाय और अदालत उसकी समाअत के लिये एक तारीख मुकर्रर करेगी-

( ३ ) कोई हुक्म कायदा तहती २ के बमूजिव सादिर न किया जायेगा तावक्के कि दरखास्त की इत्तिला की तामील फरीकिसानी पर न होगईहो—

८-जब दरखास्त तजवीजसानी की मंजूर कीजाये लजिम है कि दफा ६३०

दरखास्त मजूरशुद दर्ज रजिस्टर होगी और हुक्म निस्वत समाअत मुकर्रर के

उसकी याददाश्त किताब रजिस्टर में लिखी जाय और अदालत मजाज होगी कि फौरन् मुकदमा की समाअत मुकर्रर में मसरूफ हो या निस्वत समाअत मुकर्रर के जो हुक्म मुनासिब समझे सादिर करे—

९-कोई दरखास्त वास्ते तजवीज सानी ऐसे हुक्म के जो किसी दफा ६०६ इम्तिनाअ बाज दरखास्तों का दरखास्त तजवीजसानी पर हुआ हो या वास्ते तजवीज सानी ऐसी डिगरी या हुक्म के जो सीगा तजवीजसानी में सादिर हुआ हो मंजूर न होगी—

फिकरह अख्बार

## आर्डर ४८

### सुतफरिक्काल

१-( १ ) हर हुक्मनामा जो इस मजमूआ की रु से जारी कियाजाये दफा ६३

तामील हुक्मनामा व सर्क फरीक जारी हुनिदा

उसकी तामील वसर्क उस फरीक के कीजायेगी जिस की दरखास्त पर वह जारी हुआथा उस मुरत में कि अदालत और निहज की हिदायत करे—

( २ ) रसूम अदालत वावत तामील मजकूरके जारी होने से पहले तामीलका खर्चा | अन्दर मीयाद मुजविझा अदालत वसूल करली जायेगी—

दफा ६४

२—तमाम अहकाम और इत्तिलानाम जात और दस्तावेजात जो इस इत्तिलानामा या हुकम | मजमूआके मुतादिक किसी शाख्सपर तामील करने या तहरीरी की तामील क्यों उसको देने या उसपर तामील करने मंजूरहों उसीतरह कर होगी | तामील किये जायेंगे जिसतरह हस्व मरकूमावाला सम्मन की तामील होनी चाहिये—

दफा ६४४

३—वह नमूनजात जो इपन्डिक्स में मुन्दर्ज हैं मये उस कदर तगय्युर इस्तेमाल नमूनजात | और तबहुलके जो हर मुकदमाके हालातके मुनासिबहो मुन्दर्ज इपन्डिक्स - उन इगाराजके लिये मुस्तअमल किये जायेंगे जो उनमें वयान की गई हैं—

## आर्डर ४६

अदालत हाथ हार्दकोर्ट लुकरता हरब सनदशाही

इस्तिस्नाय निस्वत अदालत हाईकोर्ट मुकर्ररा सनदशाहीके वह कवायद महदूद होंगे या उसका असर उन कवायद पर पड़ेगा जो बरबकत आगाज मजमूआ हाजा निस्वत कलमबन्दी शहादत या तहरीर तजवीज या अहकाम अदालत हाईकोर्ट मुकर्ररा सनदशाहीके जारीहों—

३—यह कवायद मुफस्सिल जैल किसी अदालत हाईकोर्ट मुकर्ररा हस्ब दफा ६३८ तअल्लुक कवायद सनदशाही से जब कि वह अपने इस्तियारात मामूली या गैरमामूली समाअत इब्तिदाई सीशा दीवानी नाफिज करतीहो मुतअल्लिक न होंगे—यानी

( १ ) कायदा १०—और कायदा ११—फिक्करह ( वे ) व ( जीम )  
आर्डर ७

( २ ) कायदा ३—आर्डर १०

( ३ ) कायदा ४—आर्डर १६

( ४ ) कायदा ५ व ६ व ८ व ९ व १० व ११ व १३ व १४ व १५ व १६ ( जहांतक तरीका लेने शहादत से मुतअल्लिकहै )  
आर्डर १८—और

( ५ ) कायदा—१—लगायत ८—आर्डर २०—और

( ६ ) कायदा ७—आर्डर ३३ ( जहांतक याददारत लिखने से मुतअल्लिकहै ) और कायदा—३५—आर्डर ४१ हाईकोर्ट मजकूर से मुतअल्लिक न होगा जब कि वह इस्तियारात अपील नाफिज करतीहो—

## आर्डर ५०

अदालत मतालियाजातरफा मुफस्सिल

अदालत मता-  
लिवा जान ख-  
कीशा मुशरिसल

१—अहकाम मुतरहे जैल उन अदालतों से मुतल्लिक न होंगे जो अजरख कानून मतालिया जात सफीफा सन् १८८७ ई० कायम की गई हों और न उन अदालतों ने जोकि इम्नि-

जदीद  
मुफ्त ६ नम  
१८८७ ई०



यारात अदालत मतालिया जात खफीफा हस्व कानून मजकूर अमल मे लायें—यानी

( अलिफ ) उस कदर हिस्सा जमीया हाजा का जो मुतअल्लिक हो—

( १ ) ऐसे मुकदमा से जो समाअत अदालत खफीफा से मुस्तस्ना हों या ऐसे मुकदमात की इजराय डिगरी से—

( २ ) इजराय डिगरी निस्वत जायदाद गैर-मन्कूला या निस्वत हक्क शरीक जायदाद शिराकत से—

( ३ ) करारनाद अमूर तनकीह तलव से—और

( वे ) मुफसिलै जैल कवायद व आर्डर यानी—

आर्डर २ कायदा १—( तरतीब मुकदमा )

आर्डर १० कायदा ३ ( इजहार फरीकैन मुकदमा )

आर्डर १५ ( वइस्तिस्नाय उस कदर जुजव कायदा ४ जो निस्वत फौरन् सुनाने फैसला के है )

आर्डर १८ कवायद ५ लगायत १२ ( शहादत )

आर्डर ४१ लगायत ४५ ( अपील )

आर्डर ४७ कवायद २ व ३ व ५ व ६ व ७ ( तजवीजमानी )

आर्डर ५१

## आर्डर ५१

अदालत मतालिया जात खफीफा वलाद प्रेसीडेंसी

जरीद

१-वइस्तिस्नाय हुक्म कायदा २२ व २३—आर्डर ५ व कवायद ४

व ७—आर्डर २१—और कायदा ४—आर्डर २६ अदा-

लत मतालिया जात खफीफा वलाद प्रेसीडेंसी सन

१८८२ ई० के वकमीमा उस अदालत खफीफा के

मुकदमात और कार्रवाई मे मुतअल्लिक न होगा जोकि वलाद कलकत्ता व गदरास और बम्बई मे कायम है—

# जमीमा अव्वल

नमूना जात

इपन्डिक्स ( अलिफ )

प्रीडिंग

( १ ) उनवान मुकद्दमा

बअदालत

( अलिफ वे ) ( यहां वलिदयत कौम व पेशा वगैरह और जाय सकूनत लिखना चाहिये )....मुद्दै

( जीम दाल ) ( यहां वलिदयत कौम व पेशा वगैरह और जाय सकूनत लिखना चाहिये )....मुद्दाअलेह

२ कैकियत फरीकैन वमुकद्दमात खास

सेक्रेटरी आफ स्टेट वहादुर हिंद वइजलास कौंसल ऐडवोकेट जनरल  
वहादुर मुक़ाम

कलक्टर ज़िलअ

स्टेट

( अलिफ वे ) कम्पनी लिमिटेड जिसका रजिस्ट्रीशुदः दफ़तर  
वमुक़ाम है

( अलिफ वे ) पब्लिक अफ़सर ( जीम दाल ) कम्पनी का

( अलिफ वे ) ( मय वलिदयत कौम व पेशा व सकूनत ) अजजानिव  
अपने और जुम्ला दीगर कर्ज़ख़्वाहान ( जीम दाल ) मुतवफ़फी ( मय  
वलिदयत कौम व पेशा व सकूनत ) के

( अलिफ वे ) ( मय वलिदयत कौम व पेशा व सकूनत ) अज जानिव  
अपने और दीगर काविज़ान डेश्वर के जिनको कम्पनी लिमिटेड  
ने जारी किया,

अफीशल रिसीवर

( अलिफ वे ) नावालिग ( मय बलिदयत व सकूनत बगैरह ) वजरिये  
( जीम दाल ) ( या कोर्ट आफ वाईस ) अपने रफीक के

( अलिफ वे ) ( मय बलिदयत व सकूनत बगैरह ) फातिरुल्लमजल या  
मुख्त वजरिये ( जीम दाल ) अपने रफीक के

( अलिफ वे ) कोठी जो शराकती कारोवार वमुकाम करती है

( अलिफ वे ) ( मय बलिदयत व सकूनत बगैरह ) वजरिये ( जीम दाल )

( मय बलिदयत व सकूनत बगैरह ) अपने अटरनी वाजाग्रा के

( अलिफ वे ) ( मय बलिदयत व सकूनत बगैरह ) शरीत ठाकुर

( अलिफ वे ) ( मय बलिदयत व सकूनत बगैरह ) वसी ( जीम दाल )

मुतवफ्फा का

( अलिफ वे ) ( मय बलिदयत व सकूनत बगैरह ) वारिस ( जीम दाल )

मुतवफ्फा का

## ( ३ ) अरायज़ दावा

### तस्वर १

### बायत रुपया के जो कर्ज दिया गया

( अलिफ वे ) मुद्दै मजमूर हस्म जैल अर्ज करता है

१-वतारीस माह सन् मुद्दै ने मुद्माअलेह को मुव-  
लिग कर्ज दिये जो वतारीस फलां वाजियुल अदा थे-

२-मुद्माअलेह ने फर मजमूर नहीं अदा किया बहुज मुवलिग  
के जो वतारीस माह सन् दिये—

[ अगर मुद्दै किसी कानून तमादी से मुकदमा के मुस्तस्ना होने का  
मुस्तदई हो तो बयान करें ]

३-मुद्दै तारीस माह सन् से ततारीस माह सन्  
नावालिग ( या फातिरुल्लमजल या )

४-( यहां लिखना चाहिये कि बिनाय मुन्वाक्षियत कब पैदा हुई और  
यह कि अदालत को मुकदमा में इम्तिyार शामिल है )

५-नालिगन से मुकदमा नालिग की वगैरह इम्तिyार अदालत  
किया है और वगैरह कोर्टपीस गया है—

सन १९०८ ई० ] मजमूआ जायदादीवानी ।

६-यह कि मुद्दई दावेदार मुबलिंग-  
के तारीख माह सन् से है—

का यम सूद फीसदी

## नम्बर २

बाबत रुपया के जो जायद दिया गया  
( उनवान )

- ( अलिफ वे ) मुद्दई मजकूर हस्ब जैल अर्ज करता है—  
१-बतारीख माह सन् मुद्दई सिलाखचांदी की  
वहिसाव आना फीतोला चांदी खालिस के खरीदने पर और  
मुद्दआअलेह उसके बेचने पर राजी हुआ था )  
२-मुद्दईने सिलाख मजकूर मुसम्मै ( हे वाव ) से जचवाई और उस  
की उजरत मुद्दआअलेहने अदाकी और ( हे वाव ) मजकूरने जाहिरकिया  
कि उन सिलाखों में से हरएक १५०० तोला खालिस चांदीकी है चुनांच  
मुद्दईने मुद्दआअलेहको मुबलिंग उसकी बाबत अदाकिया,  
३-हरएक उन सिलाखों में से सिर्फ १२०० तोला खालिस चांदी  
की निकली और जब मुद्दईने रुपया दिया तो वह यह बात नहीं जानताथा,  
४-मुद्दआअलेहने वह रुपया जोकि उसको जायद दिया गया नहीं वा-  
पस कियाहै,  
( मजमून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर १-और टाढरसी मतलूबा  
लिखना चाहिये )

## नम्बर ३

बाबत मालके जो कीमत मुअय्यनपर बेचा गया  
और हवाले किया गया

( उनवान )

- ( अलिफ वे ) मुद्दई मजकूर हस्ब जैल अर्ज करता है—  
१-बतारीख माह सन् ( हे वाव ) ने

हाथ एक सौ बौरे आटेके ( या माल मुन्दर्जा फैहरिस्त मुन्सलका या मुतफरिंक माल ) बेचा और हवाले किया,

२-मुद्आअलेहने मुबलिग वावत माल मजकूर वतारीख हवा-  
लगी ( या वतारीख माह सन् किसी दिन कबल गुजरने  
अर्जी दावे के ) अदा करनेका इकरार कियाथा,

३-ज़र मजकूर उसने नहीं अदा कियाहै,

४-वतारीख माह सन् ( हे वाव ) फौत होगया और  
अपने अखीरी वसीयतनामाके ज़रिये से अपने भाई याने मुद्ईको अपना  
वसी मुक्कररकिया,

( मजमून फिरह ४ व ५ नमूना नम्बर १-लिखना चाहिये )

७-मुद्ई वमन्सव वसी ( हे वाव ) दावा करताहै,

( दादरसी मतलूवा )

## नम्बर ४

वावत मालके जो कीमत मुनासिवपर फरोख्त  
और हवाले कियागया

( उनवान )

( अलिफ बे ) मुद्ई मजकूर हस्व ज़ैल अर्ज करताहै—

१-वतारीख माह सन् मुद्ईने ( मुतफरिंक असवाव  
खानादागी ) मुद्आअलेहके हाथ फरोख्त और हवाले किया लेकिन उसकी  
कीमतके बावम कुछ सरीह करार व मदार नहीं हुआ था,

२-असवाव मजकूरकी कीमत मुनासिव मुबलिग थी,

३-मुद्आअलेहने ज़र मजकूर नहीं अदाकिया,

( मजमून फिरह ४ व ५ नमूना नम्बर १-और दादरसी मतलूव  
लिखना चाहिये )

## नम्बर ५

बाबत अशियायके जोकि मुद्दआअलेह की  
दरखास्तसे बनाई गई और उसने नहीं लीं

( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्दई मजकूर हस्व जैल अर्ज करताहै—

१-यह कि बतारीख माह सन् ( हे वाव ) ने मुद्दई से यह इकरारकिया कि मुद्दई उसके वास्ते ( छः मेज और पचास कुर-सियां ) बनादे और बरवक्त हवाले करने इन चीजोंके ( हे वाव ) मज-कूर उनकी क़ीमत मुवालिग अदाकरै,

२-यह कि मुद्दईने वह चीजै बनाकर बतारीख माह सन् ( हे वाव ) मजकूर से बयानकिया कि वह चीजै तयारहैं लेलो और उस वक्त से हवाले करनेपर आमादह और राजी है—

३-यह कि ( हे वाव ) मजकूरने उन अशियायको नहीं लिया और न उनकी क़ीमत अदाकी,

( मजमून फिक्तरह ४ व ५ नमूना नम्बर १-और दादरसी मतलूवा लिखना चाहिये )

## नम्बर ६

बाबत कमी नीलामसानी ( उस मालके जोकि  
नीलाम में फ़रोख्त कियागया था )

( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्दई मजकूर हस्व जैल अर्ज करताहै—

१-बतारीख माह सन् मुद्दईने कुछ ( माल मुतफ-रिंक ) इस शर्त से नीलामपर चढाया था कि तमाम माल जिसको खरी-दार नीलामके बाद ( १० रोजके अन्दर क़ीमत अदाकरके न उठा ले

जाये वह उसकी तरफसे फिर नीलाम किया जाये और इस शर्तसे मुद्आ-अलेह मुत्तिला था,

२-मुद्आअलेहने ( चीनीके वर्तनोंकी एक टोकरी ) नीलाममें बक्रीमत मुवलिंग खरीदकी,

३-मुद्ई मुद्आअलेहको टोकरी मजकूर वरोज नीलाम और उसके बाद दस दिनतक हवाले करनेपर आमादह और राजी था,

४-मुद्आअलेह ( १०-दिनके अन्दर ) बाद नीलामके या मिनवाद उसके खरीद कियेहुये मालको नहीं ले गया और न उसकी कीमत अदाकी,

५-वतारीख माह सन् मुद्ईने ( वर्तनों की टोकरी मजकूर ) मुद्आअलेहकी तरफ से मुवलिंग पर द्वारा नीलामकी,

६-खर्च नीलामसानीका बतादा हुआ,

७-मुद्आअलेहने वह कमी जो इस निहजपर बाकैहुई यानी मुवलिंग नहीं अदाकिये,

( मजमून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर १-और दादरसी मतलूवा लिखना चाहिये )

## नम्बर ७

वाकत अदाय खिदमत वउजरत मुनारिव

( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्ई मजकूर हस्व जैल अर्ज करताहै—

१-मावेन तारीख माह सन् वतारीख माह सन् मुद्ईने ( चन्द्र तसवीरात और नक़्शःमान और अश्काल ) मुद्आअलेहके वास्ते उसकी दरखास्त ने बनाई लेकिन कोई इत्तहार सरीह इस बाब में नहीं हुआ कि उस कामके वास्ते कितना खर्चा दिया जायेगा,

२-वह काम बराजिबी मालियनी मुनलिंग का था,

३-मुद्आअलेह ने ज़र मजकूर को नहीं ज़दा किया है,

( मजमून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर १-और दादरसी मतलूवा लिखना चाहिये )

## नम्बर ८

### बाबत उजरत खिदमत और मसालह बक्रीमत वाजिबी

( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्ई मजकूर हस्य जैल अर्ज करता है—

१—वतारीख माह सन् वमुक्ताम मुद्ईने एक मकान  
( जो नम्बर से मुक्ताम में मशहूर है ) मुद्आअलेह के वास्ते  
और उसकी दरख्वास्त पर तामीर किया और उसका मसालह भी अपने  
पास-से लगाया लेकिन कोई तसरीह मआहिदा इस बाब में नहीं हुआ  
था कि उस काम और उस मसालह की क्या क्रीमत अदा की जायेगी,

२—वह काम और मसालह अजरूय मालियत वाजिब मुव-  
लिग का था,

३—मुद्आअलेह ने जर मजकूर नहीं अदा किया है—

( मजमून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर १—और दादरसी  
मतलूबा लिखना चाहिये )

## नम्बर ९

### बाबत इस्तेमाल और दरखल के

( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्ई मजकूर वसी ( काफ ये ) मुतवफ्फकी का हस्य  
जैल अर्ज करता है—

१—मुद्आअलेह ने ( मकान नम्बर वाकै सड़क वइ-  
जाजत ( काफ ये ) मजकूर के तारीख माह सन् से  
तातारीख माह सन् अपने दरखल में रक्खा और मकान मजकूर  
में रहने के लिये दरवाज अदाय किराया कुछ इकरार नहीं हुआथा,

२—किराया मकान मजकूरका बाबत मुद्त मजकूर के बकयास माकूल  
वतादाद मुवलिग होनाहै,



- ३-मुद्आअलेह ने मुवलिग मजकूर अदा नहीं किया,  
 ( मजमून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर १-लिखना चाहिये )  
 ४-मुद्ई ववजह होने वसी ( काफ ये ) के दावा करता है—  
 ( दादरसी मतलूवा )

## नम्बर १०

### वरविनाय फ़ैसले सालसी

( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्ई मजकूर हस्व ज़ैल अर्ज करता है—

१-वतारीख माह सन् मुद्ई और मुद्आअलेह :  
 निजाअ दरवाव ( मतालिया मुद्ई वावत कीमत दस कुप्पे तेलके जिर  
 के अदाय करने से मुद्आअलेह ने इन्कार किया ) वाकै हुई और तर-  
 फ़ैन उस निजाअ को वगरज होने फ़ैसला सालसी मारफत ( हे वाव )  
 और ( जे हे ) के उनके सिपुर्द करने के लिये वजरिये तहरीर राज़ी हुये  
 और असल दस्तावेज उसके साथ मुन्सलिक है,

२-वतारीख माह सन् सालसान मजकूर ने यह  
 फ़ैसला किया कि मुद्आअलेह ( मुद्ई को मुवलिग अदा करै )

३-मुद्आअलेह ने जर मजकूर नहीं अदा किया है,  
 ( मजमून फिकरह ४ व ५ नमूना नंबर १-और दादरसी  
 मतलूवा लिखना चाहिये )

## नम्बर ११

### वरविनाय फ़ैसले मुल्क गैर

( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्ई मजकूर हस्व ज़ैल अर्ज करता है—

१-वतारीख माह सन् यमुत्ताम रियामन या  
 ( यमलदारी ) में अदालत रियामन या ( यमलदारी )

सन् १९०८ ई० ] मजमूआ जान्ता दीवानी । ३०५

मजकूरने वमुकदमै मुद्दई और मुद्दआअलेह जो अदालत मजकूरमें दायर था यह फैसला वाजान्ता सादिरकिया कि मुद्दआअलेह मुवलिग मुद्दई को मये सूद तारीख मजकूर से अदाकरे,

२-मुद्दआअलेहने जर मजकूर नहीं अदा कियाहै,  
( मजमून फिक्करह ४ व ५ नमूना नम्बर १-और दादरसी मतलूबा लिखना चाहिये )

### नम्बर १२

नालिश बनाम जामिनान अदाय किराया मकान  
( उनवान )

( अलिफ बे ) मुद्दई मजकूर हस्व जैल अर्ज करताहै—

१-वतारीख माह सन् ( हे वाव ) ने मुद्दई से वावत मुद्दत सालके ( मकान नम्बर वाकै सड़क ( मुवलिग सालानापर जोकि ( माहाना ) वाजिवुन्अदा था किरायापर लिया,

२-मुद्दआअलेहने बयवज इसके कि मकान मजकूर ( हे वाव ) को किरायापर दियागया उस किरायाके माह वमाह अदा करने के लिये अपनी जमानतकी—

३-किराया वावत माह सन् तादादी मुवलिग अदा नहीं कियागया ( अगर अजरुय शरायत इकरारनामा जमानतके जामिन को इत्तिलादिहीकी जरूरतहो तो यह इवारत अदा करनी चाहिये,

४-वतारीख माह सन् मुद्दईने मुद्दआअलेह को किराया न अदा होनेकी इत्तिलादी और उसके अदा करनेका तक्काजायकिया,

५-मुद्दआअलेहने जर मजकूर नहीं अदा कियाहै—

( मजमून फिक्करह ४ व ५ नमूना नम्बर १-और दादरसी मतलूबा लिखना चाहिये )

### नम्बर १३

वावत खिलाफवरजी मआहिदा खरीद अराजी  
( उनवान )

( अलिफ बे ) मुद्दई मजकूर हस्व जैल अर्ज करता है—

१-वतारीख माह सन् मावैन मुद्ई और मुद्आमलेह के एक इकरारनामा हुआ और असल दस्तावेज उसके साथ मुन्सलिक है ( या वतारीख माह सन् मुद्ई और मुद्आमलेह ने बाहम यह इकरार किया कि मुद्ई मुद्आमलेह के हाथ ४० बीघा अराजी बाकै मौजा वयवज मुन्सलिग वयकरै और मुद्आमलेह उसको मुद्ई से खरीद करै )

२-यह कि वतारीख माह सन् वमुक्काम मुद्ई ने जो उस वक्त मालिक विला शिरकत जायदाद मजकूर का था ( और जायदाद मजकूर तमाम वारसे वरीथी जैसा कि मुद्आमलेह पर जाहिर कर दिया गया था ) मुद्आमलेह के ख्वरू एक वसीक्का कामिल इन्तिकाल जायदाद मजकूर का इस शर्तपर देनेके लिये पेश किया कि मुद्आमलेह मुन्सलिग करारयाफता अदाकरै ( या मुद्आमलेह के नाम वजरिये वसीकै कामिल के उसका इन्तिकाल करने के लिये मुस्तैद और राजी था और अवतक मुस्तैद और राजी है ) और इस अम्र के वास्ते उस से कहाथा—

३-यह कि मुद्आमलेह ने वह रुपया नहीं अदा किया—

( मजसून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर १—और दारसी मतलूवा लिखना चाहिये )

## नम्बर १४

बावत न हवालेकरने फगोस्त कियेहुये माल के  
( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्ई मजकूर दस्व जैल मज करता है—

१-वतारीख माह सन् मुद्ई और मुद्आमलेह ने बाहम यह इकरार किया कि मुद्आमलेह ( वतारीख माह सन् ) मुद्ई को ( एकसौ बीघे आटे के ) हवाले करे और मुद्ई वयवज हवालगी माल के उसकी बावत मुन्सलिग अदाकरे,

२-वतारीख ( मजकूर ) मुद्ई वयवज हवालगी माल मजकूर पर मजकूर मुद्आमलेह को अदा करने पर आमादह और राजी था और उसके लेंलेने को उमने करा था—

३—मुद्दआअलेह ने माल मजकूर नहीं हवाले किया जिसके सबब से मुद्दई उस मुनाफा से महरूम रहा जोकि माल मजकूर की हवालगी से उसको होता—

( मजमून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर १—और दादरसी मतलूबा लिखना चाहिये )

## नम्बर १५

### नालिश बाबत बेजा मौकूफी के

( उनवान )

( अलिफ बे ) मुद्दई मजकूर हस्व जैल अर्ज करता है—

१—वतारीख माह सन् माबैन मुद्दई और मुद्दआअलेह बाहम यह इक्करारहुआ कि मुद्दई वतौर ( मुहासिव या पेशदस्तके या जैसी कि सूरतहो ) मुद्दआअलेहकी मुलाजिमतकरै और मुद्दआअलेह खिदमत मजकूरपर मुद्दईको वास्ते मुद्दत ( एक साल ) के मुलाजिम रखै और उसको मुवलिग तनख्वाह माहाना दियाकरै—

२—वतारीख माह सन् मुद्दई मुद्दआअलेहकी नौकरी पर गया और जबसे नौकरहै और ता इस्तिताम साल मजकूर हिनोज उसी खिदमतपर मामूर रहने के लिये आमदह और राजी है और इस अन्नकी मुद्दआअलेहको हपेशा इत्तिला रहीहै—

३—वतारीख माह सन् मुद्दआअलेहने बेजा तौरपर मुद्दईको मौकूफ करदिया और खिदमत मजकूरके अदा करने से मना किया और नौकरीकी तनख्वाह देने से भी इन्कार किया—

( मजमून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर १—और दादरसी मतलूबा लिखना चाहिये )

## नम्बर १६

### खिलाफवरजी मआहिदा मुलाजिमत

( उनवान )

( अलिफ बे ) मुद्दई मजकूर हस्व जैल अर्ज करताहै—

१—वतारीख माह सन् माबैन मुद्दई और मुद्दआअ-

लेहके यह इकरार हुआ कि मुद्ई तनख्वाह सालाना मुत्रलिश पर मुद्आअलेहको मुलाजिम रखे और मुद्आअलेह वतौर ( नकाशके ) वास्ते मुद्दत ( एक साल ) के मुद्ईका मुलाजिम रहे—

२-मुद्ई हमेशा इकरार मजकूरकी तामील अपनी तर्फसे करनेपर आ. मादह और राजी है और ( वतारीख माह सन् इस बात का इजहार किया— )

३-मुद्आअलेह ( मुद्ई की मुलाजिमत में वतारीख मजकूर दा हुआ लेकिन मिनवाद वतारीख माह सन् ) उसने की हस्व मजकूरैवाला खिदमत करने से इन्कार किया—

( मजमून फिक्करह ४ व ५ नमूना नम्बर १-और दादरसी मतलूवा लिखना चाहिये )

## नम्बर १७

नालिश वनाम मेमार के खराब काम बनाने की वावंत

( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्ई मजकूर हस्व जेल अर्ज करताहै—

१-वतारीख माह सन् मुद्ई और मुद्आअलेह के दरमियान बाहम एक इकरारनामा लिखागया और असल दन्तावेज इसके साथ मुन्त—

मून लिमाजाये )

( मुद्ईने

ही त— जगयत करार वा-

)

मजकूर

इ

मजकूर एरे तौर

मज

कि

दादरसी

## नम्बर १८

नालिश बाबत इकरारनामा दियानतदारी

क्लार्क यानी मुहर्रिरके

( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्ई मजकूर हस्व जैल अर्ज करता है—

१-वतारीख माह सन् मुद्ईने ( हे वाव ) को वतौर क्लार्क के नौकर रक्खा—

२-इसके यवजमें वतारीख माह सन् मुद्आअलेह ने मुद्ई से इकरारकिया कि अगर ( हे वाव ) मजकूर अपना काम ओहदा क्लार्क का दियानत से न करे और तमाम रुपयाकी बाबत या कर्जाकी दस्तावेजात या और माल जोकि मुद्ईके इस्तेमालके वास्ते उसको मिले उसका हिसाब न देसके तो जो कुछ कि मुद्ईको उसकी वजहसे नुकसान हो उसकी बाबत मुद्आअलेह उस कदर रुपया जो मुश्लिगी से ज्यादा न हो अदाकरे—

[ या २-इसके यवज में मुद्आअलेहने वजरिये इकरारनामा मुवरिख तारीख मजकूर मुद्ई से वकरारदाद जुर्माना मुवलिग के इकरार कियाथा इस शर्तपर कि अगर ( हे वाव ) अपनी खिदमात ओहदा क्लार्क और खजानचीगरी मुद्ईको वदियानत अंजामदे और तमाम रुपया और दस्तावेजात कर्जा या और जायदाद जो किसी वक्त उसके कब्जामें मुद्ई के वास्ते अमानतन् आये उस सबका हिसाब वाजिबी मुद्ई को दे तो इकरारनामा मजकूर फिस्ख होजायेगा— ]

( या २-इसके यवजमें उसी तारीखको मुद्आअलेहने मुद्ईको एक इकरारनामा लिखदिया और असल दस्तावेज इसके साथ मुन्सलिकहे )

३-मावैन तारीख माह सन् और तारीख माह सन् ( हे वाव ) ने रुपया और माल मालिपती मुवलिग वास्ते इस्तेमाल मुद्ई के वसूल किया और इसका हिसाब उसने मुद्ई को नहीं दिया है और वह अबतक याफ्तनी और गैर मुबद्दा है—

( मजमून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर ( १ ) और दादग्नी मतलूब लिखना चाहिये )

## नम्बर १९

### नालिश किरायादार की बनाम मालिक मकान वाबत ख़ास हर्जा के ( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्दै मजकूर हस्व जैल अर्ज करता है—

१-वतारीख माह सन् मुद्दामाअलेह ने वजरिये रजिस्टरी शुदः दस्तावेज के मुद्दै को ( मकान नम्बर वाकै सड़क ) वास्ते साल के मीयाद के किराया पर दिया और मुद्दै से यह इक्लार किया कि मुद्दै और उसके कायम मुकाम जायज विला तम्मर्ज मीयाद मजकूर तक उस पर काबिज रहें—

२-तमाम शरायत का ईफा किया गया और तमाम अमूर वक्म में आये जो वास्ते इस्तहकाक मुद्दै के जरूरी थे—

३-वतारीख माह सन् अन्दर मीयाद मजकूर के ( हे वाव ) मालिक जायज मकान मजकूर ने मुद्दै को जवाज़्ज उस मकान से खारिज किया और अबतक उसका कब्ज़ा मुद्दै को नहीं देता है—

४-इस सबब से मुद्दै वमकान मजकूर पेशा दर्जीका कारोबार करने से ममनूअ हुआ और वहां से निकल जाने में बतदाद मुवलिग खर्च पड़ा और ( जे हे ) और ( तो थे ) का काम वहां से निकल जाने के सबब उसके हाथ से जातारहा—

( मजमून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर ( ? ) और दादरसी मतलूबा लिखना चाहिये )

## नम्बर २०

### नालिश बरविनाय इक्लारनामा बरियत ( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्दै मजकूर हस्व जैल अर्ज करता है—

१-वतारीख माह सन् मुद्दै और मुद्दामाअलेह ने जो कोठी ( अलिफ वे ) और ( जीम दान ) के नाम से बराकत न्यो-  
पार करने थे बराकत फिम्न करके बादम यह कलम किया कि मुद्दामा-

अलेह तमाम माल शराकती लेकर अपने पास रखे और कोठी का तमाम कर्जा अदाकरै और जो दआवी कि मुद्ई पर उस कोठी के मक्क-रूज होनेकी वावत कायम कियेजायें उन सब से मुद्ई को वरी करदे—

२—यह कि मुद्ई से तमाम शरायत जो बमूजिव इकरारनामा मजकूर उसकी तरफ से पूरी होनी चाहिये थीं करार बाकई पूरी कीं—

३—यह कि बतारीख माह सन् ( एक फैसला वनाम मुद्ई और मुद्आअलेह के ( हे वाव ) ने अदालत हाईकोर्ट मुक्ताम से वावत कर्जा के जोकि ( हे वाव ) मजकूर को कोठी मजबूर से याफ्तनी था हासिल किया और तारीख माह सन् ) मुद्ई ने मुबलिंग ( वावत मतालिवै मजकूर ) अदा किया—

४—यह कि मुबलिंग मजकूर मुद्आअलेह ने मुद्ई को नहीं अदा किया—  
( मजमून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर ( १ ) और दादरसी मतलूबा लिखना चाहिये )

## नम्बर २१

### फरेबन् लेना माल का

( उन्वान )

( अलिफ बे ) मुद्ई मजकूर हस्व जैल अर्ज करता है—

१—बतारीख माह सन् मुद्आअलेह ने मुद्ई को कुछ माल मुद्आअलेह के हाथ बेचनेपर रागिव करने के लिये मुद्ई से यह जाहिर किया कि ( मुद्आअलेह मुस्ततीअ है और अपने तमाम दयून से ज्यादा मुबलिंग की अस्तताअत रखता है—

२—मुद्ई इस वजह से ( खुश्कमाल ) मालियती मुबलिंग मुद्आअलेह के हाथ बेचने ( और हवाले करने ) पर रागिव हुआ—

३—उसके वयानात मजकूर गलत थे ( या दरोगाई की तफ्सील वयान करनी चाहिये और उस वक्त मुद्आअलेह खुद जानता था कि उसका वयान गलत है—

४—यह कि मुद्आअलेह ने माल मजकूर की वावत रुपया नहीं अदा किया है ( या अगर माल न हवाले किया गया हो तो ) यह कि मुद्ई पर माल



मजकूर की तयारी और उसको जहाज पर लादने और उसको फिर वापस लेनेमें खर्च वकदर मुबलिया आयद हुआ—

( मजमून फिरह ४ व ५ नमूना नम्बर ( १ ) और दादरसी मतलूबा लिखना चाहिये )

## नम्बर २२

फरेबन् दूसरे शख्सको माल कर्ज दिलाना

( उनवान )

( अलिफ बे ) मुद्ई मजकूर हस्ब जैल अर्ज करता है—

१-वतारीख माह सन् मुद्आअलेह ने मुद्ई से वयान किया कि ( हे वाव ) मुस्ततीय और खूब मुअतवर शख्स हैं और अपने तमाम दयूनसे ज़्यादा मालियत वकदर मुबलिया के रखता है ( या यह कि ( हे वाव ) इस वक्त एक ओहदा जिम्मेदारीका और अच्छे हैसियत रखता है और उसको कर्ज माल देने में कुछ अन्देशा नहीं है )

२-इस वजह से मुद्ई ( हे वाव ) के हाथ ( चावल ) मालियती मुबलिया का ( महीने के बादपर ) बेचने पर राजी हुआ—

३-वयानात मजकूर दरोग थे और मुद्आअलेह खुद उस दरोग से उस वक्त शक्तिफ था और वह वयानात वनियत मुग़ालता और फरेब दिही मुद्ई के कियेगये थे ( या मुद्ई को धोखा देने और जरूर पहुंचाने के वास्ते )

४-( हे वाव ) ने ( वावत माल मजकूर के बाद गुज़रने बाटा मरूम वाला के रुपया नहीं अदा किया ) या वावत उम चावल के रुपया नहीं दिया और मुद्ई उस मालको बिलकुल हाथ से खो बैठा—

( मजमून फिरह ४ व ५ नमूना नम्बर ( १ ) और दादरसी मतलूबा लिखना चाहिये )

## नम्बर २३

मुद्ई की ज़मीन के नीचे पानी नजिस

करने की वावत

( उनवान )

( अलिफ बे ) मुद्ई मजकूर हस्ब जैल अर्ज करता है—

१-मुद्दई जमीन मौसूमा वाकै पर और एक कुयें पर जो उसमें है और उस पानी पर जो उस कुयेंमें है क्राविज है और हमेशा उस मुद्दतक जिसका जिक्र जैलमें किया जायगा क्राविज रहा है और उस कुयें और उसके पानी को इस्तेमाल में लाने और उससे फायदा उठाने का मुस्तहक है और नीज इस बातका इस्तहकाक रखता है कि चंद सोते और चश्मे-पानी के जो इस कुयें में बहकर आते हैं और गिरते हैं वह इस तौर से बहकर आयें और गिरें कि पानी गन्दा या नजिस न हो—

२-वतारीख माह सन् मुद्दआअलेह ने जो बेजातौर पर उस कुयें और उसके पानी को और उन चश्मों और सोतों को जो उस कुयें में गिरते हैं गन्दा और नजिस किया—

३-बवजह मरकूमैवाला पानी कुयें मजकूर का नापाक होकर खर्च खानादारी और दीगर अगराज, ज़रूरी के लायक नहीं रहा और मुद्दई और उसका खानदान उस कुयें और उसके पानीके इस्तेमाल और इस्तफादह से महरूम रहै—

( मजमून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर ( १ ) और दादरसी मतलूबा लिखना चाहिये )

## नम्बर २४

बाबत जारी रखने कारखाना तकलीफ़दिहके

( उनवान )

( अलिफ बे )-मुद्दई मजकूर हस्व जैल अर्ज करताहै—

१-मुद्दई अराज़ी मौसूमा वाकै पर क्राविज है और उस तमाम अर्सी से जो इस अर्जी नालिश में बाद अर्जी मरकूम है क्राविज रहा है—

२-तारीख माह सन् से मुद्दआअलेहके कारखाना फलजात से धुवां और दीगर दुखारात बद्बूदार और मुजिर तन्दुरुस्ती और मवाद फासिद वकसरत निकलता है और अराज़ी मजकूरपर फैलता है और वहांकी हवामें मिलकर उसको बिगाड़ता है और अराज़ीकी सतह पर बैठकर जमनाता है—

३-उस वजह से दरख्त और भाड़ी और नवातात और फस्त ज़रा-अत मुद्ईको जो उस ज़मीनपर होती है मुजरत पहुंचती है उनकी मालि-यतमें कर्माहुई और मवेशी और जानवर मुद्ईके जो उस ज़मीनपर रहते हैं वह उससे बीमार होगये और चन्द उनमें से मसमूम होकर मरगये-

४-वजह मरकूमैवाला मुद्ई अराज़ी मजकूर में अपने मवेशी और भेड़ों को नहीं चरासका और अगर ऐसा न होता तो चरासक्ता और मुद्ईको अपने मवेशी और भेड़ियां और पेशै ज़राअतके जानवर वहां से लेजानेपड़े और अराज़ी मजकूरके उस फ़ायदावरूखा और सेहतआवर इस्तेमाल और देखलसे जोकि दरसूरत न होने वजह मजकूरके हासिल होता महरूम रहा—

( मजमून फ़िक्करह ४ व ५ नमूना नम्बर ( १ ) और दादरसी मतलूबा लिखना चाहिये )

## नम्बर २५

### बावत मज्जाहियत इस्तहकाक राह

( उनवान )

( अलिफ बे ) मुद्ई मजकूर हस्य जैन अर्ज करताहै-

१-मुद्ई काविज ( एक मकान बाकै मौज़ा का ) हैं और उस वक्त जिसका ज़िक्र बाद अर्जी मरकूमहै काविज था-

२-मुद्ई मुरतहक था कि सालके हरमौसिम में खुद और वहमराही अपने नौकरों के ( मये सवारीके या पयादो पा ) अपने मकान मजकूरमे फलां खेतके ऊपर होकर एक शरैआमतक जायाकरे और फिर शरैआम से उसी खेतपर होकर अपने मकानको लौटआये—

३-बनारीख माह सन मुदमामलेहने उस राहको बनारीक नाजायज़ रोकदिया उम वजह ने मुद्ई ( सवारीपर या पैदल या किसी तरह ) आगद व रफ्त नहीं करनका ( और उम वक्त से उस राह को बनारीक नाजायज़ रोक रक्खाहै )

४-अगर कोई खान नुस्वान हुआहो तो यह बयान कियाजाये,

( मजमून फ़िक्करह ४ व ५ नमूना नम्बर ( १ ) और दादरसी मतलूबा लिखना चाहिये )

## नम्बर २६

### बाबत मज्जाहिमत शारैआम

( उनवान )

१-मुद्आअलेहने बेजा तौरपर एक खाई खोदकर मिट्टी और पत्थर शारै आमपर जो से तकहै इस तौरपर जमाकर रक्खाहै कि रास्ता बन्द होगया—

२-इस वजहसे मुद्ई उस वक़्त कि जायज़ तौरपर उस रास्तासे गुज़रता था उस मिट्टी और पत्थरके ढेरपर ( या खाईमें ) गिरपड़ा और मुद्ई का हाथ टूटगया और बड़ी तकलीफ़ उठाई और मुद्दततक अपना काम न करसका और मज्जालिजा करनेका सर्फ़ भी आंयद हालहुआ—

( मजमून फ़िकरह ४ व ५ नमूना नम्बर ( १ ) और दादरसी मतलूबा लिखना चाहिये )

## नम्बर २७

### बाबत फेरने पानीकी नालीके

( उनवान )

( अलिफ़ बे ) मुद्ई मजकूर हस्व ज़ैल अर्ज़ करताहै—

१-मुद्ई काकिज़ एक पनचकी वाकै चश्मा मअरूफ़ व वाकै मौज़ा ज़िलअ काहै और उस वक़्त जोकि बाद अर्ज़ी मरकूम है काविज़ था—

२-वजह उस कब्ज़ाके मुद्ई मुस्तहक़ इसका था कि चश्मा मजकूर उस पनचकीके चलाने के लिये बहती रहै—

३-बतारीख़ माह सन् मुद्आअलेहने उस चश्माका किनारा काटकर उसके पानीको बतरीक़ नाजायज़ इसतरह फेरदिया कि मुद्ईकी पनचकी की तरफ़ पानी कम आया—

४-इस वजह से मुद्ई फी योम वोरे ग़ल्ला योमिया से ज़्यादा नहीं पीससक्ताहै हालांकि उस पानी के फेरदेने से पहल्ले मुद्ई फी योम वोरे ग़ल्ला पीससक्ता था—

( मजमून फिक्करह ४ व ५ नमूना नम्बर ( १ ) और दादरसी  
मतलूबा लिखना चाहिये )

## नम्बर २८

बावत मज्जाहिमत इस्तहकाक लेने पानीके  
आवपाशी के लिये

( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्ई मजकूर हस्व जैल अर्ज करताहै—

१—मुद्ई अराजी वाकै का काविजहै और उस वक्त जिसका  
जिक्र बाद अर्जों मरकूमहै काविजया और इस्तहकाक रखताथा कि फलां  
चश्माके पानीका हिस्सा अराजी मजकूरकी आवपाशीके लिये ले और  
मुस्तअमल करै—

२—वतारीख माह सन् मुद्आअलेहने उस पानीके  
हिस्से मजकूरको हस्व मरकूमै वाला लेने और उसका इस्तेमाल करने से  
मुद्ईको इसतरह बाज रक्खा कि चश्माको वतरीक नाजायज रोककर दूसरी  
तरफ फेरदिया—

( मजमून फिक्करह ४ व ५ नमूना नम्बर ( १ ) और दादरसी  
मतलूबा लिखना चाहिये )

## नम्बर २९

बावत जररके जो रेलकी सड़कपर मुद्आअलेह  
की गफलत से हुआ

( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्ई मजकूर हस्व जैल अर्ज करताहै—

१—वतारीख माह सन् मुद्आअलेहम् मामूलन मुमा-  
दियोंको बगरीन रेल मार्दन मुत्ताम और मुत्ताम के पहुंचाया  
कामे थे—

२—वतारीख मजकूर मुद्ई रेल मार्दगर मुद्आअलेहकी गादियों में  
से जो गड़क मजकूरपर था एक गादीपर नवान था—

३-दर असनाय सफर मजकूर वगुक्राम [ या क़रीब स्टेशन  
के या मावैन स्टेशन और स्टेशन ] रेलवे मजकूर पर वजह  
गफलत और नाक़र्दहकारी मुलाज़िमान मुद्दआअलेहुम् के अंजन लड़गया  
जिसके सबब से मुद्दई को बहुत ज़रूर पहुंचा ( मुद्दई की टांग टूट गई सिर  
में ज़ख्म लगा और जो कुछ कि खास नुक्सान पहुंचा हो बयान किया  
जाये ) और मआलिजा में सर्फ पड़ा और हमेशा के वास्ते अपने रोज़-  
गार साबिका याने ( फरोख्त के लिये फेरी करने से ) मज़ूर होगया-

( मजमूने फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर ( १ ) और दादरसी

मतलूबा लिखना चाहिये )

( या इस तौरपर २-वतारीख मजकूर मुद्दआअलेहुम् के नौक़रों ने  
ऐसी गफलत और बेतमीज़ी से अंजन और गाड़ियों को जो उससे लगी  
हुई थीं मुद्दआअलेहुम् की रेलवेपर जिस से पार होकर मुद्दई उस वक़्त  
वतौर जायज़ गुज़रता था हांका और चलाया कि वह अंजन और गाड़ी  
मुद्दई की तरफ आई और मुद्दई को ठक्कर लगी जिससे इलाआखिरह  
जैसा कि फिकरह ३ में है )

## नम्बर ३०

नालिश बाबत उस नुक्सान के जो बेइहति-  
याती के साथ हांकने से हो

( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्दई मजकूर हस्ब ज़ैल अर्ज़ करता है—

१-मुद्दई मोची है और अपना कारखाना मुक्राम में चलाता है  
और मुद्दआअलेह मुक्राम का सौदागर है—

२-तारीख माह सन् को मुद्दई शहर कलकत्ता में  
दोपहर पर तीन वजने के अमल पर चौरंगी की सड़क होकर जानिव  
दक्खिन पयादह पा जारहाया नागुज़ीर मुद्दई को सड़क मौसूमा मिडलटन  
स्ट्रीटके इस पारसे उस पारजाना पड़ा उस सड़क और सड़क चौरंगी का  
तक्रातअ जवायाय कायमा पर होता है—जव मुद्दई सड़क के इस पार से उस  
पार जाता था और कबल इसके कि वह उस पार के रास्ता गुज़र गुमा-

फिरान पयादह तक पहुंचने पाये एक गाड़ी मुद्आअलेह की जिस में दो घोड़े जुते थे और जो वसिपुर्दगी और इहतिमाम मुलाजिमान मुद्आअलेहके चलती थी दफअतन और वराह गफलत और विला होशियार करने राहगीरोंके तुन्दी और तेजी खतरनाक के साथ मिडलटन स्ट्रीटसे निकल कर सड़क चौरंगी में दाखिल होगई गाड़ी मजकूर की वमसे मुद्ई को चोटलगी और उसके सदमा से मुद्ई गिरपड़ा और घोड़ों के पांवों के तले बहुत रौंदागया—

३-उस सदमा और गिरपड़ने और रौंदेजाने से मुद्ई का बायां हाथ टूटगया और उसके पहलुवों और पीठपर रगड़ पहुंची और जिस्म के अन्दर भी सदमा पहुंचा और उन जरवात और सदमात के सबब से मुद्ई चार महीनेतक बीमार और बहुत तकलीफ उठातारहा और अपना कारोवार न करसका और डाक्टरों के इकुलखिदमत और दीगर इखराजात में मुद्ई का बहुत रुपया सर्फहुआ और उसके कारोवार और मुनाफा में बहुत कमीहुई—

( मजमून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर ( १ ) और दादरसी मतलूबा लिखना चाहिये )

## नम्बर ३१

वावत नालिश फौजदारी सुबनीवर अदावत

( उनवात )

( अलिफ वे ) मुद्ई मजकूर हस्व जैले अर्ज करता है—

१-वनारीरत माह सन मुद्आअलेह ने वारन्ट गिरफ्तारी का ( मजिस्ट्रेट शहर मजकूर या जो कुछ कि सूरत हो ) रं चडल्जाम जारी कराया जिसपर मुद्ई गिरफ्तार कियागया और तामीयाद ( दिन या रंटा कैदगहा और उसको हाजिरजामिन बनादाद सुबलित अपनी रिहाई हासिल करने के लिये देनी पड़ी—

२-यह शम्र मुद्आअलेह ने अदावतन और विला वजह माफूल य करीन कियात क किया—

३-वनारीरत माह सन मजिस्ट्रेट मौसफ ने मुद्आअलेह की नालिश को रारिज करके मुद्ई को बरी किया—

४-यह कि बहुत अशखास ने जिनके नाम मुद्ई को मालूम नहीं हैं गिरफ्तारी का हाल सुनकर और मुद्ई को मुजरिम खयाल करके मुद्ई के साथ कारोवार करना छोड़ दिया है या वजह इसी गिरफ्तारी के मुद्ई का ओहदा क्लार्क या मोहर्रिर का वमुलाज़िमत ( हे वाव ) जाता रहा या यह कि वजह मरकूम वाला मुद्ई के जिस्म की तकलीफ और दिलको रंज पहुंचा और अपना कारोवार करने से माजूर रहा और उस के एतवार में भी खलल पड़ा और कैद मज़कूरसे रिहाई हासिल करने और उस नालिश की जवाबदिही में खर्चभी करना पड़ा—

( मजमून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर ( १ ) और दादरसी मतलूबा लिखना चाहिये )

## नम्बर ३२

बावत माल मन्कूला जो बेजा तौरपर  
लेलिया गयाहो

( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्ई मजकूर हस्व जैल अर्ज़ करता है—

१-वतारीख माह सन् मुद्ई मालिक ( या वह वा-  
क्रियात वयान कियेजायें जिनसे इस्तहकाक कब्ज़ा ज़ाहिर होताहो माल  
मुन्दजै फेहरिस्त मुन्सलकः का ( या तप्पसील माल वयान कीजाये ) था  
जिसकी तरखमीनी मालियत मुवलिंग है—

२-तारीख मजकूरसे तारीख शुरू होने नालिश तक मुद्आअलेह  
ने माल मजकूर को मुद्ई के कब्ज़ा से रोकरवखा है—

३-नालिश शुरू होनेसे पहले यानी वतारीख माह सन्  
मुद्ई ने माल मजकूर को मुद्आअलेह से तब्ब किया मगर उस  
ने मालको हवाले करने से इन्कार करदिया—

( मजमून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर ( १ ) लिखना चाहिये )

५-बिनावरान मुद्ई दादरखाह है—

अव्वल-वास्ते दिला पाने कब्ज़ा माल मजकूर के या जिस हाल में



कि उस मालका कब्जा न मिल सकै तो वास्ते दिला पाने मुवलिग के,  
 दोम—बावत मुवलिग हर्जा रोक रखने माल मजकूर के,  
 ( फेहरिस्त )

### नम्बर ३३

नालिश बनाम उस शाख्स के जो फरेबन् खरी-  
 दार हुआ और बनाम उसके जिसके नाम  
 उसने मुन्तकिल किया दरहाले कि मुन्त-  
 किल अलेह को इस फरेबका इल्मथा

( उनवान )

( अलिफ बे ) मुद्ई मजकूर हस्व ज़ैल अर्ज़ करता है—

१-वतरीख माह सन् मुद्आअलेह ( जीम दाल )  
 ने मुद्ई को इस बातकी रगवत दिलाने के लिये कि कुछ माल उसने  
 हाथ फरोख्त किया जाये मुद्ई से यह जाहिर किया कि ( मुद्आअलेह  
 मुन्तनीअ और अपने तमाम दयून से ज़्यादा मुवलिग का मरू-  
 दूर रखता है )—

२-मुद्ई इस वजह से ( जीम दाल ) के हाथ ( एक सौ सन्दूक चाय  
 के ) जिनकी तत्तमीनी मालियत बतादाद मुवलिग हैं बेचने  
 और दयाले कग्देने पर रागिय हुआ—

३-वयानात मजकूर दरोन थे और उस वक़्त ( जीम दाल ) उनही  
 दरोन जानता था ( या वयानात मजकूर के वक़्त ( जीम दाल ) मजकूर  
 दिवालिया था और अपना दिवालिया होना जानता था—)

४ ( जीम दाल ) ने भिन्नाद वह माल विला हीमत ( ने वाद )  
 मुद्आअलेह के हाथ ( या जिसको उस वयान के भूड होनेका इल्म था  
 मुन्तकिल किया—

२-माल मजकूरको रोक रखनेकी बाबत हर्जा मुबलिंग दिला-  
याजाये-

## नम्बर ३४

वास्ते मंसूखी मआहिदाके जो गलती की  
बिनायपर हुआहो

( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्ई मजकूर हस्व जैल अर्ज करताहै-

१-वतारीख माह सन् मुद्आअलेहने मुद्ई से वयान  
किया कि एक कितअ अराजी अजां मुद्आअलेह बाकै मुकाम ( दस्त  
बीघाहै- )

२-मुद्ईको उस बातसे उस अराजीको बकौमत मुबलिंग खरी-  
दने के लिये बई एतवार रगवत दिलाईगई कि वह वयान रास्तथा और  
मुद्ईने एक इक्करारनामा खरीदारीपर दस्तखत करदिये असल इसके साथ  
मुन्सलिकहै लेकिन वह अराजी मुद्ईके नाम मुन्तकिल नहीं कीगई-

३-वतारीख माह सन् मुद्ईने मुद्आअलेहको मुब-  
लिंग मिनजुम्ला जर समनके अदा करदे-

४-कितअ अराजी मजकूर फिल् हकीकत सिर्फ ( पांच बीघा ) है-

( मजमून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर ( १ ) लिखना चाहिये )

७-बिनावरान मुद्ई दादख्वाहहै कि—

अव्वल-मुबलिंग मयेसूद तारीख माह सन् से  
दिला दियेजायें-

दोम-इक्करारनामै मजकूर वापस होकर मन्सूख कियाजाये—

## नम्बर ३५

बमुराद सदूर हुक्म सुमानिअत जियान

( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्ई मजकूर हस्व जैल अर्ज करताहै-

१-मुद्ई मालिक कामिल ( यहां जायदादको वयान करना चाहिये )  
का है—

२-मुद्आअलेह उसपर वमजिव पट्टाके काबिजहै जिसको मुद्ईने दियाहै

३-मुद्आअलेहने विला रजामन्दी मुद्ई ( चन्द कीमती दरख्त काट डाले हैं और चन्द और दरख्त बेचने के लिये काट डालनेकी-धमकी देताहै )—

( मजमून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर ( १ ) लिखना चाहिये )

बिनावरान मुद्ई दादख्वाह होकर मुस्तदई है कि मुद्आअलेह उस अराजी में कोई और जियान करने-या जियान करनेकी इजाजत देने से वज़ारिये हुक्म इस्तिनाईके बाज़ रक्खाजाये—

( जायज़है कि मआविज़ा जर नब्रद दिलानेकी दरख्वास्त भी कीजाये )

## नम्बर ३६

नालिश अश्र तकलीफ़दिहके मौकूफ करने के लिये

( उनवान )

हुकम दिया जाये कि आयन्दह अम्र तकलीफदिह के इत्तिकावसे या इत्तिकावकी इजाजत देने से बाजरहै—

## नम्बर ३७

### नालिश बाबत अम्र बायस तकलीफ आम

१—मुद्आअलेहने शारअ आम बाकै पर जो स्ट्रीटके नामसे मश-हूरहै वतरीक नाजायज मिट्टी और पत्थर इस तौरपर जमाकर रखेहैं कि अवामका रास्ता उस सड़कपर बन्द होगया और अगर ऐसा करने से बाज न रक्खा जायगा तो फेल 'नाजायज मजकूरको जारी रखने और बार बार करनेकी धमकी देताहै और इरादह रखताहै—

२—नालिश हाजा रुजूअ करनेकी बाबत मुद्इयानने ऐडवोकेट जनरल ( या कलक्टर या दीगर अफसर जो इस शरजके लिये मुकर्रर हुआहो ) की इजाजत हासिल करली—

( मजसून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर ( १ ) लिखना चाहिये )

बिनाबरान मुद्ई दादखाहहै—

अव्वल—कि हुकम बनाम मुद्आअलेह सादिरहो कि मुद्आअलेहको कोई हक सड़क मजकूरपर अवामका रास्ता रोकनेका नहीं है—

दोम—और एक हुकम इम्तिनाई बनाम मुद्आअलेह सादिरहो कि मुद्आअलेह शारअ आम मजकूरपर अवामके रास्तामें मज्राहिमतसे बाज रक्खाजाये और उसको हुकमहो कि जो मिट्टी और पत्थर उसने वतरीक नाजायज जमा कियेहैं उनको उठा लेजाये—

## नम्बर ३८

### पानीकी नालीके फेर देने की सुमानिअतका

### हुकम हासिल करने के लिये

( उनवान )

( अलिफ थे ) मुद्ई मजकूर हस्य जैल अर्ज करताहै—

( मिस्तल नमूना नम्बर २७ )

मुद्ई दादखाह होकर मुस्तदईहै कि मुद्आअलेह वज्रिये हुकम इम्तिनाईके उस पानीको फेर देने से बाज रक्खाजाये—

## नम्बर ३९

बसुराह दिला पाने माल मन्कूलाके जिसके तलफ  
कर डालने की मुद्आअलेह धमकी देता है  
और बगरज सद्दूर हुक्म इम्तिनाई के

( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्ई मज़कूर हस्व ज़ैल अर्ज करता है—

१—मुद्ई ( अपने दादाकी एक शहीहका जिसे एक नामी मुसव्विरने तयार किया था ) मालिक है और उन तमाम औकातपर जिनका ज़ैलमें ज़िक्र है मालिक था और उस शहीहकी कोई नक़ल मौजूद नहीं ( या कोई ऐसा अन्न दयान किया जाये जिससे ज़ाहिर हो कि माल इस किस्मका है कि वसर्क ज़र फिर मयस्सर नहीं होसक्ता )—

२—वतारीख माह सन् मुद्ईने उसको वहिफ़ाजत रखने के लिये मुद्आअलेहके पास रखवा दिया था—

३—वतारीख माह सन् मुद्ईने वह शहीह मुद्आअलेहसे मांगी और जो खर्च बाजिरी उसको वहिफ़ाजत रखनेका हुआ हो उसके अदा करनेको कहा—

४—मुद्ईको उसके हवाले कर देने से मुद्आअलेहने इन्कार किया और धमकी देता है कि अगर उसके हवाले करनेको कहा जायेगा तो वह उसे ज़िपा डालेगा या बेच डालेगा या काट डालेगा या उनको जरूर पट्टे बांधेगा—

## नम्बर ४०

### नालिश अमीन वमुराद तस्फिया बैनुल् मुतनाज्जईन

( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्दई मजकूर हस्ब जैल अर्ज करता है—

१—कबल उन दआवी के जिनका जिक्र जैलमें किया जाता है ( जे हे ) ने मुद्दई के पास ( यहां तंसरीह मालकी करनी चाहिये ) बहिफाजत रखने के लिये ) अमानत रक्खा था—

२—मुद्दआअलेह ( जीम दाल ) उसी माल का दावा करता है ( इस वयानसे-कि ( जे हे ) ने वह माल उसके नाम मुन्तकिल करदिया है—

३—मुद्दआअलेह ( हे वाव ) उसी माल पर ( वज़रिये तहरीर इस मज-मून के कि ( जे हे ) ने वह माल उसके नाम मुन्तकिल किया है ) दावेदार है—

४—मुद्दई इन दोनों मुद्दआअलेहों के हकूक के हालसे नावाक़िफ है—

५—मुद्दई को उस मालपर सिवाय मतालिवा व खर्चा के कुछ दावा नहीं है और उस माल को उन अशखास के हाथ जिनकी अदालत दिदायत करै हवाले करदेने पर आमादह और राज़ी है—

६—मुद्दआअलेहुम् में से किसी के साथ साज़िश करके यह नालिश रूजूअ नहीं की गई है—

( मजमून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर ( १ ) लिखना चाहिये )

६—बिनावरान मुद्दई दादख्वाह है कि—

अव्वल—वज़रिये हुक्म इम्तिनाई के मुद्दआअलेहुम् को मुमानिअत हो कि उस मालकी निस्वत मुद्दई पर कोई मुकदमा कायम न करै—

दोम—उनको हुक्महो कि उस मालियतकी निस्वत अपने अपने दावा का तस्फिया अदालतसे करालें—

सोम—किसी शाख्सको दरअस्नाय निजाअ अदालत उस मालके हा-सिल करनेकी इजाजत दीजाये—

चहारम-जब उस ( शख्स ) को माल मजकूर हवाले किया जाये तो मुद्दै वरी कर दिया जाये कि उस मालकी निस्वत मुद्दा अलेहुम् में से किसी का मवाखिज़ह मुद्दै से न रहै-

## नम्बर ४१

नालिश वसुराद और इहतिमाम सार्फत कर्ज-  
ख्याह अज जानिव खुद व दीगर कर्ज ख्याहान

( उनवान )

- ( अलिफ वे ) मुद्दै मजकूर हस्व जैल अर्ज करता है-

१-( हे वाव ) मुतवफ़की साकिन वरवक़त अपनी वफ़ातके कर्ज-  
दार मुद्दैका वक़दर मुवलिग ( यहां नौय्यत कर्जी और हाल उस  
की जमानत या किफ़ालतका अगर कुछ हो बयान करना चाहिये ) के था  
और उसकी जायदाद अवतक मक़रुज है-

२-( हे वाव ) मजकूर वतारीस या करीब तारीस के फौतहुआ  
और अपने अत्तीरी वसीयतनामा मुवलिग की रुमे ( जीम दाल ) को  
अपना वसी मुक़रर किया ( या अपनी जायदाद अमानत वगैरहमें रखी  
या विला वसीयत मरगया याने जैसी कि सूरत हो-

३-वसीयत मजकूरको ( जीम दाल ) ने साविन किया ( या चिद्वियात  
मुदतमपी तरका उसको मनाहुई है ) जैसी सूरत हो-

## नम्बर ४२

वमुराद इहतिमाम जायदाद मुतवफ़की मार्फ़त

खास मूसालहूके

( उनवान )

( नमूना ४१ को इसतौर पर बदलदो )-

( फिकरह अव्वलको मतख़ूक़-करो और फिकरह दोसे शुरूअकरो इस तरहपर कि ( हे वाव ) मुतवफ़की साकिन साविक ने वतारीख या करीब तारीख के फौतकिया और अपने अखीरी वसीयतनामा मुव-रिखे की खुसे ( जीम दाल ) को अपना वसी मुकररकिया और उस वसीयतनामाकी खुसे मुदईके-हक़में ( यहां खासशै वसीयतशुदः लिखनी चाहिये ) वसीयतकिया-

वजाय फिकरह ४ के यह इवारत कायमकरो-

मुदआअलेह ( हे वाव ) की जायदाद मन्क़लापर काविज़ है और मिन-जुम्ला दीगर अशियायके ( यहां नाम खासशै वसीयत शुदःका लिखना चाहिये ) शै मजकूरपर भी काविज़ है-

वजाय शुरूअ फिकरह ७ के यह इवारत-कायमकरो-

मुदई मुस्तदई है कि मुदआअलेहको हुक्महो कि ( यहां नाम खासशै वसीयतीका लिखा जायगा ) मजकूर मुदईके हवालेकरै या यह कि अलख

## नम्बर ४३

वास्ते इहतिमाम जायदाद मुतवफ़कीके वज़रिये

मूसालहू नज़द पानेवाले के

( उनवान )

( नमूने ४१ में इस तौरपर तब्दील करनी चाहिये )

( फिकरह अव्वल मतख़ूक़ कियाजाये और वजाय फिकरह २ के यह इवारत कायम कीजाये ( हे वाव ) मुतवफ़की साकिन साविक ने व तारीख या करीब तारीख के फौतकिया और अपने अखीरी वसी-



यतनामा मुवरिखै की रुसे ( जीम दाल ) को वसी मुकर्ररकिया और मुद्ईने नाम माल वसीयती मुवलिग छोड़ा—

फिक्करह ४ में वजाय लफ्ज कर्जाके शै वसीयत शुदः लिखनी चाहिये,

## दूसरा नमूना

( उनवान )

( हे वाव ) मुद्ई मजकूर यह अर्ज करताहै—

१—( अलिफ वै ) साकिन वाकै ने वतारीख या करीव तारीख के फौतकिया और अपने अखीरी वसीयतनामा मुवरिखै ( माह सन् ) की रुसे मुद्आअलेह और ( मीम नू ) ( जो मूसाकी हयातमें मरगया ) वसियां तरका मुकर्ररके और अपनी जायदाद मन्कूला और गैर मन्कूला अमानतन् अपने औसियाको इस गर्ज से तफवीजकी कि वह लोग जर हाय किराया या लगान और आमदनी जायदाद मजकूर मुद्ईको उसकी हयाततक देतेरहैं और मुद्ईकी वफातके बाद और दरसूरत न होने किसी ऐसे पिसर मुद्ईके जो इक्कीस वरसकी उम्रको पहुंचे या न होने किसी दुखतरके जो इक्कीस वरसकी उम्रको पहुंचे या जिसकी शादी होजाये जायदाद गैरमन्कूला अमानतन् उस शख्सके लियेरहै जो मूसाका गरिस जायजहो और जायदाद मन्कूला अमानतन् उन अशखासके लियेरहै जो मूसाके करावतदार करीवहों उस सूरतमें कि मुद्ईकी वफातके वक्त मूसा विला वसीयत मरगयाहो और कोई औलाद मुद्ईकी हस्व मजकूरैवाला वाकी न रहीहो—

२—मुद्आअलेहने वसीयतनामा ( वतारीख माह सन् ) को सावितकिया—मुद्ईकी शादी नहीं हुईहै—

३—मूसा अपनी वफातके वक्त जायदाद मन्कूला और गैरमन्कूलाका मुस्तहक था और मुद्आअलेहने जायदाद गैरमन्कूलाके जर किराया या लगानका तहसील करना शुरूअकिया और जायदाद मन्कूला को भी हासिल करलिया और मुद्आअलेहने जायदाद गैर मन्कूला में से कुछ जायदाद वै की है—

( मजमून फिक्करह ४ व ५ नमूना नम्बर ( ? ) लिखना चाहिये )

६—लिहाजा मुद्ई दावेदारहै—

( १ ) यह कि ( अलिफ वे ) की जायदाद मन्कूला और गैरमन्कूला का इहतिyाम इस अदालतमेंही और उस मुरादसे हिदायात मुनासिब जारीहों और हिसाब लियाजाये—

( २ ) ऐसी दादरसी मजीद या दीगर दादरसी कीजाये जो बलिहाज हालात मुकदमा जरूरी हो—

## नम्बर ४४

### बगरज तामील अमानत

( अलिफ वे ) मुद्दई मजकूर हस्व जैल अर्ज करता है—

१—मुद्दई मिन्जुम्ला उमनाय के एक अमीन बमूजिव एक तमलीक-नामा के है जो बतारीख या उसके करीब किसी तारीख पर बर-वक्त अज दुवाज ( हे वाव ) और ( जे हे ) यानी वालिद व दालदह मुद्-आअलेह के लिखागया ( या बमूजिव दस्तावेज इन्तिकाल जायदाद और अमवाल ( हे वाव ) के जो ( जीम दाल ) मुद्आअलेह और दीगर कर्जत्वाहान ( हे वाव ) की मुनफात के वास्ते लिखीगई )

२—( अलिफ वे ) ने अपने जिम्मेकार ( अमानत मजकूर का लिया और माल मन्कूला और गैर मन्कूला पर जो बजरिये दस्तावेज मजकूरै वाला के मुन्तकिल कियागया ) ( या माल मजकूर की आमदनी पर ) काबिज है—

३—( जीम दाल ) मजकूर दस्तावेज मजकूरै वाला के बमूजिव दावा इस्तहकाक इन्तिफाअ का रखता है—

( मजमून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर ( १ ) लिखना चाहिये )

६—मुद्दई चाहता है कि हिसाब तयाम लगान ( या किराया ) और मुनफात जायदाद गैर मन्कूला मजकूर का ( और जर समन जायदाद गैर मन्कूला या मन्कूला मजकूर का या उसके हिस्साका या जर समन जायदाद मन्कूला मजकूर या उसके हिस्साका या मुनाफा का जोकि मुद्दई को बमन्सब इन्सराम द्वार अमानत मजकूर के हुआ ) समझा दे पस मुद्दई मुस्तदई है कि अदालत खबर ( जीम दाल ) मजकूर और ऐसे दीगर अशखास के जिनको गरजहो और जिनको अदालत हिदायत करै अमानत मजकूर का हिसाब लेले और कुल जायदाद अमानती

मजकूर का इहतिमाम वास्ते मुनफात ( जीम दाल ) मुद्आअलेह और तमाम दीगर अशखास के जिनको इहतिमाम मजकूर में गरज हो अमल में लाये या ( जीम दाल ) इस अमल के अमल में न आनेकी वजह माकूल वयान करै—

( तम्बीह ) जब कि नालिश मिनजानिव शरूफ भूतमनलहू के हो तो अर्जी नालिश तब्दील अलफाज वतब्दीलतलव मिस्त अर्जीदावा मूसालहू के हो—

## नम्बर ४५

### बैदात या नीलाम

#### ( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्ई मजकूर हस्ब जैल अर्ज करता है—

१—यह कि मुद्ई अराजियात ममलूका मुद्आअलेह का मुर्तहिन है—

२—तफ्सील रेहन मजकूर की यह है—

( अलिफ ) तारीख रेहन—

( वे ) नाम राहिन और मुर्तहिन के—

( जीम ) किस कंदर रुपया रेहन पर लिया गया—

( दाल ) शरह सूद—

( हे ) जायदाद मरहूना—

( वाव ) रकम जो विलफैल देना वाजिव है—

( जे ) अगर मुद्ई ने हक किसी और से हासिल किया हो तो उन इन्तिकालात या तबलीग को मुस्तसिर लिखना चाहिये जिनके जरिये से वह दावेदार है ( अगर मुद्ई मुर्तहिन वाकब्जा हो तो यह इवारत इजाफा होना चाहिये—)

३—वतारीख माह सन् मुद्ई ने जायदाद मरहूना का कब्जा हासिल किया और तारीख मजकूर से बहसियत मुर्तहिन के हिसाब देनेके वास्ते आमादह है—

( यह मजमून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर ( १ ) लिखना चाहिये )

६—बिनावरान मुद्ई दादख्वाह है—

( १ ) कि जर याफ्तनी दिलाया जाये वरना जायदाद मरहूना

नीलाम कीजाये या मुद्दई के हकमें इसका वय कामिल करदिया जाये  
( और उस पर कब्जा दिलाया जाये )

( अगर कायदा ६-आर्डर ३४ मुतअल्लिक हो तो इवारत  
जैल इजाफा होगी )

( २ ) अगर नीलाम से उस कदर कुल रुपया जो मुद्दई को याफतनी  
है वसूल न हो तो मुद्दई को इख्तियार है कि जर बाकी की निश्चत  
डिगरी कराने की दरख्वास्त देसके—

## नम्बर ४६ इन्फिकाक रेहन ( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्दई मज़कूर हस्व जैल अर्ज करता है—

१-यह कि मुद्दई राहिन उस जायदाद का है जिसका मुद्दआअलेह  
मुर्तहिन है—

२-तफसील रेहन मज़कूर की यह है—

( अलिफ ) तारीख रेहन—

( वे ) नाम राहिन और मुर्तहिन के—

( जीम ) किस कदर रुपया रेहनपर लिया गया—

( दाल ) शरह सूद—

( हे ) जायदाद मरहूना—

( वाव ) अगर मुद्दई ने हक किसी और से हासिल किया हो तो उन  
इन्तिकालात या तदलीग को मुख्तसिर लिखना चाहिये कि जिनके  
जरिये से वह दावेदार है ( अगर मुद्दआअलेह मुर्तहिन बाक़ब्जा हो तो यह  
इवारत इजाफा होना चाहिये—

३-मुद्दआअलेह जायदाद मरहूना पर काबिज है ( या उसका जर  
लगान ( या किराया ) वसूल करता है )—

( यहाँ मज़मून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर ( १ ) लिखना चाहिये )

६-बिनावरान मुद्दई दादख्वाह है कि जायदाद मज़कूर इन्फिकाक  
रुलाले और वज़रिये तहरीर उसे वापस ले ( और उस पर कब्जा  
हासिल करे )—

## नम्बर ४७

### तामील खास ( नम्बर १ )

#### ( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्दई मजकूर हस्व जैल अर्ज करता है—

१—वज़रिये एक इक्करारनामा मुवर्रिखै तारीख माह सन् दस्तखती ( जीम दाल ) मुद्दआअलेह के उसने मुद्दई से एक जायदाद गैर मन्कूला जिसका वयान और जिक्र इक्करारनामा मजकूर में है वयवज़ मुवलिग खरीद करने (या फरोख्त करने) का इक्करार किया—

२—मुद्दई ने मुद्दआअलेह से दरख्वास्त की कि वह अपनी तरफ से उस इक्करारनामा की तकमील खास करै लेकिन उसने नहीं की—

३—मुद्दई अपनी तरफसे खास तकमील इक्करारनामा की करनेपर मुस्तैद और राजी है और इस अम्रकी इत्तिला मुद्दआअलेहको है—

( मजमून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर ( १ ) लिखना चाहिये )

६—बिनावरान मुद्दई दादख्वाह विदीं मुराद है कि अदालत मुद्दआअलेहको इक्करारनामा की तामील खास करने और उन तमाम अफआलके अमल में लानेका हुक्मदे जो कि जायदाद मजकूरपर मुद्दई को कब्ज़ा कामिल देने के लिये जरूरी है (या जायदाद मजकूरका इन्तिकाल और कब्ज़ा हासिल करने के लिये जरूरी हों) और नीज़ यह कि खर्चा उस नालिशका अदाकरै—

## नम्बर ४८

### तामील खास ( नम्बर २ )

#### ( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्दई मजकूर हस्व जैल अर्ज करता है—

१—वतारीख माह सन् साँवन मुद्दई और मुद्दआअलेहके एक इक्करारनामा लिखा गया और असल दस्तावेज़ इसके साथ मुन्सलिक है—

यह कि मुद्दआअलेह कतअन मुस्तहक जायदाद गैरमन्कूला मुतज़िकरह इक्करारनामाका था—

२-बतारीख माह सन् मुद्दईने मुवलिग मुद्दआ-अलेहको देने के लिये कहा और वयवज उसके कवाला कामिल जायदाद मजकूरका चाहा—

३-बतारीख माह सन् मुद्दईने फिर तकाजा उस इन्तिकालका किया ( या मुद्दआअलेहने मुद्दईके नाम उसका इन्तिकाल करने से इन्कार किया )—

४-मुद्दआअलेहने कोई कवाला इन्तिकाल नहीं किया—

५-मुद्दई हिनोज़ जरसमन जायदाद मजकूर मुद्दआअलेहको अदा करनेपर आमादह और राजीहै—

( मजमून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर ( १ ) लिखना चाहिये )

विनावरान मुद्दई दादख्वाह है—

अव्वल—यह कि मुद्दआअलेह वनाम मुद्दई वज़रिये कवाला कामिल जायदाद मजकूरको मुन्तकिल करदे ( मुताबिक शरायत मुन्दजै इकरार नामा मजकूर )

दोम—मुवलिग वाबत हर्जा हिनोज़ न लिखने कवाला मजकूरके दिलायेजायें—

## नम्बर ४९

### शराकत

#### ( उनवान )

( अलिफ वे ) मुद्दई मजकूर हस्व जैल अर्ज़ करताहै—

१-मुद्दई और मुद्दआअलेह ( जीम दाल ) अर्सा सालसे ( या महीने से ) बाहम वमूजिव शरायत तहरीरी दरवाव शराकत ( या वमूजिव दस्तावेज़ या इकरार ज़वानी ) कारोवार करते हैं—

२-दरवाव शराकत अनवाय अनवायके तनाज़आत और इखिलाफात मावैन मुद्दई व मुद्दआअलेह पैदाहुई जिनके सबब से उस कारोवार को इस तौरपर कि तरफैनको फायदाहो जारी रखना गुमकिन नहीं है (या मुद्दआअलेहने हस्व जैल शरायत शराकतकी खिलाफवरज़ीकी—यानी—

( १ )

( २ )

( ३ )

( मजमून फिकरह ४ व ५ नमूना नम्बर ( १ ) लिखना चाहिये )

५-बिनावरान मुद्दै दादख्वाहहै-

( १ ) यह कि शराकत फिस्ख करदीजाये-

( २ ) हिसाब कारोवार शराकतका लियाजाये-

( ३ ) एक रिसीवर मुक्क़र्र कियाजाये-

( तम्बीह )-उन नालिशतमें जो वास्ते तैकरने हिसाब व किताब शराकतकेहों इस्तदुआ मौकूफी शराकतकी न लिखीजाये लेकिन बजाय उसके एक फिकरह इस वयानसे दाखिल कियाजाये कि शराकत मौकूफ होगईहै-

## ४ वयान तहरीरी

### जवाब दावा

### जवाबदिही आम

इन्कार

मुद्दआअलेह ( फलां अम्रसे ) इन्कार करताहै-

मुद्दआअलेह ( फलां अम्रको ) तसलीम नहीं करता-

मुद्दआअलेह ( फलां अम्र ) तसलीम करता है मगर

यह कहताहै-

उजर

मुद्दआअलेह इससे इन्कार करताहै कि कोठी मुद्दआअलेह में शरीकथा—

मुद्दआअलेह इससे इन्कार करताहै कि उसने मुद्दैके साथ मआहिदा मजकूर या किसी किसमका कोई मआहिदा किया—

मुद्दआअलेह इससे इन्कार करताहै कि उसने मुद्दैके साथ हस्व वयान मुद्दै मआहिदा किया या कोई मआहिदा किया—

मुद्दआअलेह सरमायाको तसलीम करताहै मगर मुद्दैके दावाको तसलीम नहीं करता—

मुद्दआअलेह इस बातसे इन्कार करताहै कि मुद्दैने माल मुतजिकरह अर्जीदावा उसमें से कोई माल उसके हाथ फरोस्तकिया—

मीयाद समा- नालिशमें आरटिकल या आरटिकल जमीमा  
अत दोम ऐक्ट मीयाद समाअत हिन्द सन् १८७७ ई० आ-  
रिज है—

इस्तिथार स- अदालतको मुकदमा सुननेका इस्तिथार नहीं है इसवजह  
माअतमुकदमा से ( कि यहां वजह लिखना चाहिये )—

वतारीख मुद्आअलेहने एक हीरेकी अंगूठी मुद्ई  
को दी और मुद्ईने अपने दावाकी बेवाकीमें उसे कबूल  
करलिया—

दीवाला मुद्आअलेहको अदालतने दीवालिया करार दिया है—  
कबल रुजूअ नालिश हाजा अदालतने मुद्ईको दीवा-  
लिया करार दियाथा लिहाजा नालिश दायर करनेका  
हक रिसीवरको था—

नावालिगी मुद्आअलेह मआहिदह करते वज्रत नावालिग था—  
रूपयाका अ- मुद्आअलेहने कुल दावाकी बाबत ( या मुवालिग  
दालतमें दा- जुज्व जर मुतदावियोंकी बाबत या जैसी सूरतहो ) अदा-  
खिल करना लतमें मुवालिग दाखिलकिया और अर्ज करता है  
कि मुवालिग मजकूर से मुद्ईका कुल दावा ( या जुज्व  
मजकूर ) बेवाक होगया—

दस्तवरदारी वतारीख तामील मआहिदासे दस्तवरदारी की गई-  
फिस्खमआहिदा मआहिदा अजरूय इकरारनामा मावैन मुद्ई और  
मुद्आअलेह के फिस्ख होगया था—

रसजुडीकीटा मुद्ई का दावा वसवव डिगरी मुकदमा ( यहां हवाला  
देना चाहिये ) के दायर नहीं होसक्ता—

इस्टापल मुद्ई ( यहां उस वयान को लिखना चाहिये जिसकी  
बाबत इस्टापलका दावा कियाजाताहै ) की सचाई से  
इन्कार करने से ममनूअहै क्योंकि ( यहां वह वाकियात  
लिखनी चाहियें ) जिनपर यह भरोसा कियाजाताहै कि  
उनसे इस्टापल पैदा होतीहै—

बिनाय जवाब वाद दायर होने मुकदमाके यानी वतारीख ( यहां वाक्कि-  
दावा वाद यात लिखने चाहियें )—

दायर





२-मुद्ई ने वमूजिव एक मआहिदा काविल पावन्दी के असल कर्ज-  
दार को मुहलत देकर मुद्आअलेह को वरी करदिया-

## नम्बर ४

जवाबदावा नालिश वास्ते दिलापाने कर्ज के

१-मिनजुम्ला जर मुतदाविया के मुवलिग दो सौ रुपया के मुक्ताविले  
में मुद्आअलेह कीमत माल जो मुद्आअलेह ने मुद्ई के हाथ  
फरोख्त करके हवाले किया मुजरा दिलापाने का मुस्तहक है-

तफसील जैल है-

वतारीख २५ जनवरी सन् १९०७ ई० .... १५०)

वतारीख यकुम फरवरी सन् १९०७ ई० .... ५०)

मीजान २००)

२-मुद्आअलेह ने कबल नालिश बाबत कुल जर मुतदावियाके ( या  
बाबत मुवलिग रुपया जुज जर मुतदावियाके ) मुवलिग  
रुपया देने के लिये पेश किये और मुद्आअलेह ने जर मजकूर  
अदालत में दाखिल कर दिया है-

## नम्बर ५

जवाबदावा नालिशत बाबत जररके जो गफलत  
से हांकने के बायस पहुँचा

१-मुद्आअलेह इससे इन्कार करता है कि गाड़ी मुन्दर्जे अर्जीदाना  
मुद्आअलेह की गाड़ी थी और वह वसिपुर्दगी व इहतिमाम मुलाजि-  
मान मुद्आअलेह के थी-गाड़ी साकिन मुहल्ला शहर  
कलकत्ताकी थी जो गाड़ियां किराया पर चलाते हैं और जिनको  
मुद्आअलेह ने गाड़ियां और बोड़े मुहय्या करने के लिये मामूर  
किया था और जिस शख्स की सिपुर्दगी व इहतिमाम में गाड़ी  
मजकूर थी वह मजकूर का मुलाजिम था-

२-मुद्आअलेह यह तसलीम नहीं करता कि गाड़ी मजकूर मिडल-  
टन स्ट्रीट से बराह गफलत या दफतन या बिला होशियार  
करने के या हुन्दी या तेजी सतरनाक के साथ निकली-

३-मुद्आअलेह यह उज़र करता है कि माकूल इहतियात और होशियारी को काम में लानेसे मुद्ई गाड़ी मज़कूर को अपने नज़दीक आता हुआ देख सकता था और उससे टकराने से बच सकता था—

४-मुद्आअलेह बयानात मुन्दर्जे दफा ३ अर्जीदावा को तसलीम नहीं करता—

## नम्बर ६

जवाबदावा नालिशात बाबत अफ़आल बेजाके

१-अफ़आल ( या मुआमिलात ) शिकायती से इन्कार—

## नम्बर ७

जवाबदावा नालिशात बाबत रोक रखने मालके

१-माल ममलूका मुद्ई न था—

२-माल व यवज़ एकवारके रोकरखा गया था जिसका मुद्आअलेह मुस्तहक़ था तफ़सील हस्वज़ैल है—

वतारीख ३-मई सन् १६०७ ई० बाबत किराया लेजाने माल मुतदा-  
विया अज़देहली ता कलकत्ता ४५ मन बहिसाव २) फ़ी मन....६०)

## नम्बर ८

जवाबदावा नालिशात बाबत खलल

अन्दाज़ी हक़ मुसन्निफ़ी

१-मुद्ई मुसन्निफ़ ( या मुन्तक़िलअलैह बग़ैरह ) नहीं है—

२-किताब की रजिस्टरी नहीं कराई गई थी—

३-मुद्आअलेह खलल अन्दाज़ नहीं हुआ—

## नम्बर ९

जवाबदावा नालिशात बाबत खलल

अन्दाज़ी निशान तिजारतीके

१-निशान तिजारती मुद्ईका नहीं है—

२-निशान तिजारती बीना निशान तिजारती नहीं है—

३-मुद्आअलेह खलल अन्दाज़ नहीं हुआ-

## नम्बर १०

### जवाबदावा नालिशत मुतअल्लिक अमूर तकलीफ़दिह के

- १-मुद्ई के रोशनदान पुराने नहीं हैं ( या मुद्ई के दीगर हकूक से इन्कार होना चाहिये जिनको पुराना होना बयान किया गया हो-
- २-मुद्आअलेह की तामीरात मुद्ई के रोशनदानों में किसी अहम दर्जा तक खलल अन्दाज़ न होगी-
- ३-मुद्आअलेह इन्कार करताहै कि वह खुद या उसके मुलाज़िमान पानी को नजिस करते हैं ( या कोई फेल शिकायती करते हैं-) ( अगर मुद्आअलेह अफ़आल शिकायती के करनेका व वजह इस्तहकाक़ क़दामत या दीगर निहज पर दावा करताहो तो उसको यह उज़र करना चाहिये और अपने दावा की वजूह दर्ज करनी चाहिये मसलन् इस्तहकाक़ क़दामत या अतीया या जो और वजहहो-
- ४-मुद्ई ग़फ़लतका मुर्तक़िब हुआ है जिसकी तफ़सील हस्वज़ैलहै-  
सन् १८७० ई० मुद्ई की चक्की ने काम करना शुरू किया—  
सन् १८७१ ई० मुद्ई काविज़ हुआ—  
सन् १८८३ ई० अव्वल मर्तबा शिकायत की गई—
- ५-मुद्ईके दावा हर्जा के वावत मुद्आअलेह जवाबदावाके वजूह मुन्दर्जे सदर पर भरोसा करताहै और यह उज़र करताहै कि अफ़आल शिकायती से मुद्ई का कोई हर्जा नहीं हुआ ( अगर दीगर वजूह पर भरोसा कियाजाये तो उनको दर्ज करना चाहिये मसलन् तमादी वावत हर्जा साविक के )

## नम्बर ११

### जवाबदावा वमुक़दमा बैवात

- १-यह कि मुद्आअलेह ने रेहन की तकमील नहीं की—
- २-यह कि मुद्ई के हक़ में रेहन मुन्तक़िल नहीं हुआ ( अगर एक से

ज्यादा इन्तिकाल बयान किये जायें तो यह लिखना चाहिये कि किस इन्तिकाल से इन्कार है )

३-नालिश अजरूय आर्टिकल जमीमा दोम ऐक्ट मीयाद समा-  
अत हिंद सन् १८७७ ई० दायर नहीं होसक्ती—

४-रकूम सुन्दर्जा जैल अदा कीगई—यानी

तारीख लिखनी चाहिये ..... १०००) रुपया

वतारीख लिखनी चाहिये .... ५००) दर

५-वतारीख मुद्ईने जायदाद पर कब्जा हासिल किया और  
तारीख मजकूर से उसका जर लगान ( या किराया ) पाता रहा—

६-वतारीख मुद्ई ने जर कर्जा छोड़दिया—

७-अजरूय दस्तावेज सुवरिखै मुद्आअलेह ने अपना कुलहक  
( अलिफ वे ) के नाम मुन्तकिल करदिया—

## नम्बर १२

### जवाबदावा व मुकदमा इनफिकाक रहन

१-मुद्ईका हक इनफिकाक अजरूय आर्टिकल जमीमा दोम  
ऐक्ट मीयाद समाकत हिन्द सन् १८७७ ई० साकित होगया—

२-मुद्ईने अपना कुल हक मुतअल्लिक जायदाद ( अलिफ वे ) के  
नाके नाम मुन्तकिल करदिया—

३-मुद्आअलेहने अजरूय दस्तावेज सुवरिखै अपना कुल हक  
मुतअल्लिकै जररेहन और मुतअल्लिकै जायदाद मरहूना ( अलिफ  
वे ) के नाम मुन्तकिल करदिया—

४-मुद्आअलेहने जायदाद मरहूनापर किसी वक्त कब्जा हासिल  
नहीं किया और न उसका जरलगान ( या किराया ) पाया ( अ-  
गर मुद्ई सिर्फ कब्जा चन्द रोजका तसलीमकरै तो उसको चा-  
हिये कि वह मुद्त लिखे और मुद्त मावादके कब्जासे इन्कारकरै )—

## नम्बर १३

### जवाबदावा व मुकदमा तामील खास

१-मुद्आअलेहने हकमनाय नहीं लिखा—

२-यह कि ( अलिफ वे ) मुद्दआअलेहका अजन्ट नहीं था ( अगर मुद्दई उसका अजन्ट होना वयान करै )

३-मुद्दईने शरायत जैलकी तामील नहीं की ( शरायत )

४-मुद्दआअलेहोंने फलां फलां फेल नहीं किया ( अफआल मुवय्यना निस्वत जुज्व तामील )

५-यह कि मुद्दईका इक निस्वत उस जायदादके जिसकी फरोख्तका इकरार कियागया वज्रह मुन्दजै जैल ऐसा नहीं है कि मुद्दआअलेहको उसे कबूल करना लाजिम है ( यहां वज्रह लिखना चाहिये )

६-इकरारनामा अमूर मुन्दजै जैलकी निस्वत मजबजबहै ( यहां वह अमूर लिखना चाहिये )

७-( या ) मुद्दई तखैरका कसूरवारहै—

८-( या ) मुद्दई फरेव या ( खिलाफ वयानी ) का कसूरवार है—

९-( या ) इकरारनामा मुनासिब है—

१०-( या ) इकरारनामा गलती से लिखा गया—

११-तप्सीलात फिकरह ७ व ८ व ९ व १० की ( या जैसी कि सूरत हो ) यह हैं—

१२-इकरारनामा अजरख्य शरायत वै नम्बर ११ ( या इकरार वाहमी ) मंसूख होगया—

( जिन सूरतों में कि हर्जा का दावा किया जाये और मुद्दआअलेह हर्जा की जिम्मेदारी की निस्वत उजरदारी करै तो उसको चाहिये कि इकरारनामा से या इकरारनामा की उन शर्तों से इन्कार करै जिनकी खिलाफवरजी वयान कीजाये या कोई और विनाय जवाबदावा जिसपर वह इस्तदलाल करना चाहता हो वयान करै मसलत इनकजाय मीयाद समाअत या वेवाकी या सुबुकदोशी या फरेव वगैरह )

## नम्बर १४

जवाबदावा नालिशत वावत इहतिमास

मिन्जानिव मूसालहू जर नज्द के

१-( अलिफ वे ) की वसीयत में कर्जाजात का वार था—वह दीवालिया फौत हुआ—अपनी वफात के वक्त वह वाज जायदाद नैर

मन्कूलाका मुस्तहक था जिसको मुद्आअलेहने फरोख्त किया और उससे खालिस रकम मुवलिग रुपया की हासिल हुई और मूसाके पास वाज जायदाद मन्कूला थी जिसको मुद्आअलेहने हासिल किया और उससे खालिस रकम मुवलिग रुपयाकी हासिल हुई—

२-मुद्आअलेह ने रकम मजकूर मुवलिग रुपयाको जो मुद्आअलेह को किराया जायदाद गैर मन्कूला से वसूल हुई इखराजात तज. हीज व तकफीन व इखराजात मुतअल्लिक वसीयत व अदायी वाजक़र्जाजात जिम्मगी मूसा में सर्फ किया—

३-मुद्आअलेह ने अपना हिसाब मुरत्तिव करके उसकी नक़ल व तारीख माह सन् मुद्ई के पास भेजी और उसको इस्तिथार दिया कि असनाद को जिनसे हिसाब मजकूर की तसदीक होती है मुलाहिज़ा करै मगर उसने मुद्ई की दरख्वास्त से फायदा उठाने से इन्कार करदिया—

४-मुद्आअलेह इल्तिमास करता है कि मुद्ई को नालिश हाज़ाका खर्चा अदा करना चाहिये—

## नम्बर १५

### पुरोबीट वसीयत वतरीक सालह :

१-मुतवफ़्फी की वसीयत नामा व ज़मीमा मजकूरके मुताबिक इहक क़ानून वरासत हिन्द सन् १८६५ ई० ( या क़ानून वसीयतना अहल हिन्द सन् १८७० ई० के वाज़ावता तकमील नहीं हुईं),

२-जिसवक़्त कि वसीयतनामा व ज़मीमा मजकूरका तकमील पा वयान किया जाता है उस वक़्त मुतवफ़्फीके अक़ल व हाफ़िज़ा समझ बूझ दुरुस्त न थे—

३-वसीयतनामा व ज़मीमा मजकूरकी तकमील ववज़ह रसूख न जायज़ मुद्ई के और दीगर अशखास के हुई थी जिनके नाम इ वक़्त मुद्आअलेह को मालूम नहीं हैं—

४-वसीयतनामा व जमीमा मजकूर की तकमील व वजह फरेव मुद्दै के हुई थी-फरेव मजकूर की तफसील जहांतक मुद्दै को इस वक़्त मालूम है यह है ( यहां फरेवकी नौय्यत दर्ज करनी चाहिये )

५-मुतवफ़्फ़ी वर वक़्त तकमिलह वसीयतनामा व जमीमा मजकूर के मजमून से वाक्फ़ि न था और न उसने मजमून मजकूर को मंज़ूर किया ( या ) वसीयतनामा मजकूर के फ़िक्करह दरवाव वाक्फ़ी मांदह के मजमून से वाक्फ़ि न था और न उसने मजमून मजकूर को मंज़ूर किया—

६-मुतवफ़्फ़ी ने अपनी अखीरी और सही वसीयत यकुम जनवरी सन् १८७३ ई० को की और उसकी रू से मुद्दआअलेह को तनहा वसी मुक़रर किया—

मुद्दआअलेह दावेदार है कि—

( १ ) अदालत वसीयतनामा व जमीमा मजकूर पेशक़र्दह मुद्दै के ख़िलाफ़ तजवीज़ सादिर करै—

( २ ) अदालत मुतवफ़्फ़ी की वसीयत मुवर्ख़ि यकुम जनवरी सन् १८७३ ई० की पुरोवीट की वावत हस्व मंशाय क़ानूनी व तरीक़ सालह डिगरी सादिर करै—

## नम्बर १६

तफ़सीलात ( आर्डर ६-क्रायदा ५ )

( उनवान नालिश )

तफ़सीलातव मूजिव हुक्म मुवर्ख़ि माह सन् तफ़-  
सीलात मुन्दर्जे ज़ैल हवाले कीजाती है ( यहां उन  
मामिलात की तफ़सील दर्ज होनी चाहिये जिनकी वावत  
हुक्म हुआ है )—

( यहां तफ़सीलात को जिनकी वावत हुक्म हुआ है दफ़ा-  
वार दर्ज करना चाहिये अगर ज़रूरतहो )—



## इपनडिक्स ( बे )

## परोस

## नम्बर १

## सम्मन बगरज इनफिसाल मुकदमा

( आर्डर ५ कायदा १ व ५ )

## ( उनवान )

इत्तिला-अगर तुमको यह अदे-  
शाहो कि तुम्हारे गवाह  
अपनी मर्जी से हाजिर  
नहोंगे तो तुम अदालत  
हाजासे सम्मन वई  
मुआद जारी करासके हो  
कि जो गवाह न हाजिर  
हो वह जवरन हाजिर  
कराया जाये और जिस  
दस्तावेज को किसी  
गवाह से पेश करानेका  
तुम इस्तहकाक रखते  
हो उससे पेश कराई  
जाये यह शर्त कि तुम  
उसके वास्ते जर खूराक  
जो जरूरी हो अदालत  
में दाखिल करके इस  
अम्र की दरखास्त गुज-  
रानो—

-(\*)-

२-अगर तुम मतलिबा  
मुद्दै को तसलीम करते  
हो तो तुमको लाजिम  
है कि रुपया मये तर्चा

वनाम ( नाम व पता व जाय सकूनत )  
हरगाह कि ने तुम्हारे नाम एक  
नालिश वावत के दायर की है लिहाजा  
तुमको हुक्म होता है कि तुम वतारीख  
माह सन् वक्रत पर असालतन  
( या मार्फत वकील के जो मुकदमा के हाल  
से करार वाकई दाक्किफ किया गयाहो और  
जो कुल अमूर अहम मुतअल्लिकै मुकदमा का  
जवाब देसकै या जिसके साथ कोई और शख्स  
हो कि जवाब ऐसे सवालातका देसकै ) हाजिर  
हो और जवाबदिही दाया मुद्दै मजकूरकी करो  
और हरगाह वही तारीख जो तुम्हारे इहजारके  
लिये मुकरर है वारते इनफिसाल कतई मुक-  
दमा के तजवीज हुई है पस तुमको लाजिम है  
कि अपने जवाबदाया की ताईदमें जिन गवाहों  
की शहादत पर या जिन दस्तावेजात पर तुम  
भरोसा करना चाहते हो उसी रोज उनको  
पेशकरो—

मुत्तिलारहो कि अगर वरोज मजकूर तुम हा-  
जिर न होगे तो मुकदमा वगैर हाजिरी तुम्हारी  
मसमूअ और फैसल होगा—

नालिश अदालत में  
दाखिल करो ताकि  
इजराय डिगरी का जो  
तुम्हारी जात या मा-  
लपर या दोनों पर हो  
करना न पड़े --

व सिवत दस्तखत और मुहर अदालतके  
आज तारीख माह सन् को जारी  
किया गया--

दस्तखत जज

## नम्बर २

सम्मन बग़रज करारदाद अमूर तनक़ीहतलब

( आर्डर ५ कायदा १ व ५ )

(उनवान )

इत्तिला-अगर तुमको यह अदे-  
शाहो कि तुम्हारे गवाह  
अपनी मर्जी से हाज़िर  
न होंगे तो तुम अदा-  
लतहाज़ा से सम्मन नई  
मुराद जारी करासक़्त हो  
कि जो गवाह न हाज़िर  
हो वह ज़वरन हाज़िर  
करायाजाये और जिस  
दस्तावेज़ को किसी  
गवाह से पेश कराने  
का तुम इस्तइस्काक  
रखते हो वह उससे  
पेश कराई जाये वशतें  
कि तुम उसके वास्ते  
ज़र ख़ूराक जो ज़रूरी  
हो अदालत में दाखिल  
करके इस्त अन्नक़ी दर-  
ख़ास्त गुज़रानो -

बनाम ( नाम व पता व जाय सकूनत )  
वाज़ेह हो कि ने तुम्हारे नाम एक ना-  
लिश वावत के दायर की है लिहाज़ा  
तुमको हुक्म होता है कि तुम वतारीख  
माह सन् वक्त पर असा-  
लतन ( या मार्फत वकील अदालत मजाज़  
इस्व ज़ावता के जो मुक़दमा के हाल से करार  
वाक़ई वाक़िफ किया गया हो और कुल अमू-  
रात अहम गुतअल्लिक़ै मुक़दमा का जवाब दे  
सकै या जिसके साथ कोई और शख्स हो कि  
जवाब ऐसे सवालात का देसकै ) हाज़िर हो  
और जवाबदिही दावा मुद्दई मज़कूर की करो  
और तुमको हिदायत की जाती है कि जुम्ला  
दस्तावेज़ात को जिनपर तुम वताईद अपनी  
जवाबदिही के इस्तदलाल करना चाहते हो  
पेश करो--

२—अगर तुम मतालिवा मुद्दई ओतसलीम करते हो तो तुमको लाजिम है कि रुपयामये खर्चा नालिश अदालत में दाखिल करो ताकि इजराय डिगरी का जो तुम्हारी जात या माल पर या दोनों पर हो करना न पड़े—

मुत्तिला रहो कि अगर वरोज़ मज़कूर तुम हाज़िर न होगे तो मुकदमा तुम्हारी ग़ैर हाज़िरी में मसमूअ और फैसल होगा—

वसिन्त मेरे दस्तखत और मोहर अदालत के आज तारीख माह सन् को जारी किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर ३

सम्पन्न बगरज हाज़िरी असालतन

( आर्डर ५ कायदा ३५ )

( उनवान )

वनाम नाम वलियत व कौमियत व पेशा व जाय सकूनत हरगाह मुसम्मै ने तुम्हारे नाम एक नालिश वास्ते दायर की है तुमको वज़रिये तहरीर हाज़ा हुक्म दिया जाता है कि तुम बतारीख माह सन् वक्त वजे दिन के अदालत हाज़ा में असालतन हाज़िर हो और दावा की जवाबदिही करो और तुमको यह भी हिदायत की जाती है कि बतारीख मज़कूर तमाम दस्तावेज़ातको जिन पर तुम अपने जवाबदिही की ताईद में इस्तदलाल करना चाहते हो पेशकरो—

१—मुत्तिलारहो कि अगर तुम तारीख मज़कूरवालापर हाज़िर न होगे तो मुकदमा तुम्हारी ग़ैर हाज़िरी में मसमूअ और फैसल होगा—

आज तारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मोहर अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर ४

सम्मान वमुकदमे सरसरी वर विनाय दस्तावेज  
काबिल बैवशिशरा

( आर्डर ३७ कायदा २ )

( उनवान )

वनाम ( यहां मुद्दाअलेह का नाम और वलदियत और पेशा और सकूनत लिखना चाहिये )

हरगाह ( यहां मुद्दै का नाम और वलदियत वगैरह और सकूनत लिखना चाहिये ) ने एक नालिश इस अदालत में तुम्हारे नाम दमूजिद आर्डर ३७ मुन्दजै जमीमा भजमूआ ज़ाबता दीवानी वावत मुबलिंग—वकीया असल व सूद जो उसको इस मन्सब से कि विल आफ एक्स चेंज ( या हुंडी या परामेसरी नोट ) का रुपया उसको अदा किया जाना लिखा है ( या उसके नाम बेजा लिखा है ) याफ्तनी है और उस विल या हुंडी या परामेसरी नोट की नकल मुन्सलिक कीजाती है रजूमकी है लिहाजा तुम्हारे नाम सम्मान वई मुराद भेजा जाता है कि तुम इस हुक्मकी तामील की तारीख से दस दिन के अन्दर वास्ते हाजिर होने और करने जवाबदिही मुकदमा के इजाजत हासिल करो और अर्सा मजकूर के अन्दर अपने हाजिर होने का दाखिला कराओ दरसूरत अदम तामील इस हुक्म के मुद्दै बाद मुन्कजी होने मीयाद दस योम मजकूर के मुस्तहक होगा कि डिगरी उस कदर रुपया जो मुबलिंग—से ज़्यादा न हो ( यहां तादाद मुतदाविया लिखी जायेगी और मुबलिंग—वावत खर्चा के हासिल करें—

हाजिर होने की इजाजत अदालत से वज़रिये एक दरख्वास्त के हासिल होसکتी है जिसके साथ तहरीरी बयान हल्की या इक्करार वई मजगून होना चाहिये कि मुकदमा अज़राह हक दाजिव काबिल जवाबदिही है या कोई वजह माकूल इस बात की है कि तुमको मुकदमा में हाजिर होने की इजाजत दीजाये—

आज तारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मोहर  
अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर ५

इत्तिला बनाम उस शख्स के जिसको अदालत  
बजुमरै मुद्दइआन शामिल करना मुनासिब समझै  
( आर्डर १ कायदा १० )

( उनवान )

बनाम ( नाम व वलदियत व कौमियत व पेशा व जाय सकूनत  
हरगाह मुसम्मे ने नालिश मजकूरै वाला बनाम वास  
दायर की है और हरगाह यह जरूरी मालूम होता है कि तुम ना  
लिश मजकूर में बजुमरै मुद्दइआन शामिल किये जावो ताकि अदालत  
तमाम अमूर मुतआलिकै को बखूबी और तकमील के साथ फैसल और  
तै कर सकै—

मुत्तिला रहो कि तुमको लाजिम है कि वतारीख माह  
सन् या कब्ल इसके अदालत हाजा में जाहिर करो कि तुम बजु  
मरह मुद्दइआन शामिल होने से रजामन्द हो या नहीं—

आज वतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मुहर  
अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर ६

सम्मान बनाम कायम मुकाम कानूनी मुद्दआअलेह  
मुतवफ्फी के

( आर्डर २२ कायदा ४ )

( उनवान )

बनाम

हरगाह कि मुद्दई मुसम्मे ने अदालत हाजा में एक नालिश

वतारीख माह सन् वनाम मुद्आअलैह के दायर की थी जो वाद नालिश के फौत होगया है और हर गाह कि मुद्ई मजकूर ने अदालत हाजा में इस वयान से दर्खास्त गुजरानी है कि तुम—मुतवप्फी मजकूर कायम मुक्काम कानूनी हो और यह इस्तदुआ की है कि तुम उसके वजाय मुद्आअलैह कायम किये जाओ—

लिहाजा तुमको वजरिये तहरीर हाजा हुक्म होता है कि तुम अदालत हाजा में वतारीख माह सन् ववक्त कल दोपहर नालिश मजकूर की जवाबदिही के लिये हाजिर आवो और अगर तुम वतारीख मुसरहे वाला हाजिर न आवोगे तो नालिश मजकूर तुम्हारी गैरहाजिरी में मसमूम और फैसल होगी—  
आज वतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मोहर अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर ७

हुक्म इरसाल सम्मन दूसरी अदालत के इलाका में जारी होने के लिये

( आर्डर ५ कायदा २१ )

( उनवान )

हरगाह वयान किया गया है मुद्आअलैह वमुकदमा मुतजकिरह गवाह वाला विलफैल वमुक्काम सकूनत रखता है लिहाजा हुक्म हुवा कि सम्मन जो वतारीख माह सन् वापस होना चाहिये वनाम मुद्आअलैह मजकूर वास्ते तामील के अदालत में मये गवाह

मुमन्ना इस हुक्म के भेजा जाये—

रसूम अदालत वक्रदर मुवालिश के इस्टाम्प निस्वत सम्मन मजकूर इस अदालत में वसूल होगये—

मदरसै

दस्तखत जज

## नम्बर ८

हुक्म इरसाल सम्मन कैदीपर तामील होनेके लिये

( आर्डर ५ कायदा २४ )

( उनवान )

वनाम सिपुर्न्टेन्डेन्ट जेल वाकै

वमूजिव कायदा २४ आर्डर ५ मजमूआ ज़ाबता दीवानी एक सम्मन मये मुसन्ना के इस हुक्म के साथ मुद्आअलैह मौसूमा पर तामील होने के लिये जो जेल में है भेजा जाता है और तुमसे दख्वास्त कीजाती है कि सम्मन मजकूरकी नकल मुद्आअलैह मजकूर पर तामील कराओ और असल को मुद्आअलैह मजकूर से दस्तखत कराके और तामील का वयान और अपने दस्तखत करके इस अदालत में वापस करो—

दस्तखत जज

## नम्बर ९

हुक्म इरसाल सम्मन मुलाजिम सर्कारी या फौजी

सिपाही पर तामील होने के लिये

( आर्डर ५ क़वाअद २७ व २८ )

( उनवान )

वनाम—

वमूजिव आर्डर ५ कायदा २७ व २८ यानी जैसा मौका हो मजमूआ ज़ाबता दीवानी एक सम्मन मये मुसन्नाके इस हुक्म के साथ मुद्आअलैह मौसूमा—पर तामील होने के लिये जो तुम्हारी मातहती में काम करता है भेजा जाता है और तुमसे दख्वास्त कीजाती है कि सम्मन मजकूरकी नकल मुद्आअलैह मजकूर पर तामील कराओ और असल को मुद्आअलैह मजकूर से दस्तखत कराके और तामील का वयान और अपने दस्तखत करके इस अदालत में वापस करो—

दस्तखत जज

## नम्बर १०

खुबकार जो दूसरी अदालत के सम्मन के जवाब  
के साथ मुसिल होगा

( आर्डर ५ कायदा २३ )

( उनवान )

खुबकार मुसिलै मशअर इरसाल वगरज तामील ऊर  
वमुकदमा दीवानी नम्बर मरजूआ अदालत मजकूर मुला-  
हिजा हुवा—

नीज अफसर तामील कुनिन्दाकी तहरीर जोहरी वई बयान कि  
मुलाहिजा हुई और उसका सबूत हस्व ज़ाबता हमारे खबरू ( वहल्फ )  
और के लिया गया लिहाजा हुक्म हुवा कि व अदा-  
लत मये नक़ल खुबकार-हाजा वापस भेजा जाये—

दस्तखत जज

( तन्वीह ) व नमूना सिवाय सम्मन के हर हुक्मनामासे मुतअल्लिक  
होगा जिसकी तामील उसी तौरपर करानी मंजूर हो—

## नम्बर ११

बयान हलफ़ी तामील करनेवालेको जो सम्मन  
या इत्तिलानामाके वापस होनेपर उसके  
शामिल रहेगा

( आर्डर ५ कायदा १८ )

( उनवान )

बयान हलफ़ी वल्द का

मैं वहल्फ़ कहताहूँ कि  
वइकरार सालह

( १ ) मैं इस अदालत के हुक्मनामों की तामील करताहूँ—

( २ ) व तारीख माह सन् मैंने एक सम्मन  
इत्तिलानामा



जिसको अदालत ने व मुकदमा दीवानी नम्बर  
सन् मरजुआ अदालत मजकूर मौरखै तारीख माह  
सन् फलां शरूख पर तामील होने के लिये जारी किया  
था वसूल पाया—

( ३ ) मजकूर को मैं उस वक़्त खुद जानता था और मैंने

सम्पन  
इत्तिलानामा की तामील उस पर व तारीख माह

सन् करीब वजे दिनके व मुकाम इस तरह

की कि सम्पन  
इत्तिलानामा की एक नकल उसके हवाले करदी और

असल पर उसके दस्तखत करा लिये—

(अलिफ) ( इस जगह बयान करना चाहिये कि जिस शरूख पर  
तामील हुई उसने आया दस्तखत किये या दस्तखत करने  
से इन्कार किया और किसके सामने )—

( वे ) ( यहां तामील करनेवाले के दस्तखत होना चाहिये )—

या दफ़ा ३—इस नमूना की इस तरह लिखीजाये

( ३ ) चूंकि मैं खुद मजकूर को नहीं जानता था इस लिये एक  
शरूख मुसम्मै मेरे साथ तक गया और वहां मुझको  
एक शरूख को दिखलाया जिसका नाम उसने मजकूर  
बयान किया और मैंने सम्पन  
इत्तिलानामा की तामील उसपर अलख  
मिसिल नम्बर ३ मुन्देजैवालाकी—

या दफ़ा ३—इस नमूनाकी इस तरह लिखीजाये

( ३ ) चूंकि मजकूर और उस मकान को जिसमें वह मामूलन  
रहता है मैं खुद जानता था लिहाज़ा मैं मकान मजकूर पर व  
मुकाम व तारीख माह सन् करीब  
वजे दिनके गया मगर मजकूरको वहां न पाया—

(अलिफ) इस जगह पूरी तरह और ठीक ठीक लिखना चाहिये कि

सम्मन या इत्तिलानामा की तामील वहवाला खास ( आर्डर ५ क्रायदा १५ व १७ ) के क्योंकर हुई—

( बे ) यहां तामील करनेवाले के दस्तखत होना चाहिये—

**या इस तरह लिखी जाये**

( ३ ) एक शख्स मुसम्मै मेरेसाथ तक गया और वहां एक मकान मुझको दिखलाया और कहा कि इसी मकान में मजकूर मामूलन रहता है मगर मैंने मजकूर को वहां न पाया—

( अलिफ ) इस जगह पूरी तरह और ठीक ठीक लिखना चाहिये कि सम्मन या इत्तिलानामा की तामील वहवाला खास ( आर्डर ५ क्रायदा १५ व १७ ) के क्योंकर हुई—

( बे ) यहां तामील करनेवाले के दस्तखत होना चाहिये—

**या इस तरह लिखी जाये**

अगर तामील सिवाय तरीका मामूली के किसी और तरह की जाने की हो तो पूरी तरह और ठीक ठीक बयान किया जाये कि सम्मन वहवाला खास मजमून हुक्म तामील खास के सम्मनकी तामील किस तरीकापर हुई—

आज वतारीख माह सन् फलां मजकूर ने मेरे खबर

हलफ किया

इत्तरार सालह किया दस्तखत उस शख्स के जो दफा १३७ मजमूआ

जाब्ता दीवानी की रुसे बयानात हलफी करनेवालों से हलफ लेने के लिये मुकर्रर किया जाये—

**नम्बर १२**

**इत्तिलानामा बनाम मुद्दआअलैह**

**( आर्डर ९ क्रायदा ६ )**

**( उनवान )**

वनाम—( नाम व वलदियत कौमियत व पेशा व जाय सकूनत ) हर गाह कि मुकदमा मजकूर में तारीख हाजा वास्ते समाअत के मुकर्रर की

गई थी और सम्मन बनावं तुम्हारे जारी किया गया था और मुद्दा अलैह  
अदालत हाजा में हाजिर हुआ और तुम हाजिर नहीं हुये लेकिन कौफियत  
वापसी नाजिर से हस्व इत्मीनान अदालत यह सावित हुआ है कि सम्मन  
मजकूर की तुमपर तामील होगई मगर इस कदर काफी अर्सा में नहीं हुई कि  
तुम तारीख मुकरर सम्मन मजकूर पर हाजिर होकर जवाब दी ही कर सके—  
लिहाजा जोटिस हाजा बनावं तुम्हारे जारी किया जाता है कि नालिश  
की समाअत आज मुल्तवी कर दी गई है और अब उसकी समाअत के  
लिये तारीख माह सन् मुकरर की गई है अगर तुम  
तारीख आखिरुल्जिक्र पर हाजिर न होगे तो नालिश तुम्हारी गैर हाजिरी  
में मसमूअ और फैसल होगी—  
आज बतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मोहर  
अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

नम्बर १३

सम्मन वास्ते हाजिरी गवाह के  
( आर्डर १६ कायदा १ व ५ )

( उनवान )

बनावं—  
हरगाह तुम्हारा हाजिर होना वास्ते के मिनजानिब मुकदमा  
मजकूर वाला में जरूरी है लिहाजा तुमको हुक्म दिया जाता है कि बतारीख  
माह सन् वरवक्त वजे दिनके कन्ल दो पहर ( असाहतन ) इस अदालत में हाजिर हो ( या ) अपने साथ  
इस अदालत में लेते आओ या भेज दो—

मुवलिग बनावं तुम्हारे सफर खर्च वगैरह और खुराक एक  
योम की इस सम्मन के साथ भेजा जाता है अगर तुम इस हुक्म की  
तामील में वगैर उजर जायज कसूर करोगे तो तुमपर न हाजिर होने का  
वह नतीजा जो मजमूआ जाब्ता दीवानी के आर्डर १६ कायदा १२ में  
मरकूम है आयद होगा—

इत्तिला—अगर तुम सिर्फ दस्तावेज पेश करने के लिये तलब किये गये हो और शहादत देने के वास्ते नहीं तलब किये गये तो तुम्हारी तरफ से तामील सम्मन की इसी में मुतसव्वर होगी कि तुम दस्तावेज मजकूर को इस अदालत में वतारीख और बरवक्त मरकूमैवाला पेश करा दो—

इत्तिला २—अगर तारीख मजकूर वाला से ज्यादा तुमको ठहरना पड़े तो मुबलिग ( तुमको सिवाय तारीख मजकूरवाला के हर तारीख हाजिरी अदालत की वावत दिया जायेगा—)

मेरे दस्तखत और मोहर अदालत से आज तारीख माह सन को जारी किया गया—

दस्तखत-जज

## नम्बर १४

इश्तहार बहुकम हाजिरी गवाह

( आर्डर १६ कायदा १० )

( उनवान )

वनाम

हरगाह अहलकार तामील कुनिन्दा के इज्जहार हलफी से मालूम हुआ कि सम्मन की तामील गवाह मजकूर पर हस्व तरीका मुक्कररा कानून न हो सकी और हरगाह मालूम होता है कि गवाह मजकूर का इज्जहार जरूरी है और तामील सम्मन से बचने के लिये वह फिरार है और खपोश रहता है लिहाजा यह इश्तहार अर्जखुश आर्डर १६ कायदा १० मजमूआ जाबता दीवानी जारी किया जाता है कि गवाह मजकूर इस अदालत में वतारीख माह सन ईसवी बरवक्त वजे कदल दो पहर हाजिर हो और रोज रोज हाजिर हुआ करे जब तक कि उसकी जाने की इजाजत न मिले और अगर गवाह मजकूर तारीख और वक्त मजकूर पर हाजिर न होगा तो उस उसकी निस्वत कानून के मुताबिक बर्तवाई की जायगी—

आज बतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और  
अदालत की मोहर से जारी किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर १५

इश्तहार बहुक्म हाजिरी गवाह

( आर्डर १६ कायदा १० )

( उनवान )

बनाम

हरगाह अहलकार तामील कुनिन्दा के इजहार इलफी से मालूम हुआ कि सम्मन की तामील गवाह मजकूर पर हस्व जाब्ता होगई और हरगाह मालूम होता है कि गवाह मजकूर का इजहार जरूरी है और वह तामील सम्मन हाजिर नहीं हुआ है लिहाजा यह इश्तहार अजरूय आर्डर १६ कायदा १० मजमूआ जाब्ता दीवानी जारी किया जाता है कि गवाह मजकूर इस अदालत में बतारीख माह सन् इसवी वरवक्रत वजे केन्ल दोपहर हाजिर हो और रोज रोज हाजिरहुआ करै जब तक कि उसको जाने की इजाजत न मिलै और अगर गवाह मजकूर तारीख और वक्रत मजकूरह पर हाजिर न होगा तो उसकी निस्वत कानून के मुताबिक कार्रवाई की जायेगी—

आज बतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मोहर  
अदालत से जारी किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर १६

वारन्ट कुर्की जायदाद गवाह

( उनवान )

बनाम वेलिफ अदालत

चूंकि गवाह जो की तरफ तलब किया गया था वाद गुजर जाने मुद्दत मुअइना इश्तहार के जो वगारज हाजिरी गवाह मजकूर जारी

किया गया था—अदालत में हाज़िर नहीं हुआ लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि जायदाद ममलूका गवाह मजकूर मालियती की कुर्क करलो और एक कैफियत मये फ़ेहरिस्त जायदाद कुर्क शुदः के योम के अन्दर पेश करो—

आज बतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और अदालत की मोहर से जारी किया गया—

दस्तखत जज

**नम्बर १७**

**( आर्डर १६ क़ायदा १० )**

**वारन्ट गिरफ़्तारी गवाह**

**( उनवान )**

बनाम बेलिफ़ अदालत—

हरगाह जिसपर सम्मन वास्ते के वा ज़ाबता तामील पाया हाज़िर न हुआ ( या तामील सम्मन से बचने के लिये रूपोश होगया या फिरार होगया ) लिहाज़ा तुमको हुक्म होता है कि मजकूर को गिरफ़्तार करके अदालत के ख़ूब हाज़िर करो—

तुम को यह भी हुक्म दिया जाता है कि वारन्ट हाज़ाको तारीख़ माह सन् को या उससे क़बल उसपर यह इवारत तसदीक लिखकर कि उसकी तामील किस तारीख़ पर और किस तरह हुई और अगर नहीं हुई तो क्यों वापस भेजदो—

आज बतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और अदालत की मोहर से जारी किया गया—

दस्तखत जज

**नम्बर १८**

**वारन्ट हिरासत में रखनेका**

**( आर्डर १६ क़ायदा १६ )**

**( उनवान )**

बनाम अप्रसेर मोहतमिम जेलवाकै

हरगाह (मुद्दई या मुद्दआअलैह) जे मुकदमा मजकूरवाला में इस अदालत में दख्वास्त गुजरानी है कि (फलां शख्स) से वतारीख माह सन् वास्ते अदाय शहादत (या पेश करने दस्तावेज के यानी जैसी कि सूरतहो) हाजिर होने की जमानत लीजाये और हरगाह अदालतने मजकूरसे जमानत मजकूर तलबकी अगर वहन देसका लिहाजा तुम को हुक्म होता है कि मजकूर को दीवानीजेल में हिरासत में रखो और वतारीख वक्त और ऐसी तारीख या तारीखों पर जिसकी निस्वत अयिन्दो हुक्म हो उसको इस अदालत में हाजिर करो—

आज वतारीख माह सन् मेरेदस्तखत और अदालत की मोहरसे जारी कियेगया—

(निश्चय)

दस्तखत जज

नम्बर १६

वॉरन्ट हिरासत में रखनेका

(आर्डर १६ कायदा १८)

(उनवान)

वनाम अप्रसर मोहतमिम जेल—

हरगाह जिसकी हाजिरी इस अदालत में मुकदमा मजकूरवाला वास्ते अदाय शहादत (या पेश करने दस्तावेज के यानी जैसी कि सूरत हो) मतलब है गिरफ्तार होकर इस अदालत के खख जेर हिरासत हाजिर कियेगया और चूंकि मुद्दई या (मुद्दआअलैह) के गैरहाजिर होने के सबब से मजकूर शहादत नहीं देसकता (या दस्तावेज नहीं पेश करसकता) और चूंकि अदालतने से व वक्त तारीख

माह सन् हाजिर होने की जमानत तलब की और जमानत न दाखिल करसका लिहाजा तुम को हुक्म होता है कि मजकूर को दीवानीजेल में हिरासत में रखो और व वक्त तारीख माह सन् उसको इस अदालत में हाजिर करो—

आज वतारीख माह सन् मेरेदस्तखत और मोहर  
अदालत से जारी किया गया—

दस्तखत जज

**इपनाडिक्स ( जीम )**

इनकिशाफ हाल और मकबूली और दरपेशी दस्तावेजात

**नम्बर १**

हुकम निस्वत हवाला करने बंद सवालात के

**( आर्डर ११-कायदा-१ )**

व अदालत—

मुकद्दमा दीवानी नम्बर वावत सन्

अलिफ वे ... मुद्दे

( जीम दाल ) ( हे वाव ) ( जे हे ) मुद्दाअलेहुम

मुसम्मै को समाप्त करने और मुसम्मै के तहरीरी

वयान-इलफ्री मदखिला तारीख माह सन् को पढ़ने

वाद के यह हुकम दिया जाता है कि मुसम्मै को इजाजत है कि तह-

रीरी बंद सवालात मुसम्मै को हवाले करे और मुसम्मै

मजकूर बंद सवालातका जवाब वमूर्जिव तरीका मुक़रर आर्डर ११-कायदा

के दे और देखवास्त होजाका खर्चा—

**नम्बर २**

**बंद सवालात**

**( आर्डर ११ कायदा ४ )**

**( उनवान हस्व नम्बर १ मजकूर हवाला )**

सवालात-अज तरफ ( मुद्दे ) या ( जीम दाल ) मुद्दाअलेह मजकूर  
वगरज कलमबन्दी जवाब ( हे वाव ) आर ( जे हे ) -मुद्दाअलेह या  
( मुद्दे ) मजकूर के—



१-आया            ने वगैरह-

२-आया            ने वगैरह-

( हे वाव ) मुद्दआअलैह को चाहिये कि सवालात नम्बर फलां व फलां का जवाब दे—

( जे हे ) मुद्दआअलैह को चाहिये कि सवालात नम्बर फलां व फलां का जवाब दे—

## नम्बर ३

जवाब बंद सवालात

( आर्डर ११ कायदा ६ )

उनवान मुताविक्र नम्बर १ मुन्दर्जह सदर

जवाब मिनजानिव ( हे वाव ) मुद्दआअलैह मजकूर के उन बंद सवालात का जो मुद्दै मजकूर ने हवाले किये—

वजवाब बंद सवालात मजकूर के मैं ( हे वाव ) मुद्दआअलैह हल  
 १ } खाताहूं और कहताहूं कि बंद सवालात का जवाब दफावार द  
 २ } होना चाहिये जिनपर नम्बर सिलसिला डालना चाहिये—मैं बं  
 ३ } सवालात नम्बरी-के जवाब देनेपर इस वजह से ( यहां एतराज के वजह तहरीर होनी चाहिये ) एतराज करताहूं—

## नम्बर ४

हुक्म वास्ते तहरीरी बयान हलफी निस्वत

दस्तावेजात के

( आर्डर ११ कायदा १२ )

उनवान मुताविक्र नम्बर ( १ ) मुन्दर्जह सदर

को समाप्त करने के बाद हुक्म दिया जाता है कि हुक्म हाजा की तारीख से दिनके अन्दर वजरिये तहरीरी बयान हलफी के जवाब दे कि अत्र मुतनाजआफ्रिया मुकद्दमा हाजा के मुतआलिक उस के कब्जा या इस्तिथार में कौन कौन दस्तावेजात हैं या कभी थीं और यह कि सर्चा दरखास्त हाजा का हो—

## नम्बर ५

तहरीरी बयान हलफ़ी निस्बत दस्तावेजातके

( आर्डर ११ कायदा १३ )

उनवान मुताबिक नम्बर ( १ ) मुन्दर्जह सदर

सीन ( जीम दाल ) मुद्दाअलैह मजकूर हलफ़ खाताहूं और हस्व जैल बयान करताहूं—

१—दस्तावेजात मुन्दर्जे हिस्सा अव्वल व दोम फेहरिस्त मुन्सलिका हाजा मुतअल्लिक अमूर मुतनाजआफिया मुकदमा हाजा मेरे कब्जा या इस्तिyार में हैं—

२—मैं दस्तावेजात मजकूर मुन्दर्जह हिस्सा दोम फेहरिस्त अव्वल मुन्सलिका हाजा के पेश करने पर ( यहां एतराज की वजूह तहरीर होनी चाहिये ) एतराज करताहूं—

३—दस्तावेजात मुन्दर्जह फेहरिस्त दोम मुन्सलिका हाजा मुतअल्लिक अमूर मुतनाजआफिया मुकदमा हाजा मेरे कब्जा या इस्तिyार में थीं मगर अब नहीं हैं—

४—आखिरल्जिक्र दस्तावेजात मेरेकब्जा या इस्तिyार में अखीर मर्तवा ( यहां यह तहरीर होना चाहिये कि किस वक्त कब्जा या इस्तिyार में थीं और वह क्या हुई और अब वह किसके कब्जा में हैं—

५—मेरे बेहतरीन इल्म व इत्तिला व यकीन के मुताबिक मेरे कब्जा या हिरासत या इस्तिyार में या मेरे वकील या एजन्ट के कब्जा या हिरासत या इस्तिyार में या मेरी जानिव से किसी दूसरे शख्सके कब्जा या हिरासत या इस्तिyार में दस्तावेजात मुन्दर्जे जैल न अब है न कभी थीं यानी कोई हिसाब वहीखाता सनद रसीद याददाश्त कागज या तहरीर या कोई नक़ल या इन्तिराव किसी दस्तावेज मजकूर का या कोई दूसरी दस्तावेज किसी किस्मकी जो मुकदमा हाजाके अमूर मुतनाजआफिया से या उनमें से किसी एकसे मुतअल्लिक हो या जिनमें अमूर मजकूर या उनमें से किसी एक से मुतअल्लिक कोई इन्दराज कियागया

हो बइस्तिस्नाय व वजुज दस्तावेजात मुन्दर्जे फ़ेहरिस्त अव्वल व  
दोम मुन्सलिकै हाज़ाके-

## नम्बर ६

हुक्म निस्बत पेश करने दस्तावेजात के वास्ते  
मुआयना के

( आर्डर ११ क़ायदा १४ )

उनवान मुताबिक़ नम्बर ( १ ) मुन्दर्जह सदर

मुसम्मै को सभासत करने और तहरीरी वयान हलफ़ी मिन-  
जानिव मदखिला तारीख़ माह सन् के पढ़ने के  
बाद यह हुक्म दिया जाता है कि तमाम मुनासिव औकात पर बाद  
मुनासिव इत्तिला के दस्तावेजात मुन्दर्जे ज़ैल यानी को वाक़ै  
पर पेश करै और यह कि को दस्तावेजात मजकूर पेश कर-  
दहको मुआयना करने और पढ़ने और उनके मजमून के नोट लेनेका  
इस्तिथार है-इसी असनाय में यह हुक्म दिया जाता है कि तमाम कार्रवाई  
आयन्दा मुल्तवीराय और खर्चा दल्वास्त हाज़ाका हो-

## नम्बर ७

इत्तिलानामा निस्बत पेश करने दस्तावेजात के

( आर्डर ११ क़ायदा १६ )

उनवान मुताबिक़ नम्बर ( १ ) मुन्दर्जह सदर

मुत्तिला रहो कि ( मुद्ई या मुद्आअलैह ) तुमसे दस्तावेजात मुन्दर्जह  
ज़ैलको जिनका तुम्हारे अर्जीदावा या वयान तहरीरी या तहरीरी वयान  
हलफ़ी मौरख़े तारीख़ माह सन् में हवाला दिया गया है  
मुआयना के वास्ते पेश कराना चाहता है—

( यहां दस्तावेजात मतलूबाकी तफ़सील तहरीर होनी चाहिये )

फलां वकील

वनाम फलां वकील

## नम्बर ८

इत्तिलानामा निस्वत मुआयना दस्तावेजात के

उनवान मुताबिक नम्बर ( १ ) मुन्दर्जह सदर

मुत्तिला रहो कि तुम दस्तावेजात को जो तुम्हारे इत्तिलानामा मौरखै तारीख माह सन् में दर्ज हैं वइस्तिस्नाय दस्तावेजात नम्बरी मुन्दर्जह इत्तिलानामा मजकूरके वमुक्काम ( मुक्काम मुआयना दर्ज होना चाहिये ) वरोज जुमेरात आयन्दा वतारीख माह रवां मा- वैन १२ व ४ वजेके मुआयना करसक्ते हो या यह कि मुद्ई या मुद्आअलैह तुमको दस्तावेजात के मुआयना कराने से जो तुम्हारे इत्तिलानामा मौरखै तारीख माह सन् में दर्ज हैं इस वजह से यहां वजह तहरीर होना चाहिये इन्कार करता हूँ—

## नम्बर ९

इत्तिलानामा निस्वत तसलीम करने  
दस्तावेजात के

( आर्डर १२ कायदा ३ )

उनवान मुताबिक नम्बर ( १ ) मुन्दर्जह सदर

मुत्तिला रहो कि मुकदमा हाजां में मुद्ई ( या मुद्आअलैह ) दस्तावेजात मुसरहे जैलको वजह सबूत में पेश करना चाहता है और यह कि दस्तावेजात मजकूर को मुद्आअलैह ( या मुद्ई या उसका वकील या एजन्ट ) वमुक्काम वतारीख मावैन और के मुआयना करसक्ताहै और यह कि हुक्म दिया जाताहै कि (बहिफ्ज उन तयाम एतराजात व यक्तीनी के जो मुकदमा में निस्वत काविल मरदूल शहादत होने दस्तावेजात मजकूर के हों ) मुद्आअलैह या मुद्ई आखिरत क्रि वक्त से ४८ घंटाके अन्दर तसलीम करै दस्तावेजात मजकूर में से जो असल हैं वह इसी तरह तहरीर हुई या उनपर दस्तखत हुये या उनकी तकमील हुई जिस तरह कि उनका तहरीर होना या उनपर दस्तखत होना या तकमील होना दर्जहै और जो नकूलहैं उनकी निस्वत यह तसलीम

करै कि वह सही मकूल हैं और जिन दस्तावेजात की वावत यह वयान किया गया है कि वह तामील कराई गई या मुसिल हुई या हवाले हुई उनकी निस्वत यह तसलीम करै कि वह इसी तरह तामील कराई गई या मुसिल हुई या हवाले हुई जिस तरह कि मजकूर है—

( जे हे ) वकील या एजन्ट मिनजानिव मुद्ई या मुद्आअलैह

वनाम

( हे वाव ) वकील या एजन्ट मिनजानिव मुद्आअलैह या मुद्ई

( यहां दस्तावेजातकी तप्पसील तहरीर होनी चाहिये और हर एक दस्तावेज की निस्वत लिखना चाहिये कि वह असल है या नकल )—

## नम्बर १०

इत्तिलानामा निस्वत तसलीम करने वाकिआत के  
( आर्डर १२ कायदा ५ )

उनवान मुताबिक नम्बर ( १ ) मुन्दर्जह सदर

मुत्तिलाहो कि मुकदमा हाजामें मुद्ई ( या मुद्आअलैह ) चाहता है कि मुद्आअलैह ( या मुद्ई ) सिर्फ वास्ते अगाराज मुकदमा हाजाके व अस-हाव मुसरहे जैलको तसलीम करै—और यह कि मुद्आअलैह ( या मुद्ई ) को हुक्म दिया जाता है कि तामील इत्तिलानामा से छःथोमके अन्दर ( व हिफ्ज तमाम एतराजात व यकीनीके जो मुकदमा हाजामें निस्वत काबिल मकबूल शहादत होने वाकिआत मजकूरहके हों ) वाकिआत मजकूर को तसलीम करै—

( जे हे ) वकील या एजन्ट मिनजानिव मुद्ई या मुद्आअलैह—

( हे वाव ) वकील या एजन्ट मिनजानिव मुद्आअलैह या मुद्ई—

वाकिआत जिनका तसलीम कराना मतलूब है हस्वजैलहैं—

१—यह कि ( मीम ) यकुम जनवरी सन् १८९० ई० को फौत हुआ—

२—यह कि वह विला छोड़ने किसी वसीयतके फौत हुआ—

३—यह कि सिर्फ ( नू ) उसका पिसर जायज था—

४—यह कि ( सीन ) यकुम अप्रैल सन् १८९६ ई० को फौत हुआ—

५—यह कि ( सीन ) की शादी नहीं हुई थी—

## नम्बर ११

तसलीम वाकिआत बतामील इत्तिलानामा

( आर्डर १२ कायदा ५ )

उनवान मुताबिक नम्बर ( १ ) मुन्दर्जह सदर-

मुकदमाहाजामें मुद्आअलैह ( या मुद्ई ) सिर्फ मुकदमाहाजाकी अग-  
राजके लिये बजरिये तहरीरहाजा वाकिआत मुसरहे जैलको वरिआयत  
शरायत व कयूद मुसरहे जैलके और वहिफ्रज उन तमाम मुस्तसनियात्  
वाजिवीके जो मुकदमाहाजा में निस्वत काविल मकबूल शहादत होने वा-  
किआत मजकूर या उनमें से किसी वाकिआकी निस्वतहों तसलीम करताहै-

मगर शर्त यहहै कि यह तसलीम सिर्फ मुकदमाहाजाकी अगराजके  
लिये कीजाती है और मुद्आअलैह ( या मुद्ई ) के खिलाफ किसी दूसरे  
मौकापर या मिनजानिव किसी दूसरे शख्सके वइस्तिस्नाय मुद्ई ( या मु-  
द्आअलैह या फरीक तलव कुनिन्दा तसलीम ) के मुस्तअमल न होगी-

( हे वाव ) वकील या एजन्ट मुद्आअलैह ( या मुद्ई )

वनाम

( जे हे ) वकील ( या एजन्ट ) मुद्ई ( या मुद्आअलैह )

वाकिआत मुसल्लिमः	शरायत कयूद ( अगर कोई हों ) व- रिआयत जिनके वाकिआत तस- लीम किये गये—
१-यह कि ( मीम ) यकुम जनवरी सन् १८९० ई० को फौत हुआ	१—
२-यह कि वह विला वसीयत छोड़ने के फौत हुआ—	२—
३-यह कि ( नू ) उसका पिसर जाय- जथा—	३-लेकिन यह नहीं कि वह तनहा उसका पिसर जायज था—
४-यह कि ( सीन ) फौत होगया—	४-लेकिन यह नहीं कि वह यकुम अमैल सन् १८९६ ई० को फौत हुआ—
५-यह कि ( सीन ) की कभी शादी नहीं हुई थी—	५—

नम्बर १२

इत्तिलानामा बहुकम पेश करने के ( नमूना आम )  
( आर्डर १२ कायदा ८ )

उनवान मुताबिक नम्बर ( १ ) मुन्दर्जह सदर

मुत्तिला रहो कि बज़रिये तहरीरहाज़ा तुमसे यह मतलूबहै कि तुम वर  
वक्त समाज़त अब्बल मुकदमाहाज़ा तमाम कुतुब व कागज़ात व खतूत  
व नकूल खतूत व दीगर तहरीरात व दस्तावेज़ात जो तुम्हारी हिरासत  
केब्ज़ा या इस्तिथार में हों और जिनमें कोई इन्दराज या यादाश्त या  
खुदाद मुतअल्लिक वाकियात मुतनाज़आफिया मुकदमाहाज़ाके हो और  
खसूसन—पेशकरो और अदालतको मुलाहिज़ा कराओ—  
( जे हे ) वकील ( या एजन्ट ) मुद्ई ( या मुद्आअलैह )  
वनाम

( हे वाव ) वकील ( या एजन्ट ) मुद्आअलैह ( या मुद्ई )

इपनडिक्स ( दाल )

नमूने डिगारियोंके

नम्बर १

डिगरी वमुकदमा इन्तिदाई  
( आर्डर २० कायदा ६ व ७ )

उनवान

दावा वावत

आज यह मुकदमा वास्ते इनफिसाल असीर के खरू  
वहाजिरी मिनजानिव मुद्ई व मिनजानिव मुद्आअलैह  
हुवा बिनावरान यह हुक्म व डिगरी हुई कि और नीज यह कि  
को मुवलिग रुपया वावत सर्वा मुकदमाहाज़ा मये सूद वश  
फीसदी रुपया साज़ाना तारीख हाज़ा से तारीख वसूलयावी त  
अदाकरै—

आज वतारीख माह सन् मेरेदस्तखत और मोहर  
अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## खर्चा मुकदमा

मुद्दै	मुद्दआअलैह			
	रुपया	आना	पाई	रुपया आना पाई
१-इस्टाम्प अर्जीदावाका				इस्टाम्प वकालतनामा का
२-इस्टाम्प वकालतनामा का				इस्टाम्प सवालका
३-इस्टाम्प वजह सबूत				मेहनताना वकील
४-मेहनताना वकीलवावतमुवलिंग				खुराक गवाहों की
५-खुराक गवाहों की				इजराय हुकुमनामा
६-फीस अहल कमीशन				फीस अहल कमीशन
७-इजराय हुकुमनामा				
मीजान				मीजान

## नम्बर २

( डिगरी महज जर नकदकी )

( उनवान )

दावा वावत—

आज यह मुकदमा वास्ते इनफिसाल अखीर के ख्वरू  
वहाजिरी मिनजानिव मुद्दै और मिनजानिव मुद्दआअलैह  
पेश हुवा बिनावरान हुक्म हुवा कि मुवलिंग तादादी मये  
सूद वशरह फीसदी सालाना या माहाना मिनइन्तिदाय  
तारीख तातारीख वसूलयावी जर मजकूर को अदाकरै और  
नीज खर्चा इस मुकदमाका जो कि अदालत के ओहदादार तशखीस कु-  
निन्दाने महसूब किया है मये उसके सूदके वशरह फीसदी—सालाना  
तारीख—हाजासे तातारीख वसूलयावी को अदाकरे—



आज बतारीख—माह—सन्—मेरे दस्तखत और मोहर अदालतसे हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## खर्चा मुकदमा

मुद्दै		मुद्आअलैह	
	रुपया	आना	पाई
१-इस्टाम्प अर्जीदावाका			इस्टाम्प वकालतनामा का
२-इस्टाम्प वकालतनामाका			” सवाल का
३-इस्टाम्प वजह सवूत			मेहनताना वकील
४-मेहनताना वकीलवावतरुपया			खूराक गवाहोंकी
५-खूराक गवाहों की			इजरा हुकुमनामाका
६-रसूम अहाली कमीशनकी			फीस अहाली कमीशन
७-इजराय हुकुमनामा			
मीजान			मीजान

## नम्बर ३

### डिगरी इजराय बैवातकी ( आर्डर ३४ कायदा २ ) ( उनवान )

आज यह मुकदमा वास्ते इनफिसाल आखिरके अलख—जाहिर किया जाता है कि मुवलिग—वावत ज़र असल व सूद व खर्चा जो तारीख—माह—सन्—तक महसूब किया गया है मुद्दैके याफ्तनी हैं और हस्वजैल डिगरी सादिर की जाती है—

( ? ) यह कि अगर मुद्आअलैह रकम मज़कूर जो हस्व मुतजकिरह वाला वाजिबुल अदा करार दी गई है तारीख माह सन् मज़कूर को या उससे कब्ज अदालत में दाखिल करदेगा तो मुद्दै तमाम दस्तावेजात को जो मुतअल्लिक जायदाद मरहूना के उसके कब्जा या इस्तिथार में हों मुद्आअलैह के या उस शख्स के हवाले करदेगा जिसको मुद्आअलैह मुक़रर करे और अगर ज़रूरत हो तो जायदाद को मुद्आ-

अलेह के हक में रहन से और उन तमाम बारहाय से गुवरी करके जिन को मुद्ई ने या किसी शख्स ने जो उसकी मातहती में दावेदार हो पैदा किया हो बार दीगर मुन्तकिल करदेगा ( जब कि मुद्ई वजरिये ऐसे इस्तहकाक के दावेदार हो जो उसको दूसरे से पहुँचा तो यह अलफाज इजाफा करने चाहियें या उन अशखास ने पैदा किया हो जिनकी मातहती से वह दावेदार है—

( जब कि मुद्ई क़ाविज हो तो यह अलफाज इजाफा करने चाहियें और मुद्आअलेह को जायदाद पर क़ाविज करादेगा—)

( २ ) यह कि अगर अदायगी मजकूर तारीख माह सन् मजकूर को या इससे क़व्ल अमल में न आई तो मुद्आअलेह तमाम इकूक से निस्वत इनफिकाक कराने जायदाद के मम-नूअ रहेगा—

### फ़ेहरिस्त

#### तफ़सील जायदाद मरहूना

#### ( नम्बर ४ )

#### डिगरी इन्तिदाई नीलाम की

#### आर्डर ३४—कायदा ४

#### ( उनवान )

आज यह मुक़दमा वास्ते इनफिसाल अखीर के अलख बिनावरान जाहिर किया जाता है कि मुवलिंग वावत जर असल व सूद व खर्चा जो तारीख माह सन् तक महसूब किया गया है मुद्ई के याफ़्तनी हैं यह कि रकम मजकूर पर सूद वशरेह फ़ीसदी सालाना तावसूलजारी रहेगा और हस्वजैल डिगरी सादिर कीजाती है—

( १ ) यह कि अगर मुद्आअलेह मुवलिंग मजकूर जो हस्व मुन्दर्जे वाला वाजिबुलअदा व करार दिये गये हैं तारीख—माह—सन्—मजकूर को या उससे क़व्ल अदालत में दाखिल कर देगा तो मुद्ई तमाम दस्तावेजात को जो जायदाद मरहूना के मुतअल्लिक उसके क़ब्ज़ा या इस्लियारमेंहों मुद्आअलेह के या उस शख्स के हवाले करदेगा जिसको मुद्आअलेह मुक़रर करे

और अगर जखूरतहो तो जायदादको मुद्दआअलेहके हक में रहेन से और तमाम वारहायसे मुवर्दाकरके जिनको मुद्दईने या किसी शख्सने पैदाकियाहो जो उसकी मातहतीमें दावेदारहो वारदीगर मुन्तकिल करदेगा ( जब कि मुद्दई वजरिये ऐसे इस्त-हकाकके दावेदारहो जो उसको दूसरे से पहुंचाहो तो यह अ-लफाज इजाफा करने चाहिये या उन अशखासने पैदाकियाहो जिनकी मातहती से वह दावेदारहै—

( जब कि मुद्दई काबिज हो तो यह अलफाज इजाफा करने चाहिये और मुद्दआअलेह को जायदाद पर काबिज करादेगा )—

( २ ) यह कि अगर अदायगी मजकूर तारीख माह सन् मजकूर को या उससे कबल अमल में न आये तो जायदाद मरहूना या एक काफी जुज्व उसका नीलाम कियाजाये और जरसमन नीलाम ( बाद मिनहाई इखराजात नीलाम ) अदा-लतमें दाखिल कियाजाये और जो रकम हस्व मुतज़किरहवाला मुद्दईकी याप्तनी करार दीगईहै और जिसमें सूद मावाद और खर्चा मावाद शामिल है इसकी अदायगी में सर्फ कियाजाये और वकाया अगर कुछहो तो मुद्दआअलेहको दियाजायेगा—

( ३ ) यह कि अगर खालिस मुहासिल नीलाम रकम मजकूर और सूद और खर्चा मावाद मजकूर की वेवाक्ती के लिये काफी नहीं तो मुद्दई को इस्तिथार होगा कि वावत जर वकाया के वास्ते डिगरी व मुक्ताविला जात के दर्खास्त करै—

**फेहरिस्त**

**तफ्सील जायदाद मरहूना**

**( नम्बर ५ )**

**डिगरी इब्तिदाई इनफिकाक की**

**आर्डर ३४—क्रायदा ७**

**( उनवान )**

आज यह मुकदमा वास्ते इनफिसाल आखिर के अलख विनावरान

ज़ाहिर किया जाता है कि मुबलिग़ बावत ज़र अस्सल व सूद व खर्चा जो तारीख—माह—सन—तक महसूब किया गया है मुद्आअलेह के याफ्तनी हैं और इस्वज़ैल डिगरी सादिर की जाती है—

( १ ) यह कि अगर मुद्ई रकम मजकूर जो हस्ब मुन्दजैवाला वाजिबुलशदा करार दी गई है तारीख—माह—सन—मजकूर को या उससे कबल अदालत में दाखिल करदेगा तो मुद्आअलेह तमाम दस्तावेज़ात को जो मुतअल्लिक़ जायदाद मरहूना के उसके कब्जा या इस्तिथार में हों मुद्ई के या उस शख्स के हवाले करदेगा जिसको मुद्ई मुकर्रर करे—

और अगर जरूरत हो तो जायदादको वहक मुद्ई रेहन से और तमाम चारहायसे मुवर्ग करके जिनको मुद्आअलेहने या किसी शख्स ने पैदा किया हो जो उसकी मातहतसे दावेदार हो वार दीगर मुन्तकिल करदेगा—

( जब कि मुद्आअलेह बज़रिये ऐसे इस्तहकाक के दावेदार हो जो दूसरे से पहुंचा हो तो यह अलफ़ाज़ इज़ाफ़ा करने चाहियें या उन अशख़ास ने पैदा किया हो जिनकी मातहतसे वह दावेदार है )

( जबकि मुद्आअलेह काविज़ हो तो यह अलफ़ाज़ इज़ाफ़ा करने चाहियें और मुद्ईको जायदाद पर काविज़ करादेगा )

( २ ) यह कि अगर अदायगी मजकूर तारीख—माह—सन—मजकूर को या उससे कबल अमल में न आई तो मुद्ई तमाम हकूक से निस्वत इनफ़िकाक कराने जायदाद के मयनूअ रहैगा ( अगर रेहन सादह या मुनफ़अती हो तो यह इवारत कायम करो जायदाद नीलाम कीजायेगी )

फ़ेहरिस्त

तफ़सील जायदाद मरहूना

( नम्बर ६ )

डिगरी बैवातकी—मुर्तहिन अव्वल वनाम मुर्तहिन दोम व राहिन—मीयाद मुतवातिर इनफ़िकाक रेहनकी ( उनवान )

यह ज़ाहिर किया जाता है कि मुबलिग़ ( ज़वाद ) रुपया बावत ज़र अस्सल

व सूद व खर्चा जो तारीख—माह—सन्—तक ( अलिफ ) महसूब किया गया है मुद्दै के याफ्तनी हैं और यह कि बतारीख—माह—सन्—( वै ) मुबलिग—रखा बावत सूदके मुद्दै के और याफ्तनी होंगे जिन की मजमूई तादाद मुबलिग ( जो ) है और चीज़ यह भी ज़ाहिर किया जाता है कि बतारीख—माह—सन्—( वै ) मुबलिग ( गैर ) रखा बावत जर असले व सूद व खर्चा मुद्दआअलेह अव्वलके याफ्तनी होंगे— और हस्वजैल डिगरी सादिर की जाती है—

( १ ) कि अगर मुद्दआअलेह अव्वल मुबलिग ( इबाद ) मजकूर तारीख—माह—सन्—मजकूर ( अलिफ ) को या उससे कबल अदालत में दाखिल करदेगा तो मुद्दै .... हवाले करदेगा अलख ( हस्व मजमून नमूना नम्बर ३ )—

( २ ) यह कि अगर मुद्दआअलेह अव्वल मुबलिग मजकूर तारीख मजकूर को या उससे कबल अदालत में दाखिल न करे तो वह तमाम हकूक से निस्वत इनफिकाक कराने जायदाद के ममनूअ रहेंगा—

( ३ ) यह कि बहालत वैवात मजकूर और अगर मुद्दआअलेह दोम मुबलिग ( जो )—

नोट ( अलिफ ) यहां एक तारीख दर्ज करनी चाहिये जो तारीख डिगरी से छ माह के अन्दर हो—

नोट ( वै ) यहां एक तारीख दर्ज करनी चाहिये जो तारीख मुद्दै ( अलिफ ) से तीन माह के अन्दर हो—

मजकूर तारीख—माह—सन्—( वै ) को या उससे कबल अदालत में दाखिल करदेगा तो मुद्दै .... हवाले करदेगा अलख .... ( हस्व मजमून नमूना नम्बर ३ )

( ४ ) यह कि अगर मुद्दआअलेह दोम मुबलिग मजकूर तारीख मजकूर को या उससे कबल अदालत में दाखिल न करे तो वह तमाम हकूक से निस्वत इनफिकाक कराने जायदाद के ममनूअ रहेंगा—

( ५ ) यह कि उस सूरत में कि मुद्दआअलेह अव्वल जायदाद मर हुना का इनफिकाक कराये अगर मुद्दआअलेह दोम मुबलिग ( जो ) व मुबलिग ( गैर ) मजकूर तारीख—माह—सन्—( वै ) को या उससे कबल अदालत में दाखिल करदेगा तो

मुद्आअलेह अव्वल हवाले करदेगा अलख ( हस्व मजमून नमूना नम्बर ३ )

( ६ ) यह कि अगर मुद्आअलेह दोम मुवलिगान मजकूर तारीख मजकूर को या उससे कबल अदालत में दाखिल न करे तो वह तमाम हकूक से निस्वत इनफिकाक कराने जायदाद के ममनूअ रहैगा ( अगर मुद्आअलेह दोम क्ताविज हो तो यह अलफाज इजाफा करने चाहिये और मुद्आअलेह अव्वलको जायदाद पर क्ताविज करादेगा )

### ( नम्बर ७ )

डिगरी नीलामकी—मुर्तहिन अव्वल बनाम मुर्तहिन दोम व राहिन—एक मीयाद इनफिकाककी  
( उन्वान )

यह जाहिर कियाजाती है कि मुवलिग ( ज़वाद ) रुपया बावत जरअसल व सूद व खर्चा जो तारीख—माह—सन्—तक महसूब किया गया है मुद्ई के याफ्तनीहैं और यह कि तारीख मजकूरको मुवलिग ( जो ) रुपया बावत जरअसल व सूद व खर्चा मुद्आअलेह अव्वलके याफ्तनी होंगे—और हस्यजैल डिगरी सादिर कीजाती है—

( १ ) कि अगर मुद्आअलेहुम् या उनमें से कोई मुद्आअलेह मुवलिग ( ज़वाद ) मजकूर तारीख—माह—सन्—मजकूर को या उससे कबल अदालतमें दाखिल करदेगे या करदेगा तो मुद्ई.... हवाले करदेगा अलख ( हस्व मजमून नमूना नम्बर ४ )

( २ ) यह कि अगर अदायगी मुवलिग मजकूर तारीख—माह—सन्—को या उससे कबल अमल में न आये तो जायदाद मरहूना या एक काफ़ी जुज़व—उसका नीलाम कियाजाये और जरसमन नीलाम ( बाद मिनहाई इख़राजात नीलाम ) अदालतमें अजनाम मुक़दमाहाजा दाखिल कियाजाये और हस्व मुन्दजैल सर्फ कियाजाये—

अव्वल—मुद्ईको मुवलिग ( ज़वाद ) मजकूरके और उस क़दर जरसूद व खर्चा मायादके अदा करने में जो अदालतने दिया-

याहो—दोम मुद्आअलेह अव्वलको मुवलिग ( जो ) मजकूरके और जरसूद व खर्चा मावाद मुतजकिरहवालाके अदा करने में और अगर कुछ बकायारहै तो मुद्आअलेह दोमको दियाजायेगा—  
 ( ३ ) यह कि अगर मुद्आअलेहुम या उनमें से कोई मुद्आअलेह मुवलिग ( जवाद ) मजकूर हस्व मुतजकिरहवाला अदा करदे या करदे तो उनको या उसको इस्तिथार होगा कि अदालत में दरख्वास्त गुजराने या गुजराने कि मुद्ईका रेहन शख्स अदाकुनिन्दा रकम मजकूरके फायदाके लिये या दीगर तौर पर जिन्दह रक्खाजाये जैसा उनको या उसको मशविरा दियाजाये—

( ४ ) यह कि अगर खालिस मुहासिल नीलाम मुवलिग ( जवाद ) मजकूर और जरसूद व खर्चा मावाद मजकूरकी बेवाकीके वास्ते काफी न हो तो मुद्ईको इस्तिथार होगा कि वावत जरवकाया के वास्ते सदूर डिगरी वमुक्ताविले जातके दरख्वास्तकरे—

### ( नम्बर-८ )

डिगरी नीलामकी मुर्तहिन दोम वनाम मुर्तहिन  
 अव्वल व राहिन—एक मीयाद इनफिकाककी  
 ( उनवान )

[ यहां इजहार इस मजमूनका कि मुद्ईके मुवलिग ( जो ) रुपया और मुद्आअलेह अव्वलके मुवलिग ( जवाद ) रुपया याफ्तनीहैं हस्व मुद्जें नमूना नम्बर ७ दर्जकरो ]

और हस्वजैल डिगरी सादिर कीजाती है—

( १ ) कि अगर मुद्ई या मुद्आअलेह दोम मुवलिग ( जवाद ) रुपया मजकूर तारीख—माह—सन्—मजकूरको या उससे कवल अदालतमें दाखिल करदेगा तो मुद्आअलेह अव्वल ...हवाले करदेगा अलख ( हस्व मजमून नमूना नम्बर ४ )

( २ ) यह कि अगर अदायगी रकम मजकूर तारीख—माह—सन्—को या उससे कवल अमल में न आये तो मुद्आअलेह अव्वलको इस्तिथार होगा कि दरख्वास्त पेशकरे कि नालिश

हिसमिस कीजाये या जायदाद मरहूना नीलाम कीजाये और उस सूरतमें कि वह नीलामके लिये दरख्वास्तदे जायदाद मरहूना या एक काफी जुझ उसका मुद्ई और मुद्आअलेह अव्वलके वारहाय से मुवरी नीलाम कियाजायेगा और जरसमन नीलाम ( वाद मिनहाई इखराजात नीलाम ) अदालतमें दाखिल कियाजायेगा और हस्व मुन्दर्जेजैल सर्फ कियाजायेगा- अव्वल मुद्आअलेह अव्वलको मुबलिंग ( ज्वाद ) रुपया मजकूरके और उस कदर जरसूद व खर्चा मावादके अदा करने में जो अदालतने दिलायाहो दोम मुद्ईको मुबलिंग ( जो ) रुपया मजकूरके और जरसूद व खर्चा मावादे मुतजकिरहवाला के अदा करने में और अगर कुछ वक्तायारहै तो मुद्आअलेह दोमको दियाजायेगा-

( ३ ) यह कि अगर मुद्ई मुबलिंग ( ज्वाद ) रुपया मजकूर तारीख माह—सन्—को या उससे कब्ल अदालतमें दाखिल करदेगा तो मुद्आअलेह दोमको इस्लियार होगा कि मुबलिंग मजकूर और मुबलिंग ( जो ) रुपया मजकूर तारीख—माह—सन्—को या उससे कब्ल अदालतमें दाखिल करदे और ऐसा करनेपर मुद्ई.... हवाले करदेगा अलख ( हस्व मजमून नमूना नम्बर ४ )

( ४ ) यह कि अगर मुद्ई रकूम मजकूर हस्व मुतजकिरहवाला अदा करदे लेकिन मुद्आअलेह दोम रकूम मजकूरको हस्व मुतजकिरहवाला अदा न करै तो जायदाद मरहूना या एक काफी जुझ उसका नीलाम कियाजायेगा और जरसमन नीलाम ( वाद मिनहाई इखरातजात नीलाम ) मुद्ई को रकूम ज्वाद व जो मजकूरके और नीज उस कदर जरसूद व खर्चा मावादके अदा करने में जो अदालतने दिलायाहै सर्फ कियाजायेगा और अगर कुछ वक्तायारहै तो मुद्आअलेह दोमको दियाजायेगा-

( ५ ) यह कि अगर खालिस मुहासिल नीलाम रकूम मजकूर व सूद व खर्चाकी वेवाकीके वास्ते काफी न हों तो मुद्ईको इस्लियार होगा कि जर वक्तायाकी बावत डिगरी वमुक्ताविलेजातके हासिल करनेके लिये दरख्वास्तकरै—



## (नम्बर ९)

डिगरी नीलामकी मुर्तहिन मातहत बनाम मुर्तहिन  
और राहिन जब कि रेहन असली की तादाद  
रेहन मातहतकी तादादसे ज्यादाहो

## (उनवाने)

( यहाँ इजहार इस अम्रका कि मुबलिग ( ज्वाद ) रुपया मुद्ई के  
और मुबलिग ( ज़ो ) रुपया मुद्आअलेह अव्वल के याफ्तनी हैं हस्व  
नमूना-नम्बर ( ७ ) दर्ज करो )

और हस्व जैल डिगरी सादिर कीजातीहै—

( १ ) मुद्आअलेह, अव्वल व मुद्आअलेह दोम को इस्लियार है

कि मुबलिग ( ज्वाद ) रुपया व मुबलिग ( ज़ो ) रुपया म-

जकूर अलत्तरतीव—तारीख—माह—सन्—

को या उससे कल अदालत में दाखिल करदे और जब

रकूम मजकूर अदा होजायें तो मुद्ई....हवाले करदेगा अलख

( हस्व मजमून-नमूना-नम्बर ४ ) और ऐसा होनेपर मुबलिग

( ज्वाद ) रुपया मुद्ई को अदा करदिया जायेगा—

( २ ) अगर अदायगी मुतजकिरहवाला भिन्जानिव मुद्आअलेह

दोम, अमल में आये तो मुद्आअलेह अव्वल भी....हवाला

करदेगा अलख ( हस्व मजमून, नमूना-नम्बर, ४ ) और ऐसा

करनेपर मुद्ई को हस्व मुतजकिरहवाला अदा करने के बाद

जो वक्ताया रहै वह मुद्आअलेह अव्वलको दिया जायेगा—

( ३ ) अगर मुद्आअलेह अव्वल व दोयम रुपया हस्व मजकूरहवाला

अदा करने से कासिर रहैं तो जायदाद मरहूना या एक काफी

जुज्व उसका नीलाम किया जायेगा और जर समन नीलाम

( बाद भिनहई इखराजात नीलाम ) अदालत में दाखिल

किया जायेगा और हस्व मुद्जैजैल सर्फ किया जायेगा अव्वल

मुद्ई को मुबलिग ज्वाद रुपया मजकूर के और उस कदर

सूद व खर्चा मावादके अदा करने में जो अदालतने दिलायाहो ( लेकिन मजमूर्ई तादाद और जरअसल व सूदकी उस जर असल वसूदकी तादाद से ज्यादा न होगी जो मुद्आअलेह अव्वलका याप्तनी है ) दोयम मुद्आअलेह अव्वलको उस कदर रकमके अदा करने में जिस कदर मुवलिग जो रुपया मुवलिग इवाद रुपयासे ज्यादाहो और सूद व खर्चा मावाद हस्व मुतजकिरहवालाके अदा करने में—और अगर कुछ वक्ताया रहै वह मुद्आअलेह दोयमको दियाजायेगा—

( ४ ) अगर अदायगी सिन्जानिव मुद्आअलेह अव्वल अमल में आये और मुद्आअलेह दोयम हस्व मुतजकिरहवाला अदा न करै तो मुद्आअलेह अव्वलको इस्तिथार होगा कि जायदाद मरहूनाके नीलामके वास्ते दरख्वास्तकरे और दरख्वास्त मज् कूरपर जायदाद मरहूना या एक काफी जुड़व उसका नीलाम कियाजायेगा और खालिस जर मुहासिल नीलाम इसतरह सर्फ कियाजायेगा कि अव्वल मुद्आअलेह अव्वलको मुवलिग ( जो ) रुपया मजकूर और उस कदर जरसूद मज्जीद व खर्चा जो अदालतने दिलायाहो दियाजायेगा और अगर कुछ वक्ताया रहै वह मुद्आअलेह दोयमको दियाजायेगा—

( ५ ) यह कि अगर खालिस जर मुहासिल नीलाम रकूम मुतजकिरहवाला व सूद मज्जीद व खर्चाकी वेवाकीके वास्ते काफी न हो तो मुद्ई या मुद्आअलेह अव्वल को यानी जैसी कि सूरतहो इस्तिथारहोगा कि जरवक्तायाकी वावत डिगरी वमुकाविलेजात के हासिल करनेके लिये दरख्वास्त पेशकरै—

## नम्बर १०

### डिगरी कतई बैवातकी

### ( आर्टर ३४ कायदा ३ )

#### उनवान

चूंकि डिगरीको पढनेके बाद जो मुकदमाहाजामें तारीख माद  
सन् को सादिरहूर्दी और दरख्वास्त मुद्ई मुवलिग तारीख  
४८

माह सन् को पढ़नेके बाद और वकील मुद्दै और वकालत मुद्दाअलेहको सुननेके बाद यह मालूम होता है कि अदायगी इस्वुल्हुक्म मुन्दजै डिगरी मजकूर अमल में नहीं आई है—

लिहाजा इस्वजैल डिगरी सादिर कीजाती है कि मुद्दाअलेह और तमाम अशखास जो उसके जरिये से या उसकी मातहत से दावेदार हैं तमाम हकूक से निस्वत इनफिकाक कराने जायदाद मरहूना मुन्दजै व मुसरहे फेहरिस्त मुन्सलिकाहाजाके ममनूअ रक्खेजायें ( जब कि मुद्दाअलेह काविजहो तो यह अलफाज इजाफा करने चाहिये और मुद्दै को जायदाद मजकूरपर काविज करादेगा—)

## फेहरिस्त

### तफसील जायदाद मरहूना

#### नम्बर ११

#### डिगरी वमुक्काबिलेजात राहिनके

#### ( आर्डर ३४ कायदा ६ )

#### उनवान

हरगाह कि खालिस जर मुहासिल नीलाम जो वमूजिव उस डिगरी कतईके वकूअमें आया जो मुकदमैहाजामें वतारीख माह सन् सादिरहुई थी और जर मजकूर अदालतमें अजनाम मुकदमाहाजा जमा है वकदर मुवलिग ( जो ) रुपयाके है और इसवक्त मुवलिग ( जवाद ) रुपया मुन्दजै डिगरी मजकूर और नीज मुवलिग रुपया वावत सूद रकम मजकूर वशरह छः रुपया फीसदी सालाना मिन्इन्तिदाय तारीख माह सन् लगायत तारीखहाजा और नीज मुवलिग रुपया वावत रक्का मुकदमाहाजा जो बाद डिगरीके आयदहुआ मुद्दैके याप्तनी हैं और मुवलिग ( गैन ) रुपया याप्तनी मुद्दैके वांकीहैं और हरगाह कि अदालतको यह मालूम होता है कि मुद्दाअलेहकी जात वक्ताया मजकूर के वास्ते काविल मवालिज्दहै—

नजरवरां इस्वजैल डिगरी सादिर कीजाती है—

- ( १- ) यह कि मुबल्लिग जो रुपया मज़कूर अदालत से मुद्दईको अदा कियाजाये—
- ( २. ) यह कि मुद्दमाअलेह मुद्दईको मुबल्लिग ( गैन ) रुपया मज़कूर मये उसके सूद वशरह छः रुपया फ़ीसदी सालाना मिन्इब्ति-  
दाय तारीखहाज़ा लगायत तारीख वसूकयाबी मुबल्लिग मज़कूर के अदाकरे—

## नम्बर १२

### डिगरी तसहीह दस्तावेज़की

#### उनवान

वरख्य इस के ज़ाहिर कियाजाता है कि मुवर्ख़िख़ तारीख  
माह सन् फरीक़ैन मज़कूर के मन्शाय को सहीतौर पर  
ज़ाहिर नहीं करता और यह डिगरी सादिर की जाती है कि मज़-  
कूरकी करके तसहीह कीजाये—

## नम्बर १३

### डिगरी मन्सूखी इन्तिक़ालकी जो बगरज़ फ़रेब- दिही कर्जख्वाहान के अमल में आयाहो

#### उनवान

वरख्य इसके ज़ाहिर किया कि जो वतारीख माह  
सन् मावैन और के अमल में आया व मुकाबिले  
मुद्दई के और मुद्दमाअलेह के जुम्ला दीगर कर्ज ख्वाहान के ( अगर  
कोई हों ) कल अदम है—

## नम्बर १४

### हुक्म इस्तिनाई वख़िलाफ़ फ़ेल तकलीफ़—

#### दिह ख़ानगी के

#### उनवान

मुद्दमाअलेह और उसके एजन्टयान व मुलाज़िमान व कारीगरान

हमेशा के लिये बाज़ रखे जाते हैं कि मुद्आअलेह के क़िस्म अराज़ी पर जिसपर नज़शा मुन्सलिका में हर्फ ( वे ) डाला गया है इस तरह ईंटें न जलायें और न जलवायें जिससे मुद्ई को वहाँसियत मालिक व क़ाविज़ मक़ान मसकूना व बाग़ के जो अज़ीदावे में ममलूका व मक़बूज़ा मुद्ई वयान किये गये हैं तर्कलीफ न पहुंचे—

## नम्बर १५

### हुक़म इम्तिनाई पुरानी सतह से उंची तामीर करने के ख़िलाफ़

#### उनवान

मुद्आअलेह और उसके ठेकादारान व एजन्टयान व कारीगरान हमेशा के लिये बाज़ रखे जाते हैं कि उसकी अराज़ीवाक़ै पर कोई मक़ान या तामीर उन तामीरात से जो साबिक में अराज़ी मज़कूर पर उस्तादहथी और जो हाल में गिराई गई हैं ज्यादा बलन्द इस तरह और ऐसे तरीक़े में न बनायें जिससे मुद्ईकी खिड़कियां जो अराज़ी मज़कूर पर बाक़ै हैं, और जिनमें क़दीम से रोशनी की गुज़र है अंधेरी होजायें और उनको नुक़सान पहुंचे और वह बंद होजायें—

## नम्बर १६

### हुक़म इम्तिनाई सड़क ख़ानगी को इस्तेमाल करने के ख़िलाफ़

#### उनवान

मुद्आअलेह और उसके एजन्टयान व मुल्ताज़ियान व कारीगरान हमेशा के लिये बाज़ रखे जाते हैं कि कुचा बाक़ै के किसी हिस्सा को जिसकी मिट्टी मिलिक़यत मुद्ई है वतौर रास्ता गाड़ी व बग़ी व दीगरअरावाजात के इस्तेमाल न करें और न किसी को इस्तेमाल करने दें ख़्वाह अराज़ी निशानी हर्फ ( वे ) मुद्ई नज़शा मुन्सलिका पर जानेके वास्ते ख़्वाह अराज़ी मज़कूर से वापस आने के वास्ते ख़्वाह किसी दीगर गरज के वास्ते—

## नम्बर १७

### डिगरी इब्तिदाई वमुकदमा इहलिमाम तर्का

#### उनवान

हुक्म हुआ कि तरतीव हिसाब व तहकीकात हस्व मुफसिसलै जैल  
अमल में आये यानी व मुकदमा दायन—

१—जो रकूम कि याफ्तनी मुद्ई और तमाम दीगर कर्जख्वाहान  
मुतवफ्फी की हों उनका हिसाब मुरत्तिव कियाजाये—

वमुकदमा मूसालहुम्—

२—हिसाब माल वसीयतीका जो कि मूसाकी वसीयत की रूसे दिया  
गयाहो मुरत्तिव कियाजाये—

व मुकदमा करावती करीवतर—

३—तहकीकात कीजाय और हिसाब मुरत्तिवहो कि मुद्ई माल वसीयती  
में से वतौर करावती करीव (या करावती मिनजुम्ला करावतयान  
करीवतर के) शख्स बिला वसीयत किस कदरका या किस  
हिस्साका अगर कुछ है मुस्तहक है—

(वाद फिरह अव्वल के डिगरी में दर हालेकि जरूरीहो वमुकदमा  
दायन हुक्म तहकीकात और तरतीव हिसाबका वहक मूसालहुम् और  
वरसाय जायज और करावतयान करीवतर के दियाजायेगा और वमुक-  
दमा दीगर दावीदारान वजुज दायनान के तमाम सूरतों में वाद फिरह  
अव्वल के हुक्म होगा कि दायनान की वावत तहकीकात कीजाय और  
उनका हिसाब मुरत्तिव कियाजाये और वाद अजां यह हुक्म लिखा  
जायगा कि दीगर अशखास की वावत जिनकी जरूरतहो तहकीकातहो  
और हिसाब मुरत्तिव कियाजाय और शुरू की इवारत मामूली मतरुक  
कीजाय और उसके वाद यह नमूना मुताबिक इसी नमूनाके हो जो दायन  
के मुकदमा के वास्ते है—

४—हिसाब इखराजात तजहीज व तकफीन और मुतअल्लिका वसीयत  
मुरत्तिव कियाजाय—

५—हिसाब माल मन्कूला मतरुका मुतवफ्फीका जो वकज्जा मुद्आ-

अलेह या किसी और शख्स के मुद्आअलेह के हुक्म से या उसके इस्ते माल के लिये दरआया हो मुरत्तिव किया जाये—

और तहकीकात इस अम्र की अमल में आये कि किस कदर जायदाद मन्कूला मतरूका मुतवप्फी अगर कुछ हो बाकी है जिसकी निस्वत कुछ अमल में नहीं किया गया—

( ७ ) और नीज हुक्म दिया जाता है कि मुद्आअलेह वतारीख या कबल तारीख माह सन् अदालत में तमाम मुवलिंग जो दरियाफ्त हो कि उसके कब्जा में आये हैं या उसके हुक्म से या उसके फायदा के लिये और कब्जा में आये हैं अदालत में दाखिल करे—

( ८ ) और नीज यह कि \* की दानिस्त में वास्ते इसूल अगाराज मुकदमा के नीलाम करना किसी जुड़व जायदाद मन्कूला मतरूका मुतवप्फी का जरूरी मुतसव्वर हो तो उसको नीलाम करके जर समन नीलाम अदालत में दाखिल करदे—

९—यह कि ( है वाव ) इस मुकदमा ( या कार्रवाई में ) मोहतेमित मुकर्र हो और मुतवप्फी के तमाम दयून और जायदाद मन्कूला को फराहिम करके अपने इहतिमाम में लाये और \* के हवाले करे ( और वास्ते तामील करार बाकई अपनी खिदमात के वतादाद मुवलिंग— जमानतनामा दाखिल करे )—

१०—नीज हुक्म दिया जाता है कि अगर जायदाद मन्कूला मतरूका मुतवप्फी वास्ते अगाराज मुकदमा के गैर मुतवप्फी पाई जाये तो तहकीकात मजीद अमल में आये और हिसावात मुरत्तिव किये जायें—यानी—

( अलिफ ) तहकीकात इस अम्र की कि जायदाद गैर मन्कूला पर मुतवप्फी वरवक्त अपनी वफात के काविज था या उस का मुस्तहक था—

( बे ) तहकीकात इस अम्र की कि मुतवप्फी की जायदाद गैर मन्कूला या उसके किसी जुड़व पर क्या मवाखिजा जात है अगर कुछ मवाखिजे हों—

( जीम ) हिसाब जहां तक मुगकिन हो उन रकूम का जोकि हुम्ना मवाखिजा जात की बावत बाजिव हों और उसमें तप्सीन

तकदीम व ताखीर इन मवाखिजादारों की दर्ज कीजाये जो उस नीलाम पर जिसका कि वादअर्जी बयान कियाजायेगा राजी हों—

११—यह कि जायदाद गैर मन्कूला मतरूका मुतवफ़फी या उसमें से जिस वास्ते हसूल गरज मुक़दमा बइज़ाफ़ा जर मदखिला अदालत जरूरी हो वमंजूरी हाकिम अदालत मुवर्रा मवाखिजाजात से उन दावीदारों के जोकि नीलाम पर राजीहों और बक़ैद मवाखिजा जात उन दावीदारों के जोकि नीलाम पर राजी न हों नीलाम कीजाये—

१२—और नीज़ हुक्म दियाजाता है कि (जे हे ) जायदाद गैर मन्कूला का नीलाम करे और जिन शरायत और मआदिहों पर नीलाम हो उन को वास्ते मंजूरी \* के कलमबंद करे और दरसूरत बाक़ै होने किसी शक या दुशवारी के कागजात जज़ के ख़रू वास्ते तस्फ़िया के पेश कियेजायें—

१३—नीज़ हुक्म दियाजाता है कि बगरज तहकीकात मुतज़किरिह वाला \* अख़बारत में मुताबिक़ जाब्ता अदालत के इश्तहार छपवावे या तहकीकात मजकूर को किसी और ऐसे तौरपर अमल में लाये जोकि \* की दानिस्त में उस तहकीकात को मुश्तहर करने के लिये निहायत मुफीद हो—

१४—नीज़ हुक्म दियाजाता है कि तहकीकात और हिसाब मजकूर की तरतीब और तमाम दीगर अमूर जिनके अमल में आनेका हुक्म दियागया कबल तारीख़ माह सन् तकमील पायें और \* कैफ़ियत नतीजा तहकीकात और हिसावात की और इस अम्की गुज़राने कि तमाम दीगर अमूरकी तकमील होगई जिनके अमल में आनेका हुक्म दियागया था और अपनी कैफ़ियत इस बाबमें वास्ते मुआयना फ़रीक़ैन के वतारीख़ माह मुरत्तिवरक़ले—

१५—अख़ीर-यह कि मुक़दमा ( या मआमिला ) वास्ते सदूर डिगरी अख़ीरके तातारीख़ माह मुल्तवी रहै—

[ इस डिगरीका सिर्फ़ वह जुज़व लिखाजाय जो कि खास सूरत से इलाका रखता हो ]



## नम्बर १८

डिगरी अखीर बमुकदमा नालिश मूसालहू  
दरबाब इहतिमामतर्कामुतवफ़फ़ी

## उनवान

१-हुक्म हुआ कि मुद्आअलेह वतारीख माह सन्  
या कबल इसके अदालत में मुवलिग यानी जरवाकी जो अजरख  
साटीफिकट मज़कूर मुद्आअलेह मज़कूर से वावत जायदाद मतरुका  
मूसल याफ़तनी पाया गया और नीज मुवलिग वावत सूद वहिसाव  
फ़ीसदी सालाना मुवलिग तारीख माह सेतातारीख  
माह हमगी मुवलिग अदाकरै—

२-\* अदालत मज़कूर इस मुकदमा में खर्चा जानिव मुद्ई व  
मुद्आअलेह करारदे और इसतौर पर तजवीज़ किये जानेके बाद जरखर्च  
मज़कूर मिनजुम्ला मुवलिग मज़कूर के वास्ते हस्व मज़कूरहवाल  
अदालतमें दाखिल कियेजानेका हुक्म हुआहै हस्व तफ़सील ज़ैल अद  
कियाजाय—

(अलिफ) खर्चा जानिव मुद्ई मिस्टर उसके अटरनी ( या  
प्लीडरको ) और खर्चा जानिव मुद्आअलेह मिस्टर  
उसके अटरनी ( या प्लीडर को )—

( वे ) ( अगर कोई दयून याफ़तनी हों तो ) मुवलिग मज़कूर के  
जर वाकीमांदा में से वाद अदाय खर्चा जानिव मुद्ई व  
मुद्आअलेह हस्व मरकूमैवालाके जिस कदर रुपया कि  
जुम्ला कर्जगवाहोंका हस्व मुन्दर्जे फेहरिस्त वमूजिव तसदीक  
दीक \* वाजिवी पायाजाये मयेसूद मावाद के  
वावत उन दयूनके जो सूदी हैं अदा कियाजाये और  
वाद अदाय रकूम मज़कूर जिस कदर रुपया कि जुम्ला  
मूसालहुम् मुन्दर्जे फेहरिस्तको मयेसूद मावाद के ( जिसकी  
तसदीक हस्व मज़कूरहवाला कीजायेगी ) वाजिवुल् अदाहो  
अदा कियाजाये—

१-अगर वाद अर्जी कुछ और रुपया बाकी रहै तो वह जायदाद बाकीमांदा के मूसालह को अदा किया जाये—

## नम्बर १६

डिगरी इन्तिदाई वमुकदमा नालिश मूसालह

दरबाव इहतिमाम तर्का जिस हालमें कि वसी

बजात खुद जिम्मेदार अदायशे वसी-

यतीकाहो

उनवान

१-वाजेहो कि मुदआअलेह बजात खुद जिम्मेदार इसकाहै कि शै वसीयती मुवलिग मुदईको अदाकरै-

२-और हुकम दिया जाताहै कि हिसाब जरअसल व सूद वावत शै वसीयती मजकूर जोकि याफतनीहो मुरत्तिव किया जाये-

३-और नीज हुकम होताहै कि \* की तसदीककी तारीख से हफ्ताके अन्दर मुदआअलेह मुदईको उस कदर जर जोकि \* वावत असल व सूद याफतनी तजवीजकरै अदाकरदे-

४-नीज हुकम दिया जाताहै कि मुदआअलेह खर्चा जो मुदईपर आयद हुआहो मुदईको अदाकरै और अगर तादाद खर्चाकी निस्वत फरीकैन में इत्तिफाक न हो तो उसको तशखीस करदिया जायेगा-

## नम्बर २०

डिगरी अरखीर वमुकदमे नालिश करावती

करीवतर दरबाव इहतिमाम तर्का

उनवान

१-\* अदालत मजकूर खर्चा जानिव मुदई व मुदआअलेह मुकदमाहाजाके करारदे और जरखर्चा जानिव मुदई मजकूर इस तौरपर

करार दियेजानेके बाद मुबलिग यानी उस जर बाकीमें से जो हस्व तसदीक मजकूर मुद्आअलेह से वाबत जायदाद मन्कूला ( हे वाव ) मुत-वफ्फ्री विला वसीयतके याफ्तनी पायाजाये अन्दर एक हफ्ताके उस तारीख से कि खर्चा मजकूरको \* मौसूफ करारदे अदा कियाजाये और मुद्आअलेह मिनजुम्ला उसी मुबलिगके अपना खर्चा जब कि वह महसूवहो अपने वास्ते रखले—

२-नीज हुक्म दियाजाताहै कि जो रुपया मुबलिग मजकूर में से वाद अदाय खर्चा मुद्ई व मुद्आअलेहा मजकूरहके वाकीरहै वह मुद्आअलेहा हस्व मुफस्सिलै जैल अदा और सर्फकरै—

( अलिफ ) मुद्आअलेहा उस तारीखसे कि तअय्युन खर्चाका\*

हस्व मजकूरैवाला अदा करदे एक हफ्ताके अन्दर जरव-क्रीया मजकूरका एक सुल्स मुद्ईयान ( वे ) और ( जीम ) उसकी जौजहको वाबत उस जौजह के हकके इस वजह से कि वह ( हे वाव ) मुतवफ्फ्री विला वसीयती की बहिन और मिनजुम्ला करावतियों के एक करावती करीबतर है अदाकरै—

( वे ) मुद्आअलेहा मिनजुम्ला बक्तीया जर मजकूर वाबत अपने हिस्साके एक सुल्सले इस वजह से कि वह ( हे वाव ) मुत-वफ्फ्री विला वसीयती मजकूर की मां और मिनजुम्ला दीगर करावतियों के एक करावती करीबतर है—

( जीम ) मुद्आअलेहा उस तारीख से कि \* हस्व मरकूमै वाला तअय्युन खर्चा का करे एक हफ्ता के अन्दर मिन-जुम्ला जर बक्तीया मजकूरके एक सुल्स वाकीमांदह ( जे हे ) को वाबत उसके हिस्साके दे इस वजह से कि वह ( हे वाव ) मुतवफ्फ्री विला वसीयती मजकूर का भाई और उसका दूसरा करावती करीबतर है—

## नम्बर २१

डिगरी इन्तिदाई बमुकदमा फिस्त्र शराकत  
व लेने हिसाबात शराकती

### उनवान

यह ज़ाहिर किया जाता है कि फरीकैन के हिसाब रसदी शराकत में हस्व जैल है—

यह ज़ाहिर किया जाता है कि शराकत मुतज़किरह अज़ी नालिश जो मावैन मुद्ई और मुद्आअलेह के हैं तारीख माह से फिस्त्र होनी चाहिये ( या फिस्त्र मुतसब्बेर होनी चाहिये ) और नीज़ हुक्म दिया जाता है कि इनफिसाख शराकत मज़कूरका तारीख मज़बूरसे गज़द वगैरह में मुश्तहरहो—

और हुक्म दिया जाता है कि रिसीवर यानी मोहतमिम जायदाद शराकती और अमवाल मुतनाज़िमा नालिश हाज़ाका मुक़ररहो और जो दयून मुन्दर्जह वही और दआवी कारखाना शराकती के लोगों के ज़िम्मे हैं वह सब वसूल करै—

और हुक्म दिया जाता है कि हिसाबात मुफ़सिल जैल लिये जायें—  
२-हिसाब दयून याफ़तनी व जायदाद व अमवाल फ़िलहाल मुतअल्लिकै कारखाना शराकती मज़कूर—

हिसाब दयून और मतालिया जात ज़िम्मगी कारखाना शराकती मज़कूर—  
३-हिसाब तमाम दाद व सितद और मआमिलातका मावैन मुद्ई व मुद्आअलेह जो बाद हिसाब तस्फिया याफ़ता मुन्दर्जह नालिश हाज़ा मुसविता ( अलिफ ) के हुयेहों और किसी हिसाबात तस्फिया याफ़ता मा बादसे इलाका न रखतेहों—

और हुक्म दिया जाता है कि गुड्डील यानी नेकनामी उस कारोवारकी जो कबल अज़ी मुद्ई व मुद्आअलेह हस्व मुन्दर्जे अज़ीदावा करते थे और माल मौजूदह मुतअल्लिकै कारोवार उसी मुक़ामपर नीलाम किया जाये और\* को इस्तिथार है कि फरीकैन में से किसी दरख्वास्तपर

\* यहा अफ़सु मुन्सिबका नाम दर्ज करे—

उस नीलाममें तमाम या किसी लाटके वास्ते अपनी तजवीज़ से बोली करारदे और फरीकैन में से हरएकको इत्तर कि वरचक्त नीलाम बोली बोले—

और हुक्म दियाजाताहै कि कबल तारीख माह हिसावात मजकूरैवाला मुरत्तिव कियेजायें और तमाम दीगर अमूर जिनका अमलमें आना जरूरीहो तकमीलको पहुंचायेजायें और वावत नतीजा हिसावातके और इस इस अम्रके कि तमाम दीगर अमूरकी तकमील होगई-तसदीककरे और तारीख माह अपना सार्टीफिकट उस वावमें वास्ते सुआयना फरीकैनके मुरत्तिव रखै—

विल आखिर हुक्म दियाजाताहै कि वास्ते सादिर करने डिगरी अखीरके यह मुकदमा तारीख माह मुल्लवीरहै—

## नम्बर २२

डिगरी अखीर बमुकदमा फिस्ख शराकत व  
लेने हिसावात शराकत

### उनवान

हुक्म हुआ कि मुवलिग तादादी जो विलफैल अदालतमें जम हैं हस्वजैल सर्फ कियेजायें—

( १ ) दयून जिम्मेगी कारखाना शराकती हस्व मुन्दजै सार्टीफिकट हमगी तादादी मुवलिग के अदा करने में—

( २ ) खर्चा तमाम अहाली मुकदमाहाजा तादादी मुवलिग अदा करने में—

( यह इखराजात डिगरी के लिखे जानेसे पहिले मुस्तहक होने चाहिये )

( ३ ) मुवलिग वावत हिस्सा माल शराकती मौजूदह मुद्ईक अदा कियेजायें और मुवलिग जो कुल मुवलिग मजकूर में से कि विलफैल अदालत में जमा हैं वाक्ती रहै वावत हिस्स

माल शराकती मौजूदह के मुद्दआअलेह को दियेजायें—या यह कि मिनजुम्ला जर मजकूर के बाकी रुपया मुद्ई ( या मुद्-आअलेह ) मजकूर को मिनजुम्ला मुवलिग के जो हिसाब शराकतीकी वावत उसका याफ्तनी सार्टीफिकट मजकूर में लिखा है दियाजाये—

( ४ ) मुद्दआअलेह या ( मुद्ई ) वतारीख माह या कबल उसके मुद्ई या ( मुद्दआअलेह ) को मुवलिग जो उस वक़्त उसका बाकी वाजिव होगा मिनजुम्ला कुल मुवलिग जो फिलहाल उसको याफ्तनी है अदाकरे—

## नम्बर २३

### डिगरी बाज़याफ्त अराज़ी व वासिलात की

#### उनवान

इस्वजैल डिगरी सादिर कीजाती है—

१—यह कि मुद्दआअलेह मुद्ई को जायदाद मुसरहे फहरिस्त मुन्सालिका हाजापर काविज़ करादे—

२—यह कि मुद्दआअलेह मुद्ई को मुवलिग रुपया मये उसके सूद वशरह रुपया फीसदी सालानाके तारीख वसूल यात्रीतक वावत वासिलातके अदाकरै जो इरजाय नालिशसे कबल वाजिवहुये—

#### या

यह कि वावत तादाद जर वासिलातके जो इरजाअ नालिशसे कबल वाजिव हुआ तहकीकात कीजाये—

३—यह कि वावत तादाद जर वासिलातके तहकीकात कीजाये इरजाअ नालिश से ( तारीख काविज़ कराने डिगरीदारतक ) उस तारीखतक जब कि मदयून डिगरी डिगरीदारको अदालतकी माफ़त इत्तिला देकर कब्ज़ा तर्क करदे ( तारीख डिगरीसे तीनसाल मुनक़ज़ी होनेतक )

फेहरिस्त

इपनडिक्स ( हे )

इजरा

नम्बर १

इत्तिलानामा वास्ते जाहिर करने वजहके कि  
अदा या तस्फिया बलफज तसदीक शुदह  
क्यों कलमबंद न किया जाये

( आर्डर २१ कायदार )

उनवान

बनाम

हरगाह कि मुकदमा मुन्दजैवाला में सीया इजरायमें ने अदालत  
हाजा में दरखास्त दी है कि मुबलिंग रुपया जो वमूजिव डिगरी काविल  
वमूल थे अदा होगये या उनका तस्फिया होगया और बलफज तसदीक  
शुदह कलमबंद होने चाहिये लिहाजा तुमको इत्तिला दीजाती है कि तुम  
वतारीख माह सन् उस अदालत में हाजिर होकर वजह  
जाहिर करो कि अदायगी या तस्फिया मजकूर क्यों बलफज तसदीक  
शुदह कलमबंद न किया जाये—

आज वतारीख माह सन् मेरेदस्तखत और मुहर  
अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

नम्बर २

परीसप्ट ( दफ्ता ४६ )

उनवान

बाद समाप्त डिगरीदारके हुक्म हुआ कि परीसप्ट हाजा अदालत  
वार्के में हस्त्र दफ्ता ४६ मजमूआ जाब्ता दीवानी उस हिदा  
यात के साथ भेजा जावे कि जायदाद मुसरहे फेहरिस्त मुन्सलिका हुई

कीजाये और ता गुजरने दरख्वास्तके जो मिन्जानिव डिगरीदार वास्ते इजराय डिगरी के गुजरानी जाये जायदाद मजकूर कब्जा में रक्खीजाये—

फेहरिस्त

मुवरिख तारीख

माह

सन्

दस्तखत जज

## नम्बर ३

हुक्म मुतजम्मिन इरसाल डिगरी बगरज

इजराय दूसरी अदालत में

( आर्डर २१ कायदा ६ )

उनवान

हरगाह कि मुकदमा मुन्दजैवाला में डिगरीदारने इस अदालत में दरख्वास्त गुजरानी है कि अदालत वाकै में सार्टीफिकट इस गरजसे इरसाल कियाजाये कि अदालत मौसूफ डिगरी मसदरह मुकदमा मुन्दजैवाला का इजराकरे और यह बयान कियाहै कि मदयून डिगरी अदालत मौसूफके इलाका की हदूद अरजी में सकूनत या जायदाद रखताहै अदालत मौसूफ में सार्टीफिकट का वमूजिव आर्डर २१ कायदा ६—इरसाल करना जरूरी व मुनासिव ख्याल कियाजाताहै—

लिहाजा हुक्म हुआ

कि इस हुक्म की नक़ल मये नक़ल डिगरी व नक़ल हुक्म जो डिगरी मजकूर के इजराय के वास्ते सादिर हुआहो व सार्टीफिकट अदम ईफ़ाय डिगरी मजकूरके के पास भेजी जाये—

मुवरिख तारीख

माह

सन्

दस्तखत जज

## नम्बर ४

सार्टीफिकट अदम ईफ़ाय डिगरी

( आर्डर २१ कायदा-६ )

उनवान

तसदीक कीजाती है कि ईफ़ाय डिगरी अदालत हाजा व मुकदमा नम्बर सन् जिसकी नक़ल इसके साथ मुन्सलिकहै अदालत हाजा के इलाका में वजरिये इजरा नहीं ( १ ) हुआ है—

मुवरिख तारीख

माह

सन्



नम्बर ५

आर्डर २१ कायदा ६

## उन्वान

दस्तखत जज

नम्बर ६

दरखवास्त इजराय डिगरी

( आर्टिक्ल २१, क्रायदा १.१ )

षड्विंशति

मैं डिग्रीदार डिग्री मुनेरहे जेल के इमराय के वास्ते दखलावा  
करता हूँ—

नम्बर-७८६ सन् १८६७ ई०	नम्बर मुकदमा
अलिफ बे	नाम फरीकन
जीम दाल	तारीख डिगरी
२१-अक्टूबर सन् १८६७ ई०	आया डिगरी की नाराजीसे अपील हुआ कि नहीं
नहीं	अदायगी या तरफिया (अगर कोई) हुआ हो
नहीं	दरखास्त हाय साविता (अगर कोई) मुझे नहीं
मुबलिया ७२।) मुन्दर्जे दरखास्त मुवरिले ४-मार्च सन् १८६६ ई०	तारीख व नतीजाके-
मुबलिया ३१४।) २ पाई असल (व सूद व शरह छ रुपया फीसदी) सालाना मिन् इन्तिदाय	तादाद मयेसूद जो वरुय डिगरी वाजिबुलअदा हो या दीगर
तारीख डिगरी तायोम वमूल )	दादरसी जो वरुय डिगरी अताहुइहो मये नफसील कर इसडिगरी के
मुन्दर्जे डिगरी	तादाद खर्चा (अगर कि कुछ दिलाया हो)
आयद शुद् मायाद	किसके खिलाफ इजराय मतलूब है
मीजान	
वमुकाविले जीम दाल मुदआअलेह	
मे रस्तदुना करताह कि कुल मुबलिया (अगर कुर्की व नीलाम माल मन्कूला मतलूब हो)	
वसरिये कुर्की व नीलाम माल मन्कूला अजा मुदआअलेह मुन्दर्जे जेल वसूल होकर मुभको दिलायाजावे-	
मे रस्तदुना करताह कि कुल मुबलिया (अगर कुर्की व नीलाम जायदाद गैर मन्कूला मतलूब हो)	
राय हाजा वसरिये कुर्की व नीलाम जायदाद गैर मन्कूला अजा मुदआअलेह जो	
जेलमे दर्ज है वमूलहो मभको दिलायाजावे-	
	तरीका जिसमें आदालत की अयानत मतलूब है

— मैं — जाहिर करता हूँ कि मंजूमून मुन्दजै दरख्वास्त हाजा ताहद इल्म व यकीन मेरे सब सच है—

दस्तखत डिगरीदार

मुवरिखै तारीख माह सन्

( जिस सूरत में कुर्की व नीलाम जायदाद गैर मन्कूला मतलूब हो )

**पता व तफ्सील जायदाद**

३ हिस्सा गैर मुनकसमः ममलूका मदयून अज्ज यक मंजिल मकान  
वाकै मौजा महदूदह मालियती ४० )

शरकी

शरवी

जनूवी

शिमाली

मकान जैद

मकान वकूर

शारअमाम

कूचाखानगी

व मकान खालिद

मैं जाहिर करता हूँ कि जो कुछ तफ्सील मुन्दजैवाला में दर्ज है और जहांतक जायदाद मुन्दजै तफ्सील मजकूरको निस्वत हकूक मुद्आअलेह के मुतहक्किक करसक्ता हूँ वह ताहद इल्म व यकीन मेरे सच है—

दस्तखत डिगरीदार

**नम्बर ७**

**नोटिस व गरज जाहिर करने वजह के कि**

**इजराय क्यों न किया जाये**

**( आर्डर २१ कायदा २२ )**

**उनवान**

वनाम

हरगाह कि ने अदालत हाजा में दरख्वास्त इजराय डिगरी वमुकदमा नम्बर वावत सन् इस वयान से गुजरानी है कि डिगरी मजकूर उसके हक में मुन्तकिल होगई है—लिहाजा तुमको इत्तिला दीजाती है कि—तुम वतारीख माह सन् इस अदालत में हाजिर होकर वजह जाहिर करो कि इजराय क्यों न किया जाये—

आज वतारीख माह सन् मेरेदस्तरखत और मुहर  
अदालत से हवाले किया गया—

दस्तरखत जज

## नम्बर ८

वारन्ट कुर्की जायदाद मन्कूला बइल्लत इजराय  
डिगरी जर नकद के

( आर्डर २१ कायदा ३० )

उनवान

वनाम वेलिफ अदालत

हरगाह इस अदालत की डिगरी मरकूम तारीख माह

डिगरी			
जर असल			
जर सूद			
खर्चा			
खर्चा डिगरी			
सूद			
मीजान खर्चा कुर्की			
मीजान कुल			

सन् की रू से व मुकदमा नम्बर  
सन् मुसम्मै को यह हुक्म हुआ था  
कि मुद्दै को मुवलिग वहस्व तफसील  
मुन्दजै हाशिया अदाकरे और जो कि  
मुवलिग मजकूर अदा नहीं किया  
गया है लिहाजा तुमको हुक्म दिया जाता  
है कि जायदाद मन्कूला मजकूर  
की वहस्व मुन्दजै फर्द तअलीका मुन्स-

लिका या वह माल मन्कूला जिसकी निशांदिही तुमको मजकूर  
करे कुर्क करो और मजकूर अगर तुमको मुवलिग मजकूर  
मये मुवलिग वावत खर्चा इस कुर्की के न अदा करदे तो जब तक  
कि हुक्म सानी इस अदालत से न हो उस मालको कुर्क रखो—

तुमको यह भी हुक्म दिया जाता है कि इस वारन्ट को वतारीख  
माह सन् या कबल उसके बई तसदीक जाहिरी वापस करो  
कि किस तारीख और किस तौरपर उसकी तामील हुई या किस वजह  
से तामील नहीं हुई—

मेरे दस्तरखत और मुहर अदालत से आज वतारीख माह  
सन् हवाले किया गया—

फर्द तअलीका

दस्तरखत जज

## नम्बर ६

वारंट जब्ती खास जायदाद मन्कूला

तस्फिया शुदः अज्रख्य डिगरी

( आर्डर २१ कायदा ३१ )

## उनवान

वनाम वेलिफ अदालत

हरगाह को इस अदालत की डिगरी की रू से जो वमुकदमा  
नम्बर सन् वतारीख माह सन् सादिर हुई  
थी हुकम हुआथा कि जायदाद मन्कूला ( या हिस्सा जायदाद  
मन्कूला मुसरहे फर्द मुन्सलिका मुद्ई को हवाले करे और हरगाह जाय-  
दाद या हिस्सा मजकूर हवाले नहीं किया गया—

लिहाजा इसके जरिये से तुमको हुकम होता है कि जायदाद मजकूर  
( या फ़लां हिस्सा जायदाद मजकूर का ) जव्त करके मुद्ई के या उस  
शख्स के जिसको वह कहे हवाले करो—

आज वतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मुहर  
अदालत से जारी किया गया—

फेहरिस्त

दस्तखत जज

## नम्बर १०

इत्तिलानामा वास्ते करने उज्जरात दरबारै

मसविदा दस्तावेज के

( आर्डर २१ कायदा ३४ )

## उनवान

वनाम

मुत्तिला रहो कि वतारीख माह सन् डिगरीदार  
मुकदमा मुन्दसैवाना ने अदालत हाजा में दरखास्त गुजराती कि

अदालत तुम्हारी जानिव से जायदाद गैरमन्कूला मुसरहे जैल की निस्वत दस्तावेज की जिसका मसविदा मुन्सलिका हाजाहै तकमील करे और तारीख माह सन् वास्ते समाअत दरखास्त मजकूर के मुकरर की गई है और तुमको इस्तिथार है कि तारीख मजकूर पर हाजिर होकर जो उजरात बावत मसविदा मजकूर के रखते हो लिख कर पेश करो—

तफसील जायदाद

आज वतारीख माह सन् मेरेदस्तखत और मुहर अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

नम्बर ११

वारन्ट बनाम बेलिफ वास्ते हवाले करने  
कब्जा अराजी वगैरह

(आर्डर २१ कायदा ३५)

उन्वान

बनाम बेलिफ अदालत

हरगाह कि अराजी मुन्दजे जैल जो के कब्जा में है वरुय डिगरी मुद्दे मुकदमाहाजा को दिलाई गई है लिहाजा तुमको हुक्म दिया जाता है कि मजकूर को अराजी मजकूर पर कब्जा दिला दो और तुमको यह भी इस्तिथार दिया जाता है कि अगर कोई शख्स जो पाबंद डिगरी हो कब्जा देनेसे इन्कार करे तो उसको निकाल दो—

आज वतारीख माह सन् मेरेदस्तखत और मुहर अदालत से हवाले किया गया—

फेहरिस्त

## नम्बर १२

इत्तिलानामा बिनावर जाहिर करने वजह के कि  
वारन्ट गिरफ्तारी क्यों जारी न किया जावे  
(आर्डर २१ क्रायदा ३७)

## उनवान

बनाम

हरगाह कि... ने दरख्वास्त इजराय डिगरी व मुकदमा नम्बर  
वावतसन् वजरिये गिरफ्तारी व कैद तुम्हारी जात के अदालत  
हाजा में गुजरानी है लिहाजा तुमको हुक्म होता है कि तुम वतारीख  
माह सन् अदालत हाजा में हाजिर होकर वजह जाहिर करो  
कि तुम डिगरी मजकूर के इजराय जेलखाना दीवानी में क्यों न  
भेजे जावो—

आज वतारीख माह सन् मेरेदस्तखत और मुहर  
अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर १३

वारन्ट गिरफ्तारी वावत इजराय डिगरी  
(आर्डर २१ क्रायदा ३८)

## उनवान

बनाम वेलिफ अदालत

हरगाह व मुकदमा दीवानी नम्बर सन् ई० अजरूय डिगरी अदा-

जर असल	रूपया	शान	ग
जर सद			
सर्चा मुकदमा			
सर्चा रजगय डिगरी			

मोहान			
-------	--	--	--

लत मुवरिसै माह सन् के  
मुसम्मै को हुक्म हुआ है कि मुर्द को  
मुवलिंग हस्व तफमील मुन्दजे हाशिया  
अटाकरे और हरगाह मुवलिंग  
मजकूर बर्दपाय उस डिगरी के मुर्द मज-  
को तर्ज अदा किया गया है लिहाजा

वज़रिये इस तहरीर के तुमको हुक्म होता है कि मुद्दाआमलेह मजकूर को गिरफ्तार करो और अगर वह मुवलिग . मजकूर मये मुवलिग खर्चा इजराय हुकुमनामा हाजा तुमको न अदाकरे तो मुद्दाआमलेह मजकूर को अदालत के ख़वरू जिस क़दर जल्द वसूलत होसकै हाज़िर करो नीज़ तुमको हुक्म दिया जाता है कि इस वारन्ट को वतारीख माह सन् या कबूल इसके मये तहरीर जोहरी वतसदीक इस अम्र के कि किस तारीख और किस तौर पर उसकी तामील हुई या यह कि किस वजह से तामील न होसकी वापस करो—

आज वतारीख माह सन् मेरेदस्तखत और मुहर अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

नम्बर १४

वारन्ट मदयून डिगरी को जेलखाना में भेजनेका  
(आर्डर २१ कायदा ४०)

उनवान

वनाम अफसर मोहतमिम जेलखाना वाकै—

हरगाह कि इस अदालत में वतारीख माह सन्

वतामील वारन्ट इजराय डिगरी के जो इसे अदालत ने वतारीख

माह सन् सुनाई और सादिर की और जिस डिगरी की ख़से

मजकूर को मुवलिग रूपया अदा करनेका हुक्म हुआ था

हाज़िर लाया गया और हरगाह कि मजकूर ने डिगरी की तामील

नहीं की और न अदालतका इतमीनान किया कि वह हिरासत से रिहा होने

का मुस्तहक है लिहाजा तुमको हुज़ूर मलिकमुअज़्ज़म कैसर हिंद के नाम

में हुक्म दिया जाता है कि तुम मजकूर को लो और जेलखाना दीवानी

में दाखिल करो और उसमें उस मुद्दतकी जो नज़र से ज़्यादा न हो

या जबतक कि डिगरीका पूरे तौरपर ईफा नहो या जब तक— मजकूर

हस्व शरायत व अहकाम दफा ५८ मजमूआ जाव्ता दीवानी व निहज

दीगर रिहाई पानेका मुस्तहक नहो कैद रखो और अदालत वज़रिये

वारन्ट हाजा आना योमियां शरह ख़ूराक माहवारी मजकूर



जबतक वह इस चारण्ट सिपुर्दगी क्रीतामील में मुकैयद रहै मुकरर करतीहै—  
आज वतारीख माह सन् मेरेदस्तखत और मुहर  
अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

**नम्बर १५**

हुक्म रिहाईका निस्वत उस शख्स के जो बइल्लत  
इजराय डिगरी कैद किया गया—

( दफात ५८ व ५९ )

**उनवान**

बनाम अफसर मोहतमिम जेलखाना बाकै—

हस्व अहकाम मसदरह इम रोजह तुमको हिदायत कीजातीहै कि तुम

मदयून को जो इसवक्त तुम्हारी हिरासत में है रिहा करदो—  
मुवरिखै

दस्तखत जज

**नम्बर १६**

**कुर्की बसीगै इजराय डिगरी**

हुक्म इम्तिनाई उस हाल में कि जायदाद काविल कुर्की ऐसी शै  
मन्कूलाहो जिसपर मुद्आअलेहका इस्तहकाक तावे किसी मवाखिजा या  
इस्तहकाक किसी और शख्स के हो जो उस वक्त काविज उसकाहो—  
( आर्डर २१ कायदा ४६ )

**उनवान**

बनाम—

हरगाह ने जर डिगरी जो वतारीख माह सन्  
उसपर बहक वावत मुवलिग सादिर हुई थी अदा नहीं किया  
है लिहाजा हुक्म होताहै कि मुद्आअलेह जबतक कि उस अदालत से  
दूसरा हुक्म सादिर न हो से माल मुफस्सिल जैल जो मज-  
कूर के कब्जा में है यानी जिसका मुद्आअलेह वावताम मवाखिजा  
मजकूर के मुस्तहक है उमके लेनेसे ममनूअ और वाज गस्ताजाये

सन् १९०८ ई० ] मजसूमां जाळता दीवानी ।

४०१

और कहागयाहै और मजकूर उस वक्त तक कि इस अदालत से और हुक्म सादिर हो माल मजकूर को किसी और शख्स या अशखास को गोकि वह कोई हों हवाले करनेसे ममनूअ और वाज रक्खा जाये और कहा गया है—

आज वतारीख माह सन् मेरेदस्तखत और मुहर अदालत से हवाले कियागया—

दस्तखत जज

## नम्बर १७

कुर्की बसीगौ इजराय डिगरी

हुक्म इम्तिनाई जिस हाल में कि जायदाद अज्र क्रिस्म ऐसे दयूनके हो जिनके इस्तहकाक के लिये दस्तावेजात काबिल बैवशिशरा न लिखीगई हों

(आर्डर २१ कायदा १६)

उनवान

बनाम

हरगाह -ने जर डिगरी जो बनाम वतारीख माह

सन् वमुकदमा दीवानी नम्बर सन् वहक वावत मुवलिग से सादिर हुई थी नहीं अदा किया है लिहाजा हुक्म दिया जाताहै कि मुद्आअलेह वजरिये इस हुक्मके उस वक्ततक कि इस अदालत से दूसरा हुक्म सादिर हो तुमसे वह कर्जा जो कि बिलफैल तुम से याफ्तनी मुद्आअलेह मजकूर वयान कियागया है वसूल करने से ममनूअ और वाज रक्खाजाये और कहागया है यानी और नीज तुम मजकूर को वजरिये इस हुक्म के इत्तिला दीजाती है कि जब तक इस अदालत से और हुक्म सादिर न हो तुम कर्जा मजकूर या

उसका कोई जुज्व किसी शख्स को गोकि वह कोई हो अदा करने से  
ममनूअ और वाज रक्खेगये हो—

आज बतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मुहर  
अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जन

## नम्बर १८

कुर्की बसीगै इजराय डिगरी

हुक्म इम्तिनाई जिस हालमें कि जायदाद हिस्सा  
किसी कारपुरेशन का हो

( आर्डर २१ कायदा ४६ )

### उनवान

बनाम मुद्दआअलेह और बनाम सिक्रेटरी कारपुरेशन  
हरगाह ने जर डिगरी जो बनाम बतारीख माह  
सन् वमुकदमा दीवानी नम्बर सन् वहक वावत  
मुबलिया सादिर कीगई थी अदानहीं किया है लिहाजा हुक्म होता  
है कि तुम मुद्दआअलेह अजरख्य इस हुक्म के तावक्ते कि इस अदालत से  
दूसरा हुक्म सादिर न हो—हिसिस कारपुरेशन मजकूर यानी  
के इन्तिकाल करने से या उसके किसी मुनाफा की वावत हिस्सा के  
वसूल करने से ममनूअ और वाज रक्खेगये हो और तुम सिक्रेटरी  
कारपुरेशन मजकूर अजरख्य इस हुक्म के इन्तिकाल मजकूर की इजाजत  
देने या हिस्सा मुनाफा मजकूर के अदा करने से ममनूअ और वाज  
रक्खेगये हो—

आज बतारीख माह सन् मेरेदस्तखत और मुहर  
अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जन

## नम्बर १९

हुकम अफसर सकारी या मुलाजिम रेलवे  
या मुलाजिम हाकिम मुकामी की  
तनख्वाह कुर्क करने का  
( आर्डर २१ कायदा ४८ )

उनवान

बनाम—

हरगाह जो मुकदमा मुन्दजे उनवान में मदयून डिगरीहो  
है ( यहां मदयून डिगरी का ओहदा लिखना चाहिये ) और अपनी त-  
नख्वाह ( या मवाजिव तुम्हारे जरिये से पाताहै और हरगाह ने जो  
मुकदमा मजकूर में डिगरीदार है इस अदालत में एक दरख्वास्त गुजरानी  
है कि की तनख्वाह ( या मवाजिव ) का हिस्सा जो उसको अजरूय  
डिगरी याप्ततनी है कुर्क करायजाये लिहाजा तुम को हुकम होताहै कि  
रकम मजकूर चकदर फलों शर्ल्स की तनख्वाह में से रकम  
माह व माह वजा करलिया करौ और रकम मजकूर ( या इकसात मा-  
हाना ) इस अदालत में हरसाल करो—

आज वतारीख माह सन् मेरेदस्तखत और मुहर  
अदालत से जारी कियागया—

दस्तखत जज

## नम्बर २०

हुकम कुर्की दस्तावेज काबिल बैवशिशरा  
( आर्डर २१ कायदा ५१ )

उनवान

बनाम केलिफ अदालत—

हरगाह कि इस अदालत से व तारीख माह सन्  
हुकम विनावर कुर्की सोदिर हुआहै लिहाजा तुमको वजरिये  
हुकम हाजा हिदायत कीजाती है कि तुम मजकूर कब्जा में लो और  
उसको अदालत में हाजिर लाओ—

आज वतारीख माह सन् मेरेदस्तखत और मुहर  
अदालत से हथाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर २१

कुर्की

हुकम इम्तिनाई जिसहाल में कि जायदाद जर  
नक्द या कोई शै मन्कूला व कब्जै अदा-  
लत या अफसर सर्कारी के हो  
( आर्डर २१ कायदा ५२ )

उनवान

वनाम—

जनाव जो कि मुद्दै ने हस्व आर्डर २१ कायदा २२ मजमूआ  
ज़ाबता दीवानी व मुराद कुर्की होने उस जर नक्द के जो बिलफैल तुम्हारे  
कब्ज़ा में है दरख्वास्त गुज़रानी है ( यहां लिखना चाहिये कि शाय  
मकतूबअलेह के कब्ज़ा में जर नक्दका होना किस तरह मालूम हुआ  
और किस अम्नकी वावत है वगैरह ) बिनाबरान तुमसे दरख्वास्त की  
जाती है कि जबतक हुकमसानी इस अदालत से सादिर न हो तुम उस  
रुपया को अपने कब्ज़ा में रखो—

आपका खादिम

दस्तखत जज

मरकूमै तारीख

माह

सन्

## नम्बर २२

इत्तिलानामा डिगरी की कुर्कीका वनाम उस  
अदालत के जिसने डिगरी सादिर की हो  
( आर्डर २१ कायदा ५३ )

उनवान

वनाम साहब जज अदालत—

मैं आपको मुत्तिला करता हूँ कि उस डिगरी को जो आप की अदालत में वतारीख माह सन् फत्ता शख्स ने वमुक्तदमा नम्बर सन् जिसमें कि वह था और थे हासिल की थी इस अदालत ने ऊपर दरख्वास्त के जो व मुक्तदमा मुन्दर्जे उनवान मरजूम अदालत हाजा है कुर्क करलिया है—लिहाजा आपसे इत्तिमास है कि अपनी अदालत की डिगरी के इजराय की कार्रवाई उस वक़्त तक मुल्तवी रखिये जबतक आपके पास इस अदालत से एक इत्तिला इस मजमून की न पहुँचै कि इत्तिलानामा हाजा मुस्तरद होगया या जबतक डिगरीदार इस अदालत का डिगरी मजकूरके इजराय की दरख्वास्त न दे—

दस्तखत जज

## नम्बर २३

इत्तिलानामा डिगरी की कुर्की का वनाम डिगरीदारके  
(आर्डर २१ कायदा ५३)

### उनवान

#### वनाम

हरगाह मुक्तदमा मुन्दर्जे उनवान के डिगरीदार ने एक दरख्वास्त इस अदालतमें गुजरानी है इस मजमून की कि वह डिगरी जो तुमने वतारीख माह सन् वअदालत वमुक्तदमा नम्बर सन् जिसमें कि तुम थे और थे हासिल की कुर्क करली जाये लिहाजा हुक्म होता है कि तुम मजकूर ता सदूर अह-काम अदालत हाजा किसी जायदाद को मुन्तकिल या जेरवार करने से कि जिसपर तुमको डिगरी मजकूर की रूसे इस्तहकाक हासिल हो मना-कियेगये और वाज रक्वेगये—

आज वतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से जारी किया गया—

दस्तखत जज

नम्बर २४

कुर्की बसीगै इजराय डिगरी  
हुक्म इम्तिनाई बहालत जायदाद गैर मन्कूला  
( आर्डर २१ कायदा ५४ )

उनवान

चनाम

हरगाह तुम ईफाय डिगरीका जो तुम पर वतारीख— मुद्दाअलेह  
सन् वमुकदमा दीवानी नम्बर सन् वहक्त माह

मुवलिग सादिर की गई थी नहीं किया लिहाजा हुक्म दिया जाता  
है कि तुम मजकूर जवतक कि दूसरा हुक्म इस अदालत से  
सादिर न हो जायदाद मुसरहे फर्द तअलीका मुन्सलिका को बजरिये वै  
व हिवा वगैरह मुन्तकिल या जेर मवाखिजह करने से ममनूअ और वाज-  
रक्खेगयेहो और तमाम अशखास उसको बजरिये खरीदारी व हिवा वगैरह  
को लेनेसे ममनूअ व वाजरक्खेगये हैं—

आज वतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मुहर  
अदालत से हवाले किया गया—

फर्द तअलीका

दस्तखत जज

नम्बर २५

हुक्म बईमुराद कि रुपया वगैरह जो किसी शाख्स  
सालिस के कब्जामें हो मुद्दई को दिया जाये  
( आर्डर २१ कायदा ५६ )

चनाम

हरगाह माल मुन्दर्जे जैल वइलत इजराय डिगरी अदालत दीवानी  
मुकदमा दीवानी नम्बर सन् मसदरह तारीख

ह सन् वहक्त वावत मुवलिग कुर्क किया गया है

हाजा हुक्म होता है कि माल मक्खुता मजकूर यानी मुवलिग  
नक्कद और बैंकनोट कीमती मुवलिग या उनमें से जिस कदर  
चाहने ईफाय डिगरी मजकूर के काफी हो तुम मजकूर  
को अदा करदो—

आज बतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मुहर  
अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर २६ इत्तिला बनाम दायन कारिक के ( आर्डर २१ कायदा ५८ ) उनवान

बनाम

हरगाह मुसम्मै ने इस अदालत में दरख्वास्त गुजरानी है कि  
कुर्की मालकी जो तुम्हारी तरफ से वसीयै इजराय डिगरी मुकदमै  
अदालत दीवानी नम्बर सन् की गई है उठाई जाये लिहाजा  
तुमको इत्तिला दीजाती है बतारीख माह सन् इस  
अदालत में असालेतन या वजरिये वकील अदालत के जो करार वाकई  
वाक़िफ हो वास्ते ताईद तुम्हारे दावा के वमन्सब दायन कारिक होने के  
हाज़िर हो—

आज बतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मुहर  
अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर २७ वारन्ट यानी हुकुमनामा नीलाम जायदाद बइल्लत इजराय डिगरी जर नक़द ( आर्डर २१ कायदा ६६ )

बनाम वेलिफ अदालत

वजरिये इस तहरीर के तुमको हुक्म दिया जाता है कि पेशतर इत्तिला  
योमकी इस तौरपर दीगर याने नीलाम का इत्तिलानामा इस  
कचहरी में चस्पां और इश्तहार हस्व ज़ाबता कराकर जायदाद को  
जो हस्व वारन्ट अदालत हाजा मुवरिख माह सन् बइ-  
जराय डिगरी वहक के वमुक़दमा नम्बरी सन् के कुर्क  
की गई थी या जायदाद मजकूर में से उस क़दर कि वास्ते वसूल करने



मुवलिग के जो कि डिगरी और खर्चा मजकूर में से हिनोज गैर मुवदारहा है काफी हो नीलाम करो—

तुमको यह भी हुक्म होता है कि वारन्ट हाजा की पुस्तपर तसदीक इस अम्रकी लिखकर कि उसकी तामील किस तौरपर की गई या उसकी तामील न कियेजाने की वजह तहरीर करके इस वारन्ट को वतारीख माह सन् या उसके कबल वापस करो—

आज वतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर २८

इत्तिला तारीख बगरज तस्फिया मरातिब

इश्तहार नीलाम

( आर्डर २१ कायदा ६६ )

उनवान

बनाम

मदयून

हरगाह कि मुकद्दमा मुन्दजै वाला में डिगरीदार ने नीलाम की दरखास्त की है तुमको इस इत्तिलानामा के जरिये मुत्तिला किया जाता है कि तारीख माह सन् वास्ते तै करने मरातिब इश्तहार नीलाम के मुक्करर की गई है—

आज वतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर २९

इश्तहार नीलाम

( आर्डर २१ कायदा ६६ )

उनवान

इस तहरीर की रु से हस्व आर्डर २१ कायदा ६४ मजमूआ जाब्ता दीवानी अदालत हाजा से हुक्म वास्ते नीलाम जायदाद मकरुका मुन्दजै

फेहरिस्त मुन्सलिको बईफाय दावा डिगरीदार व मुकदमा । मुन्दर्ज  
 मुकदमा नम्बरी वावतसन् ई० हाशिया बक्रदर मये खर्चा व  
 मुन्सलिला मुकाम सूद व तातारीख नीलाम सादिर हुआ  
 जिसमें मुद्देया है जायदाद वजरिये नीलाम  
 और मुद्देया अलेह था आम के फरोख्तकी जायेगी और नी-

लाम अजरुख लाट मुन्दर्ज फेहरिस्त जैल के अमल में आयेगा—  
 नीलाम जायदाद मदयून डिगरी मजकूर लसदरका हस्व तसरीह फेहरिस्त  
 जैल के होगा—और अमतालिवाजात व दमावी मुतअल्लिका जायदाद  
 मजकूर जहांतक कि तहकीक हुयेहों फेहरिस्त मजकूर में वमुकाबिले हर  
 लाटके मुन्दर्ज हैं—

अगर कोई हुक्म इलतुवा नीलाम सादिर नाहो तों नीलाम मार्फत  
 के वरवक्त नीलाम माहवारी जो तारीख को वमुकाबिले  
 वक्त में वजेके शुरू होगा अमल में आयेगा—लेकिन दूसरते  
 कि कुल रुपया अमतालिवा मुसरहे वाला और खर्चा नीलाम किसी लाट  
 की बोली खतम होनेसे पहले पेश या अदा किया जाये तो नीलाम मौकूफ  
 किया जायेगा—

अमूमन खास व आमको असा लतन ख्वाह वजरिये मुख्तार के जो  
 हस्व ज्ञान्ता मजाजहो नीलाम में बोली बोलनेका इस्तियार है लेकिन  
 विला हसूल इजाजत सरीह अदालत के जो पहले से दी गई हो कोई  
 बोली डिगरीदारान मजकूर लसदर ख्वाह उनकी जानिव से मकबूल न  
 होगी और न नीलाम उनके नाम जायज होगा—

शरायत मजीद नीलाम के जैल में मुन्दर्ज हैं—

### शरायत नीलाम

१—मरातिवा मुसरहे फेहरिस्त मुन्दर्ज जैल ताहद वाकफियत अदालत  
 के तहरीर हुये हैं लेकिन किसी गलती या खिर्लाफ बयानी या फरो गुजा-  
 शत की वावत जो इस इश्तहार में पाई जाये अदालत लायक मवाखिजा  
 के न होगी—

२—जिस तादाद में कि बोली बढ़ाई जायेगी उसको ओहदादार नी-  
 लाम कुनिन्दा मुकरर करेगा—जिस सूरत में कि कोई निजाअ बोली की

मिकदार पर या बोली बोलने वाले की निश्चित पैदा हो तो वह लाट फौरन फिर नीलाम की जायेगी—

३—जिस शख्स की बोली सय से ज्यादा होगी वह खरीदार उस लाटका करार दिया जायेगा मगर यह बात हमेशा मलहूज रहेगी कि नाम-बुर्दह कानूनन काबिल बोली बोलने के है और यह भी शर्त है कि सबसे ज्यादा मिकदार की बोली को कबूल करने से इन्कार करना अदालत या ओहदादार नीलाम कुनिन्दा की सवाबदीद पर मौकूफ है जिस सूरत में कि यह मालूम हो कि कीमत पेश सरीह न इस कदर नाकाफी है कि उसको कबूल न करना करीन मसलहत है—

४—ओहदादार नीलाम कुनिन्दा को इस्लितयार है कि बज्रह कलमबंद करके नीलाम को मुलतवी करदे मगर अहकाम आर्टर २१ कायदा-६६ की पाबंदी हमेशा करनी होगी—

५—दरसूरत नीलाम जायदाद मन्कूला के कीमत हरकाट की बकत नीलाम या जिस कदर जल्द बाद नीलाम के ओहदादार नीलाम कुनिन्दा हुक्मदे दाखिल करनी होगी और दरसूरत न दाखिल करने के वह जायदाद फौरन फिर नीलाम कीजायेगी—

६—दरसूरत नीलाम जायदाद और मन्कूला के उस शख्स को जो खरीदार नीलाम करार दिया जाये वफौर खरीदार करार पाने के अपनी बोली की तादाद पर पचीस रुपया सैकड़ा ओहदादार नीलाम कुनिन्दा के पास जमा करना होगा और दरसूरत जमा न करने के जायदाद फौरन फिर नीलाम कीजायेगी—

७—खरीदार को लाजिम है कि रोज नीलामसे पंदरहवें दिन अलावह उस रोज के कन्तल बर्खास्त अदालत कुलजर समन दाखिल करे या अगर पंदरहवें दिन रोज अतवार या और कोई रोज तातील का वाकै हो तो पंदरहवें दिन के त्राट जिस रोज पहले कचहरी खुले उसी दिन दाखिल करे—

८—अगर बक्रीया जर समन मीयाद मुअय्यन में अदा न किया जाये तो जायदाद बाद इजराय इश्तहार नीलाम जदीद के फिर नीलाम की जायेगी और जर अमानत वाद अदा करने खर्चा नीलाम के अगर अदालत मुनासिब समझें सकार में जन्त होगा और खरीदार कासिर

का इस्तहकाक निस्वत जायदाद या किसी जुज्व जर समन के व यवज जिसके जायदाद वाद में नीलाम कीजाये वाकी न रहेगा —

आज बतारीख माह सन् मेरे दस्तरखत और मुहर अदालत से हवाले किया गया—

दस्तरखत जज

### फेहरिस्त जायदाद

नम्बर साट	तफरील जायदाद नीलामतलन मये नाम हर मालिक के जिस घरत में कि एक से ज्यादा मदयून हों—	मालगुजारी मुशखिसा मुहाल या जुज्व मुहाल अगर जायदाद नीलाम तलव ऐसा हक मुहाल या जुज्व मुहाल में हो जो माल गुजारे सकार हो—	तफरील नार किफालत जिसका मवाजिजा जायदाद पर है—	दंदावी ( अगर कोई हो ) जो निस्वत जायदाद के पेश कियेगये हैं— और दीनार मरातिव मालूमा जिनका अस्तर नौय्यत व मालियत जायदाद पर पहुचता हो—
१	२	३	४	५

### नम्बर ३०

हुक्म बनाम नाजिर वास्ते तामील कराने

इस्तहार नीलाम के

( आर्डर २१ कायदा ६६ )

उनवान

बनाम नाजिर अदालत—

हरगाह कि वास्ते नीलाम जायदाद मदयून डिगरी मुसरहे फेहरिस्त

मुन्सलिको हाजा हुकम हुआ है और हरमाह कि तारीख १० माह १०  
 सन् वास्ते नीलाम जायदाद मजकूर को मुकदमा हुई है लिहाजा—पर्व  
 इश्तहार नीलाम के इस वारन्ट की रू से तुम्हारे हवाले किये जाते हैं और  
 तुमको हुकम दिया जाता है कि तुम इश्तहार नीलाम को बजर्वदुहल हर  
 जायदाद पर जो फेहरिस्त मजकूर में दर्ज है मुश्तहर करादो और हर  
 जायदाद मजकूर के मंजरगाहआम पर इश्तहार मजकूर का एक एक  
 पर्त चरपां करादो और उसके बाद एक कौफियत वज्रहार उन तवारीख  
 के जिनपर और उस तरीका के जिसमें इश्तहारों की मुश्तहरी की गई इस  
 अदालत में भेजदो—

मुवरिख तारीख

माह

सन्

दस्तखत जज

फेहरिस्त

नम्बर ३१

सर्टीफिकेट ओहदादार नीलामकुनिन्दा निस्वत  
 कीमत के जो इस सूरत में हुई कि जायदाद  
 वजह कसूर खरीदारके दुवारा नीलामकी गई

( आर्डर २१ कायदा ७१ )

उनवान

तसदीक की जाती है कि व वजह कसूर खरीदार के जायदाद  
 इजराय डिगरी मुकदमा मजकूर वाला में दुवारा नीलाम की गई और  
 जायदाद मजकूर की कीमत में मुवलिंग की कमी बाक़े हुई और  
 इसराजात नीलाम दुवारा मुवलिंग रुपया हुये जिसकी मीजान  
 मुवलिंग है और रकम मजकूर शाख्स कासिर से काविल वसूल है—

मुवरिख तारीख

माह

सन्

ओहदादार नीलाम कुनिन्दा

## नम्बर ३२

इत्तिलानामा वनाम काबिजशै मन्कूला जो

बावत इजराय डिगरी नीलाम हुई

( आर्डर २१ कायदा ७९ )

उनवान

वनाम

हरगाह मुकद्दमा मरकूमा वालाकी इजराय डिगरी में मुसम्मै  
मुश्तरी नीलाम शै नीलामीका हुआ है जो तुम्हारे कब्जा में है  
लिहाजा तुमको वजरिये इस हुक्म के मुमानिअत कीजाती है कि  
मजकूर पर कब्जा किसी शख्स को वजुज मजकूर के न दो—

वदस्तखत मेरे और मुहर अदालत आज तारीख माह  
सन् को हवाले कियेगया—

दस्तखत जज

## नम्बर ३३

हुक्म इम्तिनाई बई मुराद कि दयून जो बावत  
इजराय डिगरी नीलाम कियेगये वजुज मुश्त-  
री के किसी और को न अदा कियेजायें

( आर्डर २१ कायदा ७९ )

उनवान

वनाम और वनाम

हरगाह ने वर वक्त नीलाम बावत इजराय डिगरी मुकद्दमा  
मरकूमा वाला के बावत वह जर कर्जा जो तुम से को याफ्तनी  
है यानी बतादाद खरीद करलिया है लिहाजा हुक्म दिया जाता है  
कि तुम कर्जा मजकूर के वजुज मजकूर के किसी और शख्स  
को अदा करनेसे और तुम कर्जा मजकूर के वसूल करने से ममनूअ  
किये गयेहो—

आज वतारीख माह सन् को मेरेदस्तखत और मुहर  
अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

### नम्बर ३४

हुक्म मशअर मुमानिअत इन्तिकाल हिंसिस जो  
बाबत इजराय डिगरी नीलाम किये गयेहों

( आर्डर २१ कायदा ७९ )

#### उनवान

बनाम व सिक्रेटरी कारपुरेशन

हरगाह - ने नीलाम आम में बइलत इजराय डिगरी मुकद्दमा मजकूर  
वाला कारपुरेशन मजकूर के चंद हिस्से यानी जो तुम्हारे नाम के  
हैं खरीद किये लिहाजा हुक्म दिया जाता है कि तुम हिंसिस मजकूर  
को बजुज मुश्तरी मजकूर के किसी और शख्स के हाथ किसी तौर  
पर मुन्तकिल करने और उनके मुनाफाका हिस्सा लेनेसे ममनूअहो और  
तुम सिक्रेटरी कारपुरेशन मजकूर ममनूअ किये जातेहो कि बजुज  
मुश्तरी मजकूर के किसी और शख्स के हाथ ऐसा इन्तिकाल न  
होने दो या जर मुनाफा मजकूर किसी और शख्स को अदान करो—

आज वतारीख माह सन् मेरेदस्तखत और मुहर  
अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

### नम्बर ३५

सार्टीफिकेट बनाम मदयून डिगरी जिसमें कि  
उसको इजाजत दी गई कि जायदाद को रेहन  
करे पट्टापरदे या फरोस्तकरे

( आर्डर २१ कायदा ८३ )

#### उनवान

हरगाह कि बइजराय डिगरी मसदरह मुकद्दमा मजकूर वालामें वतारी

ख माह सन् यह हुक्म हुआ कि मदन डिगरी की जायदाद मुफ्तसिले जैल नीलाम कीजाये और हरगाह कि मदन डिगरी की दरखास्त पर अदालत ने नीलाम मजदूर को मुलतवी कर दिया है ताकि मदन डिगरी जर डिगरी को बजरिये रेहन या पट्टा या बै खानगी-जायदाद-मजदूर या उसके किसी जुज्व के बेवाक करसके—

लिहाजा यह तसदीक कीजाती है कि अदालत बरूय सार्टीफिकट हाजा मदन डिगरी मजदूरको इजाजत देती है कि सार्टीफिकट हाजा की तारीख से मुहत के अन्दर रेहन या पट्टा या बै मुजबिजा को करे मगर शर्त यह है कि जो रकूम रेहन या पट्टा या बै मजदूर की रु से काबिल अदाहो वह इस अदालत में दाखिल कीजाये और मदन डिगरी-मजदूर को न दीजाये—

तफसील जायदाद

आज बतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर ३६

नोटिस बगरज इजहार बजह के कि नीलाम क्यों मंसूर न किया जाये

( आर्डर २१ कायदा ९० व ९२ )

उनवान

बनाम

हरगाह कि नीलाम मुसरहे जैल तारीख माह सन् बजराय डिगरी मसदरह मुकदमा मजदूर वाला नीलाम की गई थी और हरगाह कि डिगरीदार ( या मदन डिगरी ) ने इस अदालत में वास्ते मंसूखी नीलाम जायदाद मजदूर के दरखास्त दी है वरधिनाय वे जान्तगी अहम ( या फरेव ) दरवारह मुस्तहर करने ( या अमल में लाने ) नीलाम के जो हस्व जैल है—



मुत्तिलाहो कि अगर तुम ऐसी वजह जाहिर करसक्ते हो कि दरख्वास्त मजकूर क्यों मंजूर न कीजाये तो तुम मये अपने सबूत के इस अदालत में बतारीख माह सन् जब कि दरख्वास्त मजकूर मस-  
मूअ व फैसल होगी हाज़िर आवो—

आज बतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से हवाले किया गया—

तफसील जायदाद मुसरदे जैल ने जो बतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से हवाले किया गया—

नम्बर ३७

नोटिस बगरज इजहार वजह के कि नीलाम  
क्यों मन्सूख न कियाजाये  
( आर्डर २१ कायदा ६१ व ६२ )

उनवान

बनाम

हरगाह कि खरीदार जायदाद मुसरदे जैल ने जो बतारीख माह सन् वजराय डिगरी मसदरह मुकद्दमा मजकूरह वाला नीलाम कीगई थी इस अदालत में वास्ते मन्सूखी नीलाम जायदाद मजकूरह के इस बिनायपर दरख्वास्त दी है कि मदयून डिगरी का जायदाद मजकूर में कोई हक काबिल फरोख्त न था—

लिहाज़ा तुम मुत्तिला हो कि अगर तुम ऐसी वजह जाहिर करसक्ते हो कि दरख्वास्त मजकूर क्यों न मंजूर कीजाये तो तुम मये अपने सबूत के इस अदालत में बतारीख माह सन् जब कि दरख्वास्त मजकूर मसमूअ और फैसल होगी हाज़िर आवो—

आज बतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से हवाले किया गया—

तफसील जायदाद

दस्तखत जम

## नम्बर ३८

सार्टीफिकेट नीलाम अराजी  
( आर्डर २१ कायदा ६४ )

### उनवान

इस तहरीर की रू से तसदीक की जाती है कि मुसम्मै वतारीख  
माह सन् वज्रिये नीलाम आम के जो बइल्लत इजराय  
डिगरी इस मुकदमा के हुआथा मुश्तरी वाकै का करार दिया  
गया और नीलाम मजकूर इस अदालत से बाजाब्ता मंजूर हुआ—  
आज वतारीख माह सन् को मेरेदस्तखत और मुहर  
अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर ३९

हुक्म हवाले करने कब्जा अराजीका मुश्तरी सार्टी-  
फिकेट याफता नीलाम इजराय डिगरीको  
( आर्डर २१ कायदा ९५ )

बनाम वेलिफ अदालत

हरगाह वर वक्त नीलाम बावत इजराय डिगरी अदालत दीवानी मुक्त-  
दमा नम्बर सन् के मुसम्मै ने को खरीदकर सा-  
र्टीफिकेट नीलामी हासिल किया और अराजी मजकूर मुसम्मै के  
कब्जा में है लिहाजा तुमको हुक्म दिया जाता है कि मुसम्मै मजकूर  
मुश्तरी सार्टीफिकेट याफता ( या उसके कायम मुकाम जायज ) को  
मजकूर पर कब्जा दिला दो और अगर जरूर हो तो जो शर्त  
कब्जा देने से इन्कार करे उसको अराजी मजकूर से खारिज करदो—

आज वतारीख माह सन् मेरेदस्तखत और मुहर  
अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर ४०

सम्मन बगरज हाजिरी व जवाबदिही इलजाम  
मज्जाहिमत इजराय डिगरी के  
( आर्डर २१ कायदा ६७ )

## उनवान

बनाम—

हरगाह कि डिगरीदार मुकदमा मजकूर वाला ने इस अदालत में  
इस्तगासा किया है कि तुमने ओहदादार के साथ जिसके सिपुर्द वारन्ट  
क्रब्जा की तामील थी मज्जाहिमत ( या तअर्रज ) किया है—

लिहाजा तुमको बजरिये इसके हुक्म दिया जाता है कि तुम बतारी-  
ख माह सन् ववक्त कब्ल दोपहर इस अदालत में  
हाजिर होकर इस्तगासा मजकूरकी जवाबदिही करो—

आज बतारीख माह सन् मेरेदस्तखत और मुहर  
अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर ४१

वारन्ट हिरासत में रखनेका  
( आर्डर २१ कायदा ९८ )

## उनवान

बनाम अफसर मोहम्मिद जेलखाना दीवानी वाकै—

हरगाह कि जायदाद मुन्तजि जैल दख्त डिगरी मुद्दै मुकदमा  
हाजा को टिल्लाई गई है और हरगाह कि अदालत का इतमीनान होगया  
है कि ने विला वजह जायजके मजकूरके साथ निस्वत पाने  
क्रब्जा जायदाद के मज्जाहिमत ( या तअर्रज ) किया है और दिनोज कर  
रहा है और हरगाह कि मजकूरने इस अदालत में दरख्वास्त की है  
कि मजकूर जेलखाना दीवानी में कैद किया जाये—

लिहाजा तुमको बजरिये वारन्ट हाजा हुकम दिया जाता है और ताकीद की जाती है कि तुम मजकूर को जेलखाना दीवानी में दाखिल करो और इसमें मुद्त योमतक इसको कैद रखो—

आज बतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से हवा किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर ४२

इजाजत बनाम कलक्टर दरबाब मुल्तवी रखने  
नीलाम आम अराजी के ( दफा ७२ )

बनाम कलक्टर मुकाम

बजवाब आपकी तहरीर नम्बरी मुवरिख मशअर इस अत्र के कि बसीगी इजराय डिगरी इस मुकद्दमा के नीलाम अराजी का जो आपके जिलअ में बाकै है अमल में आना मुनासिब नहीं लिहाजा मैं आपको मुत्तिला करता हूँ कि आपको इस्तिथार दिया जाता है कि जिस तौरपर कि आपने बजाय नीलाम अराजी डिगरी के ईफाय की तदवीर लिखी है वह अमल में लाई जाय—

आपका खादिम

दस्तखत जज

इपनडिक्स ( वाव )

कार्रवाई हाय जिमनी

नम्बर १

वारन्ट गिरफ्तारी कब्ज फ़ैसला

( आर्डर ३८ कायदा-१ )

उनवान

बनाम वेलिफ अदालत

हरगाह मुद्ई मुकद्दमा मजकूरह वाला ने हस्व तफसील गुन्दज

जर अस्त	रपया	आना	पाई
जर सूद			
खर्चा मुकदमा			
मीजान			

हाशिया मुवलिग को दावा किया है और हस्व इतमीनान अदालत यह साबित करदिया है कि इसके बावर करने की वजह माकूल है कि मुद्आअलेह करीब है कि लिहाजा तुमको हुक्म दिया जाता है कि मजकूर से मुवलिग जो मुद्ई का दावा पूरा

करने के लिये काफी हो तलब और वसूल करो और अगर मजकूर मुवलिग फौरन तुम्हारे हवाले न करे या उसकी तरफ से अदा न किया जाये

तो मजकूर को हिरासत में करो, खरू अदालत के हाजिर करो ताकि वह वजह इसकी वयान करे कि उससे जमानत बतादाद मुवलिग

अदालत के खरू तावकते कि मुकदमा मजकूर व कुली और कतई फैसल होजाये और तावकते कि डिगरी जो वनाम व मुकदमा मजकूर सादिर हो जारी होकर उसका ईफा करदिया जाय अदालत न हाजिर रहने के लिये क्यों न दाखिल कराई जाये—

आज वतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर २

जमानत वास्ते हाजिरी मुद्आअलेह के जो कब्ल फ़ैसला गिरफ्तार हुआ  
( आर्डर ३८ कायदा-२ )

### उनवान

हरगाह कि मुद्ई मुकदमा मजकूरह वाला की तहरीक पर मुद्आअलेह गिरफ्तार होकर अदालत के खरू लाया गया और हरगाह मुद्आअलेह मजकूर वजह जाहिर न कर सका कि वह हाजिर जामिनी क्यों दाखिल न करे और अदालत ने उसको जमानत मजकूर के दाखिल करने का हुक्म दिया है—

इस लिये मैं अपनी मर्जीसे ज़ामिन होताहूँ और इस तहरीरकी  
रुसे अदालत मौसूफ के मुक्ताविले में खुद को और अपने वरसा और  
औसियाय को ज़िम्मेदार करार देताहूँ कि दौरान मुकदमा में और ता  
ईफ़ाय डिगरी के जो मुक्ताविले उसके मुकदमा मजकूर में सादिर हो मुद-  
आअलेह मजकूर जिस वक़्त अदालत हुक्म देगी हाज़िर होगा और  
अगर मुदआअलेह मजकूर हाज़िर न होगा तो मैं इक्क़रार करताहूँ कि मैं  
और मेरे वरसा और औसियाय रक्तम जो व ज़िम्मे मुदआअलेह मजकूर  
मुकदमा में वाजिव करार पाये अदालत मौसूफ को इन्दुलहुक्म अद-  
लत अदा करेंगे—

जिसके सबूत में मेरे दस्तखत बतारीख : माह सन्  
सिब्त हुये—

गवाहान

१—

२—

दस्तखत

### नम्बर ३

सम्मन बगरज़ हाज़िरी मुदआअलेह जब कि  
ज़ामिन ने वास्ते बराअत के दरखास्त की हो  
( आर्डर ३८ कायदा ३ )

#### उनवान

वनाम

हरगाह कि : जो बतारीख : माह सन् तुम्हारी  
हाज़िरी के लिये ज़ामिन हुआ था इस अदालत में अपनी ज़िम्मेदारी से  
वरी होने के लिये दरखास्त दी है—

लिहाज़ा तुमको वज़रिये इसके हुक्म दिया जाता है तुम इस अदालत  
में बतारीख : माह सन् वक़्त क़बल दोपहर जब  
कि दरखास्त मजकूर मसमूअ और फैसल होगी अदालतन हा-  
ज़िर आबो—

आज बतारीख      माह      सन्      मेरे दस्तखत और मुहर  
अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर ४

हुक्म हिरासत में रखने का  
( आर्डर ३८ कायदा ४ )

उनवान

बनाम

हरगाह      मुद्ई ने इस मुकदमा में अदालत के हज़ूर यह दरखास्त  
गुजरानी है कि मुद्आअलेह      से वास्ते तामील उस फैसला के जो  
कि      पर इस मुकदमा में सादिरहो हाज़िर ज़ामिनी तलब कीजाये  
और अदालत ने मुद्आअलेह      को हुक्म दिया कि ज़मानत मज़कूर  
दाखिल करै या बजाय ज़मानत के ज़र काफ़ी अमानतन दाखिल करै  
मगर इस अम्र में      कासिर हुआ लिहाज़ा हुक्म दिया जाता है कि मुद्-  
आअलेह      मज़कूर ताफ़ैसला मुकदमा या जिस हाल में कि फैसला  
खिलाफ़ मुराद      सादिर हो तो तोचक़्त इजराय डिगरी दीवानी जेल  
में हिरासत में रक्खा जाये—

आज बतारीख      माह      सन्      को मेरे दस्तखत और मुहर  
अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर ५

कुर्की कबूल फैसला मये हुक्म अदरखाल ज़मानत  
वास्ते तामील डिगरीके  
( आर्डर ३८ कायदा ५ )

उनवान

बनाम बेलिफ अदालत

हरगाह      ने हम्य इनमीनान अदालत साबित किया है कि मुरबाअ

लेहने वमुक्तदमा मरकूमै वाला लिहाजा तुमको हुक्म दिया जाता है कि मुद्दाम्मलेह को हुक्म दो कि बतारीख माह सन् या उससे पहले वावत मुवलिग के जमानत इस अम्रकी दाखिल करै कि जब हुक्म हो तो इस अदालत में पेश करके अमानत दाखिल करै या उसकी कीमत दाखिल करै या कीमत में से इस कदर जो वास्ते ईफा उस डिगरी के काफी हो कि अदालत हाजा पर सादिर करै या यह कि अदालत में हाजिर होकर यह जाहिर करै कि कोकिस वजहसे जमानत दाखिल करनी न चाहिये और तुमको यह हुक्म भी दिया जाता है कि मजकूर को कुर्क करके ता सदूर हुक्मसानी अदालत के उसको हिरासत महफूजमें रखो और तुमको यह भी हुक्म दिया जाता है कि इस वारन्ट की पुश्तपर तसदीक इस अम्रकी लिखकर कि वारन्ट की तामील किस तारीखको और किसतौर पर की गई या उसके तामील न कियेजाने की वजह लिखकर इस वारन्ट को वापस भेज दो—

आज बतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर ६

जमानत बगरज पेश करने जायदाद के

( आर्डर ३८ क़ायदा ५ )

### उनवान

हरगाह कि तहरीक मुद्दै मुक्तदमा मजकूरै वाला अदालत में मुद्दाम्मलेहको हुक्म दिया है कि जमानत बकदर मुवलिग रुपया के वास्ते पेश करने और बकदर अदालत देने जायदाद मुन्दर्जे फेहरिस्त मुन्सलिका हाजाके दाखिल करै लिहाजा मैं अपनी मर्जी से जामिन होता हूँ और इस तहरीर की रू से अदालत मौसूफ के मुक्ताविले में खुदको और अपने वरसाय और औसियाय को जिम्मेदार करार देता हूँ कि मुद्दाम्मलेह मजकूर जायदाद मुन्दर्जे फेहरिस्त मजकूर को या उसकी कीमत को या उसके इस कदर जुज्व जो वास्ते ईफा डिगरी के काफी हो इन्दुल तलव अदालत में पेश करेगा और बकदर



अदालत देदेगा और अगर वह ऐसा न करे तो मैं इक्करा करता हूँ कि मैं और मेरे बरसा और औसियाय इन्दुलहुकम अदालत मुवालिग रुपया या इस कदर रुपया जो रकम मजकूर से ज्यादा न हो जसा अदालत मौसूफ तै करे अदालत मौसूफ को अदा करेंगे—

फेहरिस्त—  
जिसके सबूत में मैंने बतारीख माह सन् अपने दस्तखत सिव्त किये—

गवाहान

दस्तखत

१—

२—

## नम्बर ७

कुर्की कबूल फ़ैसला दरसूरत सबूत

अदम अदखाल जमानत

( आर्डर ३८ कायदा ६० )

## उनवान

बनाम बेलिफ अदालत

हरगाह मुसम्मै

मुद्दै ने इस मुकदमा में अदालत को यह दर-

ख्वास्त दी है कि

मुद्दाअल्लेह से

जमानत वास्ते ईफाय डिगरी के जो बनाम

इस मुकदमा में सादिर

हो तलब कीजाये और जोकि अदालत ने

मजकूर को उस जमानत

के दाखिल करने का हुक्म दिया है मगर वह बजायावरी से कासिर रहा

है लिहाजा तुमको हुक्म दिया जाता है कि माल मजकूर का कुर्क

करो और उसको तावते कि हुक्मसानी अदालत का सादिर हो बहिफा-

जत जेर हिरासत रखो और तुमको यह भी हुक्म दिया जाता है इस वारन्ट

की पुश्तपर तसदीक इस थमकी लिखकर कि वारन्ट की तामील किस

तारीख को और किस तौरपर की गई या उमके तामील न कियेजाने की

बजट लिखकर इस वारन्ट को वापस भेजदो—

आज बतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मुहर  
अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर ८

हुक्म इम्तिनाई चंद रोजह  
( आर्डर ३६ कायदा १ )

### उनवान

घरतवक्त दरख्वास्त मुसम्मै वकील ( या कौंसली ) ( अलिफत्रे )  
मुद्ई के और वमुलाहिजा सवाल मुद्ई मजकूर के जो ( आज ) इस मज्मा-  
मिला में गुजरा है ( या वमुलाहिजा अर्जीदावा के जो इस मुकदमा में बतारीख  
माह सन् ) गुजरा है या वमुलाहिजा बयान तहरीरी  
मुद्ई के जो बतारीख माह सन् दाखिल हुआ है और  
वाद समाअत शहादत मुसम्मियां और जो बतार्ईद दर-  
ख्वास्त के पेशहुई है ( अगर मुद्आअलेह को इत्तिला दीगई हो और  
वह हाजिर न हो तो यह लिखा जायेगा कि वाद समाअत शहादत मुस-  
म्मै बसवत पहुंचने इत्तिला अदखाल दरख्वास्त मजकूर बदस्त  
( जीम दाल ) मुद्आअलेह के ) अदालत से हुक्म होता है कि हुक्म-  
इम्तिनाई वमुराद वाज रखने ( जीम दाल ) मुद्आअलेह और उसके  
नौकरों और कारीगरों और कारपरदाजों के उस मकान के मिसमार  
करने या मिसमार होनेदेनेसे जो मुद्ई मजकूर के अर्जीदावा में मजकूर है  
( या जो मुद्ई ने बयान तहरीरी या सवाल में या इस शहादत में बयान  
हुआ है जो वक्त अदखाल इस दरख्वास्त के लीगई थी ) यानी मकान  
नम्बर ६ संडक मौसूमा आयल भिनकर स्ट्रीट वाकै मौजा हिन्दूपूर  
तअल्लुका और नीज वास्ते वाज रखने मुद्आअलेह और उसके  
मुलाजिमान वगैरह को मकान मजकूर के अमला और मसालहा के फ-  
रोस्त करने से उस वक्ततक कि इस मुकदमा की समाअत न हो या ता  
सदूर हुक्मसानी अदालत हाजा के जारी किया जाये—

मुवरीख तारीख माह सन् १९ ई०

दस्तखत जज

तम्बीह—जबकि हुक्म इम्तिनाई वास्ते वाज़ रखने मुद्आअलेह के फरोख्त करने से किसी बिल या नोट के मतलूबहो तो अदालत के हुक्ममें जहां हुक्म इम्तिनाई का बयान है यह लिखा जायेगा कि मुद्आअलेहुम् और तावक़ते कि इस मुक़दमा की समाप्त हो या तासदूर हुक्मसानी अदालत हाज़ाके उस परामेसरी नोट या बिल आफ़ एक्स-चेंज मुवरीख़ै को जो मुद्ई के अर्ज़ीदावा ( या सवाल ) में बयान हुआ है और जिसका मजकूर इस शहादत में भी है जो बरवक़त अदखाल दरख्वास्त के लीगई थी अपने या उनमेंसे किसीके कब्ज़ा से अलाहिदा न करें और उसकी पुश्तपर इबारत फरोख्त या इन्तिकाल की न लिखें और न उसको फरोख्त करें—

जब मुक़दमा वास्ते हिफ़्ज़ हक़ मुसन्निफी के हो तो हुक्म इम्तिनाई में यह लिखाजायेगा कि वास्ते वाज़रखने ( जीम दाल ) मुद्आअलेह और उसके मुलाज़िमों और कारीगरों और कारपरदाजों के किताब मौसूमा या उसके किसी जुज़्व के छापने या मुश्तहर या फरोख्त करने से तावक़ते कि इस मुक़दमाकी समाप्त न हो या अदालत से हुक्मसानी सादिर न हो अलख—

जब मुद्आअलेह को सिर्फ़ एक जुज़्व किताब के तवा बग़ैरह से वाज़ रखना मंज़ूरहो तो यह लिखाजायेगा कि वास्ते वाज़रखने ( जीम दाल ) मुद्आअलेह और उसके मुलाज़िमों और कारीगरों और कार परदाजों के छापने या मुश्तहर या फरोख्त या किसी निहजपर मुन्तकिल करने से उस क़दर हिस्सि किताब के जो मुद्ई के अर्ज़ीदावा ( या सवाल या शहादत मदखिला ) में मुफ़सिल मजकूरहैं और जिनका मुद्आअलेह की तरफ़ से मुश्तहर होना जाहिर कियागया है हस्व तफ़सील ज़ैल यानी किताब मजकूरका उस क़दर जुज़्व जो कहलाता है और नीज वह जुज़्व जो के नाम से मौसूम है ( या जो किताब में सफा से सफा तक मुन्दर्ज है ) तावक़ते कि अलख—

मुक़दमात हिफ़्ज़ पेटण्ट यानी हक़ ईजाद में यह लिखाजायेगा कि तसदूर हुक्म अदालत ( जीम दाल ) मुद्आअलेह और उसके कारीगर और मुलाज़िम और कार परदाज लोग अमूर मुफ़सिल ज़ैल से बाज़

रक्खेजायें यानी ईंटें सूराखदार व या जो शैहो मिस्ल शैईजाद मुद्ई के जो अर्जीदावा में ( या सवाल या बयान-तहरीरी वगैरह में ) मुफसिसल मजकूर है और जिसके ईजादका हक्क मदयून या उनमें से एकको हासिल है इस मुद्दतकी वाक्ती मीयाद तक जो मुद्ई की सनद पेटण्ट में अताहुई है और जिसका जिक्र अर्जीदावा में ( या जैसी सूरतहो ) मुन्दर्ज है अपनी तरफ से तयार या फरोख्त न करें और न उसकी नफ्तल और तलवीस करें और न उसी शक्ल और वज्रा की और ईंट बनायें और न नौई-जाद ईंट में कुछ कमी और वेशीकरें - तावक़ते कि अलख—

माल तिजारत के निशानात के मुक़दमा में यह लिखाजायेगा कि वसदर हुक्म अदालत मुसम्मै ( जीम दाल ) मुद्आअलेह और उसके मुलाजिम और कारीगर और कारपरदाज लोग अफ़आल मुफसिसलै ज़ैल से बाज़ रक्खेजायें यानी किसी किसमकी मुरक्ब चीज़ या स्याही जो कुछ कि हो जो वनाम निहाद स्याही-मुरक्बा ( अलिफ वे ) मुद्ई के बयान या ज़ाहिर कीगईहो ऐसी बोलों में भरकर फरोख्त न करें न फरोख्त के लिये दिखावैं न औरों से फरोख्त करावैं जिनपर ऐसा लेबुल यांनी कागज़ तस्मिया चस्पांहो जिसकी सराहत मुद्ई के अर्जीदावा में या सवाल वगैरह में मुन्दर्ज है या कोई और लेबुल ऐसी किसम और क़ितअ और रङ्ग और इवारतका लगाहो कि व वजह मुशाबिहत व लेबुल असली के यह गुमान पैदाकरै कि वह मुरक्ब चीज़ या स्याही तैयारकरदह मुद्आअलेह मजकूर वहीहै जो मुद्ई-आप तैयारकरके बेचताहै और नीज़ हुक्म दियाजाय है कि वह लोग फरोख्त के इश्तहारनामे ऐसे बना कर और लिखाकर मुस्तअमल न करें कि अत्राम को गुमानहो कि वह मुरक्ब चीज़ या स्याही जो मुद्आअलेह-वनवाकर फरोख्त करताहै या फरोख्त करना चाहताहै वहीहै जो ( अलिफ वे- ) मुद्ई तयार और फरोख्त करताहै तावक़ते कि अलख—

अगर किसी शरीक को कारोबार शराकती में दस्त अन्दाज़ होने से बाज़रखना मंज़ूर हो तो यह लिखाजायेगा कि वसदूर हुक्म अदालत ( जीम दाल ) मुद्आअलेह और उसके मुलाजिम और कारपरदाज लोग अफ़आल मुफसिसलै ज़ैल से बाज़ रक्खे जायें याने वह लोग ( हे वाव ) की कोठी शराकती के नाम से किसी तरहका मआहिदा न करें

और कोई विलआफ एक्सचेंज या हुण्डी या नोट या किफालतनामा तहरीरी न लिखें और न सकाँ और न पुस्तपर इन्तिकाल की इबारत लिखें न उनकी फरोख्त करें और ( हे वाव ) की कोठी शराकती के नाम से या उसके एतवार की तकवियत से कभी कर्जा न लें और माल खरीद व फरोख्त न करें और न किसी तरहका वादा या इकरार या मआहिदा जवानी या तहरीरी अमल में लायें और न कोई ऐसा फेल कोठी शराकती के नाम से करें या दूसरेसे करायें जिसके सबब से कोठी शराकती मजकूर किसी मुवलिग के अदा करनेकी जिम्मेदार होजाये या तामील किसी वादा या इकरार या मआहिदा की कोठी मजकूर पर लाजिम आये तावकते कि अलख—

## नम्बर ९

तक्रर रिसीवर यानी मोहतमिम

( आर्डर ४० कायदा ९ )

उनवान

बनाम

हरगाह जायदाद वइल्लत इजराय डिगरी जो वमुक्तहमा मजकूर वतारीख माह सन् बहक सादिर हुई थी कुर्क कीगई है लिहाजा तुम सरवराहकार जायदाद मजकूर के हस्व आर्डर ४० मजमूआ जाब्ता दीवानी मुक्रर हुये वशत अदखाल जमानत हस्व इतमीनान अदालत के और तुमको हस्व अहकामे आर्डर मजकूर इस्लियारात कुली हासिल है—

तुमको लाजिम है कि तारीख पर हिसाब सही और वाजिबी आमद व खर्च जायदाद मजकूर का दाखिल करो और वपूजिव इस हुक्म तक्रर के तुम उस रुपया पर जो कि वमूल हो वशरह फीसदी के मुस्तहक पाने हमुलसई के होगे—

आज वतारीख माह सन् मरेदस्तखत और मुहर अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर १०

इकरारनामा जो रिसीवर यानी मोहतमिमको  
दाखिल करना होगा

( आर्डर ४० कायदा ३ )

### उनवान

सब लोगों को बाजेहो कि हम मुसम्मियान और और  
विलजमाअ और विल नफराद अदालत की खिदमत में इ-  
करार करते हैं कि मुवलिग मौसूफ या उसके जानशीन ओहदा  
वरवक्त को अदा करदेंगे और अजरख्य इस इकरार नामा के हम और  
हम में से हर एक और हमारे वरसा और औसिया और मोहतमिमान  
तर्का विलजमाअ और विलनफराद और उस कुल रुपया के अदा करने  
के जिम्मेदार रहेंगे—

मरकूमै तारीख भाह सन्

और हरगाह एक अर्जीदावा इस अदालत में ने बनाम के  
वमुराद ( यहां गरज नालिश की लिखनी होगी ) गुजरानाहै—

और हरगाह मजकूर व हुक्म अदालत मजकूरै बाला सुत-  
जद्विरह अर्जीदावा की जायदाद और मन्कूला के लगान या किराया और  
मुनाफाके वसूल करने और उसकी जायदाद और मन्कूला को गैरों से  
हासिल करनेके लिये मुकर्रर किया गयाहै—

पस शर्त इस इकरार नामाकी यह है कि अगर मजकूर वावत  
तमाम मुवलिग और हर रकम के जो कि उसको मजकूर की जाय-  
दाद गैर मन्कूला के लगान या किराया और मुनाफा की वावत और  
उसकी जायदाद मन्कूला की वावत वसूलहो ( यानी जैसी कि सूरतहो )  
उन औकात पर जो कि अदालत मजकूर मुकर्रर करै हस्व जाब्ता हिसाब  
दे और जो वाकियात कि वक्तन फवक्तन उससे वाजिबुल वसूलहों और  
जिनकी तसदीक उस तौरपर जैसा कि अदालत ने हिदायत की है या  
आयन्दा हिदायत करै हस्व जाब्ता अदाकरदे तो यह इकरारनामा फिस्ख  
होगा वरना पूरेतौरपर कायम रहेगा—

मुकिरान मजकूरै वाला के दस्तरखत से हवाले किया गया खूबरू के-  
तम्बीह—अगर रुपया अमानत दाखिल किया जाये तो उसकी  
याददाश्त मुताबिक शर्त मुन्दजै इक्करारनामा के होगी—

इपनडिक्स ( जे )

अपील व इस्तिस्वाब व तजवीज सानी

नम्बर १

याददाश्त अपील

( आर्डर ४१ कायदा १ )

उनवान

मजकूरै वाला अदालत वाकै में बनाराजी डिगरी व मु-  
कदमै मरकूमै वाला मुवरिंसै तारीख माह सन् व वजूह  
मुफस्सिलै जैल अपील गुजरानता है यानी ( यहां वजूह नाराजी  
वयान की जायें—)

नम्बर २

जमानतनामा जो वरतवक सदूर हुक्म इलतुवाय

इजराय डिगरी दिया जायेगा

( आर्डर ४१ कायदा ५ )

उनवान

वनाम

जमानतनामा हाजा वरतवक इलतुवाय इजराय डिगरी इक्करारी  
सनद अमूर मुन्दजै जैल है—

यह कि मुद्दै मुकदमा वावत सन् ने मुद्माअलेह  
पर इस अदालत में नालिश की और तारीख माह  
सन् वहक मुद्दै डिगरी सादिरहुई और मुद्माअलेहने बनाराजी डिगरी  
मजहूर अदालत में अपील दायर किया जो हिनोज जेर तजवीज है—  
शव मुद्दै डिगरीदार ने इजराय डिगरी की दस्तवास्त की और मुद्-

आमलेहने दरखास्त वइस्तदुआय इलतुवाय इजराय डिगरी गुजरानी है और उसको जमानत दाखिल करने का हुक्म हुआ है लिहाजा मैं विला इकराह अपनी मर्जी से वक्तदर मुत्रलिंग रुपया के जामिन होकर जायदाद हाय मुन्दर्जे फेहरिस्त मुन्सलिका हाजा को रेहन करता हूं और इक्तरार करता हूं कि अगर अदालत अपील से अदालत मराफतमआला की डिगरी बहाल रहे या बदली जाये तो मुदआमलेह मजकूर डिगरी अदालत अपील के वमूजिव वतौर वाजिव अमल करेगा और डिगरी की रूसे जो कुछ वजिम्मे उसके वाजिवुल अदा होगा अदा करेगा और अगर वह उसमें कसूर करे तो रकम वाजिवुल अदा मजकूर जायदाद हाय भरहूना हाजा से वसूल की जाये और अगर मुहासिल नीलाम जायदाद हाय मजकूर वास्ते अदायगी रकम मजकूर के ना काफी हो तो मैं और मेरे कायम मुकामान कानूनी अदाय जर वक्ताया के वजात खुद जिम्मेदार होंगे—वई मुराद मैंने जमानतनामा हाजा आज वतारीख माह सन् तहरीर कर दिया—

फेहरिस्त

दस्तखत

गवाहान—

१—

२—

## नम्बर ३

जमानतनामा जो दौरान अपील में दिया जायेगा  
( आर्डर ४१ कायदा ६ )

उनवान

वनाम—

जमानतनामा हाजा वरतवक्त इलतुवाय इजराय डिगरी इक्तरारी  
सनद अमूर मुन्दर्जे जैल है—

यह कि मुद्दई मुकदमा नं० वावत सन् ने  
मुदआमलेहपर इस अदालत में नालिश की और वतारीख माह



सन् वहक मुद्ई डिगरी सादिर हुई और मुद्आअलेह ने बनाराजी डिगरी मज़कूर अदालत में अपील दायर किया जो हिनोज़ ज़ेर तजवीज़ है—

अब मुद्ई डिगरीदार ने इजराय डिगरी की दरखास्त की है और उसको ज़मानत दाखिल करनेका हुक्म हुआ है— लिहाज़ा मैं विलाइक-राह अपनी मज़ी से वक़दर मुवलिग़ के ज़ामिन होकर जायदाद-हाय मुन्दर्जे फ़ेहरिस्त मुन्सलिका हाज़ा रेहन करता हूँ और इत्तार करता हूँ कि अगर अदालत अपील से डिगरी अदालत ग़ुराफ़अथौलाकी मन्सूख़ होजाये या बदल जाये तो मुद्ई उस जायदाद को जो डिगरी मज़कूरके इजराय में लीजाये या लेलीगईहो वापस करदेगा और डिगरी अदालत अपीलके वमूजिव वतौर वाजिव अमल करेगा और डिगरी की रूसे जो कुछ वज़िम्मे उसके वाजिवुलअदाहोगा अदा करेगा और अगर वह उसमें कसूर करे तो रक़म वाजिवुलअदा मज़कूर जायदाद हाय मरहूना हाज़ा से वसूल कीजाये और अगर मुहासिल नीलाम जायदाद हाय मरहूना मज़कूर वास्ते अदायगी रक़म मज़कूरके नाकाफी हो तो मैं और मेरेकायम मुक्कामान क़ानूनी अदाय ज़र वक्तायाके वज़ात खुद ज़िम्मेदारहोंगे—वईमुराद मैंने ज़मानत नामा हाज़ा आज वतारीख़ माह

सन् तहरीर करदिया—

फ़ेहरिस्त

गवाहान

दस्तख़त

१—

२—

नम्बर ४

ज़मानत खर्चा अपीलकी  
( आर्डर ४१ कायदा १० )

उनवान

वनाम—

ज़मानतनामा हाज़ा वावत खर्चा अपील इक़गरी  
मुन्दर्जे ज़ाल है—

सनद अमर

अपीलांट हाजाने डिगरी मुकद्दमा वावतसन् की नाराज़ी से वमुक्ताबिले रस्पांडन्ट के अपील दायर किया है और उसको जमानत दाखिल करनेका हुक्म हुआ है—लिहाज़ा मैं विला इकराह अपनी मर्जी से खर्चा अपीलका ज़ामिन होकर जायदाद हाय मुन्दर्जे फेहरिस्त मुन्स-लिका हाज़ा को रेहन करता हूँ—मैं जायदाद हाय मजकूर या उनके किसी जुज़्व को मुन्तकिल नहीं करूंगा और दरसूरत सरज़द होने कसूर मिन्-जानिव अपीलांट के मैं वतौर वाजिव उस हुक्मकी तामील करूंगा जो दरवारै अदाय खर्चा अपील मेरे नाम सादिर हो—जो रकम हस्व मजकूरै वाला वाजिवुलअदा हो वह जायदाद हाय मरहूना हाज़ा से वसूल की जायेगी और अगर मुहासिल नीलाम जायदाद हाय मजकूर अदाय रकम वाजि-वुल अदाके वास्ते काफ़ी न हो तो मैं और मेरे कायम मुकामान कानूनी अदायज़र वक्ताया के वज़ात खुद जिम्मेदार होंगे—वई मुराद मैंने ज़मानत-नामा हाज़ा आज वतारीख माह सन् तहरीर कर दिया—

फेहरिस्त

गवाहान

दस्तखत

१—

२—

## नम्बर ५

अदरखाल अपील की इत्तिला अदालत मातहतको

( आर्डर ४१ कायदा १३ )

उन्वान

बनाम—

इस तहरीर कीरुसे आपको इत्तिला दी जाती है कि ने जो मुकद्दमा मजकूरै वाला मैं था बनाराज़ी डिगरीके जो आपने वतारीख माह सन् सादिर की थी इस अदालत में अपील दायर किया है—

आपसे दरखास्त कीजाती है कि मुकदमा के तर्मांम जरूरी कागजात जिस कदर जल्द मुमकिनहो भेज दीजिये—

मुवरिखै तारीख माह सन्

दस्तखत जज

## नम्बर ६

इत्तिलानामा बनाम रस्पांडन्ट मशअर इत्तिला  
तारीख मुकररह समाअत अपील

( आर्डर ४१ कायदा १४ )

उनवान

अपील बनाराजी

अदालत

मुकाम

मुवरिखै

माह

सन्

रस्पांडन्ट

बनाम—

मुत्तिलाहो कि अपील बनाराजी डिगरी इस मुकदमा में मुसम्मै

ने पेश किया और वह इस अदालत में दर्ज रजिस्टर हुआ और

इस अदालत ने वक्त तारीख माह सन् वास्ते

समाअत इस अपील के मुकरर किया है—

अगर खुद तुम या तुम्हारा वकील या कोई और शख्स जो कानूनन तुम्हारी तरफ से अपील हाजा में जवाब व सवाल करनेका मजाज हो हाजिर न आयेगा तो उसकी समाअत और तजवीज तुम्हारी गैरहाजिरी में यकतरफा कीजायेगी—

आज वतारीख

माह

सन्

मेरेदस्तखत और मुहर

अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

तम्यीह—अगर इनराय डिगरी के मुल्तवी होनेका हुक्म हुआहो तो उसकी इत्तिला इस इत्तिलानामा में लिखनी चाहिये—

## नम्बर ७

नोटिस बनाम फरीक मुकद्दमा जो अपील में  
फरीक न किया गया मगर जिसको अदालत  
ने रस्पांडन्ट गरदाना  
( आर्डर ४१ कायदा २० )

उनवान

बनाम—

हरगाह कि तुम वमुकद्दमा नं० वावतसन् वअदालत  
फरीक थे और हरगाह कि ने डिगरी की नाराजी से जो उसके  
खिलाफ सादिर हुईथी इस अदालत में अपील दायर कियाहै और इस  
अदालत को मालूम होताहै कि तुम अपील मजकूरके नतीजा में गरज  
रखते हो—

लिहाजा तुमको वजरिये इसके इत्तिला दीजाती है कि इस अदालतने  
तुमको अपील मजकूर में रस्पांडन्ट बनाये जानेका हुक्मदियाहै और  
अपील मजकूरकी समाप्त तारीख माह सन् वक्त  
कबल दोपहरतक मुलतवी करदीहै—अगर तुम्हारी जानिव से तारीख  
व वक्त मजकूरपर कोई हाजिर न होगा तो अपील तुम्हारी गैरहाजिरी में  
मसमूम और फैसल होगा—

आज वतारीख माह सन् मेरेदस्तखत और मुहर  
अदालत से हवाले कियागया—

दस्तखत जज

## नम्बर ८

याददाश्त उजरात मुकाबिला  
( आर्डर ४१ कायदा २२ )

उनवान

हरगाह कि ने अदालत वाकै में बनाराजी डिगरी  
वमुकद्दमा नम्बर वावतसन् मुखरिखे तारीख

माह सन् अपील दायर किया है और हरगाह कि इत्तिलानामा तारीख मुकर्ररह समाप्त अपील की तामील पर वतारीख माह सन् हुई उजर मुक्ताविल की इस याददाश्त को हस्व आर्डर ४१ कायदा २२ मजमूआ जाव्ता दीवानी दाखिल करता है और डिगरी अपील शुद्ध की वावत हस्व जैल उजरांत करता है यानी—

## नम्बर ९

### डिगरी अपील

( आर्डर ४१ कायदा ३५ )

#### उनवान

अपील नम्बर सन् बनाराजी डिगरी अदालत मुवरिख तारीख माह सन्—

याददाश्त अपील

मुद्दै

मुद्आअलेह

मजकूरै वाला अदालत वाकै में बनाराजी डिगरी मुक्तदमा मजकूरै वाला मुवरिख तारीख माह सन् ववजूह मुक्तस्सिल जैल अपील गुजरानता है याने अपील नम्बर बनाराजी अदालत मुवरिख माह सन् यह अपील वतारीख माह सन् रुबल के बहाजिरी मिनजानिव अपीलांत और बहाजिरी मिनजानिव रस्पांडन्ट समाप्त के लिये पेशहुआ पस हुक्म हुआ—

( यहां बयान क्वांदरसीका लिखाजायगा )

सर्चा अपीलदाजा का हस्व जैल मुसम्मै तादादी मुवलिग अदाकरै—

सर्चा मुक्तदमा मराफियाअला का मुसम्मै अदाकरै—

आज वतारीख माह सन् मेरेदस्तखत और मुहर अदालत मे हवाले किया गया—

दस्तगत जज

## स्वर्चा अपील

अपीलाट	तादाद	रस्पाडन्ट	तादाद
१-इस्टाम्प याददाश्त अपील		इस्टाम्प वकालतनामाका	
२- " , वकालत नामाका		" सवालका	
३-इजराय हुक्मनामजात		इजराय हुक्मनामजात	
४-मेहनताना वकील बालाय मुबल्लिग मीजान		मेहनताना वकील बालाय मुबल्लिग मीजान	

## नम्बर १०

## दरख्वास्त अपील मुफलिसी

## ( आर्डर ४४ क्रायदा १ )

## उनवान

मैं मजकूरैवाला डिगरी मुकदमै मजकूरै वालाकी नाराजी से याददाश्त अपील मुन्सलिका पेशकरके दरख्वास्त करताहूँ कि मुझे वतौर मुफलिस अपील दायर करनेकी इजाजत दीजाये—

जेल में मेरीकुल जायदाद मन्कूला व गैर मन्कूलाकी मये उसकी कीमत तखमीनी के पूरी और सही फेहरिस्त दर्ज है—

मुवरिखै तारीख माह सन्

दस्तखत

नोट-अगर दरख्वास्त मिन्जानिव मुद्ई हो तो उसको बयान करना चाहिये आया उसने अदालत मराफअशौला में दरख्वास्तदी थी और उसको वहीसियत मुफलिस नालिश करनेकी इजाजत दीगई थी—

## नम्बर ११

## इत्तिलानामा अपील मुफलिसाना

## ( आर्डर ४४ क्रायदा १ )

## उनवान

हरगाह कि मजकूरै वालाने दरख्वास्त दी है कि उसको डिगरी

मुकद्दमै मजकूरै वाला मुवरिखै तारीख माह सन की नाराजी से वहीसियत मुफलिस अपील करने की इजाजत दीजाये और हरगह कि तारीख माह सन वास्ते समाप्त दरख्वास्त के मुक्करै हुई है लिहाजा तुमको इस तहरीरकी रू से इत्तिला दीजाती है कि अगर तुम वजह जाहिर करना चाहते हो कि सायल को वहीसित मुफलिस अपील करने की इजाजत क्यों न दीजाये तो तुमको तारीख मजकूर पर वजह जाहिर करने का मौका दिया जायेगा—

आज बतारीख माह सन मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर १२

नोटिस बगरज जाहिर करने वजह के कि सार्टी-  
फिकट अपील बहजूर मलिक मुअज़्जम बइज-  
लास कौंसल अता क्यों न किया जाये

( आर्डर ४५ क्रायदा ३ )

### उन्वान

बनाम

मुत्तिला हो कि ने बगरज हमूल सार्टीफिकट के कि मुकद्दमा मजकूर बलिहाज तादाद या मालियत व नौय्यत के शरायत दफा ११० मजमूआ जान्ता दीवानी को पूरा करता है या दीगर वजह से लायक दायरह अपील बहजूर मलिक मुअज़्जम बइजलास कौंसल के है इस अदालत में दरख्वास्त दी है—

तागीख माह सन इसलिये मुक्करै हुई है कि तुम वजह जाहिर करो कि अदालत सार्टीफिकट ख्वास्ता अता क्यों न करे—

आज बतारीख माह सन मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत रजिस्टार

सन् १९०८ ई० ] मजमूआ ज़ाबता दीवानी ।

४६६

### नम्बर १३

नोटिस अदखाल अपील बहुजूर मलिक मुअज़्ज़म  
बइजलास कौंसल रस्पांडन्ट को  
( आर्डर ४५ कायदा ८ )  
उनवान

वनाम  
हरगाह ने जो मुकद्दमा मजकूर वालामें है जमानत दा-  
खिल करदीहै और हस्बुल् हुकम आर्डर ४५ कायदा ७ मजमूआ ज़ाबता  
दीवानी रूपया दाखिल करदिया है—  
मुत्तिला हो कि अपील मजकूर का बहुजूर मलिक मुअज़्ज़म  
बइजलास कौंसल वतारीख माह सन् दाखिल हुआ—  
आज वतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मुहर  
अदालत से हवाले किया गया— दस्तखत रजिस्ट्रार

### नम्बर १४

नोटिस बेगारज इजहार वजहकी कि तेजवीज  
सानी क्यों मंजूर न कीजाये  
( आर्डर ४७ कायदा ४ )  
उनवान

वनाम  
मुत्तिला हो कि ने तेजवीजसानी डिगरी मुकद्दमा मजकूर मस-  
दूरह तारीख माह सन् की तेजवीजसानी की इस अदा-  
लत में दरख्वास्त दी है तारीख माह सन् इसलिये मुकर्रर  
हुईहै कि तुम वजह जाहिर करो कि अदालत अपनी डिगरी की तेज-  
वीजसानी क्यों न करै—  
आज वतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मुहर  
अदालत से हवाले किया गया— दस्तखत जज



## इपनडिक्स (हे)

मुत्फरिक्

नम्बर १

इकरारनामा फरीकैन दरबारह अमर तन्कीह-  
तलब जिसकी तहकीकात कीजाये

( आर्डर १४ कायदा ६ )

उनवान

हरगाह कि हम फरीकैन मुकदमा मजकूरै वाला निस्वत अम्र निज़ाई  
वाकिअती ( या कानूनी ) के जिसका तस्फिया होना मावैन हमारे ज़रूर  
है मुत्तफिके हैं और अमर तन्कीहतलब मावैन हमारे यह है कि आया दावा में  
जो मुवनी वर तमस्सुक मुवरिख तारीख माह सन् है और  
तमस्सुक मुकदमा मजकूर में वतौर कागज निशानी दाखिल है  
कानूनी मीयाद समाप्त आरिज है या नहीं ( या जो और अम्र तन्कीह  
तलबहो वह लिखना चाहिये ) इसलिये हम अपने आपको विल इनफराद  
जिम्मेदार करार देते हैं कि अगर अदालत अम्र-तन्कीह तलब मजकूर  
की तजवीज नफी (या असवात) में करे तो मुवलिग रुपया ( या उस  
कदर रुपया जो अदालत उस बारह में वाजिबुल अदा करार दे )—

मजकूर को अदा करेगा और मैं मजकूर रकम मजकूर मुवलिग

रुपयाको ( या उस कदररुपया को जो अदालत वाजिबुल अदा करार दे )  
अपने दावा वरविनाय तमस्सुक मजकूर के ईफाय कुली में कबूल करुंगा  
( या तजवीज मजकूर के बाद मैं मजकूर करुंगा या उसके  
करने से वाज़रहंगा )

मुद्दई

मुद्दमा अलेह

गवाहान

१—

२—

मुवरिख तारीख

माह

सन

## नम्बर २

इत्तिलानामा दरखास्त इन्तिकाल मुकदमा  
दूसरी अदालत को बगारज तजवीज के

(दफा २४)

वचदालत साहब जज बहादुर जिला

नम्बर वावत सन्

वनाम

हरगाह कि मित्तजातिव के जो मुकदमा नम्बर वावत  
सन् में है इस अदालत में दरखास्त मुवरिख तारीख  
माह सन् गुजरी है कि मुकदमा मजकूर जो अदालत  
वाकै में इस तद्वत जेर तजवीज है और जिसमें मुद्दा  
और मुद्दाअलेह है वास्ते तजवीज के अदालत में मुन्तकिल  
कर दिया जाये—

लिहाजा तुमको इस तहरीर की रू से इत्तिला दी जाती कि तारीख  
माह सन् वास्ते समाप्त और दरखास्त मजकूर के  
मुकरर हुई है अगर तुम कुछ उजर करना चाहते हो तो उस तारीख पर  
तुम्हारा उजर मसमूम होगा—

आज तारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मुहर  
अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर ३

इत्तिला अदखाल जेर अदालत में

(आर्डर २४ कायदा २)

उनवान

मुत्तिलाहो कि मुद्दाअलेह ने मुवलिग रुपया अदालत में

दाखिल किया है और वह यह कहता है कि रकम मजकूर वास्ते कुली ईफाय दावा मुद्दै के काफी—

जवाब तो वकील मुद्दामालेह  
बनाम गौन वकील मुद्दै

## नम्बर ४

इत्तिला इजहार वजह ( नमूना आम )

उनवान

बनाम—

हरगाह कि मजकूरह वालाने इस अदालत में दरख्वास्तकी है कि लिहाजा तुमको इस तहरीर की रूसे आगाह किया जाता है कि तुम ख्वाह असालतन ख्वाह मारफत वकीलके जो मामिला से करार वाकई वाकफ किया गया हो तारीख माह सन् ववत्त कबल दोपहर इस अदालतमें हाजिर आवो और दरख्वास्त के खिलाफ वजह जाहिर करो अगर तुम हाजिर न आवोगे तो दरख्वास्तकी समाप्त व तजवीज यकतर्फा अमल में आयेगी—

आज वतारीख माह सन् मेरेदस्तखत और मुहर अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर ५

फेहरिस्त दस्तावेजात पेश करदह <sup>मुद्दै</sup>  
मुद्दामालेह  
( आर्टि १३ कायदा १ )

उनवान

नम्बर	तकनीक दस्तावेज	तारीख ( अगर कोई हो ) मुद्दैज दस्तावेज	दस्तावेज फरीज या वसीयत
१	२	३	४

## नम्बर ६

इत्तिला बनाम फरीकैन तारीख की जो वास्ते  
इजहार गवाह के जो इलाका अदालत से  
बाहर जाने को है मुकरर हुई  
( आर्डर १८ कायदा १६ )

### उनवान

बनाम

मुद्दै ( या मुद्आअलेह )

हरगाह कि मुक्तदमै मजकूरै वालामें ने अदालत में दरखास्त  
दीहै कि इजहार गवाहका जो मुक्तदमा मजकूर में मिन्जानिव  
मजकूर तलब हुआहै फौरन ले लियाजाये और हस्व इतमीनान अदालत  
यह साबित कियागयाहै कि गवाह मजकूर-इलाका अदालत से बाहर  
जानेवालाहै ( या और वजह काफी व माकूल लिखनी चाहिये ) —

मुत्तिलाहो कि अदालत गवाह मजकूरका इजहार वतारीख माह  
सन् लेगी—

मुवर्रिखै तारीख

माह सन्

दस्तखत जज

## नम्बर ७

कमीशन वास्ते लेने इजहार गवाहान गैरहाजिरके  
( आर्डर २६ कायदा ४ व १८ )

### उनवान

बनाम—

हरगाह शहादत की मिन्जानिव समुक्तदमा महुला वाला  
जरूर है और हरगाह लिहाजा तुमको हुक्म दियाजाता है कि गवा-  
हान मजकूर से सवालातका जवाब लिखावो ( या उनका  
इजहार जवानी लो ) पस उस गरज के लिये तुम बजरिये इस हुक्म के  
कमिशनर मुकरर कियेगये शहादत फरीकैन या उनके एजन्टियान की  
पवाजह में लीजायेगी वशत कि वह मौजूदहों और उनको अपूर मुमरहे

की वावत गवाह से सवालात करनेकी इजाजत होगी और नीज तुमको हिदायत होती है कि बमुजरदे इसके कि इजहारत मजकूर लिये जायें उनका रीटर्न अदालत हाज़ा में भेजदो ( हुक्मनामा इजहार गवाहका उस अदालत से कि जिसको इस्तिथारात मुकामी हासिलहों वरवक़त तुम्हारी दरख्वास्त के सादिर किया जायेगा )

मुबल्लिग जो मुकद्दमा मजकूर में तुम्हारी फीस है कमीशनहाज़ा के साथ भेजे जाते हैं—

आज वतारीख माह सन् मेरेदस्तखत और मुहर अदालत से हवाले कियेगया—

दस्तखत जज

नम्बर =

चिट्ठियात सुतजमिन दरख्वास्त इजहार गवाहान  
( आर्डर रद कायदा ५ )

उनवान

बनाम साहब प्रेसीडेंट और साहवान जज अदालत वगैरह २  
यानी जैसी सूरतहो—

हरगाह एक मुकद्दमा अदालत में दिलफैल दायरह जिसमें  
( अलिफ वे ) मुद्दई और ( जीम दाल ) मुद्दआ चलेह है और उस मुक-  
दमामें मुद्दई यह दावा करताहै—

( पुश्त पर तसरीह इस दावाकी होना चाहिये )

और हरगाह अदालत मजकूर से जात्रि कियागयाहै कि वास्ते अग-  
राज इन्साफ के और वास्ते तस्फिया वाजिबी मामिलान निजाई मायन  
फरीमान के जखर है कि अशतास जैल यानी—

( हे वाव ) साकिन—

( ले हे ) साकिन—

और ( तो ये ) साकिन—

का इजहार हलफी मामिलात निजाई मजकूरकी निस्वत वतौर  
गवाह के लियाजाये और चूंकि यह सब अशस्वास आपकी मुअज्जिज  
अदालत के इलाका में रहते हैं—

लिहाजा मैं कि अदालत मजकूरका हूं आपकी खिदमत  
में अर्ज करता हूं कि वबजूह मजकूरवाला और वनजर अयानत इस अदा-  
लत के आप हजरात यानी प्रेसीडेंट और साहवान जज अदालत  
या आप साहवान में से एक या ज्यादा हजरात वराह मेहरवानी गवाहान  
मजकूर को ( और नीज उन गवाहों को कि जिनके तलब करनेकी निस्वत  
मुद्दै और मुद्दाअलेह मजकूर के एजेंट आप से तहरीरी इलतिजाकरैं )  
जिस वक्त और मुकाम पर कि आप मुकरर फरमायें वास्ते अदाय शहादत  
के आप हजरात में से एक या ज्यादा के खूब या किसी और शख्स के  
खूब जो आपकी अदालत के ज्ञान्ता के मुताबिके गवाहों का इजहार  
लेसकताहो तलब फरमायें और उनका इजहार वर बुनियाद बंद सवालात  
कि जो इस लेटर आफ रिकेस्ट के साथ भेजे जाते हैं ( या इजहार जवानी )  
निस्वत अमूर निजाई के बमौजूदगी एजन्टियान मुद्दै और मुद्दाअलेह  
के या जो उनमें से वर वसूली इत्तिला इजहारके वक्त हाजिर हों—

मैं यह भी दरख्वास्त करता हूं कि आप वराह मेहरवानी गवाहान मज-  
कूर के जवाबात जब्त तहरीर में लायें और तमाम किताबों और खतूत  
और कागजात और दस्तावेजात पर कि जो इजहार में पेशहों शिनाख्त के  
वास्ते कुछ निशान करदें नीज इजहार मजकूर पर अपनी अदालत की  
मुहर तसदीकन सिक्ककरैं या जो तरीका तसदीक का कि आप के यहां  
रायजहो उसके मुताबिक तसदीक करैं और इजहार मजकूर को मये उस  
दरख्वास्त तहरीरी के ( अगर कोई हुईहो ) कि जो दीगर गवाहान के  
इजहारकी निस्वत की गईहो अदालत मजकूर में इरसाल फरमायें—

नोट—अगर यह चिट्ठी किसी अदालत वाकै मुल्कगैर में भेजी जाने  
को हो तो कबल अलफाज “अदालत मजकूर में इरसाल फरमायें” के  
“मार्फत आलाहजरत मलिके मुअज्जमके सिक्रेटरी आफफ्ट्रेट (दक्क खार-  
जिया के” इजाफा होना चाहिये)

## नम्बर ९

कमीशन वास्ते तहकीकात मौका या तहकी-  
कात हिसाबातके

( आर्डर २६ कायदा ६ व ११ )

उनवान

बनाम—

हरगाह इस मुकदमा में मुनासिब मुतसव्वर होता है कि कमीशन वास्ते के सादिर किया जाये लिहाजा तुम वगारज़ कमीशनर मुकर्रर किये गये ( हुकुमनामा वास्ते जवरन हाज़िर कराने गवाहों के या पेश कराने किसी कागज़ात के तुम्हारे ख़ुब्रू जिनका तुम इज़हार लेना या मुआयना करना चाहो ) उस अदालत से कि जिसको इख्तियारात मुकामी हासिल हों तुम्हारी दरख़्वास्त पर सादिर किया जायगा—

मुवलिग जो वमुकदमा मजकूर तुम्हारी फ़ीस है इस कमीशन के साथ भेजा जाता है—

आज बतारीख माह सन् मेरेदस्तखत और मुहर अदालत से हवाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर १०

कमीशन विनावर करने बटवारहके

( आर्डर २६ कायदा १३ )

उनवान

बनाम

हरगाह कि अग़राज़ मुकदमा के वास्ते यह जरूरी ख़याल किया जाता है कि कमीशन वास्ते करने बटवारह अल्ताहिदगी कायदाद मुसरहे दि-  
गरी अदालत हाज़ा मुवर्निव नारीग माह सन् के बम्-

जिवहकूत करारदादह डिगरी मजकूर के जारी कियाजाये लिहाजा तुम को गरज मजकूर के लिये कपिशनर मुकर्रर कियाजाता है और तुमको हिदायत कीजाती है कि तुम जरूरी तहकीकात करके जायदाद मजकूर को ताहद खुर्रम व इदराक अपने के हिसिसमुसरहे डिगरी में तकसीम करो और हिसिस मजकूर को मुतअदिद फरीकों की तरफ लगावो तुमको यह इस्तिथार दियाजाता है कि तुम एक फरीक से दूसरे फरीक को वगरज मसावी करने कीमत हिसिस के कोई रकम दिलावो—

हुकुमनामा वास्ते जवरन हाजिर कराने गवाहों के या पेश कराने किसी कागजात के तुम्हारे खूबू जिनका तुम इजहार लेना या मुआयना करना चाहो उस अदालत से कि जिसको इस्तिथारात मुकामी हासिल हों तुम्हारी दरख्वास्त पर सादिर किया जायेगा—

आज बतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से हवाले कियागया—

दस्तखत जज

## नम्बर ११

इत्तिलानामा बनाम मुद्आअलेह नावालिग ववली

( आर्डर ३२ कायदा ३ )

उनवान

बनाम—

( जीमदाल )—

मुद्आअलेह नावालिग

वली, कुदरती

हरगाह मुकदमा मुन्दर्जे उनवान में मुद्ई ने एक दरख्वास्त गुजरानी है कि मुद्आअलेह नावालिग का एक वली दौरान मुकदमा मुकर्रर किया जाये लिहाजा तुम नावालिग को और + तुम—को इसकी रूसे इत्तिला दीजाती है कि अगर तामील इत्तिलानामा हाजा से—योम के अन्दर एक दरख्वास्त इस अदालत में निस्वत + तुम्हारे या तुम नावालिग के किसी दोस्त के वली दौरान मुकदमा मुकर्रर कियेजाने के न गुजरानोगे



तो अदालत किसी और शख्स को नावालिग मजकूर का वली वास्ते  
अगराज मुकदमा के मुक़रर करेगी—

आज वतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मुहर  
अदालत से जारी किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर १२

इत्तिला तारीख समाअत शहादत मुफलिसी की  
फरीक साली की

( आर्डर ३३ कायदा ६ )

उनवान—

बनाम—

हरगाह कि—ने इस अदालत में वास्ते हसूल इजाजत इरजाअनालिश  
बमुकाविले कि वहैसियत मुफलिस के हस्व आर्डर ३३ मजमूआ  
ज़ाव्ता दीवानी दरख्वास्तदी है और हरगाह कि अदालत को दरख्वास्त  
के नामजुरी करने की कोई वजह नहीं मालूम होती और हरगाह कि वास्ते  
लेने शहादत के जो सायल अपनी मुफलिसी के सबूत में पेश करे और  
वास्ते समाअत शहादत के जो उसकी तरदीद में पेश कीजाये तारीख—  
माह सन् मुक़रर हुई है—

लिहाज़ा तुमको इस तहरीर की रूसे हस्व आर्डर ३३ कायदा ६ इ-  
त्तिला दीजाती है कि अगर तुम सायल की मुफलिसी की तरदीद में  
कोई शहादत देना चाहते हो तो तुम वतारीख माह सन्  
मजकूर इस अदालत में हाज़िर होकर शहादत देसकते हो—

आज वतारीख माह सन् मेरे दस्तखत और मुहर  
अदालत से दवाले किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर १३

इत्तिला ज़ामिन को उसके ज़िम्मेदारी की  
जो हस्ब डिगरी आयद हुई

दफ़ा १४५

उनवान

बनाम—

हरगाहकि तुम—वतारीख वास्ते ईफाय डिगरी के जो बमुक्ताविले—  
मुद्आअलेह मुकद्मा मज़कूर के सादिर हो बहैसियत ज़ामिन ज़िम्मेदार  
हुये थे और हरगाह कि वतारीख माह सन् मुद्आअलेह  
मज़कूर पर डिगरी वास्ते अदाय मुवलिग—के सादिर हुई और हरगाह  
कि तुम्हारे मुक्ताविले में डिगरी मज़कूर के इजराय की दरख्वास्त गुज़री है—

लिहाज़ा तुमको इत्तिला दीजाती है कि तुम तारीख माह  
सन् को या उससे क़बल हाज़िर होकर वज़ह ज़ाहिर करो कि तुमपर  
डिगरी का इजराय क्यों न किया जाये और अगर अन्दर मीयाद मुसरहे  
वाला कोई वज़ह काफी काबिल इतमीनान अदालत ज़ाहिर न कीजायेगी  
तो वमूजिव मजमून दरख्वास्त मज़कूर के हुक्म इजराय डिगरी का  
सादिर किया जायेगा—

आज वतारीख माह सन् मेरे दस्तख़त और मुहर  
अदालत से हवाले किया गया—

दस्तख़त जज



नवंबर १५

रजिस्टर अपील (आर्डर ४१ कायदा ६)

अदालत (या हाईकोर्ट) मुकाम

0  
042

रजिस्टर अपील वनारजी डिग्नियात वावत सन् १६

[illegible]

# जमीमा दोम

## सालसी

### मुकदमात की सालसी

दफा ४०६

१-( १ ) अगर किसी मुकदमा में जुमला फरीकैन जीगरज़ को यह मंज़ूर फरीकैन हुक्म सालसी हो कि कोई अन्न जो मुकदमा में बाहम उनके मुतनाज़्ज़ा हो वास्ते फैसला के सिपुर्द सालसी किया जाये तो उनको इस्तिथार है कि किसी वक़्त कबल सुनाये जाने फैसला के इस बात की दरख्वास्त अदालत में गुज़राने कि सालसीका हुक्म दिया जाये—

( २ ) ऐसी हर दरख्वास्त तहरीरी होगी और वह अन्न जिसको सालसी में सिपुर्द करना मंज़ूर हो उसमें लिखा जायेगा—

दफा ४०७

२-तक्रर सालसका फरीकैनकी तरफ से बमूजिव उस तरीका के तक्रर सालस | अमल में आयेगा जो बतराजी तरफ़ करार पाये—

दफा ४०८

३-( १ ) अदालत बज़रिये हुक्म के वह अन्न मुतनाज़्ज़ा मुकदमा हुक्म हवालगी | सालस को तफवीज करेगी जिसका तस्फिया कराना सालस से मकसूद है और वास्ते सादिर करने फैसला सालसी के एक मीयाद मुक़रर करेगी जो उसके नजदीकमाकूल मुतसब्बर हो और मीयाद मुक़रर हुक्म मजकूर में लिखी जायेगी—

( २ ) अगर कोई मामिला सालसी में सिपुर्द किया जाये तो अदालत को लाज़िम है कि उस मामिलाकी निस्वत मुकदमा में अमल न करे इल्ला बमूजिव उस तरीका के उस हदतक जो जमीम हाज़ा में मजकूर है—

दफा ४०९

४-( १ ) अगर मुकदमा दो या कई सालसों को सिपुर्द हो तो हुक्म दफ्तर दो या ज्यादा सिपुर्दगी में सालसों की इस्तिनाफ़ रायकी सूरत के लिखे तद्वीर मुफ़रिसल जैल की जायेगी—

(अलिक) एक सरपंच मुक़रर किया जायेगा—या

( वे ) यह करार दिया जायेगा कि बलिहाज कसरत राय के निजामकी तजवीजहो जबकि सालसोंकी तादाद कसीर इत्तिफाक करै-या

( जीम ) सालसों को इस्तिथार दिया जायेगा कि वह अपनी तजवीज से एक सरपंच मुकर्रर करै-

( दाल ) और जिस तरहसे किवतराजी तरफैन करार पाये या अगर फरीकैन राजी न हों तो जिसतरह अदालत तजवीज करै-

( २ ) अगर कोई सरपंच मुकर्रर किया जाये तो अदालत उस कदर मीयाद जो मुनासिव मालूमहो उसका फैसला सादिर होनेके लिये मुकर्रर करेगी चशर्ते कि उससे काम कियाजाये-

५-( १ ) सूरत हाय मुफसिलै जैल में से किसी सूरतमें-यानी- दफा ५१०  
दफा ५०५  
 (अलिफ) अगर फरीकैन एक मीयाद मौकूल के ( ४ )  
 सालस मुकर्रर करसक्ताहै अन्दर कोई सालस मुकर्रर करनेकी निस्बत इत्तिफाक न करै या वह शर्हसे जो सालस मुकर्रर हुआहो सालसों करने से इन्कार करै-या

( वे ) अगर सालस या सरपंच-

( १ ) फौतहोजाये-या

( २ ) सालसी करने से इन्कार करै या सालसी करने में गफलत करै या लायक सालसी करने के न रहे-या

( ३ ) ऐसे हालतमें ब्रिटिश इण्डिया के बाहरजाये जितसे वाजह हो कि वह गालिवन जल्द वापस नहीं आयेगा-या

( जीम ) अगर सालसों को वमूजिव हुक्म सालसी के इस्तिथार दफा ५११  
 तकर्रर सरपंच का दियागयाहो और वह सरपंच मुकर्रर न करै तो पिनजुमला फरीकैन के कोई फरीक फरीफ दीगर या सालसों के पास यानी जैसी सूरतहो इत्तिलानामा तहरीरी वास्ते तकर्रर सालस या सरपंच के पहुंचा सक्ताहै-

( ३ ) अगर पूरे ७ रोज के अन्दर वाद पहुंचाने ऐसे इत्तिलानामा के या उस मीयाद जायद के अन्दर जिसकी अदालत हर सूरतमें इजाजतदे कोई सालस या सरपंच यानी जैसी सूरतहो मुकर्रर

न हो तो अदालत मजाज होगी कि वरतवक्त गुजरने दरखास्त उस फरीक के जिसने इत्तिलाना मा पहुँचाया हो और बाद इस के कि फरीकसानी को समाअतका मौका हासिल हुआ हो एक सालस या सरपंच मुकर्रर करै या हुक्म मशअर मंसूखी सालसी सादिर करै और ऐसी सूरत में उसको लाजिम होगा कि मुकदमा की कार्यवाई जारी करै—

दफा ५१२

६-हरसालस या सरपंच जो फिकरह ४ या ५ के वमूजिव मुकर्ररहो जो सालस या सरपंच हस्व फिकरह ४ या ५ मुकर्रर किया जाये उसके इत्तियारात उसे मुकदमा में कारबन्द होनेका इसी तरह इत्तियार होगा कि गोया उसका नाम हुक्म सिपुर्दगी मुकदमा सालसी में मुन्दर्ज या—

दफा ५१३

७-( १ ) अदालत को लाजिम है कि वनाम उन फरीकैन और गवाहों गवाहों की तलबी और उनकी गैरहाजिरी के जिनका इजहार सालस या सरपंच लिया चाहता हो वैसेही हुक्मनामे सादिर करै जैसे कि अदालत अपने इजलासके मुकदमात मुतदायरहमें सादिर करने की मजाज है—

( २ ) जो अशखास कि मुताबिक हुक्मनामा मजकूर हाजिर न हों या उनसे और किसी तरहका कसूर सरजद हो या अदाय शहादत से इन्कार करै या असनाय तहकीकात मुफविजह वसालसी में सालस या सरपंचकी निस्वत गुस्तारी करै तो वह मुस्तौजिव इस अम्रके होंगे कि ऐसा तावान और तदारुक और सजा बहुक्म अदालत वरतवक्त गुजारिश सालस या सरपंच के उन पर आयद हो जैसे वदालत फैसल होने मुकदमा के अदालतमें बबजूह उन्हीं कसूरत के आयद होती—

दफा ५१४

८-अगर सालसान या सरपंच मायन मीयाद व मुन्दर्ज हुक्मके तकमील तौमीय मीयाद यावने अपने फैमलाकी न करसकै तो अदालत इस बात की मदद फैमला मालसी मजाज कि वास्ते दाखिल होने फैसला के अगर मुनासिव समकै मीयाद जायद अताकरै और इवाह कबल या वाद मुनकली होने उस मीयाद के जो वास्ते मदद फैमला मालसीके मुकर्रर हुई हो वक़्तन फवक़्तन उसको बढ़ाती रहे या हुक्म मशअर मंसूखी मालमी

सादिर करै और ऐसी सूरत में लाजिम है कि मुकदमा की कार्रवाई शुरू करै—

६—जब सरपंच मुकदमे हो चुके तो उसे इस्तिथार होगा कि बजाय दफा ५११ किस सूरत में सरपंच सालसों के सूरत हाय मुफस्सिलह जेल में मुकदमा न जाय सालसों के कार्रवाई कर सकेगा को खुद तजवीज करै—

(अलिफ) अगर उन्होंने ने मीयाद मुअय्यना को विला सदूर फ़ैसला के मुनकज़ी होने दिया हो—या

( बे ) जब उन्होंने ने अदालत या सरपंच को इत्तिला सहरीरी इस अम्रकी दी हो कि बाहम उनके इत्तिफाक राय नहीं होसकता है—

१०—जब मुकदमा में फ़ैसला सालसी सादिर हो तो अशखास मुजब्विज़ दफा ५१६ फ़ैसला सालसी दस्तखत फ़ैसला को लाजिम है कि इसपर दस्तखत करके इसको होकर अदालत में दाखिल होगा अदालत में मये किसी इजहारत और दस्तावेजातके जो उनके खबर ली गई हो और साबित हुई हो भेज दें और लाजिम है कि इत्तिला दाखिल करने फ़ैसला सालसी के फरीकैन को दी जाये—

११—अगर कोई मुकदमा बहुम अदालत सिपुर्द सालसी हो तो दफा ५१७ तहरीर बतौर मुकदमा सालसों या सरपंच को इस्तिथार होगा कि अदालत खास मिन्जानिब साल की इजाजत से अपनी तजवीज सालसाना निस्वत सान या सरपंच कुल या जुज़्व उस अम्रके जो सिपुर्द सालसी हुआ हो बतौर मुकदमा खास अदालत की रायके वास्ते तहरीर करै और अदालत उसकी निस्वत अपनी राय लिखेगी और वह राय फ़ैसलामें शामिल होकर फ़ैसलाका एक जुज़्व करार पायेगी—

१२—अदालत मजाज है कि बज़रिये हुक्म के सूरत हाय मुसरहे जेल दफा ५१८ फ़ैसला सालसी की में फ़ैसला सालसी को तरमीम या उसकी इसलाह करै—  
तरमीम या उसकी इसलाह करनेका इस्तिथार

(अलिफ़) जब यह मालूम हो कि जुज़्व फ़ैसला सालसी एक ऐसे अम्रकी वावत है कि सिपुर्द सालसी नहीं किया गया था



और जुज्व मजकूर बाकी या फ़ैसला से अलहिदा होसक्त हो और तजवीज सालसी पर जो निस्वत अम्र मुफ़विजा के हो मौसर न हो—या

( वे ) जब कि तैरतीव फ़ैसला सालसी की नाफ़िस हो या उस में कोई ऐसी ग़लती सरीह पाई जाती हो जिसकी इसलाह तजवीज सालसी मजकूर में मुखिल होने के बग़ैर मुमकिन हो—या

( जीम ) जब फ़ैसला सालसी में कोई ग़लती किताबत हो या कोई ऐसी ग़लती हो जो इच्छिफ़ाक़न हो या फ़रो गुजारत से हुई हो—

दफ़ा ५१६

१३—नीज़ अदालतको इख़्तियार है कि हुक्म मुनासिब निस्वत खर्चा हुक्म निस्वत खर्चा सालसी के सादिर करै बशर्ते कि कोई एतराज निस्वत खर्चा मजकूरके पैदा हुआ हो और फ़ैसला मजकूर में खर्च की निस्वत तजवीज काफी दर्ज न हुई हो—

दफ़ा ५२०

१४—अदालत मजाज़ होगी कि फ़ैसला सालसीको या किसी अम्र महला जब फ़ैसला सालसी सालसी को वास्ते नज़रसानी के उन्हीं सालसों या या अम्र महला नालनी सरपंच के पास ऐसी शरायत के साथ जो उसके बारीन किया जानवेगा, नजदीक मुनासिब मुतसव्वर हों वापस करै—यानी.

( अलिफ ) उस हाल में कि मिन जुमला, अमूर मुफ़विजा सालसी के कोई अम्र विला तजवीज रद्दगया हो या जो अम्र कि सालसी के वास्ते नहीं सिपुर्द किया गया था उस की तजवीज हुई हो इन्ना उस हालमें कि अम्र मजकूर अमूर महला की तजवीज में खलल अन्दाज होनेके बिदून अलहिदा किया जायकता हो—

( वे ) जिस हाल में कि फ़ैसला सालसी ऐसा मुद्दमिल हो कि तामील उसकी ना मुमकिन हो—

( जीम ) जिस हालमें कि दमुल्लाहिजा फ़ैसला सालसी के कोई एतराज निस्वत जवाज फ़ैसला मजकूर के बादिउल नजर में पाया जाता हो—

दफ़ा ५२२

१५—( १ ) जो फ़ैसला कि इस्व फ़िक़र १८ के नाफ़म किया गया

वजह मंसूखी फैसला हो-अबसर सालस या सरपंच उसपर वनजरसानी सालसी न करसकै तो वह कलबदम होजायेगा लेकिन कोई फैसला सालसी काबिल मंसूखी न होगा वजुज किसी वजह के मिनजुमला वजुह मुन्दर्जतैल-यानी

( अलिफ ) सालस या सरपंच की रिश्वत सितानी या बदमचाविलगी-

( वे ) किसी फरीक का इस निहजपर कसूरवार होना कि जिस अम्रकी उसे जामहिर करदेना चाहिये था वह उसने फरेबन् मुखकी रक्खा या अमदन् पंच या सरपंचको मुगालता या धोखा दिया हो-

( जीम ) फैसला सालसी बाद उस हुक्म के किया गया हो जो कि अदालत ने दरवाब फिख सालसी और जारी करने का र्वाइ मुकदमा के सादिर किया हो या बाद मुनकजी होने उस मीयाद के किया गया हो जो अदालत की तरफ से मुकर्र की गई थी या फैसला सालसी किसी और तरह नाजायज हो-

( २ )-अगर कोई फैसला सालसी हस्व जामन ( १ ) वातिल होजाये या मंसूख करदिया जाये तो अदालत हुक्म मंसूखी सालसी सादिर करेगी और ऐसी सूरत में मुकदमा की कार्रवाई शुल्ज करेगी-

१६-( १ ) अगर अदालत के नजदीक कोई वजह इसकी न पाईजाये दफा ५२२

फैसला अदालत मुताबिक फैसला सालसी के होगा कि फैसला या कोई अन्न मिन जुमला अमूर मुफविजा सालसी हस्व मरकूमै वाला नजरसानी करने के लिये वापस भेजाजाये और कोई दरखास्तवास्ते मंसूखी फैसला सालसी के न गुजरे या अगर अदालत ने दरखास्त मजकूर की नामंजूर किया हो तो अदालत का लाजिम होगा कि जब दरखास्त गुजरने की मीयाद गुजर जाये मुताबिक फैसला सालसी के फैसला सादिर करे-

( २ ) बलिहाज फैसला मसदरह के डिगरी सादिर होगी और ऐसी डिगरी की नाराजी से अपील न हो सकेगा वजुज उस कदरके जो उस फैसला में लिखे हुये से ज्यादा की डिगरी हो या उसके मुताबिक न हो-

हुक्म सालसी हस्व इकरारनामा सिपुर्दगी

१७-( १ ) अगर चंद अशखाम वजरिये इकरारनामै तहरीरी के यह दफा १०३

दरख्वास्त वादने अद-  
खाल इकरारनामा  
सालसी अदालत में

वात कबूल करें कि कोई निज़ाअ जो बाहम उनके वाकै  
हो वास्ते सालसी के सिपुर्द कीजाये तो फरीकैन इक्-  
रारनामा या उनमें से कोई उस अदालत में जिसको  
निज़ाअ मुन्दजै इकरारनामा की निस्वत इख्तियार समाअत का हासिल हो  
दरख्वास्त मशअर इस वावके गुज़रान सकता है कि इकरारनामै मज़कूर  
अदालत में दाखिल कराया जाये-

( २ ) दरख्वास्त तहरीरी होनी चाहिये और उसपर नम्बर सिब्त किया  
जायेगा और दर सूरते कि दरख्वास्त फरीकैन में से सबकी  
तरफ से हो तो मुकदमा माबैन एक या कई फरीक अहल गरज  
या अहल गरज होनेके दावेदारोंके वतौर मुद्ई या मुद्इयान और  
दूसरे एक या कई फरीक वतौर मुद्आअलेह या मुद्आअलेहुम् के  
रजिस्टरमें कायम किया जायेगा और अगर दरख्वास्त जुमला  
फरीक की तरफ से न हो तो बाहम सायल वतौर मुद्ई और  
दीगर अशखास वतौर मुद्आअलेहुम् के मुकदमा कायम होगा-

( ३ ) उस दरख्वास्त के गुज़रने पर अदालत को यह हुक्म देना  
लाज़िम होगा कि इत्तिलानामा वनाम वाक्ती तमाम फरीक हाय  
इकरारनामा के जो शरीक दरख्वास्त न हुयेहों मुतज़म्मिन इस  
वात के जारी कियाजाये कि फरीक हाय मज़कूर अन्दर मीयाद  
मुअय्यना इत्तिलानामा के वजह काफ़ी निश्चय न दाखिल  
होने इकरार नामा के पेश करें-

( ४ ) अगर कोई वजह काफ़ी न पेश की जाये तो अदालत  
इकरारनामा अदालत में दाखिल करने का हुक्म देगी और  
उस सालस को जो हस्व शरायत इकरार नामा मुक़रर हुअ  
हो कार्रवाई सालसी करने का हुक्म देगी या अगर इकरार  
नामा में कोई शर्न न हो और फरीकैन में इत्तिफाक न होसके  
तो एक सालस मुक़रर करदेगी-

दस्ता ११ पेक्ट

११ मज १८११

१८-अगर कोई फरीक इकरार नामा सालसी या कोई ऐमा शख्स  
जो वज़ारिये उसके दावेदार हो किसी दूसरे फरीक इ-  
करार नामा के नाम या उस शख्स के नाम जो व-  
ज़ारिये उसके दावेदार हो किसी ऐसे यन्न की निम्नत

नालिश रजूम करै जिसकी सालसी की वावत फरीकैन में इकरार हो तो किसी फरीक नालिश मजदूर को इस्तिथार है कि जिस कदर जल्द मुमकिन हो और वहरहाल वरवक्त या कबल करारदाद अमूर तनकीहतलव के इलतुवाय मुकदमा की अदालत में दरखास्त दे और अगर अदालत का इतमीनान होजाये कि हस्व इकरारनामा सालसी उस अम्रके सालसीन होने की वजह काफी नहीं है और यह कि दरखास्त कुनिन्दा वरवक्त इरजाअ नालिश कुल अमूर जरूरी मुतमल्लिक कार्रवाई सालसी के करने पर आमादह और राजी था और हिनोज है तो अदालत हुक्म इलतुवाय मुकदमा सादिर करसक्ती है—

१६—अहकाम मुन्दजै वाला जहांतक कि वह किसी इकरार नामा दा-दफा ५२२ अहकाम मुतमल्लिक खिल शुदह हस्व फिकरह १७ के खिलाफ न हों कुल कार्रवाई फिकरह १७ कार्रवाई से जो वमूजिब हुक्म मसदरह अदालत मश-अर तफवीज सालसी हस्व फिकरह मजकूर अमल में आई हो और फैसला सालसी से और उस डिगरी के इजरा से जो उसके वमूजिब सादिरहुई हो मुतमल्लिकहोंगे—

## सालसी बिलातवस्सित अदालत

२०—( १ ) जब कोई अम्र बिला तवस्सित किसी अदालत के सि-दफा ५२५ अदालत फैसला सालसी जो बिलातवस्सित अदालत के हुआहो मुद सालसी हुआहो और उसकी वावत फैसला सालसी होगया हो तो हरशख्स जो फैसला से इलाका रखता हो मजाजहै कि किसी ऐसी अदालतमें जिसे शै मुतनाजिआ फैसला सालसी की समाअतका इस्तिथार हासिल हो इस अम्र की दरखास्त गुजराने कि फैसला सालसी दाखिल अदालत किया जाये—

( २ ) दरखास्त तहरीरी होनी चाहिये और दाखिल नम्बर और रजिस्टर होकर वमंजिलै एक मुकदमा के तसव्वर की जायेगी जिसमें सायल बतौर मुद्ई होगा और दीगर अशखास बतौर मुद्आअलेहुम्—

( ३ ) अदालत हुक्म सादिर करेगी कि इत्तिलानामा बनाम उन अशखास के जिन्होंने सालसी कराई हो और शरीक दरखास्त

न हों सुतजन्मिन इसवात के जारी हो कि अशस्वास्त मजकूर  
अन्दर मीयाद मुअय्यना के वजह फाफ़ी वास्ते न दाखिल  
होने फैसला सालसी के पेश करें—

दफा ५२६

२१—( १ ) अगर अदालत को इसवात का इतमीनान होजाये कि  
अदालत और निफा अम्र मुतनाजआ सिपुर्द सालसी किया गया और उ-  
ज फैसला मजकूर सकी निस्वत फैसला सादिर हुआ और अगर कोई  
ऐसी वजह जिसका जिक्र फिकरह १४ या फिकरह १५ में है साबित न  
की जाये तो अदालत फैसला मजकूर दाखिल करने का हुक्म देगी  
और फैसले सालसी के मुताबिक अपना फैसला सादिर करेगी—

( २ ) बलिदाज फैसला मसदरह के डिगरी सादिर होगी और ऐसी  
डिगरी की नाराजी से अपील न होसकेगा बजुज उस कदर  
के जो उस फैसला में लिखे हुये से ज्यादा की डिगरी हो  
या उसके मुताबिक न हो—

नम्बर १ सन्  
१=७७ ई०दफा ३ एकट ६  
सन् १=६६ ई०

२२—एकट दादरसी खास सन् १८७७ ई० की दफा २१ के अखीर  
के ३७—अलफाज यानी “ लेकिन अगर वह शख्स  
जिसने सालसी कराने का अहद किया हो और फिर  
उसकी वामील से इन्कार किया हो किसी ऐसे अम्र की  
वाबत नालिश करै जिसकी सालसी कराने का उसने मआहिदा किया हो तो  
ऐसे माहिदा का मौजूदहोना नालिश का मानअहोगा” किसी ऐसे इकरार-  
नामै सालसी या फैसला सालसी से मुतअल्लिक न होगी कि जिससे  
अहकाम जामीमाहाजा मुतअल्लिक हों—

( जदीद )

२३—नमूना जात इपनडिक्स वास्ते अगर राज मुन्दजें उपनडिक्स के मु-  
स्तअमल किसे जायेंगे और उनमें इस्व जखरत तगयूर किया जायेगा—

नमून जात

इपनडिक्स

नम्बर १

दरख्वास्त निस्वत हुक्म सिपुर्दगी सालसी

( उनवान )

१—नानिग हाजा जाम्ने ( गहां नौरपन दाता जिगना नाहिगे )

एन् १९०८ ई० ] मजसूमा जागता दीनानी ।

२-अम्रमुतनाजमा-माबैन फरीकैन के यह है ( यहां अम्र मुतनाजमा लिखना चाहिये )

३-जुमला फरीकैन जीगरज यानी दरखास्त कुनिन्दगान ने वाहम यह इकरार किया है कि अम्र मुतनाजमा सिपुर्द सालसी किया जाये-

४-सायलान हुक्म सालसी के मुस्तदर्ई हैं-  
दस्तखत ( अलिफ वे )  
( जीम दाल )

मरकूम तारीख-

नोट-अगर फरीकैन सालसों की निस्वत इत्तिफाक करै तो यह भी लिखना चाहिये )

## नम्बर २ हुक्म सिपुर्दगी सालसी ( उनवान मुकदमा )

बाद मुलाहिजा दरखास्त जो बतारीख-पेश हुई यह हुक्म दिया-जाता है कि मुकदमाहाजा में अम्र मुतनाजिमा यानी-वास्ते तजवीज के ( अलिफ वे ) और ( जीम दाल ) के हवाले किया जाये या वसूरत अदम इत्तिफाकराय ( हेवाव ) के हवाले किया जाये जो बजरिये इस के सरपंच मुकरर किया जाता है और सालसान मजकूर बतारीख-या उस के कल फैसला सादिर करै और दरसूरत अदम इत्तिफाक राय निस्वत फैसला सालसी सरपंच मजकूर अपना फैसला कलमबन्द करै अन्दर माह सन् ई० बाद मुनकजी होने उस मीयाद के जिसके अन्दर फैसला करना सालसों के इस्तिथार में था-

इस्तजाजत दरखास्त-

वसिन्त दस्तखत और मुहर अदालत के आज तारीख माह

सन् को जारी किया गया- दस्तखत जज

## नम्बर ३ हुक्म निस्वत तकरर सालस जदीद ( उनवान मुकदमा )

सी

सन् १९०८ ई० में जारी हुक्मों में परिवर्तित ( यहां हुक्म सालसी और साल

की वफात या इन्कार वगैरह लिखना चाहिये ) लिहाजा बतराजी तरफ़ैन यह हुक्मदिया जाता है कि अज़रुय हुक्म मज़कूर (जे हे) वजाय (अलिफ़ बे) मुतवफ़फ़ी के या जैसी सूरत हो वशमूल (जीम दात) सालसबाकी-मांदा के कार्रवाई करने के लिये मुक्करर किया जाये और नीज़ यह हुक्म दिया जाता है कि सालसान मज़कूर बतारीख या इसके कन्ल फ़ैसला सादिर करें—

वसिहत दस्तखत और मुहर अदालत के आज तारीख माह सन् को जारी किया गया—

दस्तखत जज

## नम्बर ४

### सूरत खास

( उनवान मुक़द्दमा )

वमुक्ताविला निज़ाम दरमियान (अलिफ़ बे) साकिन और (जीम दात) साकिन सूरत मुक़स्सिला ज़ैल वास्ते राय अदालत के पेश की जाती है—

( यहाँ मुख्तसिर तौर पर वाकियात मामिला नम्बरवार दफ़ात में लिखना चाहिये )

सायल क़ानूनी जिनकी निस्वत अदालत मज़कूरकीरायतलव की जाती है यह हैं ॥

पहले यह कि \_\_\_\_\_

दूसरे यह कि \_\_\_\_\_

मुवरिख़

दस्तखत ( स्वाद )

## नम्बर ५

### फ़ैसला सालसी

( उनवान मुक़द्दमा )

वमामिला निज़ाम दरमियान (अलिफ़ बे) साकिन और (जीम दात) साकिन कि वज़रिये हुक्म मिशुर्तगी सालसी मरफ़ू

तारीख माह - सन् व मसदरह अदालत—मरकूमुल् जैल  
अम्र निजाई माथैन ( अलिफ बे ) और ( जीम दाल ) यानी—वगरज  
तजवीज हमलोगों के सिपुर्द किया गया—

लिहाजा हम मामिलात मजकूर पर खूब गौर करके हस्व जैल फैसला  
करते हैं—

( १ ) यह कि \_\_\_\_\_

( २ ) यह कि \_\_\_\_\_

मुवरिखै \_\_\_\_\_ दस्तखत ( तो ये  
( हे वाव )

## जमीमा सोम

### इजराय डिगरी मार्फत कलक्टर

१—जब किसी डिगरी का इजराय हस्व दफा ६८ मुन्तकिल किया जाये दफा ३२३  
तो साहब कलक्टर को इख्तियार है कि—कलक्टर के इख्तियारात—

( अलिफ ) उसीतरह अमल करै जिसतरह अदालत अमल करती  
अगर जायदाद गैरमन्कूला का नीलाम मुल्तवी किया जाये  
ताकि मदयून जर डिगरी का इन्तिजाम करसकै—या

( बे ) कुल या जुज्व जायदाद मुश्तहरा नीलाम को बाद अखज  
उजरत के पट्टा इस्तमरारी या मीयादी पर देकर या उसको  
रेहन करके जर डिगरी का इन्तिजाम करै या—

( जीम ) जायदाद वरसरे नीलाम को या जुज्व उसका जिसकदर  
जरूर हो वै करे—

२—जब इजराय किसी डिगरी का मुन्तकिल किया जाये जिसमें हुक्म दफा ३२२  
कलक्टर की कार्रवाई नीलाम जायदाद गैर मन्कूला का मुवाफिक एक म-  
खास सूतों में आहिदा के जिसका असर खास उसी जायदाद पर  
पहुंचता हो न दिया गया हो बल्कि वह डिगरी जर नक्कद की हो जिसके  
ईफाय के लिये अदालत ने हुक्म नीलाम जायदाद गैर मन्कूला का दि-  
या हो तो साहब कलक्टर को इख्तियार है कि अगर वाद उसकदर त-  
हकीकात के जो जरूरी मालूम हो उसको वजह इस गुमान की पाई जाये



कि. तमाम दयून जिम्मगी मदयून विला नीलाम उसकी तमाम जायदाद गैर मन्कूला मुतहसिला के बेयाक हो सकते हैं तो हस्व तरीका मजकूर आयन्दा अमल करै—

दफा ३२२  
(अलिफ)

३-(१) सूरत मुतज्जकिरह फिकरह २-में साहब कलक्टर को चाहिये नोटिस बनाम डिगरी-दार और दीगर अश-ख्वास के जो जायदाद पर कुछ दावारखतेहों कि कितन नोटिस कि जिसकी तामील के लिये अर्सा ६० रोज़ का तारीख मुतहरीसे दिया जायेगा इस हुक्म के साथ मुतहर करै—

(अलिफ) कि हरशख्स जो मदयून डिगरी के नाम ऐसी डिगरी जर नक़दकी रखता हो जिसके इजराय में जायदाद गैर मन्कूला नीलाम होसकती हो और जिसको डिगरीदार खुद उस तौरपर जारी कराना चाहता हो और नीज हरशख्स काबिज ऐसी डिगरी जर नक़दका जिसके वसूल के लिये कार्रवाई नीलाम जायदाद मजकूरकी दायरहो एक नक़ल डिगरीकी और सार्थीफिकट उस अदालतका जिसने डिगरी सादिरकीहो या जो उसकी तामील में मसरूफहो साहब कलक्टर के खबर हाजिर करै जिसमें यह लिखाहो कि डिगरीकी रुसे किस क़दर रुपया वाजिबुल अदाहै—

(बे) और यह कि हरशख्स जो जायदाद मजकूर पर कुछ दावा रखताहै अपने दावाका हाल लिखकर साहब कलक्टरके पास दारिख्त और उसके सबूतकी दस्तावेजात अगर कुछ मौजूदहों पेशकरै—

(२) ऐसा इश्तहार उस अदालतके मकान के किसी नज़रगाह आम पर आवेजा किया जायेगा जिसने असल हुक्म नीलाम का सादिर कियाहो और ऐसे मुकामातपर (अगर कोईहों) चर्चा किया जायेगा जो साहब कलक्टर को मुनासिब मान्म हों और जब निशान और पता किसी डिगरीदार या दावेदार का मालूमहो तो इश्तहार की नक़ल उसके पास बसबील हाक या और तौरपर भेजी जायेगी—

दफा ३२३  
(२)

४-(१) बाद इन्जलाफ़ मीयाद मुन्दर्जा इश्तहार साहब कलक्टर

तादाद डिगरीकरणकद  
और उसके ईकायके  
लिये जायदाद गैरमन्-  
कूला मौज्जदह दरि-  
याफ्त कीजायेगी

एक तारीख मुकर्रर करेगा वास्ते समाप्त जुमला  
उजरात के जो मदयून डिगरी या ऐसी डिगरी या ऐसे  
डिगरीदार ख्वाह दावेदार लोग ( अगर कोईहों ) पेश  
करना चाहियें और नीज वास्ते अमल में लाने ऐसी  
तहकीकात के जो वास्ते दरियाफ्त नौथ्यत और तादाद ऐसी डिगरियात  
और दआवी और नौथ्यत व तादाद जायदाद गैरमन्कूला ममलूका मदयून  
के साहब मौसूफ को जरूरी मालूमहो और वह मजाज होगा कि ऐसी  
समाप्त और तहकीकात को वक्तन फवक्तन मुलतवी करता रहे—

( २ ) अगर निस्वत असलियत या मिकदार उस जिम्मेदारीकी जो  
उन डिगरियात और मतालिवजात की खुसे मदयून डिगरी से  
लाहकहो जिनकी इच्छिला साहब कलक्टर को होगईहो या  
निस्वत तकदीम व तारखीर उन डिगरियात या मतालिवजात के या  
निस्वत माखूजी व मकफूली जायदाद मजकूर जित्त अदाय डि-  
गरियात व मतालिवजात मजकूर किसी तरहकी निजाअन हो  
तो साहब कलक्टर एक कैफियत तय्यार करेगा इस तफसील के  
साथ कि ऐसी डिगरियात के पटाने के लिये किस कदर रुपया  
वसूल किया जायेगा और हर एक डिगरी और मतालिव किस  
तरतीब से बेवाक किया जायेगा और इस मकसद के लिये  
किस कदर जायदाद गैर मन्कूला काविल हसूलहै—

( ३ ) अगर अमूर मुतजकिरह सदरकी वावत कोई निजाअ वरपाहो  
तो साहब कलक्टर निजाअ मजकूर को मये हालात निजाअ  
और अपनी रायके उस अदालतमें मुरसिल करेगा जिसने असल  
हुक्मनीलाम सादिर कियाहो और अम्र निजाई की वावत जो  
कार्रवाई होती रहीहो उसको ता आने जवाब के मुलतवी रखेगा  
अगर अम्र निजाई उस अदालत की समाप्त के लायकहो तो  
वह अम्र मजकूर को तै करदेगी व इला मुकदमा को किसी  
अदालत मजाज समाप्त में मुरसिल करेगी और जो फैसला  
अखीर उसकी निस्वत करार पाये उसकी इच्छिला साहब कल-  
क्टर को दीजायेगी उसपर साहबकलक्टर वह कैफियत जो ऊपर  
मजकर होचुकी है उस फैसला के मुताबिक तयार करेगा—

दफा ३२२

( जीम )

५-साहबकलक्टर को इस्तिथार है कि इश्तहारात और तहकीकात कब अदालत जिला नोटिस जारी और तहकीकात करसक्ती है मुतजकिरह फिकरह जात ३ व ४ खुद अपनी जातसे मुश्तहर करने और अमल में लाने के बदले एक वयान तहरीर करे जिस में हाल मदयून डिगरी और उसकी जायदाद गैरमन्कूला का जहांतक साहबकलक्टर को उसका इल्महो या जिस कदर कागजात सरिश्तह से वाजहहो सराहत के साथ लिखा जायेगा और वयान मजकूर को अदालत जिला में भेजदेगा उस पर अदालत जिला वह इश्तहारात सादिर करेगी और वह तहकीकात अमल में लायेगी और वह कैफियत लिखेगी जो फिकरह जात ३ व ४ में महकूम है और कैफियत मजकूर को साहबकलक्टर के पास भेजदेगी-

दफा ३२

( दाल )

६-फैसला अदालतका निस्वत उस निजाअके जो हस्व फिकरह ४ असर तजवीज अदालत या ५ के वरपाहो जहांतक उसको फरीकैन मुकदमासे निस्वत निजाअ के तअल्लुकहो वही असर रखेगा और उसी तरह काविल अपील होगा जिस तरह डिगरी मौसर और काविल अपील होती है-

दफा ३०३

७-( १ ) जब तादाद जर जिसका वसूल करना जरूर है और भिक-तदवीर धारते अदाय दार जायदाद काविल हसूल हस्व फिकरह ४ या ५ के डिगरी जर नसद के मुन्कह होजाये तो साहबकलक्टर को इस्तिथार होगा कि-

(अलिफ) अगर साहब मौसूफ की दानिस्त में तादाद मतलूवा विला नीलाम कुल जायदाद काविल हसूल के वसूल करनी गैरमुमकिनहो तो जायदाद मजकूर को नीलाम करदे या (बे)अगर मालूमहो कि तादाद मतलूवा मयेसूद मुन्दर्जे डिगरी ( अगर सूदकी डिगरी हुईहो ) और जब सूद की डिगरी न हुईहो मयेसूद ( अगर कुद्दहो ) इस शरहके मुताविक जो मशार अलेह को डिलाना मुनासिब मालूमहो विला नीलाम के वसूल करनी मुमकिन है तो तादाद मतलूवासूद ( वावस्फ हुक्म अमल नीलाम के ) फराहिम करे इस तौरपर-यानी-

( १ ) बजरिये देने पट्टा कुल या जुज्व जायदाद मजकूरके वराय दनाम या किसी भीयाद के लिये व अदाय जर पेशगीख्वाद-

( २ ) बजरिये रेहन कुल या जुज्व जायदाद मजकूर ख्वाद-

( ३ ) बजरिये व जुज्व जायदाद मजकूरके ख्वाद-

( ४ ) बजरिये देने ठेका या खुद अपने इहतिमाम या दूसरे की सर-  
बराहकारी में रखने कुल या जुड़व जायदाद मजकूर किसी  
मीयाद के लिये जो तारीख हुक्म नीलाम से २० बरस से  
ज्यादा अर्सी के लिये न हो ख्वाह—

( ५ ) जुजन् एक तरीका और जुजन् दूसरे तरीकों को अमल में  
लाने से—

( २ ) वास्ते हुस्न इन्तिजाम कुल या जुड़व जायदाद मजकूर के साहब  
कलक्टर मजाज होगा कि तमाम इस्तिथारात उसके मालिक  
के नाफिज करै—

( ३ ) बगरज अफजूनी कीमत बाजारी जायदाद काबिल हसूल या  
उसके किसी जुड़व के या इस मकसूद से कि वह जायदाद  
ज्यादातर ठेकापर देने या इन्तिजाम खास में रखने के होजाये  
या उसको किसी मवाखिजहकी बेवाक़ी के लिये नीलाम के  
सदमसे बचाने के लिये साहबकलक्टर को इस्तिथार रहेगा  
कि किसी मवाखिजहदार के देन को जो बाजिबुल अदा होगया  
हो बेवाक़ करदे या किसी मवाखिजहदार के मतालिवका मसा-  
लहा आम इससे कि वह बाजिबुल अरुज होगया हो या नहीं  
करदे और बगरज फ़राहिमी ऐसे सरमाया के जिसकी मदद  
से ऐसी बेवाक़ी या मसालहा होसके उस क़दर जुड़व जायदाद  
को जो उसके नज़दीक मिक़दार में काफी हो रहन करै या ठेका  
पर दे या बै करै और अगर कोई निज़ाअ निस्वत तादाद उस  
मवाखिजा के बरपा हो जिसका तै करना साहबकलक्टर को इस  
फ़िक्करह के बमूजिव मंज़ूर हो तो साहब मौसूफ़ को इस्तिथार है  
कि खुद अपने या मदयून डिगरी के नाम से नालिश वास्ते  
लिये जाने हिसाब मतालिवके अदालत मुनासिव में रुजूअ  
करै या इस बातपर राजी हो कि अथ निज़ाई दो शहस सालस-  
को जिनमें एक सालस एक फ़रीक़ और दूसरा सालस दूसरे  
फ़रीक़ की तजवीजसे मुक़रर होगा या ऐसे सरपंचको जिसको  
दोनों सालस नामजद करै फ़ैसला के लिये नामजद किया जाये—

( ४ ) बरवज़त फ़ारिचई मुताविक़ फ़िक़रह राजा साहब कलक्टर को

लाज़िम है कि चइतवाअ उन कवाअद के कार बन्द हो जो  
इस ऐक्ट के मुनासिब और वक्त्रतन फवक्त्रतन लोकल गवर्न-  
मेण्ट की तजवीज से मुरत्तिब हों—

दफ्ता ३२४

८-अगर पट्टा या सरखराह कारी मुतजकिरह फिकरह ७ के खतम  
वमूल्यवासी जर बाक्ती होने पर तादाद यसूल तलब वसूल न होजाये तो साहब  
कलक्टर उस अन्नकी इत्तिला मदयून डिगरी या उसके  
क़ायम मुकाम हकीयत को तहरीरन देगा और उसमें यह  
ज़ाहिर करेगा कि अगर बाक्ती रुपया जो वास्ते वेवाक्ती मतालिवानात म-  
ज़कूर के दरकार हो इत्तिलानामा की तारीख से छः हफ़ता के अन्दर  
कलक्टर के पास अदा न कियाजाये तो साहब कलक्टर जायदाद मज़कूर  
को कुल्लन् या उसका जुज़्व काफी नीलम करेगा और अगर छः हफ़ता  
मज़कूर के गुज़रने पर वह जर बाक्ती अदा न कियाजाये तो साहब कलक्टर  
जायदाद मज़कूर या उसके जुज़्व को नीलाम करेगा—

दफ्ता ३२४

( मलिक )

९-( १ ) साहब कलक्टर को लाज़िम है कि वक्त्रतन फवक्त्रतन उस  
अदालत में जहां से अदलत हुक्म नीलाम सादिर हुआ हो  
हिसाब पेय करेगा । हिसाब तमाम मुवलिग का जो उसके कब्ज़ा में आये  
हों और तमाम ममारिफ का जो उन इस्तियारात और खिदमातकी ता-  
मील में उसके ज़िम्मे आयद हुये हों जो इस जमीमा की शरायत के मु-  
ताबिक उसको मुफविज हुई हैं दाखिल करें और जो तादाद बाक्ती  
रहै उनको तासदूर हुक्म अदालत अपने पास रखे—

( २ ) ममारिफ मज़कूर में तमाम जरहाय कर्ज़ा और दयून जो बावत  
जायदाद मज़कूर या उसके किसी जुज़्व के सर्कार को वक्त्रतन  
फवक्त्रतन वाजिबुलअदा हों और जर लगान ( अगर कुब हो )  
जो ऐसी जायदाद या जुज़्व की बावत वक्त्रतन फवक्त्रतन किसी  
काबिज आला को देनी हो और नीज़ खर्च तलबी गवाहान  
( अगर साहब कलक्टर ऐसी हिदायत करे ) शामिल होगा—

( ३ ) तादाद बाक्ती अदालत की मारफत अमूर मुकस्सिल ज़ैल में  
सर्फ की जायेगी—

( मलिक ) मदयून डिगरी के खानदान में से उन लोगों को ( अगर  
कुल हों ) नान व नरका देने में जो जायदाद की आयदनी

परवरिश पाने के मुस्तहक हैं और हर अहल खान्दान के लिये उस मिकदारतक जो अदालत को मुनासिव मालूम हो और—

( वे ) जब साहब कलेक्टर की कार्रवाई मुताबिक़ फ़िक़रह १ के हुई हो उस असल डिगरी की बेवाकी में जिसके इजराय के लिये अदालत ने हुक्म नीलाम जायदाद ग़ैर मन्कूला का सादिर किया हो और तरह पर सर्फ़ कीजाये जिसे अदालत हस्तुलहुक्म दफ़ा ७३ हिदायत करे या—

( जीम ) जब साहब कलेक्टर की कार्रवाई फ़िक़रह २ के मुताबिक़ हुई हो—

( १ ) उन मवाखिजों के सूद की मिक़दार घटाने में जिनमें जायदाद माखूज हो और—

( २ ) ( जब मदयून डिगरी के पास कोई और जरिया काफी परवरिश का न हो ) उसको उस तादाद तक नान व नफ़का देने में जो अदालत को मुनासिव मालूम हो और—

( ३ ) नीज बाकी मजकूर को उस असल डिगरीदार और दूसरे डिगरीदारों के दरमियान बतौर रसदी तकसीम करने में जिन्होंने नोटिस यानी इत्तिला नामा की तामील की हो और जिनके मतलिवा जात उस मुवलिगमजमूर्ई में शामिल हुये थे जिसके वमूल करने के लिये हुक्म हुआ था—

( ४ ) कोई और शख्स कार्रवाज़ डिगरी जर नक़द का उस वक़्ततक ऐसी जायदाद की आमदनी या उसकी बाकी से रुपया पाने का मुस्तहक़ न होगा तावक्ते कि उन डिगरीदारों का मतलिवा जिन्होंने हुक्म मजकूर हासिल किया हो बेवाक़ न होजाये और जर फ़ाजिले ( अगर कुछ हो ) मदयून डिगरी या किसी और शख्स को ( अगर कोई हो ) जिसकी वावत अदालत हिदायत करे हवाले कियाजायेगा—

१०—जब साहब कलेक्टर कोई जायदाद इस जमीमा के वमूजिव नीलाम किसतरह होगा। लाम करै उसको चाहिये कि जायदाद को एक या चंद लाट करके जैसा मुनासिव समझै नीलाम आम पर चढ़ाये और इस्ति-  
यार है कि—

(अलिफ) हर लाटके लिये एक मुनासिब तादाद अकल कीमत की मुकर्रर करदे—

( वे ) एक मीयाद माकूल के लिये नीलामको ऐसी हरसूरत में मुलतवी करदे जब उसका मुलतवी करना इस गरजसे जरूर मालूम हो कि जायदाद के यवज कीमत माकूल हासिल हो और उस को लाजिम है कि इलतुबायकी वजूह कलमबंद करै—

( जीम ) जायदाद को जब नीलाम पर चढ़े खुद खरीद करले और उसको वजरिये नीलाम आम या अहद व पैमान खानगी के जैसा मुनासिब समझै फिर-फरोस्त करै—

११-( १ ) जबतक कि साहबकलक्टर को निस्वत जायदाद नैर

दफा ३२५  
( अलिफ )

कयूद निस्वत इन्तिकाल  
मिन जानिव मदयून या  
उसके कायम मुकाम के  
और डिगरीदार की  
चारहजोई

मन्कूला मदयून डिगरी या किसी जुज्व जायदाद के मन्सब नाफिज करने या अमल में लाने उन इत्तिदारात या खिदमातका जो फिकरह जात ?— लगायत १० की रूसे उसको मुफुन्विज या उसके जिम्मे वाजिबुल तामील की गई हो हासिल रहै तबतक मदयून डिगरी या उसके कायम मुकाम हकीयत को किसी तरह इस्तिनयार न होगा कि जायदाद मजकूर या कोई जुज्व उसका मरहून या किसी देन में मानूज करै या पट्टा पर दे या मुन्तकिल करै इत्ला वहसूल इजाजत तहरीरी साहबकलक्टर के और न किसी अदालत दीवानी को बइलत इजराय डिगरी जरनतद के ऐसी जायदाद या उसके जुज्व पर कोई हुक्मनामा जारी करनेका इस्तिथार होगा—

( २ ) अर्सा मजकूर में किसी अदालत दीवानी को मन्सब न होगा कि बइलत इजराय किसी डिगरी के जिसकी बेवाकती के लिये साहबकलक्टर ने फिकरह ७ के बमूजिव बन्दोबस्त किया हो मदयून डिगरी की जान या उसकी जायदाद पर कोई हुक्मनामा जारी करै—

( ३ ) बकत महसूबी मीयाद समाप्त मुवसदिका इजराय ऐसी डिगरी के जिसपर उस जायदा के अहकाम का कुछ असर पहुँच निस्वत किसी चारहजोई के जिमसे डिगरीदार वजह नार्सा मजकूर चंदरोज महसूम रक्खा गया हो अर्सा मजकूर इसान्ने गारिज रक्खा जायेगा—

१२-जब वह जायदाद जिसके नीलामहोनेका हुकम हुआ हो एक हुकम अगर जायदाद जिल्ले से ज्यादा जिल्लों में बाँटै हो तो वह इक्कितदारात और खिदमात जो हस्व अहकाम फ़िकरह जात ?-लगा-

दफा ३२५  
( वे )

यत १० साहबकलक्टर को मुफ़विज और उसके जिम्मे बाजिबुल तामील की गई हैं वक्तन फ़वक्तन इजलाअ मजकूरके कलक्टरों में से इस कलक्टर को माफ़त नाफ़िज होगी और तामील पायेंगी जिसको लोकल गवर्नमेण्ट वज़रिये किसी कायदे आम या हुकम सास के मुकर्रर करै—

१३-वक्तत निफ़ाज़ उन इक्कितदारात के जो हस्व फ़िकरह जात ?-  
इख्तियार कलक्टर लगायत १० कलक्टर को दिये गये हैं कलक्टर मौसूफ़ को वज़रज़ जवरन होज़िर कराने फ़रीकैन मुकदमा और गवाहों और पेश कराने दस्तावेजात के वही इख्तियारात हासिलहोंगे जो अदालत दीवानी को हासिलहैं—

दफा ३२५  
( जीम )

## जमीमा चहारुम ( देखो दफा १५५ ) एकट हाय तरमीम शुदह

१	२	३	४
सन्	नम्बर	मुक़्तसिरनाम	तरमीम -
सन् १८७०	७	एकट रसूम अदालत सन् १८७० ई०	जमीमा अव्वलके मद नम्बर १ में बाद लफ़ज़ “ अर्जीदावा ” के अलफ़ाज़ “ याबयान तहरीरी जिसमें कि मुजररा या दावा मुक्ताविल याददास्त अपील या उज़र मुक्ताविल का ज़िक्र हो ” दाख़िल होंगे— जमीमा दोमके मद नज़र ११ में से अलफ़ाज़ “ बनाराज़ी किसी हुकम मशअर नामज़री अर्जी- दावा ” निकाल दिये जायेंगे— बजाय इवारत मुन्दर्जे खाना अव्वल जमीमा दोम मुतख़लिक मद नम्बर १६ के इवारत जैल पढना चाहिये “ इक्करारनामा तहरीरी जिसमें कोई अन्न वास्ते लेने राय अदालत के हस्व मजमूआ जान्ता दीवानी बयान कियाजाये ”—



(अलिफ) हर लाटके लिये एक मुनासिब तादाद अकल कीमत की मुकर्रर करदे—

( वे ) एक मीयाद माकूल के लिये नीलामको ऐसी हरसूरत में मुलतवी करदे जब उसका मुलतवी करना इस गरजसे जरूर मालूम हो कि जायदादके यवज कीमत माकूल हासिल हो और उस को लाजिम है कि इलतुवायकी वजूह कलमबंद करै—

( जीम- ) जायदाद को जब नीलाम पर चढ़े खुद खरीद करले और उसको वजरिये नीलाम आम या अहद व पैमान खानगी के जैसा मुनासिब समझै फिर फरोस्त करै—

११-( १ ) जबतक कि साहबकलक्टर को निश्चय जायदाद गैर

दफा ३२५  
( अलिफ )

कयूद निश्चय इत्तिकाल  
मिनजानिव मदयून या  
उनके कायम मुकाम के  
और डिगरीदार की  
चारहजेई

मन्कूला मदयून डिगरी या किसी जुज्व जायदाद के मन्सब नाफिज करने या अमल में लाने उन इत्तिदारात या खिदमातका जो फिकरह जात ?— लगायत १० की रूसे उसको मुफव्विज या उसके जिम्मे वाजिबुल तामील की गई हैं हासिल रहै तबतक मदयून डिगरी या उसके कायम मुकाम हकीयत को किसी तरह इत्तिनयार न होगा कि जायदाद मजकूर या कोई जुज्व उसका मरहून या किसी देन में माखूज करै या पट्टा पर दे या मुन्तकिल करै इला वहसूल इजाजत तहरीरी साहबकलक्टर के और न किसी अदालत दीवानीको बइलत इजराय डिगरी जर्नलद के ऐसी जायदाद या उसके जुज्व पर कोई हुक्मनामा जारी करनेका इत्तिनयार होगा—

( २ ) अर्सा मजकूर में किसी अदालत दीवानी को मन्सब न होगा कि बइलत इजराय किसी डिगरी के जिमकी बेवाक़ी के लिये साहबकलक्टर ने फिकरह ७ के चमूजिब बन्दोबस्त किया हो मदयून डिगरी की जान या उसकी जायदाद पर कोई हुक्मनामा जारी करै—

( ३ ) वक्त महसूरी मीयाद समाप्त मुवसलिका इजराय ऐसी डिगरी के जिसपर उस कायदा के अहकाम का कुछ असर पड़े निश्चय किसी चारहजेई के जिमसे डिगरीदार वजह तारीफ मजकूर चंदरोज महसूम रक्मा गया हो अर्सा मजकूर हिमायत नागिज रक्मा जायेगा—

१२-जब वह जायदाद जिसके नीलामहोनेका हुक्म हुआ हो एक हुक्म अगर जायदाद जिल्ले से ज्यादा जिल्लों में बाँटै हो तो वह इक़तदारात और खिदमात जो हस्व अहकाम फ़िकरह जात ?-लगा-

दफा ३२५  
( वे )

यत १० साहबकलक्टर को मुफ़विज और उसके जिम्मे वाजिबुल तामील की गई हैं वक़तन फ़वक़तन इज़लाअ मजकूरके कलक्टरों में से इस कलक्टर की माफ़त नाफ़िज़ होंगी और तामील पायेंगी जिसको लोकल गवर्नमेण्ट चज़ारिये किसी कायदे आप या हुक्म खास के मुक़रर करै—

१३-बक़त निफ़ाज उन इक़तदारात के जो हस्व फ़िकरह जात ?-लगायत १० कलक्टर को दिये गये हैं कलक्टर मौसूफ़ को वग़रज ज़वरन होज़िर कराने फ़रीक़ैन मुक़दमा और गवाहों और पेश कराने दस्तावेजात के वही इख़्तियारात हासिल होंगे जो अदालत दीवानी को हासिल हैं—

दफा ३२५  
( जीम )

## जमीमा चहारुम (-देखोदफा १५५) एकट हाय तरमीम शुदह

१	२	३	४
सन्	नम्बर	मुक़्तसिरनाम	तरमीम
सन् १८७०	७	एकट रसूम अदालत सन् १८७० ई०	जमीमा अव्वलके मद नम्बर १ में बाद लफ़्ज़ “अर्जीदावा” के अलफ़ाज़ “यावयान तहरीरी जिसमें कि मुजरा या दावा मुक़ाविल याददास्त अपील या उज़र मुक़ाविल का ज़िक़हो” दाख़िल होंगे— जमीमा दोमके मद नज़र ११ में से अलफ़ाज़ “वनाराज़ी किसी हुक्म मशअर नामज़री अर्जीदावा” निकाल दिये जायेंगे— वजाय इवारत मुन्दर्जे ख़ाना अव्वल जमीमा दोम मुतअल्लिक मद नम्बर १६ के इवारत ज़ैल पडना चाहिये “इकरारनामा तहरीरी जिसमें कोई अम्र वास्ते लेने राय अदालत के हस्व मजमूआ जाब्ता दीवानी बयान कियाजाये”-

# जमीन पंजुम

## ( देखो दफा १५६ )

### ऐक्ट हाय मन्सूख शुद्ध

१	२	३	४
सन्	नम्बर	मजमूआ या मुस्तसिर नाम	भित्तिर मसूही
<b>ऐक्ट हाय मसदरह नव्याव गवर्नर जनरल बहादुर बइजलास कौंसल</b>			
१८७०	७	ऐक्ट रसम अदालत सन् १८७० ई०	दफा १६ व मद १५—जमीन दौम
१८८२	४	ऐक्ट इन्तिकाल जायदाद सन् १८८२ ई०	दफात ८५ लगायत ६ व ६२ लगायत ६४ व ६६ व ६७ व ६६— और दफा १०० में इवारत " और तमाम शरायत मरहूमै सदर जो उस मुर्तेहिन से मुतअसिरु बंगई ई जो जायदाद मरहूना के नीलाम कर्गो की नालिश करै"—
"	१४	मजमूआ जाम्ता दीवानी...	कुल ऐक्ट
"	१५	ऐक्ट अदालत हाय मतलिवात ख-फीफा बलाद प्रेसीडसी सन् १८८२ ई०	फिररह गव्नीर दफा ३—
१८८८	६	ऐक्ट कर्षेदारान सन् १८८८ ई० ..	दफात २ लगायत ८—
"	७	ऐक्ट तरमीम कुनिन्दा मजमूआ जाम्ता दीवानी सन् १८८८ ई०	उत सदर हिस्सा जो मजमूआ नहीं हुआथा बटज दफा १ व ६५ व सिमन हाय १ व ३ व ४ दफा ६६—
"	१०	ऐक्ट तरमीम कुनिन्दा ऐक्ट मना-लिवात राष्ट्रीया बलाद प्रेसीडसी सन् १८८८ ई०	उत सदर हिस्सा जो मजमूआ नहीं हुआथा—
१८६०	८	ऐक्ट प्रोविन्दा व नानाविधान सन् १८६० ई०	दफा १३—
१८६१	१२	ऐक्ट मजमूआ व जमीन कुनिन्दा सन् १८६१ ई०	उत सदर हिस्सा जो ऐक्ट १४ सन् १८८८ ई० और ऐक्ट ७ सन् १८८८ ई० मजमूआ है—

१	२	३	४
सन्	नम्बर	मजमून या मुस्तसिरनाम	मिकदार मसखी
१८६२	६	ऐकट तरमीम कुनिन्दा ऐकट मीयाद समाञ्चत हिन्द व मजमूआ जाब्ता दीवानी सन् १८६२ ई०	उनवान और तमहीद मे अलफाज 'और मजमूआ जाब्ता दीवानी' और दफा २ व ३ व ४
१८६४	५	ऐकट तरमीम कुनिन्दा मजमूआ जाब्ता दीवानी सन् १८६४ ई०	कुल ऐकट
१८६५	७	ऐकट तरमीम कुनिन्दा ऐकट कवानिन पजाव सन् १८६५ ई०	दफात १ व २
”	१३	ऐकट तरमीम कुनिन्दा मजमूआ जाब्ता दीवानी सन् १८६५ ई०	कुल ऐकट
१९००	६	ऐकट अदालत हाय लुवर ब्रह्मा सन् १९०० ई०	इस क्रदर हिस्सा जमीनों का जो ऐकट १४ सन् १८८२ से मुतअल्लिक है



# इशितहार ॥

( फौजदारी )

ऐकटनंवर ५ सन् १८६८ मजमूआ जावता फौजदारी  
क्रीमत २ ) पु०

इण्डियनपिनलकोड अर्थात् ताजीरातहिन्द क्री० १।) पु०  
कमीशनवडौया क्रीमत २॥) पु०

मय नज्जायर मुकदमा जहर खिलाना कर्नेलफियरसाहब रज्जीडएटवडौया नित्त्व  
महाराजासाहब मल्हारराव गायकवाड स्वर्गवासी ॥

( दीवानी )

ऐकटनं० ५ सन् १६०८ क्रीमत १।) पु०

ऐकट नम्बर २ सन् ८६ इन्कमटेक्स क्रीमत ८) पु०

( माल )

ऐकट नम्बर १६ सन् ७३ मालगुजारी आराजी सुमालिक  
मगरवी व शिमाली क्रीमत १।) पु०

ऐकट २ सन् १६०१ नागरी लगान मगरवी व शिमाली क्री० १।)

ऐकट ३ सन् १६०१ मालगुजारी क्रीमत ॥)

कवाअद पटवारियान बोर्डमाल सूवा आगरा मतवूआ  
सन् १८०२ ई० क्रीमत १।) पु० विलावजात

तथा मुल्क अवध मतवूआ सन् १६०२ ई० क्री० १।) पु० विलावजात

ऐकट नम्बर ८ सन् ८५ क्रीमत १।) पु०

रमीदवही १०० मफा ॥)

तथा २०० मफा ॥)

तथा सूवह आगरा उई नागरी ॥)





